ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२ , में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के , ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा , श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता , तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक , एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा , बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में , श्रृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -**श्रृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान**

१ 30 10 1965 मानव को मानव बनना है, प्रभु की सृष्टि में।

अभी अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ , हम तुम्हारे समक्ष , कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गान गाते चले जा रहे थे , आज का हमारा वेदमन्त्र , तुम्हें प्रकाश के मार्ग को, प्रगति कराता चला जा रहा था। आओ! हम भी चल जाएं और उसी प्रकाश में , हम भी प्रकाशमान होते चले जाएं । जो प्रकाश उस परम दाता ने, आनन्ददायक प्रभु ने , जो विचित्र वीणा मानव के समक्ष निर्मित की है , हम भी उस वीणा को , शब्दमयी ध्वनि करते चले जाएं , और वह ध्वनि हमारे अग्रणीय भाग में हो, और हम उस ध्वनि के पश्चात हो, हे परमात्मन्! आपकी यह कितनी अनुपम ध्वनि है , जब हम इस ध्वनि का उच्चारण करते हैं , तो कितनी अनुपम ध्वनि है ये, जिस ध्वनि से यह पृथ्वी मण्डल ही नही, सूर्य मण्डल और ध्रुव, चन्द्र इत्यादि सभी उसका वर्णन किया करते हैं। और इनके ऊपर जो अनुसन्धान, वीणा के सहित किया जाता है , और भी इसमें हमें विचित्रता प्रतीत होती है, परन्तु वह कितनी अनुपम विचित्रता है, हम जब सूर्य मण्डल के, आगार उसका प्रदर्शन दृष्टिपात करते है , तो हमें कुछ ओर ही विचित्रता प्रतीत होती है , परन्तु देखो, कहाँ यह सूर्य की विचित्रता और भी हम जब सप्त ऋषि मण्डलों के द्वारा, उनके ऊपर हमारा विचार विनिमय होना प्रारम्भ होता है , और ह में विचित्रता प्रतीत होती है। परन्तु हम , सप्त ऋषि मण्डल को भी त्याग देते हैं , बृहस्पति और ध्रुव पर जहाँ तक हमारी आकर्षति जाती है , हमारा निर्णय किया हुआ सिद्धान्त, वह और ही गम्भीरता से विचार विनिमय , विचित्रता प्रतीत होती है। मुनिवरों! जहाँ उनके हम तत्त्व प्रधानता को लेते हैं , और भी हमें विचित्रता प्रतीत होती है, हम जब पृथ्वी मण्डल की पार्थिवकता और मानवीयता के ऊपर विचार विनिमय करते हैं , तो हमें बेटा! एक ऐसा हमें , अनुभव होता है , हमारे मस्तिष्कों में ऐसी क्रान्ति उत्पन्न होती है , जिससे हम हताश हो जाते हैं , और हताश हो करके यह कहा करते हैं, कि परमात्मा विचित्र है। वह कलाकार विचित्र है। परन्तु यहाँ नास्तिकवाद कहता है, नास्तिकवाद का पाठ ओर ही कुछ है।

नास्तिकवाद

मेरे प्यारे! महानन्द जी ने एक समय मुझे नास्तिकवाद की चर्चा प्रगट की। उन्होंने कहा नास्तिकवाद यह स्वीकार करता है, क्या यह जो भी कुछ हमें प्रतीत हो रहा है, ये सब पञ्च महाभूतों का ही एक चक्र है , न तो परमात्मा ही कोई वस्तु है, परन्तु कोई ऐसा, जिसको अनुपम या विचित्र हम उच्चारण कर सकते हैं, वह कोई नही है। परन्तु देखो , मानव की एक इस प्रकार की लोलुक्ति हैं , क्या जिसको मानव विचारता रहता है , परन्तु यदि मैं उन नास्तिकों से प्रश्न करूं? क्या, तुम इन पञ्च महाभूतों की आकृति को स्वीकार करते हो , जल में भी तो पञ्च महाभूत हैं। मुनिवरों! अग्नि में भी पांचों मिश्रित हैं , वायु में भी पांचों मिश्रित हैं और पृथ्वी में भी, आज ये भी उनसे प्रश्न करूं कि तुम्हारे द्वारा यह ज्ञान और यह चेतनता कहाँ से आ पंहुची? तो उत्तर मिलेगा कि पञ्च महाभूत जो एक स्थान में मिलान हुआ है। उन पांच महाभूतों में से , नाना प्रकार की मात्राएं हैं , जो उत्पन्न हो करके मनुष्य का शरीर बन जाता है, यह संसार जिसमें शारीरिक प्राणी होते हैं, उन सबका ही जीवन सञ्चार होने लगता है , मुनिवरों! उनसे यह प्रश्न किया जाए, क्या तुम सृष्टि की रचना को स्वीकार करते हो या नही। वह उत्तर देंगे की स्वीकार तो अवश्य करते हैं , परन्तु यह स्वयं ही रच जाती है , इसको रचाने वाला कोई तत्त्व नही है। मेरे आदि आचार्यों जनों! जब ऐसे ऐसे विलक्षण उत्तर हमें प्राप्त होते हैं, परन्तु उसमें यह भी विचार विनिमय किया जाता है , कि आत्मा कोई चैतन्य नही, इन पांचों तत्त्वों से लेकर प्रकृति और चैतन्य के महत् के मिलान से ही तृतीय वस्तु , प्रकृति उत्पन्न हो गई। तृतीय नाम, इसका यह गौणिक नाम, यह प्रकृति ना म नियुक्त किया गया। इसी प्रकार ये पञ्च महाभूत मिलें, पञ्च महाभूतों के मिलान से , यह हमारा शरीर, मनुष्य शरीर बना , और जैसे सृष्टि उन दोनों का ही रूप माना जाता है , परन्तु हम तो यह भी तो प्रश्न करते हैं, कि तुम चैतन्य, प्रकृति को स्वीकार करते हो या नहीं। परन्तु आगे वह उत्तर देते हैं, कि यह तो हमारी लोलुक्ति परन्तु इसका समाधान यह कि हम

चैतन्य सत्ता कोई नही होती, केवल प्रकृति होती है। यह स्वयं ही चलता है। मुनिवरों! यह तो हमें हमारे हृदय को सन्तुष्टि नही हुई।

परन्तु वास्तविकवाद तो यह है कि इस ज्योति से हमें कुछ प्रतीत हो रहा है। सूर्य मण्डल है, तारामण्डल इत्यादि नाना प्रकार के जो मण्डल हैं, इनके रचाने वाला मनुष्य को रचाने वाला कोई न कोई कलाकार, कोई शिल्पकार मुनिवरों! कोई गृढस्ति, जिसको हम विश्वकर्मा कहते हैं। कोई न कोई अवश्य सत्ता है। मुनिवरों! प्रकृति भी वास्तव में हमें प्रतीत होती है, प्रकृति भी है, बिना प्रकृति के प्रभु इस मानव संसार को नही रचा सकता। मुनिवरों! वास्तव में देखो, यह, इसी की चेतनता से संसार प्रगतिशील हो रहा है। हमारे द्वारा जो ज्ञान और प्रयत्न की मात्रा आती है। मुनिवरों! राग और द्वेष, मुनिवरों! इच्छाएं और क्षुधा और त्वचा इत्यादि मुनिवरों! देखो, हमारे द्वार पर नाना प्रकार के हमारे द्वार पर दुःखद संस्कार हैं। और भी मुनिवरों! देखो, यह शरीर मान अपमान, यह सब एक मानव के लिए स्वाभाविकतव हो जाता है। परन्तु यह स्वाभाविक प्रकृति के आवेशों से स्वभाव बन जाता है। जब यह प्रकृति, उसी को अच्छी प्रकार अर्पण कर लेती है तो मुनिवरों! देखो, यह सभी कुछ इससे उत्पन्न हो जाते हैं, और यह उसका अधिपति बन जाता है।

नियम बद्ध सृष्टि

देखो, मैं इस शरीर चेष्टा के ऊपर कोई वाक् नही प्रगट कराने आया। केवल यह कि यह जो आज जब नास्तिकवाद की सब वस्तु समाप्त हो जाती है इस संसार में, इस संसार को कोई रचाने वाला है, कोई नियम बना रहा है। मुनिवरों! देखो, बिना नियम के अनुसार मानव का कार्य भी नही कर सकता, कोई सञ्चार नही होता। परन्तु उस प्रभु का, इतना रचनात्मक यह ब्रह्माण्ड है, जो मुनिवरों! देखो, सूर्य को नियम में चला रहा है, चन्द्रमा को नियमित बना रहा है, मानो बेटा! देखो, एक ही तत्त्व अपनी निर्माणशाला में निर्णीत हो रहा है, वह अपना अपना कर्तव्य करता चला जा रहा है, यह कोई न कोई नियम है, यह

कोई न कोई नियम बनाने वाला अवश्य है , परन्तु उसके नियम इतने महा पूर्ण हैं, अपूर्ण नही, पूर्ण हैं, वह इतने पूर्ण कि हमारे कार्य अपूर्ण हो सकते हैं , परन्तु प्रभु का कार्य कोई भी अपूर्ण नही होता , वह पूर्ण होता है। मुनिवरों! सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है , यदि सूर्य सांय काल में उदय हो जाए , तो क्या हो, अन्धकार छा जाए, मनुष्य मात्र को प्राणी मात्र को वह सत्ता नही प्राप्त हो सकती। जिसे वह पान करना चाहता है , मुनिवरों! देखो, जब उसी सूर्य की किरण , सूर्य को कोई देता है, उसको भी कोई प्रकाश देता है, परन्तु वह परमात्मन् है, सूर्य से सहस्रो किरणों चलती है , उन सहस्रो किरणों का संसार में बेटा! जब आभास होता है, तो प्रत्येक प्राणी को सुखद में पंहुचाती चली जाती है। प्रातःकाल में सूर्य उदय हुआ, मेरी पवित्र माता अपने अपने आसन को त्याग देती है। ऋषि मण्डल उससे पूर्व उससे अपने आसन को त्याग देता है , जो शावक होता है , वह भी त्याग देता है , पक्षी गण भी त्याग दिया करते हैं, सूर्य उदय होने से पूर्व। जब सूर्य उदय होता है, तो वह सबको एक जीवन सत्ता प्रदान करता चला जाता है। वह पवित्र बेला है , जिस पवित्र बेला में प्रत्येक प्राणी को शक्ति प्राप्त होती है। जहाँ जहाँ जहां उसकी किरणों का आभास हुआ , उसकी किरणों का प्रभाव पंहुचा, वहीं उन्हीं उन्हीं स्थानों में एक प्रकाश की तरंगे ओत प्रोत हो जाती हैं। मानव प्रकाशित होता है , जलचर भी प्रकाशित होते हैं , समुद्रों में भी जल चरों को मार्ग में विचरण करने वाले सभी को सत्ता प्राप्त हो जाती है। मुनिवरों! वह सूर्य किरणों को निगल जाते हैं , जब सूर्य की किरण को निगल जाते हैं। तो मुनिवरों! देखो, उससे मानव में एक नवीन सत्ता आती चली जाती है। उसी सत्ता को पान करने वाले , उसी सत्ता को प्राप्त करने वाले प्राणी , संसार में जीवित रहते हैं, और वह एक अनुपम उस देन को पान करते हैं, जो वह प्रभु हमें देता है, जिससे हमारा जीवन सञ्चार होता है , जब हम जीवन के सञ्चार , सब को विचार विनिमय करते हैं , तो हमें यही प्रतीत होता है , ये उस प्रभु ने , उस मेरे आनंददायक देव ने यह चार वर्ण का क्या विचित्रता रची है।

आस्तिकवादी विमर्श

मेरे आदि आचार्यों जनों ! जब हम आस्तिकवादी यह विचारते हैं कि परमात्मा कोई चेतन सत्ता है , जिसकी रचना हमें नियम में प्रतीत हो रही है , तारामण्डल हैं, वह नियम से, मुनिवरों! देखो, अपनी प्रक्रिया कर रहे हैं। करते चले जाते हैं, परन्तु चैतन्य सत्ता से, प्रकृति में यदि चैतन्य सत्ता का मिलान न हो, तो यह शून्य रहती है, परन्तु इसमें क्रियात्मक होती है, और वह क्रियाशील रहती है। उसी क्रिया से अनुकम्नता से संसार में बेटा! प्रत्येक प्राणी का निर्माण होता है। प्रत्येक प्राणी एक दूसरे का सहायक होता चला जाता है। एक दूसरे का सहायक बनता है प्राणी, कोई किसी को अमृत देता है। कोई किसी के विष को ग्रहण करता है अपने में, मैंने बेटा! यह कई काल में आदेश प्रगट किया, संसार में प्राणी, एक प्राणी द्वितीय प्राणी को अधीन बनाया है। मुनिवरों! जो सूर्य की पवित्र किरणों चलती हैं। उन्हीं किरणों का प्रभाव , जब एक दुर्गन्धि त्यागता है , एक प्राणी, उनको सुगन्धि प्रदान कर देती हैं , और जब मानव दुर्गन्ध, या कोई भी दुर्गन्ध त्यागता है कोई भी प्राणी, परन्तु वह ज्यों की त्यों तो नही, परन्तु सूर्य की किरणों अपने में शोषणित कर देती हैं। वायु के द्वारा , जल के द्वारा उसको शोषण कर लेती हैं, परन्तु उनका मिलान भी, उनका मन्थन भी किया जाता है , जब उसका उस दुर्गन्ध का मन्थन किया जाता है। उस दुर्गन्ध का मन्थन होकर उसका प्रसार भी किया जाता है। अब मुनिवरों! देखो , जहाँ मन्थन किया जाता है। मन्थन किस वस्तु का होता है? एक व्यक्ति वमन करता है, दुर्गन्ध को त्यागता है। परन्तु उसी दुर्गन्ध को शोषण करने वाली भी कोई सत्ता है। दुर्गन्ध शोषण की जाती है, सुगन्धि आ जाती है। दुर्गन्धि समाप्त हो जाती है , और वह दुर्गन्धि सूर्य की किरणों ने बेटा! अपने में वायु के द्वारा , जल के द्वारा, उनका शोषण करके मन्थन हुआ। मन्थन हो करके उनका विभाजन हुआ , उनका विभाजन हुआ, अब जब उनका विभाजन हुआ तो मुनिवरों! जो उनमें से विष होता है , विष को पान करने के लिए, विषैले प्राणी होते हैं, वह विष को ही पान करते हैं , अमृत पान

करने वाले जो प्राणी होते है वे अमृत को पान करते हैं , और जिन्होंने विष को अपने में ग्रहण किया है, उन्होंने विष को क्यों पान किया, अमृत भी तो पान कर सकते थे? परन्तु अमृत वाले प्राणियों से उस विषैले प्राणी का इतना घनिष्ट सम्बन्ध है, जिसका कोई प्रमाण नहीं, मुनिवरों! दुर्गन्ध को शोषण करता है। विष को शोषण करता है। क्यों करता है? यदि अमृतदायक जो प्राणी होता है , उसको वह विष पान भी छू जाए, तो मुनिवरों! उसका अन्त हो जाता है। तो ये उस प्रभु की कितनी महानता है , इसमें एक वनस्पति इस प्रकार की है , जो दुर्गन्ध को त्यागती है, द्वितीय वनस्पति इस प्रकार की है , जो दुर्गन्ध को शोषण कर लेती है, और कुछ इस प्रकार की वनस्पतियां हैं, जो वनस्पति बेटा! दिवस के समय, दुर्गन्ध को त्यागती हैं , और रात्रि के समय सुगन्ध को ग्रहण करती हैं। मानो, देखो, अधिकतर वनस्पतियां इस प्रकार की हैं , जो मुनिवरों! रात्रि के समय दुर्गन्ध को त्यागती हैं, और दिवस के समय में सुगन्ध को अपने में शोषण करती हैं। अपने में सुगन्ध को त्यागती हैं , त्यागती ही देती है, शोषण करती हैं, परन्तु वह उनकी सुगन्धि संसार में उनकी व्या पिकता में रमण कर जाती है , जब वही सुगन्ध देखो, यह उस परमात्मा का कितना बड़ा परिवार है , कितना बड़ा समाज है उस परमात्मा का , उस मेरे परमानिधायक का कितना ऊँचा सिद्धान्त और उसकी रचनात्मक है। उसी के परिवार में मानव को विचित्र बना दिया, परन्तु यह परिवार, एक ऐसा विशाल और मानवता की भूमि पर विराजमान हो जाता है। जहाँ एक मानव को इन सर्वत्र प्राणियों में सर्वोपरि बनाया है , क्यों बनाया? कर्म करने के लिए, दूसरों की निन्दा करने के लिए नही , दूसरों को अपशब्द उच्चारण करने के लिए नही , केवल मानवता को प्राप्त करने के लिए उत्पन्न किया , और इतनी सुगन्धि वनस्पतियों से उत्पन्न होती है। जितनी दुर्गन्धियों को विषैले प्राणी विष को शोषण करते हैं, मानो ये विष को तो शोषण करते हैं, सुगन्ध को त्यागते हैं, क्यों? आगे यह प्रतीत है, कि प्रभु ने ऐसी योनियां रचाई हैं, जिसके लिए हम सब सहायक हैं।

मनुष्य योनि की महत्ता

मुनिवरों! अब यदि प्राणी ने यहाँ आ करके भी मानवता पर विचार विनिमय नही किया, तो बेटा! यह तुम्हे प्रतीत होगा , अगला जन्म इसे कहाँ प्राप्त हो सकेगा, कौन सी योनियों में जाएगा, परन्तु उन योनियों में पंहुचेगा, जिनमें कर्म शून्य है, आज मानव अपने भोग विलासों में परणित रहता है। बेटा! महानन्द जी ने मुझे वर्णन कराया। अपने ऐश्वर्य में आनन्दित रहता है , दूसरों की निन्दा स्तुता में परणित रहता है , एक दूसरे की नष्ट करने के उसकी प्रवृत्ति बन जाती है। मुनिवरों! देखो, एक दूसरें में प्रीति नही होती, आज यह सब जिन प्राणियों मे आ जाती है, तो उसका विनाश तो हो ही जाता है। मुनिवरों! देखो , यह प्रवृत्ति पशु पक्षियों में भी हैं, उनमें मोह ही नहीं होता है, मुनिवरों! देखो, उनमें विषय वासना भी होती है , क्रोध भी होता है , काम भी होता है , नाना प्रकार की और भी प्रवृत्तियाएं होती हैं, मुनिवरों! और उन पशु पक्षियों में सभी कुछ होता है , केवल एक ही वस्तु नहीं होती , केवल ज्ञान नहीं होता , उनमें ज्ञान नही होता। प्रिय , अप्रिय वस्तु को अच्छी प्रकार जानता तो है, परन्तु इतना पूर्ण रूप से नहीं, पशु पक्षी यह भी जानता है , कि ये तेरा स्वामी है, यह तेरा मित्र है, यहाँ तक भी जानता है। परन्तु एक ही वस्तु इनमें नहीं कि इनमें कहाँ तक यह जानते हैं, प्रभु की देन के अनूकुल जानते हैं , अपने कर्मों के अनूकुल जानते हैं , परन्तु इनमें इतना विकास नहीं, कि आगे चल करके यह प्रभु के आँगन में चले , और अपने जीवन को विकास करें, **यदि विकास उन्हें प्राप्त होगा, तो केवल एक मनुष्य की योनि में प्राप्त होगा** इसमें विकासदायक वह तत्त्व हैं, वह कण हैं, जिससे मानव का विकास और मानव की प्रगति हो गी, **मुनिवरों! योगाभ्यास और परमात्मा के प्राप्त करने में, मानव में संलग्नता रहती है** यह ही एक मानव में विशेषता है, और मानव में कोई विशेषता नही हैं, यदि कोई विशेषता है, पशु पक्षियों से भिन्न, तो यदि कोई एक विशेषता है , क्या? इसमें ज्ञान है , प्रगतिशील बनने की इसमें मनोकामनाएं, इच्छाएं करता है, प्रभु के द्वारा जाने का भी सर्वश प्रयत्न करता है।

मुनिवरों! जब हम चन्द्र मण्डल और सूर्य मण्डल की प्रगति और वहाँ अग्नि तत्त्व प्रधानता को दृष्टिपात करते हैं , तो प्रभु की और ही विचित्रता प्रतीत होती है। हमारा यह पृथ्वी मण्डल प्रभु ने रचा, जिसमें बेटा! मनुष्य विशेषकर महानता को लिए हुए रहता है , उनको अपने आधीन बनाएं रहता है , अरे, जैसे तुम इनके आधीन हो, तुम्हारे ये आधीन है , तुम इनके आधीन रहते हो , परन्तु वह सूक्ष्म रूप से रहते हैं, इसमें ज्ञान होने के नाते, यह उनमें तो ये सभी तो स्वतंत्र माने है, विराजमान हैं। परन्तु यह उनके आधीन भी हैं , प्रभु के नियम के अनूकुल , यदि सर्प योनि विष को पान न करें, तो यह विष मानव को छू छू करके मानव का अंग भंग हो सकता है। बेटा! यदि जल में यदि मछली न हों , मच्छ न हों, तो बेटा! जल में इतनी दुर्गन्ध, इतना अनर्थ हो जाए। परन्तु जल में इतना विष उत्पन्न हो सकता है, कि पुरूष पान करके मृत्यु को प्राप्त हो सकता है।

स्वर्ण का जीवन

मुनिवरों! और भी नाना प्रकार के पक्षी गण , जो मानव को अनेक प्रकार का लाभ देते हैं , बेटा! कृषि करने वाला कृषक , पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना कर देता है , परन्तु उसमें बहुत से प्राणी , इस प्रकार के होते हैं , जो पृथ्वी के विष को पान करते रहते हैं और कृषि करने वाला वैश्य मानो उसकी कृषि को ललाहित कर देते हैं। वह ललाहित होती रहती है। और विष, पृथ्वी, जो पान करती है उसको पान करते हैं। एक मुनिवरों! इस प्रकार का जो और भी ऊपर को और भी वनस्पतियां देखो, अन्न इत्यादि आता है, उसमें इस प्रकार के परमाणु आ जाते है , जिसको वह पक्षी गण और जो बहुत सी योनियां है उनको पान करके देखो , उनको योग्य बना दिया करते हैं। किसी प्रकार का विनाश नही होता उनमें, बेटा! वह कृषक के गृह में आ जाती है , कृषक भी अपने आनंदतव में मग्न हो जाता है, मेरे आदि आचार्यों जनों! प्रभु ने एक वस्तु नही, बेटा! भिन्न भिन्न प्रकार की एक दूसरे की सहायक बनाई हैं। ऐसे उसने सुरक्षात्मक के लिए संसार रचा है , बेटा! जब हम इनके आधीन रहते हैं , तो

सूक्ष्मता है, हम अपने आधीन अपने को इसीलिए स्वीकार नही करते, क्योंकि हम में वह ज्ञान है। हममें वह ज्ञान सत्ता है। परन्तु यदि हम गम्भीरता से विचार करेंगे, तो हम भी आधीन हैं। मुनिवरों! यदि हम उनके आधीन भी नहीं है , यह हमारे आधीन हैं। तो विचार करें, हमारा भी तो कोई न कोई स्वामी होगा, कोई न कोई स्वामी अवश्य होगा , मुनिवरों! अपने पुत्र की स्वामिनी माता होती है , सुन्दर शिक्षा देती है, वह उसकी स्वामिनी होती है, आगे वही पुत्र भी किसी का स्वामी बनता है। परन्तु देखो, वह स्वामी बनता है, तो सेवक भी बनता है, और यह पक्षी गणों के हम स्वामी है, या ये हमारे स्वामी हैं। परन्तु यह हमारे सेवक भी हैं, और हम भी किसी के सेवक हैं। जब परमात्मा की लोरियों में से पृथक हुए, तो पृथ्वी की गोद में चले गएं, पृथ्वी के सेवक बन गएं, मुनिवरों! और यह पृथ्वी किसी के आधीन है , ये प्रभु के आधीन है। इसीलिए हम सभी जितने प्राणी, हम सब प्रभु के आधीन हैं , क्योंकि प्रभु ने नियम बना एं हैं, प्रभु ने उन योनियों को कर्मों के अनुसार रचा है , और यह योनियां रच करके एक दूसरें प्राणी के कितना लाभदायक होती हैं, इसी प्रकार हमें भी आज लाभदायक बनने के लिए जैसे प्रभु ने प्रत्येक योनि को लाभदायक रचा है। हमें भी संसार में आ करके वह कर्म करना है, जिससे प्रत्येक प्राणी के लिए लाभदायक हो सकता हैं, बेटा! संसार स्वर्ग बन जाता है। आज हम स्वर्ग की कल्पना करते हैं, आज हम भगवान विष्णु के राष्ट्र की कल्पना करते हैं , परन्तु उन कल्पनाओं में वह कल्पनाएं, इसी प्रकार हमारे हृदय में समाहित हो जाती हैं। हम उन्हीं कल्पनाओं को इसी प्रकार से अपने में धारण करते हैं , क्योंकि सतोयुग में प्रत्येक प्राणी अपने अपने कर्तव्य का पालन करने वाला, दया करने वाला, शुद्धता को परणित करने वाला, वह परमात्मा के आधीन रहने वाली प्रजा, इसीलिए मुनिवरों! देखो, उसको हम सतोयुग कहते हैं। जो संसार में बेटा! एक दूसरे का भय नही होता , एक दूसरे के भय का आचार नही होता, न पाप होते हैं, जहाँ धर्म होता है, **जहाँ हम परमात्मा से भय, हम परमात्मा से भय को स्वीकार कर लेते हैं, उसी काल**

में बेटा! हमारा जीवन स्वर्ण का बन जाता है। हमारा जीवन स्वर्ण का बन जाता है, और स्वर्ण का बन करके, बेटा! हमारे जीवन में एक मानवता छा जाती है। अनुपमता छा जाती है। हम किसी प्रकार के पाप कर्म करने के योग्य नही रहते, क्योंकि हमारा कोई स्वामी है, वह हमारे साथ है, अब हम पाप भी करें, तो कहाँ जा करके करें, किस स्थान में करें, क्योंकि वह हमारे साथ रहने वाला, हमारा स्वामी है। मुनिवरों! देखो, इस प्रकार हम अपने स्वामी को स्वीकार कर लेते हैं, तो हम नाना प्रकार के पापों से दूरी हो जाते हैं, आज हम बेटा! आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया, केवल आज के कुछ वेदमन्त्रों का आशय प्रगट करने आया हूँ। शेष चर्चा तो मैं द्वितीय काल में ही प्रगट करूंगा।

प्रलय काल में कंपन्नता

आज तो केवल मैं यह उच्चारण करने चला हूँ, क्या प्रभु ने जो कुछ रचा है, वह एक दूसरे का सहायक है, यह मनुष्य ही सहायक नही है, बेटा! जितने लोक लोकान्तर रचे हैं, वह भी एक दूसरे के सहायक हैं, एक दूसरे के आधीन बने हुए हैं, बेटा! चन्द्र मण्डल है , चन्द्र मण्डल में सूर्य का प्रतिबिम्ब आता है , चन्द्रमा प्रकाशमान हो जाता है। मंगल में सूर्य का प्रतिबिम्ब आता है , मंगल भी प्रकाशमान हो जाता है। हमा री यह पृथ्वी भी प्रकाशमान , सूर्य के आधीन बन करके रहती है। बेटा! एक दूसरे के आधीन बनें , इसी प्रकार सूर्य का भी कोई स्वामी होता है। बेटा! वह बृहस्पति है, बृहस्पति सूर्य को अपने आधीन बना लेता है। जो सूर्य में प्रकाश आता है, सूर्य मण्डल को प्रकाशित करता है, वह बृहस्पति है, और बृहस्पति एक सूर्य को प्रकाशित नही करता और बेटा! जो जिसका प्रकाशक होता है , उसी को सूर्य कहा जाता है। बेटा! सुना!, जो जिसका प्रकाशक होता है, वही उसका सूर्य होता है, हमारा प्रकाशक प्रभु है, तो हमारा वह सूर्य है। हमारे शरीर का प्रकाशक यह सूर्य है , तो यह हमारा सूर्य है, बेटा! सूर्य का भी जो प्रकाशक होता है , वह सूर्य के लिए तो वह सूर्य है, तो वह उसका प्रकाशक है, इसी प्रकार अब बृहस्पति के आधीन नाना प्रकार के मण्डल

हैं, बेटा! आरुणि हैं , तुरकाल है, और सप्त ऋषि हैं , ये सब जैसे सूर्य का प्रकाशक बृहस्पति है, ऐसे ये ही इन लोकों का भी अधिपति बृहस्पति माना जाता है। मुनिवरों! वह उसका प्रकाशक है, एक दूसरे के आधीन बने हुए हैं। मुनिवरों! और बृहस्पति का भी कोई प्रकाशक है, उसे हम ध्रुव कहते हैं, उसे हम ध्रुव कहा करते हैं। क्योंकि वह बृहस्पति का प्रकाशक है , और बृहस्पति का प्रकाशक होने के नाते, हमारे आचार्यों ने उसे सर्वश प्रकाशक कहा है, मुनिवरों! अब एक दूसरे के लोक, एक दूसरे के आधीन बने हुए हैं। सूर्य मण्डल के आधीन लगभग मुनिवरों! देखो, सहस्रों नही, तो बेटा! लाखो मण्डल इस सूर्य के आधीन हैं, और यहाँ कोई मण्डल मुनिवरों! बृहस्पति के आधीन होंगे, यहाँ कोई मण्डल ध्रुव के आधीन होंगे, परन्तु एक दूसरे की आकर्षण शक्ति से संसार स्थिर हो रहा है , कितने लोक हैं प्रभु के सृष्टि में, कितने मण्डल हैं, और मुनिवरों! कितने आरुणि इत्यादि लोक कहे जाते हैं एक दूसरे से मिलान नही होता , बेटा! **एक दूसरे की छाया दूसरी छाया में नहीं प्रकाशित होती। यह कैसी अनुपमता है** प्रभु की रचना की। बेटा! सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है। चन्द्रमा अपने प्रकाश को लिए हुए होता है, परन्तु चन्द्रमा की सूर्य की किरणों का मिलान होता है , पूर्णिमा के दिवस, परन्तु यह इतने ऊँचे ऊँचे लोक, एक दूसरे से मिलान यदि कर जाएं, तो बेटा! इनका संघर्ष हो जाएगा। परन्तु वह जो मेरा अनुपम प्रभु हैं, वह जो संसार का रचयिता अनुपम देव है , उसकी ऐसी महान विचित्रता है , कि एक दूसरे से इनका मिलान नही होता। और यदि इनका मिलान हो जाएं , तो बेटा! प्रलय काल हो जाता है। जिस काल में मुनिवरों! **प्रलय काल होता है, प्रलय काल में बेटा! सबसे प्रथम ध्रुव में कम्पनता होती है और ध्रुव के आधीन जितने लोक होते है उनमें कम्पनता होती है।** परन्तु कहीं कहीं हमें ऐसा भी प्राप्त होता है, कि सबसे प्रथम कम्पनता सूर्य के आधीन जितने लोक है, उनमें हुआ करती है। परन्तु ऐसा प्रायः नही माना जाता , ऐसा माना जाता है , क्या सबसे पूर्व देखो , ध्रुव में कम्पनता हुई, उसके पश्चात ध्रुव के आधीन लोक हैं , उनमें कम्पनता होती है।

ओर उनमें जहाँ कम्पनता हुई , उसके पश्चात जितने आधीन रहने वाले , जहाँ उसमें कम्पनता हुई, तो बृहस्पति में कम्पनता प्रारम्भ होने लगती है। बृहस्पति के जितने आधीन हैं, उनमें कम्पनता हुई और यह जब कम्पनता बृहस्पति में है , तो सूर्य में भी कम्पनता हुई , जहाँ सूर्य में कम्पनता हुई , तो वहां सूर्य के आधीन जितने पृथ्वी आदि मंगल लोक है, उनमें कम्पनता होने लगती है, और इन सबमें कम्पनता होती हुई मुनिवरों! देखो, इन्ही से अब मानव मात्र और जितने शरीर धारी प्राणी हैं, वह सब विनाश हो जाते हैं, और वह जितने लोक हैं, परन्तु एक दूसरें में मिलान होता हुआ , मुनिवरों! उनके कण कण हो जाते हैं, इनका एक एक परमाणु हो जाता है। परमाणु हो करके , बेटा! यह जो प्रभु का रचाया हुआ ब्रह्माण्ड है, यह समाप्त हो जाता है। समाप्त हो गया , परन्तु उच्चारण करने का अभिप्रायः बेटा! यह देखो , यह हमारा समाप्त भी हो गया , परन्तु एक दूसरे का लोक इतना सहायक है , एक दूसरे की आकर्षण शक्ति से एक दूसरा लोक क्रियात्मक हो रहा है , जो राहु और केतु **दोनो लोक आपस में इनका मिलान , जहाँ इनकी छाया एक गृह में आ जाती है। उसी समय बेटा! यह जो सूक्ष्म मण्डल होते हैं, उनमें किसी न किसी प्रकार की आपति आना प्रारम्भ हो जाती है।** उसका कारण यह, क्या पृथ्वी पर जितने वायु, अग्नि इत्यादियों का प्रभाव था, परन्तु उनमें उर्ध्वा गति हो जाती है, या मध्यम गति हो जाती है, मुनिवरों! देखो, उनमें किसी न किसी प्रकार की हानि अवश्य हो जाती हैं। बेटा! यह तो आज का हमारा आदेश नही है , परन्तु बेटा! यह तो आज वेद का मन्त्र आज्ञा दे रहा है, बेटा! इस वाक् को पूर्व प्रगट करूंगा , आज तो इतना समय आज्ञा नही दे रहा है। परन्तु हमारा वाक् यह चल रहा था , कि प्रभु ने जो भी कुछ संसार रचाया यह एक दूसरे के आधीन है, और यह कितना सुन्दर, उस प्रभु की रचना, एक दूसरे की रचना एक दूसरे कि आकर्षण शक्ति से बेटा! लोक लोकान्तर क्रियाशील हो रहे हैं , प्रगतिशील हैं। परन्तु इन सबका अधिपति कौन है ? जो इनको नियन्त्रण में चला रहा है , वह कोई सत्ता है , जिसको, हम परमपिता

परमात्मा कहते हैं। ओह! वह मेरा प्रभु कितना अनुपम है। जो इस ब्रह्माण्ड का स्वामी है, परन्तु वाक् यह चल रहा था , कि जब मानव एक दूसरे के आधीन , एक दूसरे का स्नेह, कितना धनिष्ठ है प्रभु की रचना में और जो हम एक प्राणी है, मानव है, यह अपने नियम बनाता है , परन्तु उन्ही नियमों को बना करके उन्हें नष्ट करके अपने को उन्नतिशील बनाता है। मुनिवरों! देखो , उनमें स्नेह, जब यह ज्ञान हो जाता है, कि जब प्रभु एक दूसरे के आधीन लोक लोकान्तर प्रभु ने रचे हैं। हमें भी इसी प्रकार प्रभु के आधीन बन करके चलना है, हमें नम्रता के क्षेत्र में जाना है, हमें उच्चता के क्षेत्र में जाना है, तो मेरे आदि आचार्यजनों! मेरे पूज्यपाद ऋषि मुनियों! उसी समय मानव मात्र का कल्याण हो जाता है , और मानव मात्र वह सतोयुग की वेदी पर विराजमान होने वाला कहा जाता है। परन्तु यहाँ जब यह मानव मानव को भक्षण करने के लिए, प्राणी प्राणी को भक्षण करने के लिए उद्यत हो जाता है, तो वहाँ न तो आत्मिक शान्ति ही प्राप्त होती है , न मानवता रहती है, वह भी अंग भंग हो जा ती है। उसके जीवन की व्यवस्था सब नष्ट हो जाती है। आज का यह हमारा आदेश यह क्या कह रहा था , आज बेटा! मैं संक्षिप्त वाक् प्रगट करने आया हूँ, और संक्षिप्त वाक् यह था, कि हम एक दूसरे के आधीन बने हुए हैं , यदि सूर्य हमें प्रकाश न दे , तो हमारा जीवन नष्ट हो जाएगा, यह विचारो, यदि हम किसी को अपने हृदय में किसी को स्नेह नही देते हैं। प्रदान नहीं कर सकते, तो हमारा जीवन भी इसी प्रकार, हम भी तो किसी के सूर्य हैं, यदि मेरी पवित्र माता, अपने गर्भ से योग्य बालक को उत्पन्न नही कर सकती, तो मानो देखो , वह भी तो अन्धकार में ही विराजमान हैं। पिता यदि अपने गृह में, स्नेह, आनन्द से, प्रीति से न रहेगा, तो यह भी उसका पिता का एक अन्धकार है। परन्तु देखो , एक दूसरे का भार एक दूसरे पर है, इसी लिए हमें विचारना है, जैसे हमें सूर्य का प्रकाश न मिले , तो हमारा जीवन नष्ट हो जाता है। ऐसे यदि हम भी किसी से स्नेह, प्रीति, मानवता, यौगिकता, नहीं प्रदान करेंगे, तो हमारा जीवन भी इसी प्रकार नष्ट हो जाएगा।

तो बेटा! यह आदेश आज का हमारा समाप्त होने जा रहा है , आज के हमारे आदेशों का अभिप्रायः यह क्या प्रभु ने जो कुछ रचा है, यह बड़ा विचित्र है, यहाँ हम नास्तिक नही, हम तो बेटा! आस्तिकवादी हैं और आस्तिकता की चर्चा प्रगट किया करते हैं , आज का यह आदेश अब समाप्त होने जा रहा है , कल समय मिलेगा, तो बेटा! शेष चर्चाएं, मैं कल प्रगट करूंगा।

पूज्य महानन्द जीः प्रभु! आदेश तो आपका बहुत ही सुन्दर , परन्तु समय बहुत सूक्ष्म देने लगे।

पूज्यपाद गुरूदेवः चलो, बेटा! इससे द्वितीय काल में अधिक दिया जाएगा।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद गुरूदेवः तो मुनिवरों! आज का यह आदेश हमारा समाप्त होने जा रहा है। आज के आदेशों का अभिप्रायः ये, कि मानव मात्र को अपना विकास करना है, प्रभु की सृष्टि में , पशु नही बनना, पक्षी नही बनना, मानव बनना है, और मानव बनोगे जब , जब प्रभु की सर्वत्र सृष्टि का ज्ञान , प्रभु की रचना का ज्ञान, प्रभु के ऊपर हमारी आस्था, श्रद्धा हो जाएगी। हम अपने जीवन में श्रद्धालु बन जाते हैं, तो हमारे जीवन का कल्याण हो जाता है , यह है आज के हमारे आदेशों का अभिप्रायः आज का यह आदेश समाप्त हो गया , कल समय मिलेगा। कल शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। ओ३म् भगा वाचान् वरु प्रजा माम् देवं मा नाः। ओ३म् सर्वाणि गृणा वाचो मना कासु मधिना का रथि वरुणो प्रायणं देवं दधिमा वेतु मयाः।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन्! आज्ञा।

पूज्यपाद गुरूदेवः आनन्द मंगलम भवति। आर्य समाज जंग पुरा नई दिल्ली

२ 31 10 1965 दीपावली आहार, व्यवहार और विचार ऊँचा होना चाहिए

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पुनः की भांति, कुछ वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे , आज की हमारी ये पवित्र वेद वाणी , हमारा हृदय, परमात्मा का अनुपम ब्रह्माण्ड है, यह इतनी पवित्रता में परणित है, परन्तु जब, परमात्मा मानव के जितना निकट है , परन्तु दृष्टिगोचर नही आता। वह प्रभु कितना विचित्र है, और मानव की दृष्टि कितनी विचित्र बन चुकी है, जो कि आत्मा और परमात्मा का बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है, वही आत्मा हमारे इस शरीर में, परन्तु प्रभु के दर्शनों का अभिलाषी है , दृष्टिगोचर नही आता है वह प्रभु, ये प्रभु ने कितने सुन्दर नेत्र रचे , कितनी सुन्दर वाणी, कितना सुन्दर यह गृह है। परन्तु प्रभु, इनसे कितना दूरी और कितना निकट है , कितनी विचित्रता है, उस प्रभु की महिमा में। बेटा! आत्मा, परमात्मा कितने घनिष्ट हैं। परन्तु इस शरीर में आने के पश्चात, प्रतीत नही होता, वह प्रभु कितना दूरी चला जाता है हमसे, यदि हम गम्भीरता से, विचार विनिमय करते हैं, तो वह प्रभु हमारे बहुत निकट भी है, परन्तु यहाँ हमारे नेत्रों में ऐसी स्थूलता आ जाती है , क्या हम सूक्ष्म वस्तु को दृष्टिपात नही कर सकते , उनके लिए बेटा! सूक्ष्म तन्तुओं को जानने के लिए , हमारे नेत्रों में यह दर्पण है , जिससे परमात्मा को दृष्टिपात किया जाता है , जिसको सूक्ष्म से सूक्ष्म परमाणु को जाना जाता है, इन नेत्रों को बेटा! शनै शनै, हमें जल के द्वारा, जैसे मुनिवरों! पाप शुद्ध होता है, इसी प्रकार ज्ञान रूपी जल के द्वारा, इन नेत्रों की दृष्टि को सूक्ष्म बनाना होता है क्योंकि इसमें प्रकृति के आवेश आने ही है।

ज्ञान का स्वरूप

बेटा! मैं आगे का विषय तो कल ही वर्णन करूंगा , महानन्द जी की एक प्रेरणा मुझे आज प्राप्त होती चली जा रही है, परन्तु विषय, तो बहुत ही सुन्दरता से, आज स्मरण आ रहा था , इसको सूक्ष्म सा और आगे ले जाना चाहता हूँ। मुनिवरों! ये नेत्र हमें शुद्ध बनाने होंगे, घ्राण हमें ऊँची बनानी होगी, परन्तु इनको

ऊँचा बनाने के लिए, हमें एक वस्तु की आवश्यकता है, और वह क्या है? ज्ञान। ज्ञान किसे कहते हैं? परन्तु ज्ञान का अभिप्रायः यह नही है , कि हम पोथी की पोथियों को एकत्रित करले, उनका स्वाध्याय करते रहें, तो उनसे ज्ञान प्राप्त हों। मेरा अभिप्रायः यह भी नही की, उन्हें न स्वाध्याय किया जाए। परन्तु ज्ञान किसे कहते है? वह बहुत सूक्ष्म सा शब्द है, जिसे कहते हैं ज्ञान। परन्तु ज्ञान कहाँ है? और क्या है? वेदों की पोथी में भी ज्ञान है। परन्तु आरण्य संहिताओं में भी ज्ञान है, परन्तु ज्ञान के ऊपर आचरण करना तो ध्यान है, नहीं तो लेखनी बद्ध की है, ऋषि मुनियों ने। यदि उनको अपने जीवन में धारण किया जाएं, जीवन में धारण करने से ही हमारी सूक्ष्म और तीव्र बुद्धि बनती है। अन्यथा स्वाध्याय करते रहो, दूसरों को घृणा की दृष्टि से पान करते रहो , उसको ज्ञान नही कहते, ज्ञान किसे कहते हैं? बेटा! महर्षि पतंजलि और मुनिवरों! महर्षि जमदग्नि का एक शब्द है , एक समय महर्षि जमदग्नि से उनके पुत्र ने एक प्रश्न किया, उन्होंने कहा हे पिता! ज्ञान किसे कहते हैं? तो जमदग्नि ने कहा कि ज्ञान शब्द एक बिन्दु है , और वह हमारे शरीर में भी एक बिन्दु है , जिसे प्रकाश कहते हैं, उस प्रकाश को जानने का नाम ज्ञान कहलाता है। इसका अर्थ क्या हुआ, ज्ञान, ज्ञान भी कहते हैं, परन्तु उसी के आश्रित हो करके जमदग्नि ने यह कहा क्या मैने तो स्वयं इतना ही जाना है, ज्ञान तो बहुत ही सूक्ष्म है। मेरे आदि आचार्यों जनों! हमें संसार में पवित्रता लाने के लिए, उच्चता लाने के लिए, उस ज्ञान को प्राप्त करना है, जिससे हमारे जीवन में हम धारण करते चले जाएं, उसी का नाम ज्ञान कहलाता है।

दीपावली

आओ, अब हम महानन्द जी के वाक्यों पर चले जाएं , आज उनकी प्रेरणा हमें, इन्होंने हमें द्वितीय काल में भी प्रश्न किया , वह इनके मनों की भावना , कल्पना थी, इन्होंने कुछ प्रभु के विषय में , अपनी इच्छाएं प्रगट की , मुनिवरों! दीपावली और भगवान कृष्ण में जो गोर्वधन इत्यादियों का पालन किया, आज मैं बेटा! ऋषि मुनियों के वाक्यों पर ले जाना चाहता हूँ। इस वाक् को, हमारे यहाँ

दीपावली का एक पर्व होता है , इसे महाभारत के काल से पूर्व, इसे दीप कहा जाता था, दीप आवली मानो दीपावली भी कहा जाता था , किन्हीं किन्ही स्थानों में, दीपावली का अभिप्रायः क्या था? जो सर्व भूमण्डल में दीपावली का पर्व मनाया जाता है, आज तो प्रतीत नही कहाँ कहाँ मनाया जाता है , पातालपुरी में क्या, नाना राष्ट्रों में दीपावली को , राजा, महाराजा सभी इसका स्वागत किया करते थे। दीपावली का अभिप्रायः यह है , जिसमें प्रकाश को लिया जाता है। भगवान राम से पूर्व, इसका कुछ और रूप था, भगवान राम से पूर्व इसका यह रूप था कि हमारे यहाँ दो पर्व माने जाते हैं, एक होली का पर्व होता है, होलका का पर्व, एक दीपावली पर्व होता है। इसमें लक्ष्मी का अवतरण भी होता है। परन्तु वह कृषि करने वाले जन , अब शरद ऋतु में , पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना की जाती है, पृथ्वी के गर्भ में पृथ्वी की स्थापना की, तो वह किसी काल में यह नही विचारता, कि इसका कितना फल प्राप्त किया, वह जब इस पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना कर दे ने के पश्चात, प्रभु से याचना की जाती है बेटा! क्या उसमे पुरोहित जन , आचार्य जन प्रत्येक गृह में आओ , या वाणिक आओ, ऊँची ऊँची वनस्पतियों को एकत्रित करो , और सामग्री बनाओ , परन्तु वेदों के साम वेदाः, जो उपासना काण्ड है , उस उपासना काण्ड की उपासना करो यज्ञ और सामग्री के द्वारा देवताओं की, कहा क्यों? क्योंकि कृषि करने वाले वैश्य जन सब, जो भूमि में बीज स्थापित, स्थापित किया जाता था, स्थापित, उसमें से कुछ भाग को ले लिया जाता है और उस भाग को ले करके उस की सबकी सामग्री बनाई जाती है। वनस्पतियों को सबको एकत्रित करके , सुन्दर सामग्री बना करके यज्ञ किया जाता है, प्रभु से याचना की जाती है, हे प्रभु! हमने जो पृथ्वी के गर्भ में, जो भी अन्न इत्यादि इसके गर्भ में स्थापित कर दिया है बीज, यह हमारे लिए सुन्दर हो, यह हमारे राष्ट्र के लिए , मानवतव के लिए लाभदायक हो , मुनिवरों! यह सुन्दर रूपों से उपासना की जाती है। मानव वैश्य जन सब यज्ञशाला के निकट विराजमान होते हैं, पुरोहित जन, राष्ट्र गृहणी मेरे राष्ट्र में अन्न हो , जिससे

मेरे राष्ट्र में अन्न की सूक्ष्मता न रहे। जब राजा , राष्ट्र गृहणी, उनकी पत्नी, उनके प्यारे पुत्र, पौत्र इत्यादि सब एकत्रित हो करके, यज्ञन करते थे राजा के भाव, वह पुरोहित, भ्रमण प्राणी अति आहार अस्तुते राजनाः वह पुरोहित उसके अन्तःकरण में ध्यान करने वाले, ज्ञान का भरण कर देते थे। परन्तु देखो, दीपावली आई, तो उस तक आप कोई भी अशुद्ध कार्य न करो, यज्ञ करते रहो, मुनिवरों! देखो, यह हमारे यहाँ प्राचीन एक संस्कृति का प्रतीक है। आज मैं उस ऋषि प्राचीन मुनियों की परिपाटी को ले करके , जब हम चलते हैं। तो हमारा हृदय गद गद होने लगता है। हमारे हृदय में एक मानवता प्रायः आती है , एक नवीन जीवन आता है, इस ग्रीष्म ऋतु में, क्योंकि यह ग्रीष्म ऋतु हमें अमृत देती है, हमे अमृत देती है, स्वास्थ्य को सुन्दर बनाती है।

पूज्य महानन्द जी इसको ग्रीष्म ऋतु ही क्यों कहते हैं?

कृषि की पवित्रता

पूज्यपाद गुरुदेव परन्तु वाक् यह अपने अपने गृहों में उपासना पति सहित , पत्नी सहित, विराजमान हो करके परमात्मा की उपासना करनी है। हे परमात्मन्! हमारे कृषि को पवित्र बना, हमारी कृषि लाभदायक हो, इसमें किसी प्रकार का ऐसा परमाणु या किसी प्रकार का ऐसा स्वांग न छूए , जिससे यह नष्ट हो जाए। मुनिवरों! देखो, यह उपासना की जाती थी , इसके उपरान्त मानो यज्ञशाला में विराजमान हो करके, अनुसन्धान किया जाता था। अनुसन्धान किया जाता है, कि हमें अब इस कृषि को उपज करने के लिए , क्या क्या साधन जुटाने हैं , हमें पृथ्वी में इसके गर्भ में, बीज तो स्थापित कर दिया, अब इस पृथ्वी के लिए कौन सा खान पान होना चाहिए? जिससे इसके गर्भ में जो कृषि उत्पन्न हो वह महान और विशाल हो, ऊँची हो, और अधिक हो।

कृषक की भूमि का खान पान

मुनिवरों! उसके लिए उसी का प्रतीक हमारे यहाँ, परम्परागतों से उसके

पश्चात अनुसन्धान किया जाता , अनुसन्धान करके यह विचार विनिमय किया जाता, उसके लिए, ऊँचे से ऊँचा उसका खान पान होना चाहिए पृथ्वी का , वास्तव में पृथ्वी का खान पान क्या होता है? पृथ्वी का खान पान , समय के अनूकुल उसको जल की वृष्टि, समय के अनूकुल, उसको मुनिवरों! देखो, उसको गो का, मुनिवरों! गो अश्विनी मानो देखो, जो गो, खा करके, निगलकर, आहार के लेती है, चाट लेती है, उसको हमारे यहाँ खाद्याम् ग्रणा अस्ति आपांचात किया जाता है। उसको (गोबर को) संग्रह, संचित्त करने के पश्चात मानो उसको पृथ्वी में भू में स्थापित किया जाता है, जिससे मुनिवरों! देखो, पृथ्वी उत्तम अन्न उत्पन्न हो, और अधिक से अधिक हो , राष्ट्र में अन्न की सूक्ष्मता न रहे। मुनिवरों! अब अनुसन्धान करके और एक समारोह मनाया जाता है। सभी विद्वानों का, बुद्धिमान, वैज्ञानिकों का, निर्णय करो, कि पृथ्वी के लिए कौन सा अन्न देखो , अन्न को उपज करने के लिए , हमारे लिए कौन सी पृथ्वी के लिए , खान पान होना चाहिए।

पवित्र संतान

जैसा मुनिवरों! मेरी पवित्र माता, जब गर्भस्ति हम जैसे पुत्र, माता के गर्भ में होते हैं, तो माता के लिए हमारे बुद्धिमानों ने सुशील ऊँचा और स्वस्थ बालक को उत्पन्न करने के लिए, बुद्धिमानों ने एक चुनौती दी, और यह चुनौती दी कि माता को गर्भवती होने के , पश्चात क्या आहार, कौन सा आहार , पाना चाहिए देखो, जिससे उससे गर्भ से सुन्दर बालक उत्पन्न हो। मुनिवरों! देखो , उन्होंने कहा आचार्यों का, वेदों और संहिताओं में जो वर्णन होता है, वह बड़ा विशेष और सुन्दर माना जाता है। ऋषि मुनियों ने कहा भई! देखो, उनके लिए, सबसे विशेष गो दुग्ध होना चाहिए। यह गो दुग्ध मुनिवरों! गो का दुग्ध , घृत को दूहने के पश्चात, माता के गर्भ से विशाल बालक का जन्म लेता है , उसका स्वास्थ्य भी सुन्दर होता है , मुनिवरों! और भी जितने बालक होते हैं , उनको पाना ही मुनिवरों! देखो, सुन्दर और सुशील गृह में जन्म लेता है। इसी प्रकार आवृत्तियों

में पृथ्वी की तुलना की है , कि जैसे गो दुग्ध को पान करने से , हमारा श्वास ऊँचा होता है, तो गो का, अप्रे अस्ता त्यागा हुआ जो मल होता है। जो गोबर होता है उसको पृथ्वी की में स्थापित करने से अन्न उपज अधिक होता है। मुनिवरों! जो हमारे बुद्धिमानों ने दो प्रकार की उपज हमारे यहाँ होती है , एक उपज मेरी पवित्र माता , जिसको हम शकुन्तका कहते हैं। शकुन्तका वास्तव में श्री, लक्ष्मी का नाम भी शकुन्तका कहा जाता है, परन्तु उस मेरी पवित्र माता का नाम भी शकुन्तका है। जो बेटा! शास्त्र, दर्शनों के अनूकुल, अपने गर्भ से प्यारे पुत्र को जन्म देने वाली होती है। उसको भी हमारे आचार्यों ने आदरणीय, जैसे पृथ्वी को माता कहा जाता है , ऐसे ही उस गर्भा णि को माता की दृष्टि से पान किया जाता है। क्योंकि उसकी उपज होती है , बुद्धिमानों की उपज होती है , मुनिवरों! माताओं को उन पुत्रों की उपज नही करनी चाहिए , जिसका पृथ्वी पर आ करके एक भार बन जाए।

जीवन में पुरूषार्थ

वह देखो, मुनिवरों! भगवान कृष्ण ने भी कहा है , क्या, जो अयोग्य मनुष्य होता है, जो अपने जीवन में पुरूषार्थ करना नही चाहता, केवल कर्म की कसौटी पर, अपने जीवन को निर्भर करना जानता है , वह कोई मनुष्य नही होता , उस मनुष्य का भार होता है, इस पृथ्वी पर। अपने जीवन में जो मनुष्य पुरूषार्थी नही होता, आलस्य होता है, प्रमादी होता है, मानो उसके द्वारा त्याग और तपस्या नही होती, उस मनुष्य का इस पृथ्वी पर भार होता है। उन मनुष्यों को संसार में जीवन धारण करने का अधिकर नही होता उन मनुष्यों को। मेरे आचार्यों ने ऐसा ही कहा है, मुनिवरों! इसी प्रकार मेरी पवित्र माता को हमारे प्राचीन काल में जब भगवान राम से पूर्व का काल था , महाराजा सूर्य वंश से ऊँचा जो काल था , परन्तु उसमें ऋषि मुनियों की एक परिपाटी चली आई और वह यह परिपाटी थी, गृह गृह में पुरोहितपने का कार्य करना , परन्तु उन मेरी पवित्र माताओं को ऊँचा ऊँचा उपदेश दे करके, उनसे ऋषि बालक जन्म लेते। परन्तु जमदग्नि जैसे और

भी मुनिवरों! देखो, यहाँ महर्षि ध्रुन्द्री, जैसे नेत्रों का हीन भी कोई पुत्र हो ता, तो वह भी मुनिवरों! देखो , उसके हृदय में , माता विद्या का भरण कर देती , और माता उस विद्या का भरण करने के पश्चात , वह माता का ऋणी बालक कहलाता था। ऋणी बालक मुनिवरों! वह ऋणी होता है, और जो अयोग्य बालक होता है, जो उत्पन्न होता है, माता के गर्भ से, वह अयोग्य हो, तो जानो, माता का जीवन भी व्यर्थ और उसका पृथ्वी पर भार होता है।

गो दुग्ध

मेरे आदि आचार्यों जनों यह ऊँचा बालक कैसे उत्पन्न होता है ? जब मुनिवरों! माता गो दुग्ध का पान करती है, जैसे पृथ्वी में गो के मल को स्थापित करके, उससे शुद्ध और भूमि में उपज उत्पन्न की जाती है अधिक, इसी प्रकार गो दुग्ध के पान करने से अधिक ऊँचा बालक, बुद्धिमान बालक जन्म लेता है। हमारे यहाँ परम्परा से मुनिवरों! देखो, आज से नही, ये परिपाटी ऋषि मुनियों के काल से चली आई। भगवान विष्णु इत्यादियों ने इस परिपाटी को निर्णय किया।

विष्णु उपाधि

हमारे यहाँ सबसे पूर्व भगवान मनु जी के कथनानुसार , सबसे पूर्व यहाँ विष्णु उपाधि मानी जाती है विष्णु उपाधि जो सबसे प्रथम राजा , उसी का नाम विष्णु कहलाता था। मुनिवरों! यह मनु जी से पूर्व एक परिपाटी थी , भगवान मनु जी से पूर्व यह परिपाटी थी क्या , राष्ट्र तो होता नही , सेना नही होती थी , मुनिवरों! वहाँ और भी राष्ट्र के अधिपति नही होते , परन्तु क्या होता था , कि विष्णु राष्ट्र होता था। विष्णु राष्ट्र क्या होता है? विष्णु से कोई भयभीत तो होता नही था, उसमें केवल कर्तव्य की प्रणाली की शिक्षा थी, कर्तव्य प्रणाली की शिक्षा को, मुनिवरों! देखो, सब आचरण करने वाले, उसको हमारे यहाँ विष्णु राष्ट्र अहा, भगवान मनु जी से पूर्व यह था।

लक्ष्मी पूजन

भगवान मनु जी ने आगे चलकर राष्ट्र की प्रणाली को, मैं पूर्व उच्चारण भी कर चुका हूँ। आज तो केवल हमारे यहाँ महाराजा विष्णु ने यह परिपाटी संसार में निर्मित की, क्या लक्ष्मी का पूजन करो , कौन सी लक्ष्मी का पूजन करो? लक्ष्मी कहते हैं, हमारे यहाँ प्रकृति का नाम भी लक्ष्मी कहलाता है , प्रकृति का नाम लक्ष्मी कहलाता है, इस प्रकृति की भी पूजा करो , क्योंकि इस प्रकृति से हमारा यह शरीर बना हुआ है, यह प्रकृति से बना हुआ है, हमारे नेत्रों में, जो भी निर्णित किए हुए यन्त्र है, वह सब प्रकृति के धातुओं से बनते हैं। यह सब प्रकृति से उत्पन्न होते हैं, मानो देखो, अणु और महा अणु भी प्रकृति से उत्पन्न होते हैं, तो उसका पूजन करो, तो हमारे यहाँ दीपावली और दीपावली को हमारे यहाँ देखो, उसका पूजन होता है। इसका परम्परागतों के अनूकुल हमारे यहाँ लक्ष्मी का पूजन किया जाता है, लक्ष्मी के पूजन का अभिप्रायः यह कि इसका पूजन करो, आज से हमें निर्णय करना है , दीपावली के दिवस यह जैसे प्रकृति जो कुछ हमें प्रकाश प्रतीत हो रहा है। यह भौतिक प्रकाश यह सब प्रकृति का प्रकाश है। जैसे प्रकृति हमें प्रकाशित तत्वों हमारे मानव शरीर में ओत प्रोत किए हैं, आज हमें उन तत्त्वों को जानना , उसी पर अनुसन्धान करना है। उसी से हमें अपने जीवन को ऊँचा बनाना है , लक्ष्मी का अभिप्रायः यह, कि आज हमें वह प्रयत्न करना चाहिए, आज प्रभु की याचना करते हुए, लक्ष्मी का पूजन करो कि हम लक्ष्मी का दुरूपयोग नही करेंगे, लक्ष्मी राष्ट्र नायक होती है, राष्ट्रनायक कौन होती है? लक्ष्मी होती है। जिस राजा के राष्ट्र में लक्ष्मी नही होती, उस राजा का राष्ट्र भी नही होता, मानो राजा के राष्ट्र में लक्ष्मी होनी चाहिए। अब लक्ष्मी का पूजन होना चाहिए, प्रत्येक गृह में, प्रत्येक मेरे माता पिता क्यों इसका अभिप्रायः यह कि बिना लक्ष्मी के हमारा कार्य नही चलता। बिना लक्ष्मी के हमारे जीवन का लक्ष्य पूरा नही होता, हम दान नही कर सकते, हम यज्ञ नही कर सकते, मानो संसार का जितना भी कार्य है, हम उच्चारण नही कर सकते, हम नेत्रों से दृष्टिपात नही कर सकते, मुनिवरों! हम अपने श्रोत्रों से कोई वाक् श्रवण नही कर

सकते, यह सब प्रकृति का, लक्ष्मी का एक चमत्कार कहलाता है। इस चमत्कार की हमें पूजा करनी है, परन्तु इसको हमें अच्छी प्रकार पूजन करना है, मुनिवरों! पूजन क्यों किया जाता है? आज हम हमारे द्वारा यह प्रश्न आता है कि पूजन करने का अभिप्रायः यह नही , हम आठो भुजों को एकत्रित करें , उसके आगे प्रार्थना, इसका यह अभिप्रायः नहीं है हमें नियम बनाना है कि हमें इस लक्ष्मी का दुरूपयोग नही करना है , हमें कही दुरूपयोग नही करना है , हमें दुराचारों में लक्ष्मी को प्रयोग नही करना है। हमें वैदिक प्रचारों में, हमें यज्ञ कर्मों में परमात्मा की प्रार्थना में ब्राह्मणों के सत्कार में बुद्धिमानों के और जहाँ भी हमारे लिए अधिक से अधिक कल्याण होता हो, हमें वहाँ लक्ष्मी को वहाँ लगाना है। वहीं से प्रयोग में लाना है। आज के दिवस मुनिवरों! देखो , इसका एक नियम बनाया जाता है, इसके भाग बनाए जाते हैं लक्ष्मी के , जो भी लक्ष्मी गृह में होती है , उसके भाग बनाए जाते हैं , कितनी लक्ष्मी मुझे परोपकार कार्य में लगानी है , कितनी लक्ष्मी मुझे अपने व्यापार में परिणत करनी है , कितनी लक्ष्मी मुझे राष्ट्र के लिए अर्पित करनी है। इतनी लक्ष्मी मुझे पृथ्वी के लिए अर्पित करनी है। क्योंकि जिससे पृथ्वी में अन्न उत्पन्न हो। तो मुनिवरों! देखो , यह सब कुछ हमारे लिए लाभदायक कहलाता है।

आधुनिक काल लक्ष्मी का दुरूपयोग महानन्द जी

पूज्य महानन्द जीः गुरुदेव! आधुनिक काल में तो लक्ष्मी का कुछ और ही किया जाता है। आधुनिक काल में तो भगवन! आज के दिवस क्या , कल के दिवस क्या भगवन! इस लक्ष्मी का ऐसा दुरूपयोग क्या, भगवन! आधुनिक काल में उसे जुए की दृष्टि से कहा जाता है, और भी शब्द आधुनिक काल में प्रचलित है, मैं तो उनको शिक्षित नही कहा करता हूँ, परन्तु आधुनिक काल में वो शिक्षित कहते है, उनको आधुनिक काल में थलेश कहते हैं , यह तो प्रभु! इसको अच्छी प्रकार नही ज्ञान कराया जाता , परन्तु उसको और ही कुछ उच्चारण किया जाता है, तो लक्ष्मी का आधुनिक काल में इसका नियम बनाने के पश्चात इसका

दुरूपयोग किया जाता है।

दीपावली का पर्व

पूज्यपाद गुरूदेवः अच्छा बेटा! तो मुनिवरों! अभी अभी मेरे प्यारे! महानन्द जी कुछ मूर्खों वाली वाक् प्रगट कर रहे थे , परन्तु इससे मुझे अधिक प्रयोजन नही, केवल अपने विचार प्रगट करूं , मुनिवरों! हमारे यहाँ प्राचीन प्रणाली , जो प्राचीन प्रणाली है, परन्तु वह इस प्रकार चली आई , आज हमें उस प्रणाली को अपनाना है जो प्रणाली हमारे ऋषि मुनियों की नियुक्त की हुई है , वह विशेष कहलाई जाती है, परन्तु आज हम उस प्रणाली को अपनाते चले जाएं , जिससे हमारी दीपावली, हमारे जीवन में, एक पवित्र ज्योति जलती रहे , पवित्र ज्योति जो हमारे जीवन में जलते रहेगी , तो हम दीपावली का पर्व मनाने के अधिकारी कहलाएंगे। जिसका अभिप्रायः यह नही, कि यह दीपावली यह किसी एक राष्ट्र में अपनाई जाती हो, यह दीपावली प्रत्येक राजाओं के राष्ट्र में अपनाई जाती। इसके उपलक्ष्य में सभी कुछ हम अपने अपने जीवन में कुछ न कुछ शिक्षा प्राप्त करते हैं, मानो कृषि करने वाले वैश्य जन यज्ञ करते हैं और यज्ञ करते हैं , क्यों? क्योंकि देखो, इस दिवस यह पर्व इसीलिए मनाया जाता है , क्या कृषि, भूमि के गर्भ में हम अन्न की स्थापना कर देते हैं। इस में बीज की स्थापना कर देते हैं , और देखो, सबसे निवृत हो करके अब प्रभु से याचना करते हैं, प्रभु! जो पृथ्वी में अन्न स्थापित किया है, यह हमारे लिए लाभदायक हो, राष्ट्र के लिए, ऐसी अनुपम कृपा करो, समय समय पर वृष्टि करो , समय समय पर बुद्धिमानों की अनेक याचनाएं बेटा! कोई महत्वों के द्वारा परम पवित्र पुनीत अवसर और पुनीत दिवस का निर्माण किया जाता है। हमारे यहाँ यह केवल एक पुनीत में निर्माण होता रहता है।

गोर्वधन

आज मैं उस दिवस पर आ पंहुचा , जैसा महानन्द जी मुझे कुछ वाक् भी

प्रगट करने हैं, आज वह दिवस है, जब भगवान कृष्णा ने देखो, गोर्वधन की पूजा की, गोबर एक धन कहलाया जाता है , गोबर एक गो का मल कहलाया जाता है, उसको गोवर्धन कहते हैं। धन का अभिप्रायः है इससे हम कृषि में अधिक से अधिक प्रतिस्थापित करने से , इससे धन उत्पन्न होता है , मानो आज भगवान कृष्णा ने इस उपलक्ष्य में, आज के दिवस मानो देखो, इन्द्र को भी निमंत्रणा। इन्द्र ने कहा देखो, वहाँ इन्द्र की पूजा होती थी, गोर्वधन पर देखो, वह एक स्थान भी है, मानो जो वृन्दावन के रास्ते भगवान कृष्णा के जहाँ जन्म भूमि परन्तु उसी के द्वार पर मानो देखो, वह एक स्थान गोर्वधन, जहाँ इन्द्र की पूजा होती है। इन्द्र की पूजा होती है।

गऊओं की पूजा

मुनिवरों! इन्द्र की पूजा हुआ करती थी , भगवान कृष्णा से पूर्व , इन्द्र की पूजा जब इन्होंने बेटा! सब मानो देखो, गऊंओं को एकत्रित किया, और गऊंओं की पूजा की गई , गोर्वधन पर वृन्दावन के मानो देखो , सभी उस पर्वत पर आ पंहुचें, और वहां एक सुन्दर गऊओं की पूजा होने लगी। गऊंओं के चरणों को, भगवान कृष्णा का यह कार्य रहता था, कि भगवान कृष्णा प्रत्येक गऊं के दुग्ध को पान करते थे, मानो एक एक रूप में , उनके दुग्ध को पान करते, उन्हें निर्णित किया करते थे, क्योंकि भगवान कृष्णा अपने जीवन में एक बहुत ऊँचे वैज्ञानिक और अपने जीवन में अनुसन्धान करना उनका कार्य था यह। सबसे पूर्व उन्होंने यही अनुसन्धान किया, अपने राष्ट्र में अपने समाज में , प्रजा में हमें सबसे यह पूर्व विचारना है कि हमारे राष्ट्र के लिए, हमारे जीवन के लिए, स्वास्थ्य के लिए, सबसे ऊँची वस्तु क्या है ? सबसे ऊँची वस्तु यदि कोई संसार में , गृहस्थी के आश्रम में विचारने के लिए तो अपने स्वास्थ्य के लिए है, जिस गृहस्थ में, जिस राजा के राष्ट्र में स्वास्थ्य ऊँचा होता है, स्वस्थ व्यक्ति होते हैं, वहाँ प्रशंसा होती है। भगवान कृष्णा ने सबसे पूर्व यह कार्य किया, तो गोवर्धन पर एक उन्होंने एक समाज एकत्रित किया, उस समाज में गऊंओं को एकत्रित किया , भगवान कृष्णा

का यह आदेश था , कि भई! पूजन करो , किसका पूजन करो ? गोर्वधन का गऊओं की पूजा करो । गऊओं की पूजा करने से आज हमारा स्वास्थ, हमारी मानवता, इससे ऊँची बनेगी, इसीलिए गऊओं का पूजन किया गया। मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्ण ने सबसे पूर्व देखो, गऊओं का पूजन किया।

पूज्य महानन्द जीः गुरुदेव! आधुनिक काल में गऊओं का पूजन किया जाता है।

भगवान कृष्ण की गो सेवा

पूज्यपाद गुरूदेवः अरे, भई! तुम सुनों, जो वाक् उच्चारण हुआ उसको सुनों, श्रवण करो। तो मुनिवरों! ब्रह्मामे कस्मासि गो अस्वानि मुनिवरों! गऊओं का पूजन करने से हमें यह सब कुछ प्राप्त हो जाएगा , एक वस्तु प्राप्त नही होती , आज वह वस्तु प्राप्त होती है , उससे मुनिवरों! गऊओं का दुग्ध पीने से , हमारे जीवन में एक बुद्धिमानता आती है, श्वास ऊँचा होता है और गऊओं के दुग्ध के पान करने पर हमारे शरीर में जो नाना प्रकार के जो रूग्ण हो जाते हैं वह भी नष्ट हो जाते हैं। नष्ट हो जाने के पश्चात अहा, देखो, उससे हमारा स्वास्थ्य ऊँचा बनता चला जाता है और वह कलिष्ट भोजन करने से मानव का स्वास्थ्य अंग भंग हो जाता है, अंग भंग हो जाने के पश्चात मुनिवरों! सबसे पूर्व यह विशेषता है, गऊ के दुग्ध पान करने में क्या मानव के जीवन में सदाचार की भावना आती है। प्रत्येक मानव प्रत्येक देव कन्या के द्वारा दुराचार की भावना न आ करके सदाचार की भावना आती है। क्योंकि गऊ के दुग्ध में , वह परमाणु होते हैं, वह स्नेह होता है, जिस स्नेह से देखो, जो स्नेह गऊओं में होता है। अहा, बेटा! देखो, गऊओं में, कितना भी क्रोध हो, परन्तु उस क्रोध में जब भी उन्हें एकत्रित होने का समय मिलेगा, तभी वह एकत्रित हो जाते हैं। इसी प्रकार उनमें कितना स्नेह होता है, ऐसे ही मानव मात्र में भी, इसी प्रकार का स्नेह हो जाता है। मेरे आदि आचार्यों जनों! मेरे पवित्र भोले ऋषि मण्डल! उस भगवान कृष्ण की चर्चा प्रगट कर रहे हैं। जिन्होंने बेटा! गऊओं की पूजा की। हमारे यहाँ भगवान कृष्ण से पूर्व

भी देखो, गऊओं की पूजा होती चली आई , गऊओं की पूजा आज से नही , परन्तु परम्परा से होती चली आई है। मुनिवरों! देखो, सर्वत्र संसार में गऊओं की पूजा की जाती है, उसके दुग्ध को पान किया जाता है, घृत को पान किया जाता है, उसी में यज्ञ किया जाता है। देवता जन प्रसन्न होते हैं , वह समय समय पर मुनिवरों! देखो, मानव को स्वास्थ्य देते रहते हैं।

गोवर्धन पूजन

पूज्य महानन्द जीः गुरुदेव! हमने ऐसा सुना है , जैसे आपने गोवर्धन का अभी अभी वर्णन किया है जब इन्द्र की पूजा नही होती थी , इन्द्र ने वृष्टि की और भगवान कृष्ण ने गोवर्धन के पर्वत को ऊँचा अपने से ऊँचा उठाया था और वृन्दावन के जितने प्राणी थे सब उसकी छाया में चले गएं।

परमात्मा के नियम के अनुकूल कर्म

पूज्यपाद गुरूदेवः बेटा! यह इसका अभिप्रायः नही है, कि इन्द्र ने वृष्टि की, तो पर्वत को उन्होंने ऊँचा कर लिया, इसका अभिप्रायः तो यह भी हो सकता है, क्या ऊँचा स्थान था, वृष्टि अधिक हुई और गोर्वधन के ऊपर बसने चले गएं, यह भी हो सकता है। परन्तु यह नही, कि प्रकृति के नियम के विरूद्ध माना जाता है, परन्तु भगवान कृष्ण परमात्मा के उस परमानन्द के बहुत निकट थे , बहुत निकट होने के पश्चात, जो जिसके निकट होता है , वह प्रकृति के विपरीत कोई कार्य नही करता, भगवान ने जो नियम बनाएं हैं, उनके विपरीत कोई कार्य नही करता, विपरीत कौन जाता है। जो बेटा! देखो , परमात्मा से दूरी हो जाता है , और जो परमात्मा के जितना भी निकट होता है। उतना ही वह प्रकृति के नियम को अंग भंग नही करता , परमात्मा के नियम को नष्ट नही करता , वह उसके अनुकूल कार्य करता चला जाता है, स्वतः होता रहता है।

मेरे पवित्र आचार्यों जनों! मेरे प्यारे! महानन्द जी यह नही, परन्तु उनसे यह मान लेना चाहिए कि गोवर्धन से देखो, भगवान कृष्ण ने गऊओं की पूजा कराई।

वहाँ इन्द्र की पूजा भी होती थी , परन्तु इन्द्र की पूजा को उसने शान्त कराया , क्या इन्द्र की पूजा इन्द्र के राष्ट्र में होनी चाहिए? परन्तु इन्द्र ने उन्हें कष्ट देने का प्रयत्न भी किया, मानो देखो, बकासुर इत्यादियों ने उनको कष्ट देना प्रारम्भ किया। भगवान कृष्णा ने अपने प्रकरण से , उनकी एकता से , उनकी मानव मात्र की सहायता से, छाया से, उसकी सेना को नष्ट किया , नष्ट करने के पश्चात , परन्तु यह हुआ। आज हमें देखो, इन्द्र हम किसे कहते है? आज हम देखो, इन्द्र केवल उसको नहीं कहते , जो सब राजाओं का राजा , परन्तु देखो, हम परमात्मा को इन्द्र कहा करते हैं। यहाँ इन्द्र यदि एक राजा को लिया जाए , तो वह वृष्टि क्या कराएगा, परन्तु देखो, वह अणु और परमाणुओं से वृष्टि करा भी सकता है , यह भी हो सकता है कि बहुत से यन्त्र ऐसे होते हैं , जो प्रकृति से निकासे जाते हैं। अनुसन्धान करने के पश्चात कि वह अन्तरिक्ष में उनका प्रहार करने के पश्चात , जल के द्वारा देखो, जलों का उत्थान हो जाता है। उस से वृष्टि भी हो सकती है , परन्तु वह यन्त्र प्रकृति की नाना धातुओं से निकासा जाता है। मेरे आदि ऋषि मुनियों! इसको तुम प्रत्येक जानता होगा , कि भगवान कृष्णा की उस क्रिया को जाना करते थे , इन्द्र भी उस प्रक्रिया को जानते थे , परन्तु इन्द्र ने यह कराया , यह हो सकता है, परन्तु इन्द्र ने ऐसा किया नही था , यह अतिता यह मानव की एक कल्पना है । एक गोर्वधन को ऊँचा ले जाने के लिए , एक मानव की एक कल्पना है। यह एक श्रद्धांजलि और एक श्रद्धा का एक पाठ है। परन्तु यह इससे अधिक श्रद्धा से उसका वास्तविक वाक् का अंग भंग हो जाता है। गोर्वधन की पूजा करने से मुनिवरों! देखो , भगवान कृष्णा ने अपने जीवन का उत्थान किया , अपनी प्रजा को ऊँचा बनाया है। मानो देखो , भगवान कृष्णा के यहाँ एक कार्य और भी होता था , नन्द की जितनी भी शोभा थी , मानो देखो, गऊओं का सब घृत सब राजा कंस के द्वारा चला जाता था राजा कंस के द्वारा जाता था , भगवान कृष्णा जो भी देवी उन्हें प्राप्त होती, जो भी माताएं उन्हें घृत ले जाती प्राप्त होती, उन्हें दृष्टिपात होती, उनसे छीन लेते और कहा करते कि यह कंस पापी है,

तुम घृत को स्वयं पान करो, मानो देखो, भगवान कृष्ण ने यह कितने ऊँचे ऊँचे कार्य किए, उन्होंने कहा कि कंस इतना दुराचारी है, कि वह दूसरों के अधिकार को लेना चाहता है। संसार में उस व्यक्ति को नष्ट कर दो, जो दूसरों के अधिकार को छीनना चाहता है, दूसरे के अधिकार को छीनना यह मानवता नही कहलाई जाती है। इसीलिए हे मेरी पवित्र माताओं! हे मेरे पवित्र भद्र जनों! संसार में उस व्यक्ति को अपने द्वार पर न आने दो, जो दूसरे के अधिकार को छीनने वाला हो, उसे अपने अधिकार के, उसे अपने जीवन का, अपने द्रव्य का, अपनी लक्ष्मी का स्वयं देखो, उसे उसका अधिकार, उसका दायित्व बना रहे। इसीलिए आज मुनिवरों! देखो, भगवान कृष्ण का एक एक शब्दार्थ बडा महत्वपूर्ण है, हमें उन्हीं के आदेशों पर चलना चाहिए। क्योंकि उनका आदेश आर्यतव में परणित कहलाया जाता है। उन्हें आर्य प्रणाली को, आर्य परम्परा को ऊँचा बनाने में, अपने जीवन को समाप्त किया, अपने जीवन को सर्वत्र देखो, संसार में समृद्ध उनका जीवन व्यतीत होता रहा।

गणेश का पूजन

मुनिवरों! आज यहाँ दीपावली को, केवल गोवर्धन का ही पूजन नही होता है, गणेश का पूजन भी होता है, गणेश का अभिप्रायः यह है, जहाँ लक्ष्मी का, जहाँ प्रकृति का, जहाँ, गऊ का पूजन किया जाता है, वहाँ परमपिता परमात्मा का पूजन भी किया जाता है। मुनिवरों! गणेश का पूजन क्यों किया जाता है? गणां ब्रह्मे अस्ति गणा मुनिवरों! देखो, जो गणों का स्वामी हो, गण संसार में प्रजा कहलाती है, उनका स्वामी गणपति कहलाता है। आज मुनिवरों! देखो, हमें गणपति की पूजा करनी है, जिस गणपति के पूजा करने से, हमारे हृदय में स्नेह आता है, हमारे हृदय में मधुरता आती है, हमारे हृदय में कर्तव्य की भावना आती है, हमारे हृदय में राष्ट्रीय भावना आती है। मानो देखो, यह सब भगवान की पूजा करने से प्राप्त होती है। क्योंकि परमपिता परमात्मा ने संसार को एक राष्ट्र रूप को निर्माणि किया है। इसका वाक् तो मैं कल ही प्रगट कर सकूंगा अच्छी प्रकार

से, परन्तु आज का आदेश तो केवल यह उच्चारण करता चला जा रहा है। क्या हमें गणपति की उपासना करनी चाहिए। गणपति का पूजन करना चाहिए , हमारे यहाँ मुनिवरों! देखो, गणपति राजा को भी कहा जाता है। राजा का भी पूजन करना चाहिए, क्योंकि राजा का पूजन क्यों किया जाता है ? राजा के पूजन का अभिप्रायः यह नही , क्या उसके चरणों को छूआ जाए , राजा के पूजन का अभिप्रायः यह है, क्या हम उसके प्रत्येक स्था नों से, बुद्धिमानों से, माताओं से और मेरी पुत्र पुत्रियों से राजा को यह प्रेरणा देनी चाहिए, राजा के हृदय में, क्या हे राजन! मेरी पौत्र माता को तो यह अधिकार देने चाहिए , कि वह हमारा अधिपति है, तू गणेश है, तू राजा है, हमारे श्रृङ्गार की तू रक्षा कर। पुत्रियों को राष्ट्र के द्वारा, राजा को यह संदेश देना चाहिए। हे देव! हे राजन! तू हमारा राजा है, और हमारे जीवन का उपकार वास्तव में तो परमात्मा के ऊपर है, परन्तु कुछ तुम्हारे द्वारा भी है। इसीलिए हमारे विधाता , हमारे जीवन में जो भी मानवता आए, उसका चुनौती आप लेते रहें। मुनिवरों! देखो, यह सब मानव के लिए ही, क्या संसार के राष्ट्र की रक्षा, राष्ट्र के नियम, राष्ट्र के जो भी कुछ अवृत्ति होते हैं, वह सब आपके भुजों में इन्हे अच्छी प्रकार बनाते रहो, यह सब मुनिवरों! देखो, एक प्रजा का कर्तव्य होता है, तो इसी परमात्मा की उपासना करना, गणेश जी की उपासना करना, महर्षियों ने महानन्द जी ने एक समय ऐसा वर्णन किया कि गणेश जी तो महाराज शिव के पुत्र कहलाते हैं, और जिनके द्वारा एक हाथी का एक बहुत बड़ा मुख उनके अनुसार परणित किया जाता है। मेरे आदि आचार्यों जनों! महानन्द जी ने मुझे एक समय ऐसा प्रगट कराया, परन्तु इसके साथ साथ मैं यह वाक् प्रगट करता चला जाऊं, कि देखो, गणेश जी का ऐसा नही, परन्तु गणेश जी महाराज शिव के पुत्र भी थे। परन्तु यहाँ गणेश जी भगवान को कहा जाता है, जो हाथी इतना विशाल होता है, इतने विशाल शरीर वाला होता है, मानो देखो, वह कितने ही अन्नों को , कितने ही वनस्पतियों को अपने उदर में ओत प्रोत कर लेता है, उसी से उसका जीवन सञ्चार होता है, इसी प्रकार हमारे

यहाँ परमात्मा के द्वारा देखो , यह सर्वत्र भूमण्डल होने के नाते , यह सर्वत्र भूमण्डल उसका है। नाना प्रकार के लोक लोकान्तर हैं, यह सब देखो, परमात्मा के गर्भ में परणित हो रहे हैं, सब प्रकाशित हो रहे हैं, उसी की प्रेरणा, उसी का पाठ, उसी के मुनिवरों! एक एक, कण कण में परमात्मा के गणेश के व्यापक होने के नाते, उन सबका अधिपति होने के नाते अहा , उसका देखो, इतना विशाल मस्तिष्क भी है। उसका इतना विशाल उदर भी है , मानो देखो, वह सबको अपने में परणित कर देता है, मुनिवरों! प्रलय काल में भी सबको निगल जाता है। अपने गर्भ में, अपने उदर में सबको परणित कर लेता है , मुनिवरों! उसका इतना विशाल उदर है , इतना विशाल उसका मुखारबिन्द है , मुनिवरों! देखो, जिससे परमात्मा को हमारे यहाँ गणेश जी कहा जाता है। गणेशा ब्रह्मणे जो गणों का स्वामी हो, गणों का स्वामी हो मानो देखो, नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों का स्वामी हो, उसको हमारे यहाँ गणपति की चुनौती दी जाती है। अहा, भगवान शिव के पुत्र का नाम भी गणेश जी है , ऐसा अभिप्रायः यह नही कि किसी के पुत्र का नाम गणेश जी हो , तो परमात्मा को गणेश जी नही कह सकेंगे। अहा, मुनिवरों! देखो, जहाँ हम भगवान को गणेश जी कहा जाता है , किसी के पुत्र का नाम भी गणेश उच्चारण कर सकते हैं। क्योंकि वह तो एक गौणिक नामों से परणित किया जाता है।

मेरे आदि आचार्यों जनों ! आज मैं यह चर्चा कर रहा था , कि आज दीपावली के पर्व में और गो की पूजा करने के दिवस से हमें भगवान कृष्णा और हमें अपनी परम्परा को विचारना है। जो संसार में देखो, परम्परावादी संस्कृति को नही विचारता, आह, उसका जीवन एक भार रूप में माना जाता है, संसार में आलसी और प्रमादी बन करके अपने जीवन को हमें व्यर्थ नही करना है। परन्तु देखो, आज हमें सभी वाक्यों पर विचार करना होगा , जैसे हम भूमि की रक्षा करते हैं, मुनिवरों! इसी प्रकार मेरी जो पवित्र माता है, जिसके गर्भ से हम जैसे पुत्रों का जन्म होता है , भगवान कृष्णा, भगवान राम, महाराज शिव मुनिवरों!

देखो, अनेकों अनेक महान विभूतियों का जन्म होता है। जैसा मुनिवरों! देखो, यहाँ ऋषि मुनियों का जमदग्नि , जैसे महर्षि पारा, महर्षि लोमश, महर्षि कणाद, आदित्य ऋषि महाराज, महर्षि अंगिरा इत्यादि आचार्य ऋषि जन हुए, यह सब मेरी पवित्र माताओं के गर्भ से जन्म लेते हैं। जिनके बड़े सौभाग्य होते हैं , जिनकी त्याग और तपस्या में एक आहुति है , त्याग और तपस्या से मानव की माता की प्रवृत्तियों से, मानव के अन्तःकरण में उनकी भावनाओं से देखो, उससे पुत्रों का जन्म होता है। मुनिवरों! देखो, इससे हमें सभी वाक्यों पर विचार करना है। हमें जब हम प्रत्येक वाक् पर हम अपने परम्परावादी जो हमारी प्राचीन ऋषि मुनियों की प्रणाली है।

आज भगवान राम, भगवान राम देखो, यह वह भी दिवस है, जब भगवान राम, माता सीता और हनुमान मुनिवरों! देखो , लक्ष्मण इत्यादि देखो, लंका को विजय करके अपनी अयोध्या में आ पंहुचे थे , अपनी अयोध्या में आने के पश्चात मानो देखो, मुनिवरों! देखो, जब राजा रावण को विजय किया, विजय करने के पश्चात, लंका का राष्ट्र उनके विधाता विभीषण को लंका का स्वामी बना करके , पुष्प विमान में विराजमान हो करके, अपनी अयोध्या में लौट आए, परन्तु आज का देखो, वह दिवस, आज नही, परन्तु आज को तो वह दिवस है लंका को विजय करके, जब भगवान राम ने माता सीता ने लक्ष्मण ने हनुमान ने विराजमान हो करके देखो , भरत ने इत्यादि शत्रुघ्न ने माताओं के सहित और गुरुजनों के सहित मानो यज्ञ किया। आज वह दिवस है, परन्तु प्रत्येक प्राणी को यह ज्ञान हो गया कि आज भगवान राम लंका को विजय करके आ रहे हैं , उस समय प्रत्येक गृह में जो दीपावली का पर्व जो कृषक देखो , कृषकों के हृदयों के क्रान्ति स्थापित हो चुकी थी , क्या भगवान राम नही आ एंगे, न प्रति क्या होगा, परन्तु जब यह प्रतीत हुआ, वैश्य जनों को भी, राम की विजय हो गई है। लंका से आ गएं हैं, उसी समय अयोध्या में एक प्रकाश, सर्वत्र एक आनन्द के उनके हृदयों में क्या मुनिवरों! देखो, आनन्द के गीत प्रकाशित हो गएं, बेटा! वह लंका

में भी वह पर्व मनाया गया, परम्परा के संस्कृति के अनूकुल मनाया गया, परन्तु रहा देखो, अयोध्या में, भगवान राम, सीता और लक्ष्मण , हनुमान जब वह अयोध्या में आए, तो भरत ने राम के चरणों को छुआ , उन्होंने सीता के चरणों को स्पर्श किया, और उनके स्नेह की उनके प्रेम की कोई सीमा नही थी बेटा! जैसे दीपावली के दिवस मानो अपने गृहों को प्रकाशित करता है , और अपने मनों को प्रकाशित करता है, इसी प्रकार महाराजा भरत और शत्रुघ्न और माताओं का जो हृदय था, वह इतना प्रफुल्लित हो गया, इतना प्रकाशमान हो गया, कि दीपावली और सूर्य का प्रकाश भी उनके आगे अन्धकारमय प्रतीत होता था। मेरे आदि आचार्यों जनों! यह प्रेम का प्रतीक है, यह हमारा आदर का प्रतीक है, भरत ने जब सीता के चरणों को छुआ , उस समय कहा मातेश्वरी! मुझे आपकी बड़ी प्रतीक्षा थी मेरे नेत्र थकित हो गएं, मेरी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म हो गई , आपको दृष्टिपात करते करते, यह बेटा! कितना ऊँचा आदेश था। मेरे उन ऋषि मुनियों का महान विभूतियों का आज मुझे बेटा! ऐसा प्रतीत हो रहा है , जैसे आज अयोध्या में वाक् उच्चारण कर रहे हो बेटा! आज यह आर्यों वाली वाक्यों को हमें पुनः से प्रकाशित करना है। इतना समय हुआ इस प्रतीक से आज हमें इससे कुछ शिक्षा प्राप्त करनी है। जिन शिक्षाओं को ले करके हम आज गऊओं का पालन क्या, दीपावली का पर्व क्या, इनको हम अपने जीवन में धारण करें, और इनको हम अपने जीवन में कुछ न कुछ अच्छाईयों को अपनाते चले जाएं।

मानसिक विचारों का प्रभाव

महर्षि जमदग्नि ने जितनी सूक्ष्मता का परिचय दिया। परन्तु वह एक महान सराहनीय है। जब महर्षि जमदग्नि की पत्नी के विचार देखो, विचारों में एक महान देखो, दूषित क्रान्ति आ गई, दूषित क्रान्ति आ गई, तो अपने पुत्र पर प्रहार कर रहा है, क्यों? क्योंकि उन्होंने कहा कि मैं अपने गृह को , मैं अपने आश्रम को शमशान भूमि नही बनाना चाहता हूँ, मैं इसको ऋषि की भूमि बनाना चाहता हूँ। मुनिवरों! देखो, यह उस ऋषि के विचार हैं, ऋषि के विचार बहुत सूक्ष्म हैं इसी

प्रकार यदि प्रजाओं के विचार एक दूसरें के नष्ट करने वाले हो जाते हैं, और एक दूसरे को नष्ट करना, अपने उदर की पूर्ति हो, दूसरा नष्ट हो जाएं या कुछ हो, इस प्रकार के विचार बन जाते हैं। तो क्या होता है? यह विचार जमदग्नि के कथनानुसार, यह विचार सब अन्तरिक्ष में रमण करते हैं , और जब अन्तरिक्ष में रमण करते हैं, अहा, सूर्य की किरणें आ करके मिलती हैं, जल के परमाणु जाते हैं, अग्नि के तीक्ष्ण परमाणु जाते हैं, वायु का मिलान होता है, उनका जब आपस में देवताओं का, देवताओं का एक समाज एकत्रित होता है , और देवताओं के द्वारा यह मानसिक विचार जाते हैं, देवता इनको सींचते हैं, सींच करके क्या होता है? क्या देवता इनके लिए, इनके विचारों को द्वितीय रूपों में परणित कर देते हैं बेटा!। पहले प्रकृति के आक्रमण होते हैं, तो किसी राष्ट्र में देखो, राष्ट्रीय संग्राम हो रहा है, तो कहीं मुनिवरों! देखो, अकाल पड़ रहे हैं, कहीं वृष्टि नही होती, वृष्टि होती है, तो अनावृष्टि होती है। यह सब देखो , मानव के मानसिक विचारों का आहार और व्यवहार का फल कहलाता है। यह महर्षि जमदग्नि का कथन है, महर्षि जमदग्नि के विचार बेटा! एक महान विचार कहलाए जाते हैं , हमारे ऋषि मुनियों ने महर्षि जमदग्नि को विचारधारा में सबसे अग्रणीय माना है , अग्रणीय माना है, कारण क्या है ? क्या उनके विचार, वह अपनी मानसिकता को ऊँचा बनाने के लिए , अपने सूक्ष्म विचार संसार को देते हैं। उन विचारों का यह परिणाम रहा, क्या उनके वाक् उच्चारण करने का आज हमें पुनः से सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

मेरे आदि आचार्यों जनों मैं केवल यह शब्द उच्चारण कर रहा था , वह यह क्या हमें उन सब वाक्यों के विचार करने का अभिप्रायः यह मानवता और हमारा विचार ऊँचा होना चाहिए , विचित्र से विचित्र होना चाहिए , जिससे मुनिवरों! देवताजनों की गोष्ठी में भी उनके समाज में भी हमारे विचार चलें, हमारी भावना जाए, तो वह हमें विष न दें। दैत्यों में परणित नही करना है। जिससे बेटा! हम देवता बनें और और देवत्ताओं के समाज में पंहुचे, देवता वाले विचार बन करके,

हमारे लिए बेटा! हम अमृत देने वाले बनें , विष न तो किसी को दें अरे, किसी को विष देंगे, तो विष हमें अवश्य प्राप्त होगा , अमृत देंगे, तो परमपिता परमात्मा के इस कल्प वृक्ष के नीचे विराजामन हैं। हम किसी को अमृत देंगे, तो अमृत ही सीचेंगे, विष देंगे तो विष ही सीचेंगे , इसीलिए हमें संसार में क्यों न अमृत देना चाहिए। यह है बेटा! आज का हमारा आदेश , आज का आदेश यह समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा तो मैं शेष भी चर्चाएं कल भी प्रगट कर सकूंगा।

पूज्य महानन्द जीः गुरूदेव! आपका विचार कुछ सुन्दर भी लगा और कुछ असुन्दर भी लगा।

पूज्यपाद गुरूदेवः अरे, क्यों?

पूज्य महानन्द जीः भगवन! हमारे यहाँ प्रश्न का वाक् आता है , आप वहाँ उस वाक् को मिला जाते हैं

पूज्यपाद गुरूदेवः हास्य.. अरे, क्यों

पूज्य महानन्द जीः भगवन! अभी अभी आप से प्रेरणा रूपों में प्रगट किया, कि माँस आहार करना बहुत अनिवार्य है।

पूज्यपाद गुरूदेवः 'बेटा! तुम किया करो, उसमें क्या है, हमें तो इससे कोई विरोध नही, परन्तु हमें तो महान आत्माओं के विचार तुम्हारे समक्ष प्रगट किए और जैसा तुमने बनना है, वैसे बनते चले जाओ।

पूज्य महानन्द जीः भगवन! यह तो हमारे प्रश्नों का कोई उत्तर नही है , हमारे प्रश्नों का एक यही उत्तर तो अवश्य देते चले जाईएं , अभी आप ने कहा अमृत दोगे, तो अमृत प्राप्त होगा।

पूज्यपाद गुरूदेवः हास्य नही महानन्द! यह बेटा! विनोद क्या करने लगे , आज के हमारे आदेशो का जो शीर्षक था , वह यही था कि अपने महान विचारों के लिए हमें अपने आहार और व्यवहार पर अवश्य अनुसन्धान करना चाहिए, तुम बेटा! हर समय विनोद की चर्चा प्रगट करते हो, हम समय विनोद का नही होता, समय मिलेगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर कल दिया जाएगा।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन्! जैसी आज्ञा।

पूज्यपाद गुरूदेवः तो मुनिवरों! आज का यह आदेश समाप्त होने जा रहा है आज के आदेशों का अभिप्रायः क्या हमारा , कि हमें अपने आहार व्यवहार सूक्ष्म सा विचार का, यह हमें सब उत्पन्न करना है , यदि हमें अपने राष्ट्र को , अपनी मातृ भूमि को ऊँचा बनाना है , तो हमें पुनः मानसिकता को उत्पन्न करना है , जिससे हमारे द्वारा स्नेह एक दूसरें में एक दूसरें के विचार से अवगत होते हों, तो हम कर्तव्य की भावनाओं में संलग्न   , राष्ट्रवाद, मानसिकवाद सब हमारे द्वारा परणित हो करके, हम परमपिता परमात्मा की छत्र छाया में पनपते हैं, उसी की छत्र छाया में हम अपने विचार को ऊँचा बनाते चले जाएं   , यह आदेश आज हमारा समाप्त हो गया, कल समय मिलेगा, तो मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का आदेश समाप्त होता गया कल शेष चर्चाएं प्रगट करेंगे अब वेद का पाठ होगा।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन्! आज्ञा

पूज्यपाद गुरूदेवः ‘आनन्द मंगलम भवति

आर्य समाज जंग पुरा नई दिल्ली।

३ 78-92-115 संकल्प शक्ति

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से , जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि वो ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहने वाले हैं, और वह सर्वज्ञ हैं, कोई भी संसार की वस्तु ऐसी नही है। जहां वह परमपिता परमात्मा विद्यमान न हो, पर्वतों की कोई गुफा ऐसी नही, जहां वह परमपिता परमात्मा न हो परन्तु समुद्रों की कोई भी तरंग ऐसी नही है पर्वतों की कोई गुफा ऐसी नही, जहां वे परमपिता परमात्मा विद्यमान न हो, वे सर्वज्ञ हैं और वे एक एक परमाणु में निहित रहने वाले हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती का सदैव वर्णन करते रहे और हमारा ये कर्तव्य है कि हम अपनी प्रतिभा में सदैव रत्त रहें।

विष्णु की याचना

तो आओ, मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र उस माता वसुन्धरा की याचना कर रहा है। जिस माता वसुन्धरा के गर्भस्थल में ये सर्वत्र जगत विद्यमान रहता है ये सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो उसी की आभा में मानो रत्त रहता है तो आओ, मुनिवरों! उस परमपिता परमात्मा की महती प्रायः उसका हम वर्णन करते रहे। आज का हमारा वेदमन्त्र मानो उस विष्णु की याचना कर रहा है जो विष्णु हमारा कल्याण करने वाला है। हमारे यहां वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की प्रायः विवेचना की जाती है और पर्यायवाची शब्दों में विष्णु के नाना पर्यायवाची माने जाते हैं जैसे मुनिवरों! देखो, विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का

है, क्योंकि वह सर्वज्ञ है और विष्णु नाम माता का है और विष्णु नाम सूर्य का है वेद का मन्त्र कहता है कि जहां भी पर्यायवाची शब्द आते हैं, और जहां भी पालना का शब्द है उसी में परिपूर्ण रहता है उसी का नाम विष्णु पर्यायवाची शब्दों में वर्णन किया जाता है।

तो आओ, मुनिवरों! देखो, आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके गुणों का सदैव हम गुणगान गाते रहे, मेरी प्यारी माता विष्णु कहलाती है क्योंकि वे पालना के मूल में विद्यमान रहती है। मेरे पुत्रों! देखो, विष्णु ब्रह्मा वर्णास्सुतम् विष्णुम्मे देवाः यह विष्णु जो कल्याण करने वाली जो देखो, उस माता का नाम विष्णु कहा जाता है, जो मानो सतोगुण के मूल में पालना की जाती है और रजोगुण में मानो देखो, वही एक अनुशासन कहलाता है, जिसकी विवेचना बेटा! मैंने तुम्हे कई कालों में वर्णन की है। आज मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष विवेचना में नही ले जाऊंगा केवल ये कि हमारा जीवन देखो, विष्णु स्वरूप रहना चाहिए। ये पालना करने वाला परमपिता परमात्मा विष्णु है। जो हमारे देवत्व को धारण कर रहा है।

तो आओ, मुनिवरों! देखो, मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें विशेष विवेचना तुम्हे देने नही आया हूं, विचार विनिमय क्या कि हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है। वेदमन्त्रों में बेटा! जहां आजका हमारा वेदमन्त्र कोई एक उदगीत गा रहा है और वेदमन्त्र यह कह रहा है सम्भूति ब्रह्मणा लोकाम् वाचस्वतम् ब्रह्मा वर्णासुति वेद का वाक् कहता है कि मानव जितने भी क्रियाकलाप करता है। नाना प्रकार के अनुष्ठानों में लगा रहता है। जो जितना भी मानो देखो, अनुष्ठानों में लगा रहता है तो उसका एक ही मन्तव्य होता है कि मेरे जीवन में अन्धकार न आ जाए और उसके हृदय में एक आकांक्षा बनी रहती है कि मैं मृत्युञ्जय बन जाऊं। मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए परन्तु वेदमन्त्र इस सम्बन्ध में कहता है मृत्युञ्जम् ब्रह्मा वर्णासुति ब्रह्मा वेद की आख्यिका ये कहती है क्या अन्धकार को विचारना है कि अन्धकार है क्या मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि इस सम्बन्ध में कहत है कि अन्धकारम् भू वर्णम्

अज्ञाना सतप्रव्हा लोकाम् वेद का मन्त्र कहता है कि अज्ञान उसी को कहते हैं, अन्धकार उसी को कहते हैं जहां अज्ञान होता है अज्ञान उसे कहते हैं जो मानव अपनी अन्तरात्मा की वार्त्ता को स्वीकार नही करता जो अपनी अन्तर्हृदय की वार्त्ता को स्वीकार करता है, और अन्तर्हृदय की वार्त्ता को वो बाह्य जगत में क्रियात्मक स्वरूप देता है मानो देखो, वही आत्मा का ज्ञान ही मेरे प्यारे प्रकाश में ले जाता है। मैंने तुम्हे कई कालों में वर्णन किया है। आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ताओं ने मानो अपनी बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ी हैं। उन्होंने बेटा! विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश करते हुए विज्ञान की वार्त्ताओं में जाते हुए मानव को विज्ञान की उद्धबुधता उन्होंने प्रगट की और उन्होंने कहा है कि विज्ञान एक मानवीयतव है। मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण है जहां नाना दार्शनिक विद्यमान हो करके अपनी अपनी वार्त्ता प्रगट करते रहे।

एक दार्शनिक ने कहा ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, एक दार्शनिक भ्रमण करता हुआ एक माता मानो देखो, व्याकुल हो रही है और जब माता मानो व्याकुल हो रही है तो उस दार्शनिक ने कहा हे मातेश्वरी! तू व्याकुल क्यों हो रही है? इसके मूल में क्या है? तो मुनिवरों देखो, माता कहती है मेरा एक पुत्र समाप्त हो गया है मानो देखो, व्याकुल हो रही हूं वह दार्शनिक कहता है हे माता! मैं जानना चाहता हूं कि मानो देखो, अमृतं ब्रव्हे व्रतम् मानो देखो, आत्मा तुम्हारा पुत्र है या शरीर तुम्हारा पुत्र है। तो उस समय वह माता निरुत्तर हो जाती है वह यह जानती है कि आगे वे प्रश्न करेंगें उन्होंने कहा क्या मृतम् ब्रहे मानो देखो, आत्मा को पुत्र कहती है तो आत्मा तो को माता जानती नही और यदि शरीर को पुत्र कहती है शव ज्यों का त्यों निहित रहता है तो विचार आता रहता है दर्शनं ब्रह्मा व्रतम् देवाः बेटा! वेद का ऋषि कहता है आचार्य कहता है हे मातेश्वरी! अन्धकारम् भू वर्णाम् मानो देखो, तुम प्रकाश के लिए गमन करो और देखो, यह आत्मा तेरा पुत्र है, शरीर तेरा पुत्र है एक संकल्प मम् वृत्ति भू वर्णाम् मानो ये संकल्प मात्र ये जगत माना गया है तो मेरे प्यारे! जब वेद के ऋषि ने इस

प्रकार वर्णन किया और वह दार्शनिक अपने में ये विचार रहा है क्या ये संसार का अमृतम् क्या है जिसके ऊपर मानव इतना ग्रत हो रहा है तो मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने वर्णन करते हुए कहा कि ये जो परमात्मा का जगत है ये एक प्रकार का कल्प वृक्ष है। यहां मानव कल्पना करता रहता है और कल्पना मात्र ही मानो देखो उसकी इच्छाएं मानो देखो, पूर्ण होती रहती हैं, वह कल्पना की और वस्तु उसे प्राप्त हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि ये संसार कल्प वृक्ष है और कल्प वृक्ष क्या बेटा! देखो, एक समय ब्रह्मे ये जो यज्ञशाला है, जहां हूत किया जाता है उसको हमारे यहां कल्पवृक्ष कहते हैं, क्योंकि हमारे वेद के ऋषि मुनियों ने याग के सम्बन्ध में बड़े बड़े उद्धृत विचार दिए हैं। मेरे पुत्रों! देखो, अन्तरिक्ष में उड़ाने उड़ने लगे हैं। मुझे एक वाक् स्मरण आ रहा है हमारे यहां वैदिक साहित्य में याग, नाना प्रकार के यागों का वर्णन होता रहा जैसे बेटा! हमारे यहां देखो, अग्निष्टोम याग का वर्णन है और मुनिवरों! देखो, वाजपेयी याग का भी वर्णन आता रहता है जहां उसको याग को विष्णु कहते हैं यज्ञोमयी विष्णु मेरे प्यारे! देखो, याग के स्वरूप में धनुर्याग है, अश्वमेध याग है, गोमेध याग है, मेरे पुत्रों! देखो, और भी नाना प्रकार के जैसे वृष्टि याग, पुत्रेष्टि याग भी कहे जाते हैं। भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का बेटा! हमारे यहां वैदिक साहित्य में वर्णन होता रहता है, मुझे वह काल स्मरण आ रहा है, जिस समय बेटा! देखो, अयोध्या में बेटा! एक पुत्रेष्टि याग हुआ था वे याग मुझे स्मरण है मेरे प्यारे! माता कितनी महान और पवित्र बन सकती है विचार आता रहता है बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता है जब पुत्रेष्टि याग हुआ, तो पुत्रेष्टि याग में मुनिवरों! देखो, राजा दशरथ और उनकी दिव्या ब्रह्मे व्रतम् उनकी देवियों को मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मवर्चोसी का पठन पाठन कराया गया और ब्रह्मवर्चोसी उसे कहते हैं जो ब्रह्म वर्चस्वं ब्रव्हे ब्रह्म को वर्चस कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, योगी जन जब उसका ध्यानावस्थित होते हैं तो वर्चस बन जाते हैं तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है जिस समय याग प्रारम्भ हुआ तो मेरे प्यारे! देखो, अंगिरस

गोत्र में जन्म लेने वाले व्रहेतकेतु महाराज और महर्षि श्रृङ्गी मेरे पुत्रों! देखो, विराजमान हो करके उन्होंने याग किया उन्होंने बेटा! याग में एक चरू बनाया और चरू बना करके एक राजा को प्रदान किया और देवियों को प्रदान किया तो बेटा! देखो, अपने में महानता की गाथा, जब मुनिवरों! देखो, याग सम्पन्न हो गया सम्पन्न हो जाने के पश्चात राजा ने देखो, पुरोहितों को ब्रह्मवेत्ताओं को दक्षिणा प्रदान की और दक्षिणा दी और दक्षिणा देने के पश्चात माता कौशल्या जी ने कहा कि प्रभु! मैं भी कुछ दक्षिणा परणित करना चाहती हूं। उन्होंने कहा कि हे दिव्या! भू वर्णनं तुम क्या दक्षिणा प्रदान करोगी। उन्होंने कहा प्रभु जो आप चाहेंगे वह दक्षिणा देने के लिए तत्पर हूं, उन्होंने कहा तो देवी हमारी इच्छा यह है क्या तुम्हारे गर्भ से ऐसे पुत्र का जन्म होना चाहिए मानो देखो, जो महान तेजस्वी हो, राष्ट्र और समाज को उन्नत बनाने वाला हो और कुरूतियों से मानो दूरी रमण करने वाला ऐसा एक पुत्र चाहिए, जिससे वह समाज ऊँचा बने क्योंकि जब तक राष्ट्रवेत्ता और राजकुमार ऊंचे नहीं होंगे तो यह राष्ट्र कदापि ऊँचा नही बन सकेगा और समाज भी ऊँचा नही बनेगा मेरे प्यारे! उन्होंने दक्षिणा प्रदान कर दी। जब वह प्रदान की तो श्रृङ्गी ने कहा देवी यह सन्तान कैसे प्रकार के विचारों को विचार दे सकती है? इसके मूल में क्या है? उस समय उन्होंने कहा प्रभु! जो आप मुझे शिक्षा देंगें मैं उसी के आधार पर मानो देखो, तुम्हे यह प्रतीत है कि मन की जो उत्पति है वह अन्न के द्वारा होती है। इसीलिए अन्न तुम्हारा पवित्र होना चाहिए। देखो, मुझे स्मरण है एक समय मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में पंहुचा और अश्वपति के राष्ट्र में जा करके जब राजा ने स्वागत किया तो उन्होंने कहा कि प्रभु! आप कुछ अन्न पाईये। उन्होंने कहा कि मैं राष्ट्रीय अन्न को ग्रहण नही करता हूं मैं तपस्वी हूं और देखो, जहां तपस्या का प्रसंग आता है वहां अशुद्ध और राष्ट्रीय अन्न नही होना चाहिए। उन्होंने महाराजा अश्वपति ने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा हे भगवन! मेरे यहां का जो अन्न है मैं स्वयं कला कौशल करता हूं और स्वयं मैं और मेरी देवी मानो देखो, कृषक

अन्न को ग्रहण करते हैं जिस अन्न पर किसी का अधिकार नही होता उस अन्न को ग्रहण करते हैं राष्ट्रीय प्रणाली को ऊर्ध्वा में ले जाने का प्रयास करते हैं, और मानो हमारा जो अन्न है वे कामधेनु गऊ हमारे यहां उस कामधेनु के दुग्ध का आहार करते हैं और हम राष्ट्र के क्रियाकलापों में लगे रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वह स्वीकार कर ली और स्वीकार करके उन्होंने अन्न को ग्रहण किया तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है हे देवी! यदि तुम्हे भी सुयोग्य सन्तान को जन्म देना है तो तुम्हे मानो देखो अन्न को पवित्र बनाना होगा और अन्न जब तक तुम्हारा पवित्र नही होगा तो मन पवित्र नही बनेगा और जब मन पवित्र नही बनेगा तो तुम मानो देखो क्रियाकलापों में अपने में अशुद्ध रह जाओगी। ज्ञान और विज्ञान विवेक उत्पन्न नही होगा मेरे प्यारे! कौशल्या ने कहा प्रभु! जैसे आपकी आज्ञा है मैं वैसा ही कर पाऊंगी क्योंकि जब मैं बाल्यकाल में अपने पूज्य गुरूदेव तत्त्व मुनि के द्वारा अध्ययन करती थी तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे यह निर्णय कराया क्या यदि तुम गृह आश्रम में प्रवेश करोगी तो गृह आश्रम में जाने से पूर्व तुम्हारा मन पवित्र होना चाहिए। क्योंकि रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण ये तीन गुण मानव के कहलाते हैं। परन्तु माता सबसे प्रथम तमोगुण में जाती है, तमोगुण में उत्पति का मूल रहता है और जब रजोगुण में जाती है तो वहां अनुशासन रहता है। क्योंकि वाणी पर तुम्हारा अनुशासन होना चाहिए तुम्हारा अन्न के द्वारा भी अनुशासन होना चाहिए उसके पश्चात सतोगुण आता है, माता लोरियों का पान कराती रहती है, लोरियों के पूर्व विचारों में दर्शनों का अध्ययन करती है। जब वह दर्शनों का अध्ययन करती हुई जब आत्मा की चर्चाओं में रत्त हो जाओं आत्मां भू वर्णनं ब्रह्मे कृतम् हे आत्मा! तू मानो मेरे गर्भ में प्रवेश करती रहती है। हे आत्मा! तू कौन कहां से तेरा आगमन हुआ है जो इस प्रकार माता के भव्य विचार होते हैं। तो माता अपने उदर में रहने वाले बाल्य की रक्षा कर रही है, उसे ओजस विचार दे रही है। मेरे प्यारे! देखो, जब माता कौशल्या ने यह उपदेश ऋषि का जब पान कर लिया तो वह अपने में

मानो याग सम्पन्न हो गया। दक्षिणा इत्यादि दे करके याग की प्रतिभा महान बन गई। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है माता कौशल्या देखो, स्वयं कला कौशल करती और स्वयं कला कौशल करके उसके बदले जो अन्न आता उसको ग्रहण करती।

मेरे प्यारे! देखो, राजा को यह प्रतीत हुआ, क्या तुम्हारी राजलक्ष्मी अन्न ग्रहण नही कर रही हैं। वे बेटा! देखो, ये वाक् जब उन्होंने श्रवण किया तो अमृतमं ब्रव्हे तो राजा एक समय गृह में प्रवेश हुए और गृहणी से कहा हे देवी! तुम अन्न ग्रहण नही कर रही हो मेरे प्यारे! माता कौशल्या ने कहा प्रभु मैं ऋषियों को वचन दे दी हूं क्या मैं राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नही करूंगी उन्होंने कहा क्यों नही करोगी? क्या राष्ट्र का जो अन्न होता है, वह रजोगुण व तमोगुण से सना हुआ अन्न होता है और रजोगुणी और तमोगुणी जो अन्न है उसको मैं ग्रहण करना नही चाहती मैं अपने में स्वयं कला कौशल कर लेती हूं। राजा ने कहा देवी हमारा जो अन्न है वह इस प्रकार का नही है उन्होंने कहा तो प्रभु! मैं उसको ग्रहण कर ही नही सकती क्योंकि मैं ये दक्षिणा प्रदान कर दी हूं यज्ञशाला के मध्य में विद्यमान हो करके, मेरे प्यारे! देखो, जब राजा ने बहुत कुछ उद्गीत गाया परन्तु देवी ने स्वीकार नही किया अन्त में राजा देखो, अपने कक्ष में चले गए परन्तु देखो, यह विचारने लगे कि राजलक्ष्मी को तो अन्न तो ग्रहण करना ही चाहिए। मैं कहां कैसे मानो देखो सबृत्तियों को ला सकता हूं। चलो वशिष्ठ मुनि है माता अरूणधती है दोनो महान हैं। ये उनके विचारों को स्वीकार अवश्य कर पायेंगें।

मेरे प्यारे! देखो, वहां से सायं काल के समय अपने वाहन में विद्यमान हो करके राजा गमन करते हैं। और भ्रमण करते हुए वह भयंकर वह में पंहुचे जहां उनका विद्यालय है राजा देखो, अमृतम् राजा जब वशिष्ठ मुनि के यहां पंहुचे तो चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त था मुनिवरों! देखो, माता अरुणधति बोली कि हे प्रभु! ये चन्द्रमा तो अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त है प्रभु! ये हमारा कैसा

सौभाग्य है, आज चन्द्रमा का दिवस है। इसमें कुछ वार्त्ताएं होनी चाहिए। उन्होंने कहा देवी! तुम प्रश्न करो मैं तुम्हारे प्रश्नों का ऊत्तर अवश्य दूंगा। उन्होंने कहा प्रभु ये चन्द्रमा ये क्या है? उन्होंने कहा ये जो चन्द्रमा है यह षोडश कलाओं से युक्त है आज मानो पूर्णिमा का दिवस है जितनी कलाएं हैं वह षोडश कला हैं, चन्द्रमा की उन्ही में ये रत्त रहने वाला है। ये मानो समुद्रों से सोम लेता है। समुद्रों से सोम ले करके और ये मानो रात्रि मानो उसको अमृत बना करके कृषि में प्रदान कर देता है। माता के गर्भस्थल में जो जराजयु होता है, उसमें भी अमृत देने लगता है माता के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है उस नाड़ी में ये प्रकाश जा रहा है उस नाड़ी का समन्वय पुरातत नाम की नाड़ी से होता है, और पुरातत नाम की नाड़ी का जो समन्वय है वह माता की लोरियों से होता है वहां से पश्चम नाड़ी बन करके वह गमन करती है। माता की नाभि से नाड़ी का समन्वय हो करके मेरे प्यारे! देखो, वह जरायुज में हम जैसे शिशु माता के गर्भ में वहां प्रवेश हो रहा है। वह अमृत को प्रदान किया जा रहा है मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णनं ब्रहे देवी ने कहा धन्य है प्रभु! मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! ये अरूणधति मण्डल क्या है? उन्होंने कहा ये जो अरूणधति मण्डल है ये अरूणधती मण्डल है परन्तु उसमें पार्थिव तत्त्व प्रधान रहता है। और इसका समन्वय मानव की बुद्धि से रहता है। मानो ब्रह्मे कृतम् और वशिष्ठ मण्डलाम् मेरे प्यारे! उसके साथ ही वशिष्ठ मण्डल कहलाता है, ये जो वशिष्ठ मण्डल है ये मण्डलों में वशिष्ठ कहलाता है जैसे प्राणियों में देखो, राजा वशिष्ठ होता है। जैसे मुनिवरों! देखो, विद्यालय में आचार्य वशिष्ठ होते हैं। इसी प्रकार देखो, लोक लोकान्तरों में एक वशिष्ठ मण्डल भी मानो अपने में वशिष्ठ कहलाता है। मेरे पुत्रों! लोक लोकान्तरों की चर्चा हो रही थी उन्होंने कहा माता के गर्भस्थल में जब हम पुत्र होते हैं। तो हे देवी! अरूणधती और वशिष्ठ की दोनों की छाया आती है और छाया वह मानो देखो, ब्रह्मरन्ध्र से इसका समन्वय रहता है और वह जो ब्रह्मरन्ध्र से बुद्धि की उत्सुकता होती है, बुद्धि को जन्म दिया

जाता है, हमारे इस मानव शरीर में बुद्धि के बेटा! अनन्य पर्यायवाची माने गए हैं। जैसे बुद्धि है, मेधा है, ऋतम्भरा है और प्रज्ञावी कहलाती है। मानो देखो, इसी को हमारे यहां रेणुका कहा जाता है, उसी को गो कहा जाता है, उसी को निध्यासी कहा जाता है। तो बुद्धि के नाना प्रकार माने गए हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, बुद्धयां भू वर्णनं लोकाम् तो लोक लोकान्तरों की मण्डलों की छाया आती रहती है मेरे प्यारे! देखो, जब माता अरुणधती यह वार्त्ता प्रगट कर रही थी उन्होंने कहा प्रभु! ये जो स्वाति नक्षत्र है, मूल नक्षत्र है, इसका मानव के जीवन में क्या समन्वय रहता है? उन्होंने कहा कि हे देवी! ये जो स्वाति है और देखो, मूल नक्षत्र दोनों की छाया मानो देखो, रेणावृत्तिका एक मण्डल होता है उसमे प्रवेश करती हुई ये माता के हृदय और हृदय से समन्वय होता है, और मानव के मस्तिष्क से समन्वय हो करके मेरे प्यारे! देखो, ये बुद्धि ब्रहाणी कहा जाता है। अब्रहाणी व्रत्तम् ब्रह्मे कृतम् देवा उन्होंने कहा यही तो मण्डल है जो अपने को अपनेपन में पान करा रहा है। ये बुद्धि का सूचक है और ब्रह्मरन्ध्र में मानो देखो, इनका समन्वय रहता है। बेटा! वेदमन्त्र कहता है ब्रह्माण्डाम् भू कृतम् देवत्वं ये जो ब्रह्माण्ड है इसकी आभा जब हम प्रगट करने लगते हैं तो बेटा! लोक लोकान्तर बेटा! हमारे जीवन के सहायक बना करते हैं, और विज्ञानवेत्ता भी इसीलिए परम्परागतों से बेटा! विज्ञान की आभा में सदैव रत्त रहे हैं।

तो ये विचार विनिमय हो रहा था विचार विनिमय करते करते बेटा! उनका रात्रि काल समाप्त हो गया। देखो, माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि महाराज बेटा! अपने में महान है क्योंकि पति पत्नी वह ही महान कहलाते हैं जो बेटा! देखो, वह रात्रि के काल में या सांयकाल को आत्मा परमात्मा या विज्ञान की चर्चाएं करते हैं क्योंकि उनके गृह में रहने वाला जो बाल्य बालिका है ये उनके वाक्यों को श्रवण करके बेटा! गृहपथ्य नाम की अग्नि को जागरूक करते हैं। हमारी अग्नियों का जहां वर्णन आता है नाना प्रकार की अग्नियां कहलाती हैं मेरे प्यारे! देखो, गार्हपथ्य, गृहपथ्य और वैश्वानर और मुनिवरों! आह्वनीय नाम की

अग्नि का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है। इसीलिए अग्नि का चयन करने वाले विचारों की अग्नि में बेटा! जब तल्लीन हो जाते हैं, तो विचारों की अग्नि से बेटा! गृह पवित्र बनते हैं और वह कौन सी अग्नि वह ज्ञान रूपी अग्नि है वह दर्शनों की विचारधारा है जिसको देखो, वह गृहपथ्य नाम की अग्नि कहते हैं, बाल्य बालिका उसी से ऊंचे बनते हैं। तो आज बेटा! मैं आज दूरी नही जाना चाहता हूं विचारों को उद्गीत रूप में गाने के लिए कि माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि महाराज दोनों अपने में विचार विनिमय करते बेटा! प्रातःकाल हो गया, प्रातःकाल हो गया तो दोनों अपने आसन से निवृत्त हो करके मानम् ब्रह्मणो मानो देखो, अपने क्रियाकलापों से निवृत्त हुए और राजा ने उनके दर्शनार्थ किया ऋषि ने कहा कि भगवन! हे राजन्! तुम किस समय पधारे उन्होंने कहा प्रभु! मैं सायं काल आ गया था उस समय तुम्हारा विचार विनिमय हो रहा था और उन विचारों को श्रवण करता हुआ मेरा अन्तरात्मा गद गद हो गया भगवन! हे प्रभु! मैं अमृतम् ब्रहे राजा ने जब ऐसा कहा तो माता अरूणधती और वशिष्ठ बोले क्या तुम्हारा आगमन क्यों हुआ? बिना सूचना के उन्होंने कहा प्रभु! मेरी जो दिव्या है मानो देखो, कौशल्य जी वो राष्ट्र का अन्न नही ग्रहण नही करती हैं। और मेरी इच्छा यह है कि देवी राष्ट्र का अन्न ग्रहण करने लगे तो मानो देखो, मेरा राष्ट्र जो सुशोभित हो, उन्होंने कहा हम प्रयत्न करेंगें। माता अरूणधती और वशिष्ठ मुनि महाराज अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके और वह मानो देखो, याग से निवृत्त हो गए। राजा के वाहन में विद्यमान हो करके बेटा! वह अयोध्या के लिए पधारे। भ्रमण करते हुए दोनों अयोध्या में आये ब्रह्मणो कृत्तम माता अरुणधती और वशिष्ठ दोनों कौशल्या जी के कक्ष में जा पंहुचें माता कौशल्या ने बेटा! आसन दिया और वह आसन पर विद्यमान हो गए जब आसन पर विद्यमान हो गए तो उन्होंने कहा कहो भगवन! आज बिना सूचना के तुम्हारे आने का कारण क्या है? उन्होंने कहा ब्रह्मणो कृतम् देवाः आत्माम् ब्रव्हे मेरे प्यारे! उनका अतिथि किया और अतिथि सेवा करने से उन्होंने कहा कहो भगवन! अब मुझे वर्णन कराईये।

आपका आगमन् आपका कोई सूचना मुझे प्राप्त नही है, क्या अब आपका आगमन हो रहा है। परन्तु देखो, मैं भगवन! आपकी क्या सेवा कर सकती हूं। मेरे प्यारे देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले क्या हे देवी! हम इसीलिए तुम्हारे कक्ष में आ पंहुचें कि तुम राष्ट्र के अन्न को ग्रहण करने लगो। उन्होंने कहा प्रभु! मैं राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नहीं करूंगीं। क्योंकि राष्ट्र का अन्न जो होता है वह रजोगुण व तमोगुण से सना हुआ अन्न होता है। इसीलिए मेरा मन उससे पवित्र नही हो सकेगा। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि संसार में जितने भी शुभ क्रियाकलाप हैं। मानो देखो, वह सर्वत्र अपने मन से शुभ क्रियाओं में रत्त होते हैं। इसीलिए प्रभु! मैं इसको स्वीकार नही कर पाऊंगी। उन्होंने कहा कि हे देवी! हममे तो अमृताम् भू वर्णनं हमारा जो आगमन है उसका एक मूल है ये, तो राजा ने तो बेटा! वहां से प्रस्थान किया और माता अरुणधती और वशिष्ठ मुनि दोनों विचार विनिमय करने लगे उन्होंने कहा देवी! तुम अन्न ग्रहण करो। उन्होंने कहा प्रभु! मैं ग्रहण नही करूंगी। क्योंकि मैंने ऋषि की यज्ञशाला में मैंने एक प्रतिज्ञा की है, और मैं प्रतिज्ञा में उसमें बद्ध होने और यह प्रतिज्ञा की है कि मैं देखो, शुद्ध सन्तान को जन्म देने से पूर्व मेरा अन्न पवित्र हो। मेरा मन पवित्र हो। और मन के पवित्र होने से ही मानो देखो उसकी तरंगे मस्तिष्क होती रहेंगी मस्तिष्क का पवित्र निर्माण होगा। हे प्रभु! मैं इसीलिए राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नही करूंगी। उन्होंने कहा देवम् ब्रह्मा व्रतम् उन्होंने कहा देवी! तुम्हे ग्रहण तो करना ही चाहिए। माता अरुणधती ने जब ऐसा कहा तो देवी बोली कौशल्या जी ने कहा प्रभु! मैंने महर्षि श्रृङ्गी जी के द्वारा यह प्रतिज्ञा की है क्या मैं राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नही करूंगी। हे प्रभु! मैंने यह संकल्प किया है, और ये जो परमात्मा का जगत है ये संकल्प मात्र कहलाता है। मानो देखो, नाना प्रकार के तारा मण्डल है, वो तारा मण्डल एक दूसरे से कटिबद्ध हो रहे हैं। वे संकल्प मात्र से मानो देखो, ब्रह्म सूत्र से पिरोये हुए हैं और ब्रह्म सूत्र मे पिरोने से ये ब्रह्माण्ड अपनी आभा में मानो नृत्त कर रहा है और संकल्पमयी कहलाता है। तो प्रभु! मैंने भी ये संकल्प किया है मैं

अपने संकल्प को नष्ट नही कर सकूंगी। मेरे प्यारे! देखो, माता अरुणधती और वशिष्ठ दोनों मौन हो गए। मेरे प्यारे! देखो, कुछ समय मौन रहने के पश्चात माता अरुणधती और वशिष्ठ ने कहा देवी! हमारा तो आगमन यही है कि हम हमारी यह प्रार्थना है क्या तुम राष्ट्र के अन्न को ग्रहण अवश्य करो। कौशल्या जी ने कहा प्रभु! हे पूज्यपाद! मैं कदापि भी अन्न को ग्रहण नहीं करूंगी क्योंकि मैंने बाल्यकाल में महर्षि तत्त्व मुनि के द्वारा ये प्रतिज्ञा बद्ध हुई क्या मैं देखो, इस राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नही करूंगी अब मैं अपने गर्भ से एक महान पवित्र संतान को जन्म देना चाहती हूं और मानो यदि मेरे अन्तर्हृदय में देखो, दाह बन गया तो वही संस्कार बाल्य में प्रवेश हो जाएगें। यदि प्रभु! मैं क्रोध की आभा को लाई तो मानो देखो, वही तरंगों का जन्म होगा। हे प्रभु! मानो यदि मैं तमोगुण के अन्न को ग्रहण करूंगी तो वह बाल्य उसी तरंगों से वह बाल्य मेरे गर्भ में तरंगित होता रहेगा। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि अपने में निरुत्तर तो हो गया परन्तु देखो, राजा के विचारों का पालन कर रहे थे। माता अरुणधती कहती है कि हे देवी! तुम्हे अन्न अवश्य ग्रहण करना चाहिए। उन्होंने कहा हे मातेश्वरी! मुझे विशेष बाध्य न करो। क्योंकि मैं ये प्रतिष्ठित हूं। और इस प्रतिज्ञा को मैं नष्ट नही करूंगी यदि मेरे हृदय से ऋषि का वाक् यदि समाप्त हो गया, तो मेरा हृदय मानो अशुद्ध हो जाएगा मेरे कर्मणा ब्रह्मणे देवत्वाम् हे मातेश्वरी! तुम महान हो तुम बाल्यों को शिक्षा देती हो, तुम मानो देखो, अपने में अपनेपन को धारण करती हो मुझे वह काल स्मरण है जब तुम देखो, महाराजा विश्वमित्र जब अश्वमेधाम् भू वर्णनम् ब्रव्हे जब अश्वमेध का अध्ययन कर रहे थे। तुमने उनको शिक्षा प्रदान की देखो, विश्वमित्र जैसे महापुरुषों को तुम शिक्षा देने वाली हो मेरे प्यारे! देखो, वह निरूत्तर हो गई। विचार यह ऋषि ने कहा देवी! तुम्हे अन्न ग्रहण अवश्य करना चाहिए। उन्होंने कहा प्रभु! यह परमात्मा का अमूल्य जगत है और यह संकल्पमात्र ही चल रहा है और यह संकल्प में मानो देखो, सूर्य है अपनी आभा में प्रकाश दे रहा है। चन्द्रमा को मानो सहायता दे करके चन्द्रमा अपनी कलाओं से सम्पन्न होता है।

मानो वही सूर्य है जो विष्णु कहलाता है और विष्णु बन करके वह प्रकाश देता है, वही प्रकाशमयी बनाता रहता है। तो हे देवतम्! देखो, जब विष्णु अमृत कहलाता है तो प्रभु! अब्रहे है असुता है वर्णां ब्रव्हे कृतम् देवाः अभ्यम ब्रह्मा अभ्यम् रुद्रो भागा प्रव्हा कृतम् देवम् विष्णु हे मातेश्वरी! हे ऋषिवर! मैं अपने में कटिबद्ध हूं संकल्प में जैसे सूर्य नाना पृथ्वियों को धारण करता रहता है ये भी तो प्रभु का संकल्प है क्या तीस लाख पृथ्वियों को यह अपने में धारण किए रहता है और यह मानो देखो, उसकी माला बना करके ही अपने में मानो देखो, मालामयी कहलाता है। इसी प्रकार हे मातेश्वरी! हे पितर! मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि मैं उस माला को अपने में धारण किए हुए हूं, वह मेरी माला जो है वह प्रतिज्ञाबद्ध है मानो सूत्र में पिरोई हुई है। नाना प्रकार के मनके ही तो माला वह सूत्र बन करके ही मानो देखो, माला के रूप में हमे दृष्टिपात आते रहते हैं। तो इसीलिए मैं तुम्हारे वाक्यों को स्वीकार नहीं कर सकूंगीं मैंने यह प्रतिज्ञा बद्ध हूं जब पुनः ऋषि ने कहा तो उन्होंने कहा हां माताम् सम्ब्रहे हे ऋषिवर! मैं एक समय प्रतिज्ञा को नष्ट कर सकती हूं। यदि आप दोनों देखो, तुम्हारा दोनों का संस्कार हुआ है और यह माता अरुणधती और वशिष्ठ हैं ये तो संकल्पबद्ध हैं मानो पति पत्नी दोनों एक दूसरे में संकल्पबद्ध रहते हैं इसी प्रकार राजा और प्रजा अपने में कटिबद्ध रहते हैं गुरु और शिष्य दोनों एक स्थली पर विद्यमान हो करके विद्या का अध्ययन करते हैं संकल्प मात्र से इसी प्रकार देखो, ये जो जगत है मानो पृथ्वी अपने में गुरुत्व को लिए हुए है अपने में कटिबद्ध है अपने में तत्प्रहा अपने में ही ओत प्रोत हो रही है इसीलिए मैं मानो देखो, अपने संकल्प को नष्ट जब कर सकती हूं। क्या जब तुम दोनों एक दूसरे में पति और पत्नीतव के भाव को त्याग दो, तुम दोनों अपने संकल्पों को नष्ट कर सकोगे तो मैं भी अपने संकल्प को नष्ट कर सकती हूं। अन्यथा यह नही हो सकेगा। तो मेरे प्यारे! देखो, माता अरुणधती और वशिष्ठ दोनों मौन हो गए और दोनों शान्त हो करके बोले ब्रह्मणे कृतम् ब्रह्मणे वेदाम् उन्होंने कहा देवी! तुमने जान लिया ये तो वही वेद का मन्त्र है, जो

मैं अभी अभी वेदमन्त्र का उदगीत गा रहा था और वह वेद का मन्त्र यह कहता है कि जो मानव संकल्प कर लेता है, उसे संकल्प नष्ट होना ऐसा है जैसे मानो देखो प्रलय काल आ जाता है इस प्रलय काल को तुम भी शान्त करो और मानो देखो, उन्होंने दोनों ने एक अवृत्ति हो करके दोनों ने कहा धन्य है तुम्हे देवी! क्या तुमने जो संकल्प किया है ये बड़ा महान है, पवित्र है, माता का संकल्प ही गृह को ऊँचा बनाता है, माता का संकल्प ही मानो देखो, यहां पुत्रों को महान बना देता है और वह गृहपथ्य नाम की अग्नि में परणित हो जाता है मेरे प्यारे! ये उदगीत गाते हुए और वहां से उन्होंने प्रस्थान किया उन्हें नाना प्रकार का आशीष दे करके दोनों वहां से गमन करके मानो देखो, राजा की राजस्थली पर पंहुचें। उन्होंने आसन को त्याग दिया। राजा ने कहा कहो भगवन! उन्होंने कहा सम्भूति ब्रह्मणा वर्णस्सुतप्रव्हा वेद का वाक् ये कहता है कि किसी के संकल्प को नष्ट मत करो ये सर्वत जगत् ही संकल्प है जैसे मानो देखो, एक शब्द है और एक शब्द में मानो देखो दूसरे शब्द को मिलान कर दिया जाता है और तीसरे को मिलान करके मानो देखो, वह शब्द बन जाता है वह ध्वनि बन जाती है उसी शब्द को ले करके जब साधक देखो, अपनी अनहद ध्वनि में जब श्रवण करता है तो वह एक ध्वनि बन करके मेरे प्यारे! मानो देखो, आत्मा की ध्वनि बन जाती है और आत्मा से जो ध्वनि उत्पन्न होती है तरंगों के रूप में वही मेरे प्यारे! देखो, उसी से मन, उसी से प्राणत्व दोनों का मिलान हो करके बेटा! एक विचार उत्पन्न होता है और वही विचार मेरे प्यारे! मानो देखो, मानव को पवित्र बना देता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हे विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूं मैं कोई व्याख्यता नही हूं केवल तुम्हे परिचय देने के लिए आया हूं क्या मानव को मानो देखो, अपने में कितना सुदृढ़ रहना चाहिए। और मानवीयतव अपने में सदैव मानवता की आभा में सदैव रत्त रहता है। आओ, मेरे प्यारे! मैं देखो, तुम्हे त्रेता के काल में ले गया। आज मैं उस काल में ले गया जहां मेरी प्यारी माता अपने

में देखो, माताओं के भव्य गुणों को अपने में धारण करती रही है और ओजस बन करके गृह और देखो, समाज को उन्नत बनाने में मानव की बड़ी सहायता करती है अपने में महानता को प्राप्त होती रहती है। ये है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हमे परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा को जान कर परमात्मा को सर्वत्र स्वीकार करते हुए यहां कोई स्थली ऐसी नही जहां परमपिता परमात्मा न हो माता को हृदय ग्राही बनाने वाला वह परमपिता परमात्मा है इसीलिए यह बेटा! आज का वाक् अब यह सम्पन्न होने जा रहा है, कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें।

४ 13 01 1991 भौतिक याग से आध्यात्मिक याग

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, जो परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, और वह सर्वज्ञ हैं, कोई स्थली ऐसी नही है जहां वह परमपिता परमात्मा न हो, समुद्रों की कोई तरंग ऐसी नही है, जहां वह परमपिता परमात्मा न हो, और पर्वतों की कोई गुफा ऐसी नही, जहां वह परमपिता परमात्मा वास न करते हो, वह सर्वज्ञ हैं एक एक परमाणु में निहित रहने वाले हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को सर्वज्ञ कहते हैं क्योंकि वह हमारे अन्तर्हृदयों में विद्यमान रहता है और हृदय में वह प्रेरणा देता रहता है। तो यह मानव प्रेरणा का स्रोत्र बना हुआ है, प्रेरणा को प्राप्त करता रहता है। और संसार के नाना प्रकार को इस संसार को अपने में निहारता है और इसका निर्माण करता रहता है और नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहता है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को सर्वज्ञ, कोई स्थली ऐसी नही जहां वह देवत्व न हो और प्रेरणा का यह स्रोत्र है प्रेरणा देता रहता है और जितना भी यह जड़ जगत और चैतन्य जगत है वह सर्वत्रता में विद्यमान रहता है और संसार की मानो एक माला बना करके, इस ब्रह्माण्ड की वह माला बना करके वह अपने में धारयामि है। तो वेद का मन्त्र कहता है कि सर्वणां ब्रहे कृतम् देवाः वह परमात्मा मानो व्रहे सर्वज्ञ है और वह मानो देखो, याग उसका आयतन, उसका गृह और उसका सदन है, मानो वह याग में विद्यमान रहता है जितना भी

सुक्रियाकलाप है संसार का वह सर्वत्र एक याग के रूप में परणित रहता है, तो इसीलिए हमे विचार विनिमय करना है अपने विचारों को सु बनाना है और जब मानव अपने विचारों को सु बना लेता है तो याग में परणित हो जाता है मानो याग जहां अग्नि देवताओं का मुख माना गया है और देवताओं के मुख में साकल्य प्रदान किया जाता है अथवा चरू दिया जाता है और अग्नि उसका विभाजन कर देती है। तो मानो देखो, अग्नि देवताओं का मुख कहा जाता है, मानो शरीर में भी बाह्य जगत में भी परन्तु वही अग्नि काष्ठ में रहने वाली है और वह काष्ठं ब्रह्मा वर्णं ब्रहा एक दूसरे से मिलान होते हुए बेटा वह प्रदीप्त हो जाती है तो मानो बेटा! देखो, इस महान याग को अपने में पवित्रतव को धारण करता हुआ, संकल्पोमयी मानो याग में मानव को परणित रहना चाहिए। हम प्रेरणा को प्राप्त करते रहते है और तेजोमयी अग्नि के ऊपर अपनी विचारधारा को परणित करते रहे हैं। तो आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हे विशेष विवेचना देने नही आया हूं। केवल विचार यह कि हमारा यागिक कर्म पवित्र होना चाहिए। जितने भी सु क्रियाकलाप हैं, उन सर्वत्र का नाम एक याग स्वरूप माना गया है कोई भी संसार का सुकर्म हो, परन्तु देखो, जितनी भी सुकर्म से विपरीत हैं, वही अशुद्ध है वही अयास कहे जाते हैं। तो इसीलिए आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहा रहा है यागाम् भवि वर्णम् सुतम् मानव को यागिक बनना चाहिए। क्योंकि याग अपने में बड़ा विचित्रतव माना गया है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने तो बेटा! अपने विचारों में सर्वत्रता का नाम बेटा! याग माना गया है बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में याग के सम्बन्ध में विचार दिए और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का जो मन्तव्य रहा है, वे यागों के ऊपर बड़ा अध्ययन करते रहते थे। वह नाना प्रकार के यागों के ऊपर अध्ययन रहा है। जैसे उनके यहां वाजपेयी याग होता रहा है, अग्निष्टोम याग होते

रहे हैं, वृष्टि याग होता रहा है अजामेध याग होता रहा है अश्वमेध याग होता रहा है। परन्तु देखो, जहां पुत्रेष्टि याग भी होता रहा भिन्न भिन्न प्रकार के यागों में मानव जैसे धनुर्याग का वर्णन आता रहा है। तो भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा है। परन्तु संसार का कोई ऐसा क्रियाकलाप नही है, जो बिना याग के सम्पन्न होता हो याग ही उसमें प्रतिष्ठित रहता है, मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने तपस्या करने के पश्चात और मन को पवित्र बनाने के पश्चात बेटा! देखो, शिलस्थ अन्न को ग्रहण करके याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण किया और उस पोथी में संसार के वर्चस्व यागों का उन्होंने वर्णन किया परन्तु उन्होंने एक कन्या याग का भी वर्णन किया है। कन्या याग अपने में बड़ा विचित्र याग है। मेरे प्यारे! देखो, वाजपेयी यागों में भी जैसे गोमेध याग है, अजामेध याग है। मेरे पुत्रों! देखो, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का हमारे वैदिक साहित्य में वर्णन आता रहता है आज मैं यागों के कर्मकाण्ड में तुम्हे ले जाना नही चाहता हूं। केवल विचार विनिमय ये कि देखो, याग अपनी आभा में परिणत रहा है। आओ, मुनिवरों! देखो, मैंने तुम्हे कई कालों मैं उन विचारों की पुनरूक्तियां तो करता ही रहता हूं। परन्तु आज का हमारा वेद का ऋषि क्या कह रहा है यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! हे भगवन! आप का बड़ा अध्ययन है याग के सम्बन्ध में, और इसके ऊपर आपने तपस्या भी की है क्योंकि तप और अध्ययन जो है यही तो मानव को पवित्र बनाता है। तो इसीलिए तुम्हारा जो अध्ययन है आपके अनुकूल आपका तपस्या का जो चर है, वह वर्चस है वह बड़ा विचित्र है। क्योंकि यज्ञमान को वर्चस कहते हैं और वर्चस उसे कहते हैं जो मानो देखो, अपने जीवन को क्रियात्मक और यागों में परणित

कर देता है जैसे बेटा! मैं कई कालों से तुम्हे याग के ऊपर आध्यात्मिक याग के ऊपर चर्चाएं हमारी हो रही थी इसके पश्चात मैं बेटा! तुम्हे यह वर्णन कराना चाहता हूं जहां ग्यारह होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करता है तो ग्यारह होताओं को वह पवित्र बनाता है उसको वर्चस कहते हैं। जो ग्यारह होताओं के द्वारा प्रत्येक इन्द्रियों के साथ में मन की प्रतिभा निहित होती है तो उसी का नाम वर्चस कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है क्या उसी में मानव को रत्त रहना चाहिए क्या देखो, दस इन्द्रियां ग्यारहवां जो मन है इससे गुथा हुआ है और प्राण की उसमें पुट लग जाती है तो उसमें गतिवान हो जाता है और यदि मुनिवरों! उसमें आत्मा की पुट लग जाती है। तो वह योगेश्वर बन जाता है तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, विचार आता रहता है वेद का ऋषि कहता है नौ होताओं के द्वारा यज्ञमान को याग करना चाहिए। बेटा! नौ होता कौन से होते हैं सबसे प्रथम मेरे प्यारे! जो नेत्र हैं और उसके पश्चात जो घ्राण, और दो श्रोत्र कहलाते हैं मेरे प्यारे! अमृताम श्रोत्राणि गच्छगम् और मुनिवरों! एक मुखारबिन्दु कहलाता है मेरे प्यारे! एक उपस्थ और एक ग्रीव्हा ये नौ द्वार कहे गए हैं इन नौ द्वारों के देवताओं को जानना चाहिए। नौ द्वारों के देवता कौन से हैं बेटा! कहीं विश्वमित्र, कहीं मुनिवरों! देखो, वशिष्ठ विद्यमान है कहीं कश्यप और कहीं अत्रि विद्यमान हैं कहीं रहा श्वेतकेतु और कहीं बृहित और मुनिवरों! देखो, ये सब देवताओं का इसमें वास हो रहा है। कहीं मानो देखो, दूसरे रूप में चन्द्रमा का वास है तो कहीं पृथ्वी का वास है कहीं मेरे प्यारे! उत्तरायण का वास है तो कहीं मुनिवरों! देखो, वह अमृताम् कृष्णाम् भू वर्णम् ब्रव्हे उत्तरायण और देखो, कृष्णाय दोनों को अपने में समावेश कराता रहता है। मेरे प्यारे! दिशाओं से सम्बन्ध है और कहीं अन्तरिक्ष से सम्बन्ध है। और कहीं

मुनिवरों! देखो, पृथ्वी की गन्ध से समन्वय है तो कहीं मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रवृत्तियों में विद्यमान रहता है तो विचार केवल यह कि कहीं चन्द्रमा प्रधान है तो कहीं अग्नि प्रधान है तो मुनिवरों! देखो, ये सर्वत्र देवता अपनी आभा में निहित रहने वाले हैं तो किन्ही का वायु देवता है तो ये नौ द्वार हमारे द्वारा विद्यमान है परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के पिता ने जब सृष्टि का सृजन किया तो मेरे प्यारे! यह मानव के शरीर में नौ प्राणों का व्यवधान किया और यह जो वह नौ द्वार हैं वह नौ देवता हैं नौ ऋषि हैं अत्रि कहते हैं जो अति आहार कर जाता है अति आहार करने वाले को मुनिवरों अत्रि कहते हैं। मेरे प्यारे! विश्वमित्र उसे कहते हैं जो विश्व को मित्र स्वीकार करता है वशिष्ठ उसे कहते हैं जो अपने में प्रतिष्ठित रहता है। मेरे प्यारे! उसे वशिष्ठ कहते हैं, और कश्यप उसे कहते हैं जो कश्यप की भांति मानो धीमा धीमा नेत्रों से वृष्टि अवृत्त करा देता है तो मेरे प्यारे! यह अपने को अपनेपन को ही पान कर रहे हैं। मानो कोई धीमा गति कर रहा है तो ये सर्वत्र हमारे देवता कहलाते हैं इन्ही देवताओं के द्वारा जो नौ द्वारों पर देवता विद्यमान हैं इन सर्वत्र देवताओं को जान करके जो यज्ञमान याग करता है उसका सौभाग्य है वह अपने में सौभाग्यशाली कहलाता है तो मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय होता रहा है यह नौ द्वार हैं नौ द्वारों के द्वारा यज्ञमान को याग करना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, तृतीय अमृतां सप्तम् ब्रव्हे वेदमन्त्र कहता है सप्त होताओं के द्वारा यज्ञमान को याग करना चाहिए। बेटा! सप्त होता कौन से होते हैं मानो दो नेत्र हैं और श्रोत्रम् ब्रव्हे मेरे प्यारे! देखो, श्रोत्र जिनका दिशाओं से समन्वय रहता है वाणी और मुनिवरों! देखो, घ्राण के छिद्र ये सप्त होता कहलाते है यहां सप्तम् ब्रह्मे यज्ञशाला के समीप विद्यमान हो करके इन सब होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करता है लघु मस्तिष्क में वह ब्रह्मरन्ध्र में मुनिवरों! देखो, अपनी

त्रिकुटिका को दृष्टिपात करता रहता है। जहां इंगला, पिंगला, सुषुम्ना का मिलान होता है उसे त्रिवेणी कहते हैं त्रिजटा कहते हैं मेरे प्यारे! आगे चल करके एक कृतिका स्थली आती है उसे मुनिवरों! जहां तीनो नदियों का तीनो नाड़ियों का मिलान होता है वे मस्तिष्क के ऊर्ध्वा भाग में रहता है उसके पश्चात मुनिवरों! ब्रह्मरन्ध्र में उसकी प्रवृत्ति चली जाती है और ब्रह्मरन्ध्र में मुनिवरों ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने लगता है ये जो नाना प्रकार के रूपों वाला जो ये ब्रह्माण्ड है। मेरे पुत्रों! ये जो लोक लोकान्तरों का जो मण्डल है यह साक्षात्कार बेटा! दृष्टिपात होने लगता है क्योंकि ब्रह्मरन्ध्र में एक चक्रिका होती है जब वह मुनिवरों! देखो, प्राण और मन की धुक धुकी से जब उसमें गति होती है तो वह गति मुनिवरों! देखो, लोक लोकान्तरों से मुनिवरों! देखो, उसमें झरना झरने लगता है और वह मुनिवरों! देखो, लोक लोकान्तरों से हमारा मिलान करा देती है बेटा! मैं योग के क्षेत्र में नही जाना चाहता हूं बड़ा गम्भीर विषय है इसके ऊपर बेटा! जब पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान होते थे तो कई समय हो जाते थे महा जो जाते थे चिन्तन करते करते बेटा! आज का विचार मैं गम्भीरता में देना नही चाहता हूं विचार केवल ये कि वह ब्रह्मणा देखो, इंगला, पिंगला और सुषुम्णा नाड़ियों का वर्णन है जहां त्रिवेणी का स्थान है बेटा! घ्राण चक्र और हृदय कण्ठ चक्र और मुनिवरों! नाभि केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र आसुतम् मुनिवरों! देखो, वह अपने में वह अवृत्तियों में रत्त होने लगता है जैसे बेटा! मूलाधार में भी प्राणो की धुक धुकी से संस्कार जागरूक हो जाते हैं तो आओ, बेटा! मैं इन प्राणों के सम्बन्ध में या चक्रों के सम्बन्ध में तुम्हे नही ले जा रहा हूं। केवल विचार विनिमय केवल ये क्या जो ये सप्त होता है सातों के द्वारा हमे याग करना चाहिए मेरे प्यारे! यह याग कहलाता है यह आध्यात्मिक याग है जहां वह अपना सातों जहां देखो, घ्राण का

साकल्य सुगन्ध है और मुनिवरों! देखो, नेत्रों का साकल्य रूप है और श्रोत्रों का साकल्य शब्द है इन सबका एक साकल्य बना करके मुनिवरों देखो, जब वह ब्रह्मरन्ध्र में अपने हूत करता है त्रिव्रतों में हूत कर रहा है त्रिवेणी में हूत कर रहा है और मूलाधार से ले करके प्रत्येक चक्र में बेटा! वह साकल्य प्रदान करता है हूत को प्राप्त होता है बेटा! वह शारीरिक यज्ञशाला का वर्णन आता रहा है। हमारे ऋषि मुनियों में एक ही विशेषता रही है क्या आध्यात्मिक मिलान करते हुए भौतिकवाद को आध्यात्मिक वाद में मिलान करते रहे हैं और उसके ऊपर अध्ययन होता रहा है मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेषता नही केवल विचार क्या ये अमृताम् भू क्या ये सप्त होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करता है मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ये कहता है नौ नमम् ब्रव्हे सप्तमम् ब्रव्हे वर्णम् ब्रव्हा कृतम् मानो देखो, इनके द्वारा यज्ञमान को याग करना ही चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, पुनः वह कहता है क्या ऋषि कहता है याज्ञवल्क्य क्या पञ्च होताओं के द्वारा याग होना चाहिए बेटा! पञ्च होता कौन से मानो देखो, पञ्च होता हैं सबसे प्रथम मेरे प्यारे! गुरुत्व, तरलतव, तेजोमयी और गति अन्तरिक्ष यह मुनिवरों! पञ्च होताओं को जान करके याग करना चाहिए मेरे प्यारे! सबसे प्रथम गुरुतव आता है जिस भी काल में विज्ञानवेत्ता उपस्थित होते हैं विज्ञान का युग आता है। उसी काल में मेरे प्यारे! वह गुरुत्व परमाणु के ऊपर अध्ययन होता रहा है और मुनिवरों! देखो, जब तरलतव के ऊपर उसकी पुठ लगती है। और तरलतव को ले करके तेजोमयी अग्नि का स्वरूप आ जाता है वायु गति देता है अन्तरिक्ष में वो गतिवान होते है तो मुनिवरों! देखो, विचार आता रहता है कि प्रत्येक आभा में रमण करना चाहिए कि हमारा जीवन हमारी प्रतिभा स्वरूप में मानव को कैसा बनना चाहिए। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार विनिमय क्या वेद का ऋषि

कहता है क्या ये जो पञ्च महाभूत है इनके द्वारा इनका साकल्य बनाना चाहिए। बेटा! गुरुत्व को देखो, तरलतव में और तरलतव को मुनिवरों! तेजोमयी में इनका तीन प्रकार का साकल्य बना करके मेरे प्यारे! देखो, गतिवान करा करके अन्तरिक्ष में वो गतिवान होता रहता है। जैसे माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो उस समय बेटा आत्मा जिसको शिशु कहते हैं वह शरीर में प्रवेश, माता के गर्भाशय में जब प्रवेश करता है तो मानो देखो, उस समय अमृतम् देखो, यह गुरुतव तरलतव अमृताम् देखो, वह गुरुतव से स्थूल बनता है तरलतव से मानो देखो, तरलतव और गुरुतव दोनों ही मिल करके और तेज उसको तेजस्वी बनाता है मेरे प्यारे! देखो, मैं अपनी माता से जब ये प्रश्न करता हूं, तो माता इस वाक् को नही जानती, परन्तु विचार विनिमय केवल यह कि शिशु है माता के गर्भ में एक शिशु विद्यमान है हम जैसे शिशु हैं परन्तु देखो, वहां सर्वत्र देवता अपना क्रियाकलाप कर रहे हैं, मेरा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है मैं उसके विज्ञान के ऊपर विचार विनिमय करता हूं तो माता के गर्भाशय में चले जाते हैं मेरे प्यारे! वहां नस नाड़ियों का जो समूह है और वह जो शिशु रहता है उसका पिण्ड बन जाता है तो बेटा! देखो, वह जो तरललतव पदार्थ है उसे जल कहते हैं आपो कहते हैं वही उसका ओढन बन जाता है वही बिछौना है और वही उसके पांशे बन करके उसी में वास कर रहा है वाह रे देव! तू कैसा विज्ञानवेत्ता है मानो देखो, उसी में गमन करता रहता है और वह मानो देखो, आपो के एक ही पांशे अमृतम् अग्नि उष्णा बनाती रहती है चन्द्रमा अमृत देता है सूर्य प्रकाश देता है मेरे पुत्रों! यह कैसा अनुपम समूह है जब विचार आता है कि देव ने कहां कहां समन्वय किया है नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की छाया माता मानो देखो, आहार, व्यवहारों से आ रही है मेरे पुत्रों मस्तिष्क से आ रही है नस नाड़ियों का

समन्वय रहता है यह पुरातत नाम की नाड़ी है मानो चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी का समन्वय पुरातत नाम की नाड़ी से है और पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से है माता की लोरियों से जो नाड़ियां चलती है कोई मानो देखो, तेजोमयी पञ्चम नाड़ी बन करके बाल्य की नाभि का और माता की नाभि का एक ही समन्वय रहता है वहीं से अमृत पाता रहता है वहीं से आपो को प्राप्त करता रहता है तो मेरे प्यारे! माता के गर्भस्थल में उसका निर्माण होता है निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है अन्धकारकूप में निर्माण कर रहा है परन्तु मेरी भोली माता उससे वंचित रहती है निर्माणवेत्ता से तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हे विशेष विवेचना देना नही चाहता हूं केवल विचार विनिमय यह मैं दूरी भी नही जाना चाहता इन विचारों की पुनरुक्ति में नहीं केवल विचार विनिमय यह उन पञ्चम नाड़ियों पञ्च होताओं के द्वारा जब यज्ञमान याग करता है तो बेटा! वह योगेश्वर बन जाता है वह विज्ञानवेत्ता बन जाता है एक अणु और परमाणु का मिलान करने लगता है बेटा! गुरुतव, तरलतव और तेजोमयी तीन प्रकार के परमाणु हैं इन तीन के ऊपर सर्वत्र विज्ञान विद्यमान रहता है, मेरे प्यारे! वायु परमाणुओं को गति देता है, अन्तरिक्ष में गति कर रहे हैं तो मेरे प्यारे! आज मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नही केवल विचार विनिमय यह कि तीन होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करता है। रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण मेरे प्यारे में विष्णु है पालन करने वाला और सतोगुण में विष्णु जो पालन कर रहा है रजोगुण में शिव है मानो जो अनुशासन कर रहा है, तमोगुण में बेटा उत्पति का मूल है मेरे पुत्रों! देखो, माता ने सर्वत्र यह गुण होते हैं मुनिवरों! देखो, वह पालन भी कर रही है जैसे परमपिता परमात्मा पालना के मूल में विद्यमान है वह विष्णु कहलाता है वही अनुशासन की वृत्तियों में रत्त रहने वाला है वही मेरे प्यारे! देखो, उत्पति के

मूल में विद्यमान रहता है तो मुनिवरों! देखो, एक ही सूत्र के तीन मनके हैं वही सतोगुण है, वही रजोगुण है और वही तमोगुण कहलाता है माता की इच्छा प्रगट होती है कि मैं पुत्र यागी बनूं, पिता की भी इच्छा होती है मैं पितर यागी बनूं उग्रता को ले करके उग्रता को समर्पित कर दिया जाता है मेरे प्यारे! देखो, वह तमोगुण कहलाता है तमोगुण यदि मूल में रहता है तो वहां सतोगुण भी विद्यमान है और रजोगुण भी है तीनों गुणों का समावेश बन करके मुनिवरों तमोगुण की उत्पति होती है तमोगुण की वृत्तियों में जागरूकता आ जाती है, उसी के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, रजोगुण है जो अनुशासन कहलाता है मुनिवरों! देखो, उसमें सतोगुण भी विद्यमान है और तमोगुण से तो उसकी रचना हुई है वह तो उसका मूल उसके गर्भ में चला जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, इसमें रत्त रहने वाली जो वृत्तियां हैं तो विचार आता है वही सतोगुण है बेटा! पालना कर रही है माता पालना कर रही है जैसे परमपिता परमात्मा पालना कर रहा है रचयिता है इसी प्रकार माता भी पालना कर रही है पालन ब्रव्हे कृतम् देवत्वाम् ब्रह्मा वह पालना कर रही है विष्णु बन करके विष्णु कहलाता है मेरे पुत्रों! जैसे परमपिता परमात्मा विष्णु है वैसे माता भी विष्णु है माता ही रजोगुण है, क्योंकि वह अनुशासन में लाने वाली है और अनुशासित करती हुई मुनिवरों! सतोगुण में परिवर्तित हो जाती है। तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या जो योगेश्वर परमपिता परमात्मा को पान करना चाहता है उसके आंगन में जाना चाहता है बेटा! यह रजोगुण, तमोगुण इनके साकल्य को बना करके अग्नि के मुखारबिन्दु में, ज्ञान रूपी अग्नि में बेटा! इनका स्वाहा कर दिया जाता है और स्वाहा कह करके मुनिवरों! उनको साकल्य बना करके अपने जीवन को इससे उपराम करके बेटा! मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करने लगता है तो विचार आता रहता है, रजोगुण, तमोगुण

और सतोगुण तीनों को त्यागना होता है और त्याग करके क्योंकि जहां संस्कार बनते हैं वहां देखो, उस वृत्ति को त्याग देना चाहिए, रजोगुण में भी संस्कार बनेंगें, और सतोगुण में भी सत् का अभिमान आयेगा, मेरे प्यारे! देखो, सत् में अभिमान होता नही है परन्तु देखो, यदि क्रियाकलाप के साथ होता है तो कर्त्ता उसे अभिमान होता है मेरे प्यारे! उसे भी त्यागना होगा उसके पश्चात निश्वृत्तियों में रत्त रह करके निष्काम कर्म करना है जिससे बेटा! देखो, कोई संस्कार ही नही उत्पन्न होगा, संस्कार बनेंगें तो जन्म बनेगा और जन्म बनेगा तो मेरे प्यारे! देखो वह संसार का नाना प्रकार का प्रपञ्च होता है। तो विचार आता रहता है ऋषि मुनियों ने कहा क्या मौन हो जाओ, और चिन्तन करो तो उस समय परमपिता परमात्मा का महादेव का करते रहो, रजोगुण, तमोगुण सर्वत्रता को तुम्हे त्यागना होगा तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है अमृताम् ब्रह्मणा वृत्तम् सरचना त्रिवर्धसुतम् मानो देखो, इस रजोगुण, तमोगुण को भी त्यागना है यदि परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना है। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह भी कहा कि दो होताओं के द्वारा याग करता है यज्ञमान दो होता कौन से होते हैं बेटा! देखो, दो होता अमृतम् परमपिता और प्रकृति दोनों ही होते हैं। मेरे प्यारे! मन और प्राण दोनों का समावेश कर दिया जाए एक कहलाता है तो इसीलिए मन और प्राण के द्वारा ही देखो यज्ञमान याग करता है प्राण सूत्र से ही मन को देखो वह स्थिर कर देता है और मानो देखो मन और प्राण का जब दोनों का समावेश होता है तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड को अपने गर्भ में धारण कर लेता है मेरे प्यारे! वह धारयामि बन करके दोनों का एकोकीकरण का नाम मानो दो होताओं का एकोकी रह जाता है वही परमपिता परमात्मा की प्रतिभा रह जाती है मेरे प्यारे! विचार आता रहता हैं मैं विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट नही कर रहा हूं केवल यह विचार तो हमारे

आचार्यों ने पूर्व काल में हमे प्रगट कराए हैं वह हमे स्मरण आते रहते हैं तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, हम अपने में महान बने और यह शृङ्खला जो यागों की होती है यह बड़ी विचित्रता से अपने में धारयामि बनी रहती है तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कहता है क्या नौ होता के द्वारा याग करे सप्त होता के द्वारा और मुनिवरों! देखो, यह संसार पञ्चीकरण में विद्यमान है और त्रिवाद मुनिवरों! देखो, तीन मात्राओं से यह जगत घिरा हुआ है मेरे प्यारे! ओ३म् की तीन मात्रा हैं अ, उ और मैं मानो मैं में प्रकृति है उ में जीवात्मा है, और देखो, ओ में वह ब्रह्म विद्यमान रहता है मेरे पुत्रों! देखो, त्रिवर्धा कहलाता है तीनों गुण है रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण, तीन ही मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड की धारा है। भूर्, भुवः, स्वः मेरे प्यारे! देखो, तीन में विद्यमान है आत्मा, परमात्मा प्रकृति मेरे पुत्रों! देखो परमपिता परमात्मा सृष्टि का रचयिता है आत्मा भोगता है और प्रकृति रची जाती है ये तीन पदार्थ अनादि कहलाते हैं ये त्रिवर्धा में जगत कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, त्रि वर्णनं ब्रह्मा जब त्रिवर्धा को जान लेता है एकोकी रूप में रहता है दो प्रकृति और ब्रह्म रह जाते है, मेरे प्यारे! देखो, प्रकृति रचती रहती है उग्र क्रिया को ले करके रचाया जाता है जब परमाणुओं में उग्र क्रिया आती है तो बेटा! यह एक दूसरे में मिलान करते रहते हैं मेरे प्यारे! देखो, परमाणु अन्तरिक्ष में जब गमन करता है तो वही परमाणु बेटा! देखो, उससे अग्नि के स्वरूप और अग्नि के वायु देखो, देता है वह उग्र क्रिया है। उग्र क्रिया उग्र क्रिया को भी समर्पित कर देती है। वही उग्र क्रिया से बेटा परमाणु एक दूसरे से मिलान करना प्रारम्भ करते हैं मेरे प्यारे! देखो, वह परमाणु मिलान करते करते वह ब्रह्माण्ड के रूप में रचित हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह परमात्मा और प्रकृति की उग्र क्रिया है यह उग्र क्रिया से जितना रचयिता जितना

रचनाकार है जो भी रचना हो रही है उसका नाम ही उग्र क्रिया है चाहे वह माता पिता के रूप में हो, चाहे वह मुनिवरों! वह वैज्ञानिक और प्रकृति के मध्य में हो, चाहे परमात्मा और प्रकृति के मध्य में हो, चाहे प्राणायाम साधना करने वाला प्राण और मन के स्वरूप में सब उग्र क्रिया कहलाती है मेरे प्यारे! देखो, यही रचना का एक मूल बन जाता है तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हे प्रगट करने नही जा रहा हूं केवल विचार कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए और परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहते हुए एक दूसरे को जान करके हम सागर से पार हो सकते हैं यह बेटा! यह जो अज्ञान है यह अनन्तमयी है इसकी कोई सीमा नही है एक एक परमाणु को जानो दूसरा परमाणु निहित रहता है, द्वितिय को जानो तीसरा निहित रहता है यह अनन्तमयी ब्रह्माण्ड निर्णय निर्णय करता करता वह बेटा! अन्त में वह मौन हो जाता है, अन्त में सान्तवना को प्राप्त हो जाता है क्योंकि अवर्चनीय जो विषय है वह मानव का, इन्द्रियों का विषय न रह करके अपने में मौन हो जाता है तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार क्या हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए और उसकी महिमा में रत्त रहते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं और वह यज्ञमान अपने में धन्यभाग, अपने में सौभाग्यशाली बन जाता है। क्योंकि यज्ञमान तो प्रत्येक मानव को बनना ही चाहिए यज्ञ का स्वामी बनना चाहिए अपने में याग क्रियाओं में बेटा! अपने में गृहपथ्य नाम की अग्नि के द्वारा और वैश्वानर नाम की अग्नि के द्वारा गार्हपथ्य नाम की अग्नि के द्वारा गार्हपथ्य में ब्रह्मचारी ऊंचा बनता है और गृहपथ्य में गृहस्वामी ऊंचा बनता है। वैश्वानर नाम की देखो, उसके विद्यालय में विद्या ऊँची बनती है और मुनिवरों! देखो, उसी सन्यस्तव को प्राप्त हो जाता है तो बेटा! यह तो अनुपम विषय है

इनमें विशेषता में जाना नही चाहता हूं विचार विनिमय ये बेटा! केवल तुम्हे शब्द रूप में वर्णन कर रहा हूं जब इसकी विवेचना आती रहेगी तो मैं वर्णन करता रहूंगा पुत्रों! वेद के मन्त्रों में इस प्रकार का ज्ञान और विज्ञान है क्या मानव आश्चर्य में चकित हो जाता है तो आओ बेटा! आज का विचार विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए बेटा! क्या मेरे पुत्रों! देखो, एकोकी दो और तीन के द्वारा, पञ्चम द्वारा, सप्तम् द्वारा और नवम् द्वारा मुनिवरों! देखो, ग्यारह और सत्रह चौबीस इसमें होता धीरे धीरे शनै शनै उसमें बेटा! अपनी प्रतिभा अपने में लानी प्रारम्भ कर देता है वह स्नेह रूप में रमण करने वाला परमपिता परमात्मा से स्नेह रहता है बेटा! चौबीस होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करे, सत्रह होताओं के द्वारा याग करे, ग्यारह के द्वारा याग करे और नौ द्वारों को एकाग्र करके योग साधना करे और मुनिवरों! सप्त होता के द्वारा, पांच होत के द्वारा, इस संसार को पञ्चीकरण के द्वारा जान करके, रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण त्रिगुणात्मक इससे पार हो करके बेटा! देखो, प्रकृति ब्रह्म और एक ही ब्रह्म प्रभु की उपासना करे यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगां आज का विचार ये क्या हम मानो देखो हम एक दूसरे में एक दूसरे में पिरयोये हुए धन्यवादम् ब्रव्हे, एक दूसरे में एक दूसरे के आशीष के द्वारा मानो प्रसन्नता से अपने जीवन को व्यतीत करते हुए सागर से पार हो जाएं यह है बेटा! आज का वाक् मुझे समय मिलेगा शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्याम् मनु रथम् आपाः रेवाः। ओ३म् श्वञ्जना रथम् आभ्याम् ऋषि वरुणा आप्याम गतौ रेवाः आपा इदम् गृहितत्त्वा यम सर्वा। ओ३म् देवाः गृहि वरुणा आप्याम् रथाम्।

५ 78-92-118 सुविधा न हो तो याग कैसे करें

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से , जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है।

आज के हमारे वैदिक पठन पाठन में परमपिता परमात्मा की जहां महिमा का वर्णन आता रहता है वहां हमारा वेदमन्त्र याग के ऊपर अपनी विवेचना दे रहा है और वेदमन्त्र कह रहा है यागाम् भवितम् ब्रह्मणा वर्तसुतः प्रव्हा व्रतम् हिरण्यम् रथा वेद का वाक् कहता है कि हे मानव! तू अपने में यागिक बन क्योंकि परमपिता परमात्मा का यह जो जगत है, यह यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है क्योंकि यागाम् भवितम् क्योंकि प्रत्येक मानव यागिक बना हुआ है और वह सृष्टि के प्रारम्भ से ही कर्म चला आ रहा है। परन्तु यागाम् देखो यज्ञसुताः यागों के ऊपर ऋषि मुनियों ने बड़ा अनुसन्धान किया और इसको ले करके बहुत जानने के लिए उन्होंने तत्पर रहे हैं कि यह जो परमात्मा का यह जो यज्ञोमयी स्वरूप है यह क्या है।

तो बेटा! हमारे यहां वेदमन्त्र कहता है कि परमपिता परमात्मा ने यह जो ब्रह्माण्ड की रचना की है यह नाना लोक लोकान्तरों वाला जो जगत है अथवा यह जो पञ्चीकरण वाला जगत है उस परमपिता परमात्मा ने सबको नियमबद्ध करते हुए एक यज्ञशाला का निर्माण किया और यह जो यज्ञशाला है, यह ब्रह्माण्ड की नाभि कहलाती है नाभि का अभिप्रायः यह है कि ये मध्य है जब भी मानव

देखो, अपने में याग के ऊपर चिन्तन करने लगता है और याग में प्रवेश होता रहता है तो मानो देखो, वह नाभि है तो इसीलिए हमारे यहां वेदाम् भू वर्णाम् मानो देखो, उसी यज्ञशाला में नाभि रूपी यज्ञशाला में आत्मा यज्ञमान है और परमपिता परमात्मा स्वतः ब्रह्मा है और वह ब्रह्मणं ब्रह्मा वर्णासुता मुनिवरों! देखो, आत्मा यज्ञमान और देखो, यह जो पञ्च होता हैं यह कोई इनमें से अध्वर्यु है, कोई उदगाता है, कोई होता बन करके बेटा! इसका याग कर रहा है। तो यह यागमयी कर्म है आज मैं उस याग के ऊपर बेटा! देखो, तुम्हे जब मैं विचारों की पुनरुक्ति करता रहता हूं आज मुझे कहीं से यह प्रेरणा आ रही है कि याग के ऊपर कुछ विचार विनिमय दिया जाए तो वेद का मन्त्र जब याग के लिए करता रहता है मुझे प्रेरित करता रहता है कोई न कोई तो उसी प्रेरणा के आधार पर बेटा! मैं तुम्हे आज याग के सम्बन्ध में एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूं अथवा विद्यालय में, मेरे पुत्रों! देखो, मुझे वह विद्यालय स्मरण आ रहा है। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की चर्चा मैंने तुम्हे कई कालों में की है और याग के ऊपर मैं उनकी पुनरुक्तियां करता रहता हूं और वह पुनरुक्तियों के आधार पर याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! अपने विद्यालय में प्रातःकालीन वह नैतिक शिक्षा देते रहते थे, और ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा जिससे ब्रह्मचारी महान बन करके ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। वह ब्राह्मणतव बन जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मचारियों को एकत्रित करके प्रातःकालीन बेटा! उनके मध्य में याग होता और याग को उद्बुद्ध करने वाले याज्ञवल्क्य मुनि होते। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! प्रातःकालीन न्यौदा में मन्त्रों का उद्गीत गाया, और न्यौदा में जब वेदमन्त्रों का उद्गीत गाने लगे तो वह बोले कि हे ब्रह्मचव्रता! हे ब्रह्मचारियों! वेदमन्त्र कहता है कि प्रत्येक मानव को यागिक बनना चाहिए। याज्ञवल्क्य कहते हैं कि राष्ट्रीय प्रणाली में भी सबसे प्रथम राजा के राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। मानो क्योंकि याग की हमारे यहां बड़ी विस्तृत विवेचना की गई है तो आज मैं उस विवेचना में तो विशेष नहीं पंहूचुंगा, केवल विचार विनिमय यह मुनिवरों!

प्रत्येक मानव का कर्तव्य है कि यागिक बने परन्तु याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा क्या प्रत्येक ब्रह्मचारी अपने में यागिक बने याग का अभिप्रायः क्या है बेटा! देखो, उस विद्यालय में विद्यमान हो करके ब्रह्मचारी आचार्य मिल करके याग करते हैं, साकल्य और चरू अग्नि के मुखारबिन्दु में परणित करते रहे हैं। मानो देखो, वह भी याग है और एक मानो देखो, वह याग कहलाता है जब मेरी प्यारी माता अपने गर्भस्थल में अपने शिशु को शिक्षा देना प्रारम्भ करती है वह भी अपने में याग है पालना करने का भी नाम याग माना गया है। राष्ट्रीय प्रणाली में बेटा! देखो, जो राजा के राष्ट्र में जो राजा अपने कर्तव्य का पालन करता है प्रजा उसके अनुसार बरतने लगती है वह भी एक याग हो रहा है याग का अभिप्रायः है कि जितना भी सुकर्म है शुभ क्रियाकलाप है सर्वत्र का नाम याग माना गया है तो आओ, मेरे प्यारे! मैं याग के सम्बन्ध में इतना ही केवल उद्गीत गाऊंगा की प्रत्येक प्राणी को याग करना चाहिए याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! जब वह याग की विवेचना करने लगे और न्यौदा में मन्त्रों का उदगीत गाने लगे और वह यह उद्गीत गाते हुए कहते हैं क्योंकि यागाम् भू वर्णम् ब्रह्मा यागाम् रथम् ब्रव्हे कृतम् देवा वह यागिक बन करके तुम याग करो तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी यज्ञदत्त उनमें से उपस्थित हुआ और यज्ञदत्त ने कहा हे प्रभु! हम याग कैसे करें?

याग कर्त्ता

उन्होंने कहा कि याग में यज्ञशाला हो अष्ट कोणों वाली, चतुष कोणों वाली, नौ कोणों वाली ग्यारह कोणों वाली और चौबीस कोणों वाली यज्ञशाला का मानो वैदिक साहित्य में वर्णन किया जाता है। तो इसीलिए तुम यागिक बनो परन्तु देखो, यागाम् भू देखो, तुम यागिक बन करके उसमें बेटा! हूत करो चरू का प्रदान करो, और उन्होंने कहा कि उसमें आसन पवित्र हो और साकल्य भी पवित्र होना चाहिए मानो देखो, अहिंसक साकल्य होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया कि उसमें यज्ञमान हो, होता हो, उदगाता हो

और अध्वर्यु, बन करके मुनिवरों! देखो, याग होना चाहिए। मुनिवरों! देखो, यज्ञ का जो ऊर्ध्वा जो शिर कहलाता है मानो देखो, शिरोमणि वह यज्ञमान होता है और दूसरे आसन पर मानो देखो, सबसे प्रथम तो ब्रह्मा होता है परन्तु उसके पश्चात यज्ञमान ही है परन्तु यज्ञमान मूर्ध्वा कहलाता है। उसे मूर्ध्वा कहते हैं मेरे प्यारे! जो अध्वर्यु कहलाता है। वैसे राजा को भी हमारे यहां अध्वर्यु कहा जाता है अध्वर्यु नाम आत्मा का भी है और यह अध्वर्यु नाम मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला में जो साकल्य का नेतृत्व करने वाला है साकल्य को अपने में धारयामि बनाने वाला है, उसका नाम अध्वर्यु कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, राजा इसीलिए क्योंकि वह वशिष्ठ है इसीलिए उसको हमारे यहां देखो, ऊर्ध्वा अमृताम् देखो, वह मूर्ध्वा के रूप में वह अध्वर्यु कहलाता है। मेरे प्यारे! दूसरा उदगाता होता है, उदगाता उसे कहते हैं जो उदगीत गाता है वेदमन्त्रों का गान गा रहा है स्वर संगम में गा रहा है जो मेरे प्यारे! देखो, उदात्त और अनुदात्त में गा रहा है वह जटा पाठ और माला पाठ में गाता रहता है। नाना प्रकार का गान गाने वाला अपने में गान गाता रहता है बेटा! उसे उदगाता कहा जाता है वह उदगाता, अध्वर्यु, यज्ञमान और ब्रह्मा चार स्थान होते हैं यज्ञशाला में उसके मध्य में मानो देखो, उन्हे ऋत्विज भी कहते हैं और इन्हे मानो देखो, होता जन भी कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा यह सब देखो, यज्ञशाला का ऊर्ध्वा देखो, अनुष्ठान मात्र से उसका निर्माण देखो जैसे अवृत्त कहलाता है।

उन्होंने कहा यज्ञदत्त ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूं कि यह सुविधा कहीं यदि प्राप्त न हो, देखो, यज्ञशाला भी न हो, उसका साकल्य भी न हो तो हे प्रभु! हम याग कैसे करें? यज्ञशाला तो है परन्तु याग कैसे करें? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी, साकल्य, अग्नि के द्वारा तुम याग करो, और याग में कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, समानाय कह करके पञ्चाहुति प्रदान करो और उससे तुम्हारा प्राण ऊर्ध्वा में प्राप्त होत हुआ

मानो देखो, अगृत प्राप्त होता रहता है तो मेरे प्यारे! ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया क्या तुम्हारे यहां मानो देखो, अग्नि है और समिधा हो, और चरू होना चाहिए। देखो, अग्नि में स्वाहा कहते रहो। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु यह भी हमने स्वीकार कर लिया परन्तु हम यह जानना चाहते हैं भगवन! कहीं अग्नि भी प्राप्त न हो, और साकल्य भी न हो समिधा भी न हो, तो हे प्रभु! हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि ये वस्तु तुम्हे प्राप्त न हो कहीं तो मानो देखो, वह ब्रह्मणे व्रतम् मानो तुम जल के द्वारा जल का प्रोक्षण करो, जल की अंजलि बना करके और तुम कहो कि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः कह करके तुम हूत करो। मानो देखो, हूताम भू वर्णानं ब्रह्मा तुम हूत करने वाले बनो और हूत करके देखो, अमृतम् अपने प्राणों को ऊँचा बनाओ, क्योंकि यह प्राण ही भोगतव्य है और प्राण ही भोगता है मानो देखो, यह संसार की आभा को निगल जाता है और यह प्राण मानो देखो वृत्ति कहलाता है इस प्राण के द्वारा मानो देखो, अंजलि में जल ले करके तुम कहो प्राणाय स्वाहाः मेरे प्यारे! यह जो देखो, जल है यही तो मानव का जीवन है यही तो मुनिवरों! देखो, आपोमयी बना रहता है। माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं। तो बेटा! देखो, बालक का ओढ़न भी जल ही है और देखो, आसन भी जल ही बना हुआ है और पांशे भी जल बने हुए हैं मेरी प्यारी माता नही जानती क्या तुम्हारे गर्भस्थल में जो बाल्य विद्यमान है उसका आसन क्या है? अथवा उसका ओढन क्या है मेरे प्यारे! देखो, जल ही ओढन है और जल ही आसन, और देखो, वृत्ति कहलाता है और जल ही मेरे प्यारे! पांशे बने हुए है जिसमें वह गमन करता रहता है। नाना प्रकार के मानो गतियों का प्राप्त वहीं से अमृत को प्राप्त करता रहता है। माता की नाभि और बाल्य की नाभि का दोनों का समन्वय हो करके नाभि के द्वारा बेटा! मेरे प्यारे! वेद की आभा में दृष्टिपात करते हुए कहा है क्या मानो समाधि लगा करके भी ऋषि मुनि दृष्टिपात करते रहे हैं मेरे प्यारे! माता की रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम

की नाड़ी होती है और वह नाड़ी का समन्वय मेरे प्यारे! पुराতত नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत नाम की नाड़ी का जो समन्वय है वह माता की लोरियों से होता हुआ पञ्चम नाड़ी बन करके चलती है और वह अमृत को प्रदान किया जा रहा है और बाल्य मानो देखो नाभि से उसे को प्राप्त कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, कैसा मेरे प्यारे प्रभु का विज्ञान है। मेरी भोली माता नही जानती कि कौन अमृत दे रहा है कौन अमृत में बना हुआ है मेरी भोली माता उस ज्ञान विज्ञान से वंचित रहती है। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार अवृत्तम वेद का आचार्य कहता है याजवल्क्य क्या मानो देखो, यह जो जल है इसी के द्वारा तुम याग करो और स्वाहाः कह करके प्राण की आहुति दो, और प्राणाय स्वाहाः कह करके मेरे प्यारे! अञ्जली से जल का प्रोक्षण करो उन्होंने कहा हे प्रभु! चलो यह भी हमने स्वीकार कर लिया कि जल के द्वारा हम याग करें परन्तु कहीं ऐसा हो क्या हमे जल भी कहीं प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा जलम् ब्रव्हे यदि कहीं जल प्राप्त न हो, तो यह पृथ्वी के द्वारा पृथ्वी की रज को ले करके तुम याग करो और कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः उदानाय स्वाहाः व्यानम् ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, गुरुताम् यह पञ्च आहुति तुम प्रदान करो उससे वर्चोसी बन जाओगे। वह जो गुरुतव है पृथ्वी का जो रज है यही तो मेरे प्यारे! देखो, पिण्ड बना हुआ है जब सूर्य में जाते है तो सूर्य में भी यह पिण्ड रूप है परन्तु अग्नि प्रधान है और वही अग्नम् ब्रह्मा बेटा! उसका पिण्ड जब बनता है तो उसमें भी आपो है उसमें भी रज है मानो देखो, पृथ्वी का गुरुतव परमाणु रहता है तो बेटा! यह पिण्ड बन जाता है नाना प्रकार के लोक लोकान्तर उस पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आते रहते हैं। वह संसार एक पिण्ड बना हुआ है माता के गर्भस्थल में मानो देखो जब ये आपो गुरुतव का देखो एक एक वितार्त्य हो जाता है। तो बेटा! यह जल ही यह पृथ्वी से ही पिण्ड बना करता है। यह संसार एक पिण्ड रूप में प्रायः हमे दृष्टिपात आता रहता है। तो बेटा! यह पिण्डोमयी जगत है और यह पिण्डम् ब्रह्मा व्रतम् बेटा! ब्रह्माण्डे पिण्ड वाणा कृति देवत्वाम् यह सर्वत्र मानो

एक दूसरे में ओत प्रोत हो रहा है। तो बेटा! यह पिण्ड है तो जब तक गुरुतव का जब तक मिलान नही होता जब तक यह पिण्ड नही बन पाता। तो यह संसार एक पिण्ड के रूप में है माता के गर्भस्थल में पञ्च महाभूत एक दूसरे में मिश्रित हो करके पिण्ड बनते हैं और पिण्ड में मानो देखो, जीवन आत्मा विद्यमान रहता है जिसको वह पिण्ड को वह क्रिया देने वाला हो।

तो आओ, मेरे प्यारे मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह उन्होंने कहा है कि यह मानो गुरुतव यह पृथ्वी की रज को ले करके अञ्जली में कहो क्या प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः यदि प्राण के साथ में बेटा! देखो, रज के परमाणु नही होंगें तो मानो श्वास नही ले सकता गतियों में नही परणित हो सकता। तो इसीलिए वह प्राण की आहुति देता है अभ्योदय होता रहता है। तो वेद का ऋषि कहता है कि प्राण को ले कर हम प्राण की आभा में रत्त होते रहे।

आओ मेरे प्यारे ऋषि ने जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इतना अपना वर्णन किया तो उन्होंने कहा प्रभु कहीं ऐसा हो क्या यह पृथ्वी की रज भी कहीं हमे प्राप्त न हो तो प्रभु याग कैसे करें। उन्होंने कहा सम्भवम् ब्रह्मणे लोकाम् वृतम् देवा हे ब्रह्मचारी! तुम्हे यह प्रतीत होगा कि तुम न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन करते रहते हो यदि कहीं तुम्हे देखो, पृथ्वी की रज भी प्राप्त न हो तो मानो उस समय तुम अपने मन में वेदमन्त्रों का उच्चारण करते रहो। और मानो इस प्रकार करते हुए कहो क्या प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यनाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः इस प्रकार उदगीत गाते हुए तुम आहुति दो परन्तु देखो, मन, कर्म वचन को एकाग्र करके बेटा! देखो, तुम उसको हृदय रूपी यज्ञशाला में तुम याग करने के लिए तत्पर हो जाओ। मेरे प्यारे! क्योंकि मैं इससे पूर्व काल में तुम्हे यह प्रगट करा रहा था क्या प्रत्येक स्वरूप मानो अपने में समाहित हो जाता है बेटा! प्रत्येक इन्द्रियों का विषय बेटा! प्रत्येक तत्त्वों का जो विषय है देखो, यज्ञशाला का जितना विषय है वह भी हृदय में है और जितना अग्नि का विषय वह भी

अग्नि में ओत प्रोत है मेरे प्यारे! देखो, हृदय में समाहित रहने वाला यह अभ्योदय होता रहता है।

तो विचार आता रहता है कि हम मुनिवरों! अञ्जली में ले करके याग करने वाले बनें। पृथ्वी के सर्वत्र गुण भी मेरे प्यारे! देखो, हृदय में सिमट जाते हैं मन, वचन और कर्म भी हृदय में सिमट जाता है और हृदय में ही मुनिवरों! देखो, उसका याग करो और कहो प्राण के अव्रतम् प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, वेदमन्त्र का उदगीत गाते रहो, वेदमन्त्रों का उच्चारण करते रहो परन्तु वेद में अभ्योदय होता रहता है तो बेटा! उस आहुति हूत करने से तुम्हारा हृदय रूपी जो यज्ञशाला है, इसमें कितनी प्रगति हो जाएगी मानो देखो, बाह्य जगत को जानने के पश्चात ही मानव अन्तर्मुखी होता है और अन्तर्मुखी हो करके मुनिवरों! देखो, वह याग करता है। अन्तर्मुखी हो करके हृदय में सिमट जाता है और वही हृदय का समन्वय मेरे प्यारे! प्रभु से हो जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों! मानो तुम देखो, यह याग करने वाले बनो, तुम मन से याग करो, कर्म से करो, वचन से करो परन्तु देखो, याग अपने में महान एक स्वरूप माना गया है इसके ऊपर महानता का वर्णन करते हुए ऋषि मुनियों ने अपनी अपनी आभाएं प्रगट की हैं।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नही देने आया हूं केवल यह क्या प्रत्येक मानव को यागिक बनना चाहिए, प्रत्येक मेरी पुत्री को यागिक बनना चाहिए जिससे मुनिवरों! देखो, याग अपने में महान है जैसे मुनिवरों! देखो, हमारे यहां क्या अवृत्ति माता मल्दालसा ने यह कहा था अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रभु! मैं याग कैसे करूं उन्होंने कहा तुम याग इसी प्रकार करते रहो। परन्तु यदि तुम्हारे गर्भस्थल में किसी आत्मा का, शिशु का प्रवेश हो गया है तो मानो देखो, मन, प्राण, अपान को दोनों को एक सूत्र में ला करके तुम अपनी गर्भ की आत्मा से शिशु से वार्त्ता प्रगट कर सकती हो वह भी एक याग है क्योंकि वह मानो प्राण का याग हो रहा है,अपान का और व्यान का याग

हो रहा है व्यान और प्राण का व्यान हो रहा है मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरे में समन्वय होने का नाम ही बेटा! याग माना गया है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा नही प्रगट करूंगा आज का हमारा अभिप्रायः यह महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ब्रह्मचारियों से कहते हैं कि तुम प्रत्येक दशा में यागिक बनो और याग करने वाले बनो क्योंकि याग ही तुम्हारी मौलिकता मानी गई है, और याग ही तुम्हारा एक ऊर्ध्वा में क्रियाकलाप माना गया है तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है हम परमपिता परमात्मा की आराधना करें और जो मानो देखो, यागिक नही बनता है जो गुरुता के सम्बन्ध में अपने अन्तर्हृदय को ले जाता है बेटा! वो उसकी वृत्तियां नष्ट हो जाती हैं। उसका दध्याम् भू वर्णम ब्रह्मा लोकाम् आओ, मेरे प्यारे! महानन्द दो वाक् उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवाम् भद्रम् मना वाचश्वन्धना। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे और गागर में सागर का भरण कर रहे थे एक दूसरे में भरण। परन्तु आज का यह जो समाज जहां हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहां एक साम याग का गान का याग सम्पन्न हुआ। मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है और मैं यज्ञमान के लिए मेरा अन्तरात्मा यह उदगीत गाता रहता है कि हे यज्ञमान! तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे। क्योंकि जिन गृहों में द्रव्यों का सदुपयोग होता है उन गृह में द्रव्य की हानि नही होती और जिस गृह में द्रव्य का ह्रास होता है, द्रव्य का दुरूपयोग होता है। उस गृह से द्रव्य चला जाता है। मानो वह द्रव्य हीन बन करके अपने कर्त्तव्य को, मन ही मन में उदगीतता में गाने लगता है। तो इसीलिए यज्ञमान के साथ में मेरा अन्तर्हृदय रहता है हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। और तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे और इससे ऊर्ध्वा में कोई सदुपयोग नही होता जो याग करता है, क्योंकि याग में जो साकल्य है वह वायुमण्डल में जाता है और जो शुद्ध और पवित्र शब्द होता है वह भी द्यौ लोक को चला जाता

है और द्यौ में वह सिद्ध हो करके गमन करता रहता है इसीलिए मेरे पूज्यपाद गुरुदेव इस याग के सम्बन्ध में इनका बहुत बड़ा अध्ययन रहा है। क्योंकि बाल्य काल में भी पुरातन कालों से अमूल्य निधि रही है और यह अपने में मानो देखो, वेद का उदगीत गाते रहते हैं। हमारा अन्तर्हृदय भी उसी से पवित्र रहता है तो आज मैं देखो, पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन करा रहा हूं क्या राम के काल में भी प्रत्येक गृह में राम ने यह घोषणा की थी मेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग होने चाहिए। प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए विचारों की सुगन्धि और मुनिवरों देखो, साकल्य की सुगन्धि दोनों होनी चाहिए विचारों की सुगन्धि वह होती है जो विचारों को पवित्र बनाता है। उदगीत गाने वाले हैं देखो, विचारों की सुगन्धि से ही देखो, साकल्य की सुगन्धि जो याग के द्वारा होती है तो जब दोनों सुगन्धि होती है तो प्रदूषण नही होता। किसी राजा के राष्ट्र में राजा को यह विचारना है कि मेरे राष्ट्र में मानो प्रदूषण नही होना चाहिए समाज में विचारों की प्रदूषण न हो तो एक दूसरे में महान बने, विचारों की और साकल्य सुगन्धि में सुगन्धित हो जाएं और द्रव्य का सदुपयोग होने लगे तब राजा के राष्ट्र में या समाज में देखो, कहीं भी देखो, दुरुपयोग नही रहेगा और प्रदूषण की उत्पति नही हो सकेगी। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूं, क्या आधुनिक काल का यह जो समाज चल रहा है इसे भी वाम मार्ग का युग कहता रहता हूं मैं इसे श्रेष्ठ युग नही कहा करता हूं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैं आपको निर्णय कराऊं क्या आज का तो राजा भी वाममार्गी है, प्रजा भी वाममार्गी है, वाम मार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करता है तो इसीलिए राजा भी सुरा पान कर रहा है प्राणियों के रक्त का पान कर रहा है मानो देखो, राजा अपने स्वार्थ में लगा हुआ है क्योंकि राजा को निस्वार्थी होना चाहिए राजा के राष्ट्र में न्यायलय में एक स्थली में उसका पुत्र न्यायलय में है और एक प्रजा का पुत्र न्यायलय में है तो दोनों ही राजा के लिए एक तुल्य होने चाहिए यदि उसमें ममता आ गई, तो राष्ट्रीय प्रणाली का विनाश हो जायेगा। और यदि मानो देखो, प्रजा को न्याय नही प्राप्त

होता तो वहां भी पूज्यपाद गुरुदेव तो जानते हैं वहां भी देखो, विनाशता की वृत्तियां उत्पन्न होने लगती हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में यह कहा क्या राजा के राष्ट्र में रूढ़ी नही होनी चाहिए। क्योंकि रूढ़ि राजा के विनाश का एक मूल बनती है, प्रजा का मूल बन जाती हैं क्योंकि मैंने पुरातन काल में कहा राजा को अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, तो राजा के राष्ट्र में भिन्न भिन्न प्रकार की रुढ़ि नही होनी चाहिए। आज एक मानव देखो, रूढ़िवाद में बना हुआ है एक दूसरा मानव मानव के रक्त का पिपासी है। उसके मूल में ईश्वर के नाम पर भिन्न भिन्न रुढ़ियां बनी हुई हैं। क्योंकि यदि रूढ़ि नही होगी तो रक्त का पिपासी नही होगा देखो, वह दीर्घ ब्रह्मे एक ही विचार का मानो देखो, आचार्यों की पद्धति होनी चाहिए। जिससे बुद्धिमान और राजा जब ब्रह्मवेत्ता होता है तो राष्ट्र ऊँचा बनता है और प्रजा उसके अनुसार बरतने लगती है और राजा यह चाहता है कि मेरा राष्ट्र पवित्र बने एक दूसरा मानो रक्त का पिपासी न हो तो राजा ब्रह्मवेत्ता बन करके और अश्वमेध याग करने वाला हो, और अश्वमेध याग करने वाला जो राजा होता है, वह राष्ट्र और प्रजा को दोनों को ऊँचा बनाता है। तो विचार आता रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूं क्या प्रत्येक रूढ़ियों कर आचार्यों को एकत्रित किया जाए और जो धर्म, मानवीयता और विज्ञान पर जो विचार स्थिर हो जाए उसे अपने में अपनाना चाहिए। यह राजा का कर्तव्य है क्योंकि राजा को ब्रह्मवेत्ता बहुत अनिवार्य है यदि राजा ब्रह्मवेत्ता नही होगा तो राष्ट्र को उन्नत नही बना सकेगा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो भिन्न भिन्न प्रकार की वार्ताएं प्रगट करते रहते हैं और आज उन्होंने गागर में सागर की कल्पना करते हुए एक एक शब्द में गागर विद्यमान है। और गागर में वही सागर है जो मानो देखो, ऋषि मुनियों की परम्परा की पद्धतियां मानी जाती हैं। परन्तु देखो, हे मेरे पूज्यपाद! गुरुदेव मैं आधुनिक काल के राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहा हूं यहां कोई मोहम्मद के मानने वाला है, तो ईसा का शत्रु है ईसा के मोहम्मद के मानने वाला है तो मानो वह अनन्यों का शत्रु बना हुआ है परन्तु धर्म की प्रणाली को न जान करके धर्म को न

जान करके मानो देखो, यह रूढ़ियां अधर्म में परणित हो जाती हैं।

विचार आता रहता है यह एक दूसरे की रक्त की पिपासी बन जाती हैं तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता रहता हूं हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! यह जो रूढ़ियां हैं इन रुढ़ियों को राजा को विनाश करना चाहिए यदि अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना है, समाज को सुखद बनाना है। अपनी पुत्रियों के श्रृङ्गार की रक्षा करनी है। तो मानो देखो यह रूढ़िवाद समाप्त होना चाहिए। यह जो ईश्वर के नाम पर रुढ़िया हैं, यह रुढ़ि नही रहनी चाहिए। देखो, एक ही धर्म है देखो, पूज्पाद गुरुदेव इससे पूर्व कालों में प्रगट कर रहे थे कि इन्द्रियों का जो विषय है। वही धर्म है परन्तु देखो यह सब के साथ रहता है और जब वृत्तम् ब्रह्मा मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से भिन्न भिन्न प्रकार की शिक्षा लेता रहता हूं और इनके चरणों में बहुत समय तक अध्ययन किया है परन्तु देखो, धर्मणं धर्म एक है और रूढ़ियां अनेक होती हैं। अनेकता को देखो, रूढ़ि में वर्णित नही किया जा सकता वह एकता में धर्म ही रहता है और रुढ़ियां न रहती है इसीलिए रूढ़ियों का विनाश हो और धर्म की रक्षा हो और देखो, यह जो रूढ़ियां हैं इनका विनाश हो जाएगा तो राष्ट्र पवित्र बन जाएगा। प्रजा में महानता आ जाएगी तो इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उदगीत गाता रहता हूं। आज का देखो, जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है वही गृह पवित्र होता है। क्योंकि द्रव्य ही गृह को बलवती बना देता है। और जिस गृह में द्रव्य का सदुयपयोग नही होता वह गृह वहां से चला जाता है, और मानो देखो, अपने अन्तःकरण में जो पापाचार की प्रवृत्तियां उत्पन्न हो गई थी जहां द्रव्य का दुरुपयोग हुआ वह मानव देखो, अपने में हिंसक बन जाता है और विचारता रहता है कि मैं कहां चला गया हूं। तो इसीलिए विचारों की द्रव्य का सदुपयोग हो और देखो, यह समाज ऊँचा बने और मेरे यज्ञमान मैं पुनः से कहता हूं हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे जीवन में महानता की बलवती होती रहे। इसके साथ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मानो क्षमा चाह रहा हूं। मैं अपने विचारों को विराम दे रहा

हूँ। क्योंकि रूढ़ि जब तक विनाशता को समाप्त नही होंगी जब तक वह समाज किसी भी राष्ट्र का रहने वाला हो, चाहे वह लोक लोकान्तरों का रहने वाला हो क्योंकि रावण के राष्ट्र में भी रुढ़ियां बन गई थीं। राम ने उनका विनाश किया इसी प्रकार देखो, रुढ़ि नही रहनी चाहिए और रूढ़िवाद जब तक समाप्त नही होगा और ब्रह्मज्ञानी जब तक राजा नही होगा जब तक समाज उन्नत नही होगा इसीलिए आज का विचार अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने उदगार दिए इनके उदगारों में मानो एक विडम्बना है, राष्ट्रीयता की दाह बनी रहती है। मैं सदैव यह कहता रहता हूं कि यह समय भी प्रायः आयेगा जब मानव एक सूत्र में सूत्रित हो जाएगा विचार आते रहते हैं बनते रहते हैं और वह विस्मृत होते रहते हैं मानो वह स्मरण शक्तियों में भी आते रहते हैं वह उदगीत गाए जाते हैं परन्तु वही नष्ट हो जाते हैं तो अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने कहा राजा ब्रह्मवेत्ता हो महाराजा अश्वपति की भांति, राजा जनक की भांति देखो, ब्रह्मवेत्ता हो और देखो, अनेक रुढ़ियां समाप्त हों और धर्म एक ही वचन कहा जाता है। तो इसीलिए आज का विचार विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए और अपने में मानो यागिक बन करके अपने द्रव्य का सदैव सदुपयोग करते रहे तो यह आज का विचार अब सम्पन्न होने जा रहा है अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मां गायन्त्वा वाचश्वन्धना वायाःम्।

६ 20 08 1992 वैदिक शिक्षा

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे , ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता हे जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि यह परमपिता परमात्मा महिमावादी है और यह यज्ञोमयी स्वरूप है याग उसका आयतन है उसका गृह है उसका सदन हे और वह उसी में वास कर रहा है तो हम उस परमपिता परमात्मा को अग्निमयी स्वरूप स्वीकार करते रहे तो इसीलिए उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञो में निहित रहने वाला है वह यज्ञनम ब्रह्मण ब्रह्म व्रततत्वा देवा मानो वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है क्योंकि उस परमपिता परमात्मा ने उस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया और वह निर्माण वेत्ता है मानो जब परमपिता परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड की रचना की तो एक प्रकार की यह यज्ञशाला है और प्रत्येक मानव इसमें याग करने के लिए आया है कोई अपने विचारों में याग में ही परणित हो रहा है कोई मानो अपने शारीरिक जीवन की दिनचर्या से अपने में शुद्धिकरण कर रहा है परन्तु वह सर्वत्रता में भाग में परणित हो रहा है तो विचार आता है कि परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया और यह यज्ञशाला का निर्माण किया तो उस समय आत्मा यज्ञमान बना और यह पञ्च महाभूत इनमें से कोई उद्गाता बना कोई अध्वर्यु बना और कोई मानो उद्गाता बन करके याग करने लगा और ब्रह्मा अपने में ब्रह्मत्व को प्राप्त होता रहा वह इस संसार रूपी यज्ञशाला का संचालक है और वहीं मानो देखो, इसमें ओत प्रोत है तो आओ मुनिवरों! देखो , उस परमपिता परमात्मा का जो यह अमृतम ब्रह्मा यज्ञसुतम देवा यज्ञा यह जो याग है यह बड़ा भव्यता में परणित हो रहा है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और उसकी अनन्तमयी सृष्टि को विचार विनिमय करने के लिए नाना ऋषि मुनियों का

समूह विद्यमान होता रहा है और समय समय पर तपस्वियों ने अपने में विचार विनिमय किया है और विचार विनिमय करके अपनी लेखनिया उन्होंने बद्ध की है और विचार देते उन्होंने कहा कि परमपिता परमात्मा इस संसार रूपी यज्ञशाला का संचालक करने वाला यह ब्रह्मत्व को प्राप्त होता रहा है तो आओ बेटा! आज में परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा न देता हुआ हमारा वेद का मन्त्र अपने में उद्गीत गा रहा है और वेदमन्त्र कहता है यज्ञनम ब्रह्मा वर्णानुतम मानो यह परमपिता परमात्मा ब्रह्मा बन करके यज्ञशाला का संचालन करने वाला है उसी में ओत प्रोत है उसी के रूप में वह रमण करता रहा है तो मेरे पुत्रों! आज का हमारा जहां वेदमन्त्र यह कर रहा है आओ आज में तुम्हें एक ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ जहां बेटा! हमारे यहां नैतिक शिक्षा देते रहे हैं क्योंकि नैतिक शिक्षा देने वाला ब्रह्मचारियों को यज्ञोमयी परणित करने वाला है जिससे मुनिवरों! उसका मनोनीत हृदय अपनी आमा में सदैव परणित रहा है तो मुनिवरों! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जहां महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में नाना ब्रह्मचारी बेटा! अपने में अध्ययन करते रहे है और नाना ब्रह्मचारी अपने ये विद्यमान हो करके मेरे प्यारे! प्रातःकालीन ऋषिवर अपने ब्रह्मचारियों में विद्यमान हो करके नैतिक शिक्षा देते रहे है क्योंकि हमारे यहां जितने भी विद्यालय है चाहे वह राष्ट्रीयत्व हो चाहे वह गुरु और शिष्य के सम्बन्ध में हो परन्तु किसी भी प्रकार का वृत उनमें हो सदैव यह इसीलिए नियमावली आचार्य ने निहित कि देखो , जिससे वह वैदिक परम्पराएं है जिससे मानवीयतव अपने में पवित्र बनता है यह नियमों को ान को मैं परणित कर सकूं तो आो मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्कय मुनि महाराज को यहां मैंने कई कालों में तुम्हें चर्चा करते हुए कहा है क्या मुनिवरों! देखो, एक पंक्ति में वह सब ब्रह्मचारी विद्यमान है उनके मध्य में विद्यमान हो करके याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने न्यौदा में वेद मन्त्रों का उन्होंने उद्गीत गाया और वेद मन्त्रों का उद्गीत गा करके उन्होने कहा ब्रह्मणे यज्ञनम ब्रहे कृतं देवा वह ब्रह्मचारियों के मध्य में बोले कि हे ब्रह्मचारियों!

तुम याग किया करो याग में परणित हो जाओ आज कहीं से मुझे यह प्रेरणा प्राप्त हो रही है क्या याग के ऊपर अपना कोई विचार विनिमय दिया जाएं अपना मन्तव्य दिया जाएं जो ऋषि मुनियों का अपने में विचार रहा है तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की गाथाओं का क्रियाकलाप उनका विद्यालय आज मुझे स्मरण आ रहा है जहां बेटा! वह ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके प्रातःकालीन नैतिक शिक्षा देते उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम याज्ञिक बनो और याग करो वेद का मन्त्र कहता है यज्ञनम ब्व्हे कृतं वानुतम ब्रह्मचरित्र यामि हे ब्रह्मचारियों! तुम याग करो क्योंकि ब्रह्मचर्य जीवन में याग का अपना बड़ा महत्व माना गया है गृहाश्रम में भी योगी का बड़ा महत्व माना गया है परन्तु हमारे यहां जहां श्रोत्रीय यज्ञों का वर्णन है वहां मुनिवरों! देखो, अग्नेकामेष्टि यज्ञो का भी वर्णन आता रहा है यहां रुद्र याग और वाजपेयी अग्निष्टोम यागी का भी प्रायष्ः वर्णन होता रहा है आज उन यागों के कर्मकाण्ड में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ केवल यह क्या याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने प्रातःकालीन अपने ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! तुम याग करो मानो यागाम भूतम ब्रह्मा वसुतम देवत्वाम यागा यह प्रत्येक मानव अपने में याग कर रहा है तो जब ऋषि ने इस प्रकार अपना वाक् वर्णन किया तो बेटा! इतने में ब्रह्मचारियों के मध्य में एक यज्ञदत्त नाम का ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ और यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यह तो हमने स्वीकार कर लिया है कि याग करना चाहिए परन्तु याग कैसे करें तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि सुन्दर यज्ञशाला हो नाना प्रकार के खम्बी वाली यज्ञशाला हो और यज्ञशाला नाना प्रकार के चतुष कोणों से ले करके चौब्ीस कोणों की यज्ञशाला का व्यवधान किया गया है हमारे यहां जब शतपथ ब्राह्मण के यज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने यह कहा कि मैंने इसका अन्वेषण किया और न्यौदा में नाना प्रकार के वेद मन्त्रों का उद्गीत गा करके इन्होंने नाना प्रकार के यागों का चयन किया चज्ञशालाएं हो और यज्ञशाला में मानो देखो, प्रकृति अपने में देखो, चेतना होने के पश्चात सजातीय बन जाती है जिस प्रकार देखो , श्रावणी पर्व पर अपने में देखो , शृङ्गार से

श्रृंगारित होते यह पृथ्वी अनाद को प्राप्त कराती है इसी प्रकार तुम्हारी यज्ञशाला भी श्रृंगारित होनी चाहिए नाना प्रकार ने मानो देखो , जैसे सूर्य की नाना प्रकार की किरणे सप्त रंगों से मानो देखो , रंगस्तम अपने जीवन में देखो , वह सूर्य अपना प्रकाश देता रहता है वह विष्णु बन करके यह जीवन देता रहता है इसी प्रकार यज्ञशाला भी श्रृंगारित होनी चाहिए तो मेरे पुत्रों! देखो , जब उन्होंने कहा कि यज्ञम ब्व्हे और नाना प्रकार का साकल्य हो उस साकल्य में सबसे प्रथम रोगनाशक हो सुगन्धित हो पुष्टिकारक हो मेरे प्यारे! देखो , वहीं देखो, रोगम ब्रहे वृत्तियों में रत्त रहने वाला साकल्य होना चाहिए मेरे प्यारे! देखो, उसमें ऐसे पदार्थ होने चाहिए जो पुष्टि देने वाला हो मानव को पौष्टिक उसके परमाणु पौष्टिकता में रत्त होने वाले हो और देखो , रोगनाशक हो जिससे रूग्ण नष्ट हो जाए और सुंगन्धित हो देखो, जिससे सुगन्ध आए और यह अपने में मानो देखो, प्रदूषण को समाप्त करने वाला हो इस प्रकार देखो, साकल्य होना चाहिए मानो देखो, मधुदन होना चाहिए उन तरंगों में मधुरपन होना चाहिए जैसे उपगाता यज्ञशाला में विद्यमान हो करके उद्गीत गाता है कहीं जहा पाठ घन पाठ माला ाठ विसर्ग पाठ उदात्त और अनुदान मे गाने वाला है तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो , यज्ञम ब्व्हे उद्गाता उद्ीत गाने वाला हो तो वेद का आचार्य कहता है यज्ञम ब्रह्मा व्रतम देवा हे मानव! तू याज्ञिक बन जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार वर्णन किया देखो, उसमें उद्गाता उद्गीत गाने वाला हो पुरोहित निधि विधान में पवित्रता में हो ब्रह्मा रत्नार्थी हो और उद्गाता देखो, अध्वर्यु उद्गाम मानो देखो, अध्वर्यु उसका स्वामीतव द्रव्य का स्वामी हो इस प्रकार देखो, यज्ञमान अपनी में देखो, मूर्ध्वा बन करके अर्ध्वा अपने विचारो को बनाता हुआ अपनी देवी से कहता है हे दिव्या आओ देखो, हम देव पूजा करेंगे अग्नि में देवताओं का मुख स्वीकार करके उसमें याग करोगे तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो , याग होना चाहिए मेरे प्यारे! देखो , याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार जब ब्रह्मचारियों को वर्णन कराया तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से देखो, यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने यह प्रश्न कि कि प्रभु जब

मैं माता की लोरियों से पृथक हुआ तो माता प्रायः मुझे इस प्रकार की शिक्षा देती रही है और पुरोहित जन जब गृहों में आते तो जब इस प्रकार की शिक्षा देते रहे परन्तु देखो, मैं अमृतम यदि इस प्रकार की सुविधा कही प्राप्त न हो और हम याग करना चाहते है तो कैसे योग करेंगे उन्होंने कहा यदि यह सुविधा न प्राप्त हो यज्ञशाला भी न हो और साकल्य भी न हो चरू भी न हो तो चला कैसे को तुम्हारा यही तो प्रसंग है तो उस समय मानो तुम अग्नि को ले करके अग्नि प्रदीप्त करके और समिधा के द्वारा कहो प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा उदानाय स्वाहा और समानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो मानो देखो, प्राणों के द्वारा ही तो हूत होता है यह प्राण ही तो भक्षण करने वाला है वह प्राण ही तो मानो देखो , आवागमन और नाना प्रकार के परमाणुओं का आदान प्रदान करता रहता है यही करोड़ो परमाणुओं को बाह्य जगत में मानो त्याग देता है और बाह्य जगत से अरबो खरबों परमाणुओं को ला करके आन्तरिक जगत में प्रवेश कर देता है इसी प्रकार ज्ञान परमाणु समानम ब्रह्मे व्रतम मानो देखो, व्यान इन परमाणुओं को अपने में ग्रतिया करता रहता है और मुनिवरों! देखो, अपना इनका अपने में समवृत करता रहा है और देखो , समान इनको सब ओतप्रोत करा देता है उपान ही इन संस्कारों को बना करके और वह मुनिवरों! देखो, चित्त के मण्डल में प्रवेश करा देता है तो विचार आता रहता है कि यज्ञनम ब्रह्म वर्णासुतम देवा तुम अग्नि को प्रदीप्त करके कहो प्राणाम् स्वाहा अपानाय स्वाहा, व्यसाय स्वाहा, उदानाथ स्वाहा, समानाय स्वाहां कह करके तुम हुत प्रारम्भ करो मेरे प्यारे! जैसे बुद्धिमान देखो , वेद के पठन पाठन करने वाला जब अपने अन्नाप को ले करके और मिष्ठान के द्वारा कहता है प्राण को ले प्रथम आहुति प्रदन करता है प्राणाय ब्रह्मण व्रते अपान को द्वितीय देखो , समाज को ब्रह्मणे कृतं मानो यह पञ्च आहुति दे करके अपने में पंचाग्नि को जागरूक करता है तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार ऋषि ने कहा क्या यह आमृतम ब्रहे यह अमृत कहलाता है इसको पान करने वाला अमृत्व को प्राप्त होता है और अग्नि में

समिधाओं के द्वारा मेरे प्यारे! देखो , वह अपने में अग्न्याधान करता रहता है तो तुम कहीं यह साकल्य चरू प्राप्त न हो तो तुम अग्न्याधान करो और अग्नि को प्रदीप्त करके तुम समिधाओं के द्वारा याग करो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा यह जो अग्नि है यह देवताओं का मुख है और देवता मानो देखो , इसी से प्रसन्न होते है जितना अग्नि की तरंगों पर ऊर्ध्वा में भाव प्राप्त करा दोंगे उतना ही तुम्हारा गृह और तुम्हारा जीवन पवित्रता को प्राप्त होता रहेगा मेरे प्यारे! यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! हम यह जानना चाहते है कि कही ऐसा ही क्या हमें कही आओ भी प्राप्त हो तो और समिधा भी न हो तो हम याग कैसे करे उन्होंने कहा यदि तुम्हें यह भी प्राप्त न हा तो मानो तुम देखो , अंजलि में जल को ले करके तुम कहो कि प्राणाय स्वाहा अपानाम स्वाहा व्यानाय स्वाहा उपानाम समानाय कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो मानो देखो , जल को अंजलि में लो और अंजलि में ले करके वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो अमृतम ब्रह्मा प्राणम ब्रहे कृतं देवम ब्रव्हा स्वाहा इस प्रकार तुम जल को अंजलि में ले करते चले जाओ तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि यह जल ही तो आपो है यह जल ही तो हमारा जीवन है माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते है तो माता के गर्भस्थल में जब शिशु होता है तो उसका ओठन भी जल है बिछौना भी जल है और पारो भी जल बने हुए है और वह जल में भग्नम ब्रह्मा मग्न होता रहता है उस समय अग्नि उस जल को उष्णा बनाती रहती है और देखो, यह सूर्य प्रकाश देता रहता है और यह चन्द्रमा अमृत को देता रहता है इसी प्रकार देखो, यह जलम ब्रह्मा व्रतम यह जल ही मानो देखो, उसके आंगन में विद्यमान रहता है यह जलम ब्रह्मा वर्णासुतम आपो को ले करके तुम अंजलि में कही है प्राणाम स्वहा हे प्राण मैं तुझे हूत कर रहा हूँ अपानाम स्वाहा और प्राणाय अपानम ब्रह्मे कृतं देवा यह सब प्ररणा को अव्रते आहुति देना प्रारम्भ करता है मेरे प्यारे! देखो , तू ही तो मेरा ओढन है तू ही मेरा आसन है और तू ही मानो देखो पांशे बन करके मेरी रक्षा कर रहा है तो बेटा! देखो, यह जल है मेरी प्यारी माता को यह ज्ञान नहीं होता है तेरे गर्भस्थल

में मानो देखो, आपो ही ओढन है आपो ही बिछौना है और निर्माण करने वाला निर्माण करता रहता है इस प्रकार मुनिवरों! देखो , ऋषि ने वर्णन किया ब्रह्मचारी यज्ञदत्त ने कहा धन्य है प्रभु उन्होंने कहा यह आपो को जल में जल को अंजली में ले करके कहो प्राणाम स्वाहा यह प्राणाम ब्रह्मा अकृत देव कहलाया जाता है मेरे प्यारे! देखो, इतने में यज्ञदत्त ने कहा प्रभु! जब मैं माता के द्वार पर विद्यमान था तो यह ज्ञान मेरी माता भी दिया करती थी मैं यह जानना चाहता हूँ जब जल भी न हो कही ऐसी भी सुविधाएं न हो क्या जल भी न हो तो हम याग करना चाहते है तो कैसे करें उन्होंने कहा कही तुम्हें ऐसा प्राप्त हो जाए क्या जल भी नहीं है और तु याग करने की प्रेरणा मुमने जागरूक हो रही है तो मानो देखो , तुम अमृतम एकन्त स्थली में विद्यमान हो करके और तुम मानो रज को ले करके पृथ्वी की रज को लो अंजलि में और कहो कि प्राणाम स्वाहा , अपानाय स्वाहा, व्यानाथ स्वाहा समानाय स्वाहा और उदानाय कह करके हुत प्रारम्भ करो मानो देखो, उस समय यह जो ब्रणे और यह भावना उसके मन्त्रों के साथ होनी चाहिए क्या हे गुरूतव हे पृथ्वी रजम ब्रहे यहे रज तू ही तो आपो में मिले तू ही तो पिण्ड का निर्माण करने वाला है यह गुरूतव है यह पृथ्वी का अनत्वा भाग कहा जाता है यही मानो देखो, मानव के प्रत्येक श्वास के साथ में गमन करता रहता है प्रत्येक तरंगों में तरंगित होता रहता है एक परमाणु में मानो यह विद्यमान होता है तो मेरे प्यारे! देखो , गुरूतव तरलतव और तेजोमयी यह तीन प्रकार के परमाणुओं का व्यवधान वैदिक साहित्य में आता रहा है और इन परमाणुओं से ही मुनिवरों! देखो, प्राणत्व को प्राप्त होता रहता है माता के गर्भ स्थल में जब मेरे प्यारे! देखो, गुरूतव का मिलन होता है तो पिण्ड का निर्माण होता है माता के गर्भ स्थल में मानो जैसे निर्माण जब यह पिण्ड का निर्माण हो जाता है तो बाह्य चित्त और आन्तरिक चितों का निर्माण होता है मेरे प्यारे! देखो , मन बुद्धि चित्त और अहंकारों का निर्माण होता है मानो देखो , मन की जो दशा कही जाती है सबसे प्रथम मन और मन के पश्चात् बुद्धि के चार प्रकार चार प्रकार की बुद्धियों

का निर्माण होता रहा है बुद्धि , मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा और उसके पश्चात मुनिवरों! देखो, बुद्धि, अहंकार अहंकार की अवृत्तिया उत्पन्न होती है मेरे प्यारे! देखो, चित्त का निर्माण होता है जहां जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते है तो मेरे प्यारे देखो, वेद का ऋषि कहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज हे ब्रह्मचारी! यदि तुम्हारे द्वारा नहीं हो तो पृथ्वी की रज को ले करके कहो प्राणाय क्योंकि यह जो प्राण है यह बिना गुरूतव परमाणुओं के गति नहीं करेगा गति नहीं करेगा यदि गति करता रहेगा तो इसमें जल तत्त्व अग्नि तत्त्व हो करके अग्नि प्रदीप्त हो जाएगी यह गुरूतव ही मानो देखो, इसको शान्त करता रहता है तो विचार आता रहता है वेद के ऋषि ने कहा है क्या तुम मम ब्रव्हे व्रतम मानो तुम सदैव ब्रहे देखो, इस पृथ्वी के गुत्व जो अवृता है उसको धारण करो और कहो प्रणाय ब्रह्मे उसको अंजलि में ले करके स्वाहा उच्चारण करते रहो अंजलि में ही मानो देखो , इसकी प्रतिमा का जन्म होता है तो मेरे प्यारे! देखो , जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! जलम आचार्य के कल में प्रवेश हुए तो आचार्य ने हमें यह वर्णन कराया था और आचार्य ने जब यह वर्णन कराया तो हम भगवन! यह जानना चाहता है अमृतम उससे हमें ब्रहे हम यह और जानना चाहते है यदि यह भी न हो यदि कहीं पृथ्वी की रज भी प्राप्त न हो और हमें याग करना है तो कैसे करें तो उन्होंने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा तुम एकन्त स्थली में विद्यमान हो जाओ और वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो वेदो की ध्वनियों में ध्वनित हो जाओ और कहो प्राणाय स्वाहा , अपाना स्वाहा, व्यानाय स्वाहा उदानाय समानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो क्योंकि यह तो प्रदूषण को समाप्त करने वाला है जब भी प्रदूषण का प्रारम्भ होता है दूषित वायु मण्डल होता है तो वह वाणी से हुआ करता है वाक् से होता है इसीलिए मानो देखो, तुम्हारा उद्गीत होना चाहिए तुम अपने वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए और वेद मन्त्रों की ध्वनि में ध्वनित हो जाओ और ध्वनित हो करके जटा पाठ में घन पाठ में गान गाते रहो परमात्मा का स्मरण करते हुए मानो तुम वेद मन्त्रों की

प्रतिभा मे रत्त हो जाएं जिससे तुम्हारा उद्गीत चलता रहे और उदान गान में तुम प्रवेश हो जाओ जिससे वायुमण्डल में तुम्हारे में पवित्रता आ जाएं और वायु मण्डल में महानता का जन्म हो जाएं तो मेरे पुत्रों! देखो , इस प्रकार ऋषि ने अपना मन्तव्य दिया और ऋषि ने कहा कि तुम वेद मन्त्रों का जब वायु मण्डल में प्रवेश करादोंगे तो मानो देखो, अग्नि की धाराओं पर तुम्हारा प्रत्येक वेदमन्त्र देखो, अन्तरिक्ष में प्रवेश कर जाएगा और वह दूषित वायुमण्डल में वृषितता को समाप्त करता हुआ और पवित्रता को धारण करता चला जाएगा इस प्रकार तुम वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो तो मेरे प्यारे! देखो , यज्ञदत्त बुह्मचारी ने जब इस प्रकार उन्होंने श्रवण किया तो वह नतमस्तिष्क हो गएं उन्हों कहा द्यन्य हे प्रभु! आप ने हमारे अज्ञान को समाप्त कर दिया है हे प्रभु! आपको धन्य है हम उद्गीत गाने वाले बनेगे तो मेरे प्यारे! देखो , यज्ञब्रम ब्रह्मा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने यहां प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों को बेटा! वैदिक शिक्षा देते हुए वेद मन्त्रों का उद्गीत गाति नैतिकता में देखो , प्राणियों को ले गएं और नैतिक वाद में ले जा करके नेत प्राणी भूताम भूवर्णनम अव्रतम देवत्वाम देवा लोका यही तो मानव लोक लोकान्तरों की यात्रा में अपने को ले जाता है जिनता भी पिण्डाकार बना हुआ है वह सब मानो देखो, पञ्चीकरण में निहित हो रहा है चाहे वह लोक लोकान्तरों के रूप में ही चाहे वह मानवीत्व के रूप में हो चाहे वह मानो किसी भी स्वरूप में प्रवेश होने वाला हो परन्तु देखो, उसी में रत्त होता रहता है तो आओ मेरे प्यारे! आज में तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ आज का विचार केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए इस प्रकार यज्ञों में अपने जीवन को यामयी बनाते हुए जैसे माता के गर्भस्थल मे जब मानो देखो , बाल्य होता है तो माता इस प्रकार की बुद्धिमता होनी चाहिए जिससे प्राण और अपान का मिलान करना जानती हो प्राण को अपान में अपान को व्यान में और व्यान को समान में समान को उदान में जो माताएं इस प्रकार की विद्या को धारण करने वाली है वही माता देखो, याग कर रही है उसको पुत्रेष्टि याग कहा जाता है

मेरे प्यारे! देखो, जो पुत्राम भूर्तम ब्रह्मा जो सन्तान को अर्ध्वा में जन्म देने वाली माता है वह प्राण को जानने वाली है और प्राण को अपान में मिलान करना जानती और अपान को व्यान में और व्यान को समान में समान को उदान में प्रवेश करा के अपने गर्भस्थल के अन्तरात्मा ब्रह्मे उस अन्तरात्मा से माता वार्त्ता प्रगट करती है उसको जानती है अनूभूति कराती है तो इस प्रकार मेरे प्यारे! देखो, वैदिक साहित्य में वेद मन्त्रों में इस प्रकार का वर्णन आता रहा है तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार अपन्त मत्तव्य दिया तो ब्रह्मचारी अपने में मौन हो गएं तो मेरे प्यारे! देखो , आज मुझे विशेष चर्चा नहीं याग के सम्बन्ध में आचार्यों का अपना बड़ा महत्व रहा है देखो, ब्रह्म के पुत्र अथर्वा से ले करके और नाना ऋषि पर्यनत देखो , यागों का अपना कर्मकाण्ड बड़ा महत्वदायक रहा है यज्ञमान देखो , विराजमान हो करके वह और या का मूर्ध्वा बन करके ही विद्यमान होता है अब मैं विशेष चर्चा न करता हुआ अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जी ओ३म् देवत भूतम भविर्णाचनाम देवाम वर्चस्वताम। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मेरे भद्र ऋषि मण्डल अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे अथवा गागर में सागर को मरण कर रहे थे और हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उस प्राचीन काल में मानो हम याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में विद्यमान है और उनके उद्गार हम सदैव श्रवण करते रहे है आज में विशेष चर्चा नहीं केवल मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने गागर में सागर की कल्पनाएं की है आज हम ब्रह्मे हमारा यह जो वाक् है यह उस स्थली पर जा रहा है जहां एक सामगान देखो , अपने में सामयज्ञा अपने में सम्पन्न हुआ है देखो, याग सम्पन्न हुआ है मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ रहता है हे यज्ञमान! तेरे ग्रह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे और तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे ऐसी मेरी कामना रहती है क्योंकि देखो , अमृतम देखो, यह जो काल है यह वाममार्ग का कामल कहा जाता है मैं इसे वाम यार्गी काल कहता हूँ

जहां राजा और प्रजा सभी स्वार्थी स्वार्थपरता में देखो, बलवती अपने विचारो को बना रहे है जहां गुरु और शिसष्य में भी एक दूसरे में देखो , स्वार्थपरता हो जहां एक दूसरा एक दूसरे को नष्ट करने में लगा है इसी प्रकार में यह कहता रहता हूँ। हे यज्ञमान! तेरा जीवन मानो वैदिकता से प्रवेश करता रहे और वाममार्ग पने का देखो, प्रत्येक मानव को नष्ट करना चाहिए वाममार्ग उसे कहते है जहां धर्म के मार्ग से उन्हे मार्ग पर गमन करने वाला हो इस काल में देखो, जहां राष्ट्रवाद की चर्चा आती है राजा तो कोई है ही नहीं मैं राष्ट्र की चर्चा तो इसीलिए कोई विशेष नहीं कर पाता परन्तु इतना अवश्य है क्या आधुनिक काल में देखो , दोनों ही स्वार्थ परता में निहित है ऐसा ही राष्ट्रवाद है ऐसा ही प्रजावाद है मानो देखो, यह दोनों स्वार्थ परता में अग्नि में प्रदीप्त हो रहे है और देखो, राजा का कर्तव्य है यदि राजा अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता है मैं तो यह कहता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से आधुनिक काल में राष्ट्र राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाना नहीं चाहता वह केवल एक दूसरे में विवादसत चाहता है जिससे तेरे पद की लोलुपतता बनी रहे ऐसा मानव का विचार बन गया है परन्तु देखो , यह राष्ट्रवाद का कर्तव्य है नहीं राजा का कर्तव्य है कि अपने राष्ट्र में ईश्वरवाद पर जो नाना प्रकार की रूढ़िया पनपती रहती है यह रूढ़िया नहीं पनपनी चाहिए क्योंकि जितनी भी ईश्वर के नाम पर रूढ़िया बनी रहेगी मजहब बने रहेंगे देखो , उतना ही विनाश राष्ट्र और प्रजा में रक्त भरी क्रान्ति के अवाशेषों का जन्म होता रहेगा मैं यह कहता रहता हूँ अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूँ यदि राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाना चाहता है जब वह उद्गीत गाता है और कहता है कि हम सब धर्मो को स्वीकार करते है अरे , भोले राजन धर्म तो एक ही होता है धर्म नाना नहीं होते नाना धर्म नहीं धर्म एक ही वचन है परन्तु देखो , धर्मज्ञ होना चाहिए नाना धर्म नहीं हुआ करते है वह रूढ़िया होती है और रूढ़ियों का विनाश करना चाहिए धर्म और मानवता और विज्ञान पर जो स्थिर हो जाएं उसको स्वीकार कर लेना चाहिए ऐसा मानो देखो , मेरा मनतव्य रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव

यह प्रार्थना करता रहता हूँ देखो, राजा अपने राष्ट्र में प्रत्येक देखो, प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्र करके और वहां निर्णय होना चाहिए और जो विज्ञान और मानवता पर स्थिर हो जाएं वहीं धर्मज्ञ वही राष्ट्र को उन्नत बनाने वाला है इसी प्रकार आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ हे राजन! तू अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाना चाहता है तो सब रूढ़ियों के आचार्य एकत्र हो करके अपना अपना निर्णय दे और जो तक्र या और मानवता या स्थिर हो जाएं राजा का कर्तव्य है कि उसको स्वीकार कर लेना चाहिए और प्रजा में एक महानता का जन्म हो जाएगा एकता के सूत्र में देखो , यह प्राणी प्राणी का भक्षक करने वाला नहीं रहेगा यह भक्षण का जो काम हे यह नाना प्रकार के ईश्वर के नाम पर रूढ़िया है और यह रूढ़िया इस प्रकार बलवती हो रही है कुछ समय के पश्चात् मानो देखो , इस पृथ्वी मण्डल पर देखो , अग्नि के काण्ड होने वाले है अग्नि प्रदीप्त होने वाली है अग्नि वास्तव में धीमी धीमी अग्नि प्रदीपत हो रही है एक समय आएगा जब मानो यह अग्नि प्रचण्ड हो करके मानव मानव का भक्षण कर जाएगा आज का वाक् मैं विशेष चर्चा नहीं देता हुआ केवल यह क्या देखो , धर्मम ब्रह्मा व्रतम देखो , वेद और मानवता को अपनाना चाहिए जिससे मानो देखो , वेद नाम प्रकाश का है मानवता उसको स्वीकार करने का नामोकरण है आज में विशेष चर्चा न देता हुआ मेरे अन्तर्हृदय में देखो, जो वेदना है वह वेदना राष्ट्र के प्रति और मानववाद के प्रति जो वेदनित बना रहता है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो गागर में सागर की कल्पना की जिनका व्यक्तव्य अपने में मानो देखो, वेदज्ञ और मानवीयता से गुथा हुआ है और धर्म से ओत प्रोत रहता है तो मैं विशेष चर्चा न देता हुआ हे यज्ञमान! तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे अग्नि देवा मुखार इस अग्नि को देवताओं का मुख स्वीकार करके मानो अपने द्रव्य का सदुपयोग करो यह है देखो, द्रव्य का सदुपयोग करना यह मानवता है और द्रव्य का दुरूपयोग करना सुरा सुन्दरी में परणित होना द्रव्य की लोलुपतता में देखो, यह प्रिय अप्रिय को स्वीकार न करना यह सब वाममार्ग के वृत्तियों पुनः वृत्ति कहलाती है तो

विचार आता है कि हे ब्रह्मे हे यज्ञमान! तेरे जीवन में और तेरे गृह में महानता का सदैव प्रसार और यज्ञम ब्रहे द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए आज में आपने में महानता का सदैव प्रसार और यज्ञम ब्रहे द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए आज मैं अपने वाक्यों को विराम दे रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेव : मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अनपा मन्तव्य दिया उनके हृदय में दाह राष्ट्र के प्रति कितनी दाह बनी हुई है कितनी विडम्बना है और यह विडम्बनित होते रहते है परन्तु हम इस प्रभु से याचना करते रहते है समय आयेगा निकटतम आयेगा ब्रह्मण ब्रहे जब राष्ट्र अपने में पवित्रता और देखो, धर्मज्ञ बनेगा और राष्ट्र देखो, अपने में महानता का प्रकाश द्रव्य की आभा में न वृत करने वाला ऐसा न होगा तो ऐसा मेरा अपना अपने में मन्तव्य होता है तो इसलिए आज का वाक् कहता है कि मानव को अपने में अपने पन में समाहित हो जाना चाहिए अपनेपन में ही अपनी आभा में रत्त होता हुआ इस संसार की आभा से पार हो जाएं यह है आज का हमारा वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या प्रत्येक मानव को याग करना चाहिए और भी नहीं तो वेद मन्त्रों का उद्गीत गाता रहे जिससे मानव का मन मस्तिष्क मन मस्तिष्क विचारो को ले करके महानता को जन्म देने वाला हो तो यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवा आभ्याम मनाः वाचनमा ओ३म् शेवश्याम भवितन्ना वायु रथम माम गता ओ३म् वेदश्चाम आपा यमाम वाचनमा

७ 30 06 1985 ऊर्ध्वा याग

जीते रहो! देखो , मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पूर्व की भांति , कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे , ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से , जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया , हमारे यहां, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है , जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, जो संसार का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है। मानो उस परमपिता परमात्मा की महिमा, प्रकृति के एक एक कण कण में दृष्टिपात आ रही है, जिस भी काल में, याज्ञिक पुरूषों ने, वैज्ञानिकों ने, विज्ञान के ऊपर अनुसन्धान किया है, अथवा यागों के सम्बन्ध में, विचार विनिमय किया है, उसी समय परमपिता परमात्मा बेटा! विज्ञानमयी स्वरूप दृष्टिपात आया है, मानो उसी काल में वह विज्ञानमयी स्वरूप दृष्टिपात आता रहता है। तो इसीलिए वे परमपिता परमात्मा विज्ञानमयी स्वरूप और यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं, जिसके ऊपर हमारे यहां परम्परागतों से बेटा! भिन्न भिन्न प्रकार का अन्वेषण होता रहा है अथवा विचार विनिमय होता रहा है कि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं। क्योंकि याग उसका आयतन माना गया है, परमपिता परमात्मा ने ये संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया है, क्योंकि यह संसार एक यज्ञोमयी माना गया है, यहां प्रत्येक प्राणी याज्ञिक बना हुआ है, प्रत्येक प्राणी अपने में आभा को प्राप्त करना चाहता है, मेरे प्यारे! देखो, माता अपने में यज्ञोमयी बनी हुई है। परमपिता परमात्मा का तो यह ब्रह्माण्ड एक यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है, प्रत्येक लोक लोकान्तरों में मानो उस प्रभु की महती का वर्णन हो रहा है। नाना प्रकार के प्राणी उस प्रभु के गान में लगे हुए हैं, मानो प्रकृति अपने में जड़वत होते हुए चेतना का सन्निधान मात्र होते ही बेटा! उसके स्वभाव में एक अनुपमता आ जाती है अथवा एक महानता का दिग्दर्शन होने लगता है, तो हमें विचारना है क्या प्रकृति अपने में मानो स्वरूपमयी मानी गई है, चेतना का सन्निधान मात्र होते ही उसके नाना

स्वरूप हमारे समीप आने प्रारम्भ हो जाते हैं।

मेरे प्यारे! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा है कि हमारे यहां वैज्ञानिकों ने यज्ञशाला में विद्यमान हो करके नाना प्रकार के यन्त्रों का भी निर्माण किया है, मेरे प्यारे! देखो , एक समय वैशम्पायन ऋषि महाराज और ब्रह्मचारी सुकेता, और ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु और ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता यह नाना ऋषिवर बेटा! ब्रह्मवर्चोसि का दर्शन कर रहे थे एक समय बेटा! उनके समीप एक मन्त्र आया वे वेद का मन्त्र महान अपनी आभा को प्रगट कर रहा है, चित्रं रथं ब्रह्म वाहा वार्णावस्ति वर्चो वस्तं स्वाहाः मेरे प्यारे! यह वेदमन्त्र एक आख्यिका आई है और आख्यिका का अभिप्रायः यह है कि वेदमन्त्र कहता है कि जो यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में होता जन विद्यमान हो करके स्वाहा उच्चारण करते हैं, मानो वह जो स्वाहा शब्द है, जो वेदमन्त्रों से सुगठित है, अथवा वेदमन्त्रों से गुथा हुआ है, वह शब्द द्यौ लोक को जाता है। वह द्यौ लोक को प्राप्त हो करके मानो वह अन्तरिक्ष की आभा में अगम्मयी हृदय में मानो उसका वास हो जाता है।

तो मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र मानो यह आख्यिका प्रगट करते हुए ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारी कवन्धि वैशम्पायन के चरणों में विद्यमान हो करके, इसके ऊपर गम्भीर मनन होने लगा। परन्तु देखो , सांयकाल हो गया, रात्रि छा गई, परन्तु मध्य रात्रि आ गई, प्रातःकालीन हो गया, वह अपने में निमटारा नही कर सके वेदमन्त्र के ऊपर यह निमटारा करना था, क्या यज्ञमान का स्वाहा मानो देखो, उसका चित्र बन करके वह रथ के ऊपर विद्यमान हो जाता है। वह मानो देखो, यज्ञशाला का रथ बन जाता है, और उस रथ पर विद्यमान हो करके मानो देखो, प्रत्येक यज्ञं ब्रह्मे होताजन, अध्वर्यु, उद्गाता, यज्ञमान मानो पुरोहित इत्यादि जन उस रथ के ऊपर विद्यमान हो करके वह द्यौ लोक को रथ गमन करता रहता है।

मेरे प्यारे! वेदमन्त्रों में यह आख्यिका आई परन्तु जब यह आख्यिका आई

तो विचार करने लगे विचार करते हुए बहुत गम्भीर मुद्रा में परणित हो गएं, विचार में नही आ रहा था, परन्तु ब्रह्मचारी कवन्धि और मुनिवरों! देखो , वैशम्पायन नाना ऋषि अब्रो अपने में धारणा में परा विचार बना करके उन्होंने वहां से गमन किया, और भ्रमण करते हुए चिन्तन में लगे रहे, परन्तु भ्रमण करते हुए वह मानो शिकामकेतु के द्वार पर पंहुचे। शिकामकेतु ऋषि महाराज वह मेरे प्यारे! उद्दालक गोत्रीय कहलाते थे, जो उद्दालक गोत्रीय ऋषि के द्वार पर पंहुचे, तो उन्होंने कहा प्रभु! यज्ञमान का रथ बन करके कैसे जाता है। तो मेरे प्यारे! शिकामकेतु ऋषि ने कहा क्या तुम भारद्वाज मुनि के द्वार पर क्यों नही जाते हो मानो देखो, यह जो ब्रह्मचारी सुकेता हैं, कवन्धि है, यह तो भारद्वाज मुनि के यहां इनका अनुसन्धान अथवा अन्वेषण में लगे रहते हैं। यह आज कैसे तुम्हारे में, मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा प्रभु! हम तो तुम्हारे द्वारा भी कोई जानना चाहते हैं तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय उन्होंने कहा सम्भूति ब्रह्म वाचा यन्त्रों उन्होंने बेटा! नाना यन्त्र दृष्टिपात कराए और उन यन्त्रों में यह विशेषता थी। मेरे प्यारे! देखो , जैसे यज्ञमान स्वाहा कहता था उनके शब्द और जितने यज्ञशाला के अंग संग विद्यमान शब्दों के साथ में उनका चित्र बन करके द्यौ लोक को जाने लगा बेटा! वह अग्नि की तरंगों पर विद्यमान हो करके वही तो द्यौ लोक को जाता है। आज जब मैं विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करने लगता हूँ, तो बेटा! हमें यह प्रतीत होने लगता है कि ऋषि मुनियों ने विज्ञान को कितनी ऊर्ध्वा से जाना है, विज्ञान अपने में कितना अनूठा रहा है, परन्तु वह ऋषि मुनियों ने अपने पिता महापिता मानो पड़पिता नाना ऋषियों के ऊपर बेटा! उन्होंने उनके ऊपर अन्वेषण किया है। विचार विनिमय किया है मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा शिकामकेतु ऋषि महाराज ने बेटा! अपने यहां नाना यन्त्रों का दिग्दर्शन कराया जैसे याग प्रारम्भ हुआ याग के प्रारम्भ होते ही उन्होंने एक यन्त्र का उन्होंने दिग्दर्शन कराया, और यह कहा कि इस यन्त्र में जो स्वाहा उच्चारण कर रहा है, उसके चित्र आ रहे हैं, मानो उसका चित्र अन्तरिक्ष में क्या मेरे प्यारे! यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगा मुनिवरों!

देखो, आगे उन्होंने यन्त्रों का दिग्दर्शन कराया तो मेरे प्यारे! पिता , महापिता, पड़पिता मेरे पुत्रों! देखो , उन्होंने पचासवें महापिता तक के ले करके और जो संसार में नही थे मानो देखो , उनका क्रियाकलाप उनके शब्दों के साथ में जो चित्र थे वह मानो उनके यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगे। तो मेरे प्यारे! वह जो यन्त्रों ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रहे मेरे प्यारे! ऋषि मुनियों का यह विज्ञान एक अपने में अनूठा रहा है, अपने में यह विज्ञान अनूठे पन में निहित रहा है, तो मुनिवरों! देखो , उनके चित्रों का दर्शन हुआ तो शिकामकेतु उनकी पत्नी मानो ब्रीहि वाचकेतु बोली कि महाराज! यह क्या कर रहे हो, उन्होंने कहा कि मैं देवी हमारे जो पिता महापिता, पड़पिता मानो देखो, जो जिनके शब्दों के साथ में चित्र अन्तरिक्ष में गति कर रहे हैं। उनकों यन्त्रों के द्वारा हम दृष्टिपात कर रहे हैं, मानो देखो , पचासवें महापिता का दिग्दर्शन कर रहे हैं, उनके एक पिता थे तो मानो सातवें महापिता थे, मेरे प्यारे! देखो, सातवें महापिता वो यज्ञं भवितां ब्रह्मवाचो देवाः मेरे पुत्रों! देखो, वह याग करते थे वह मानो साधना में परणित रहते थे, उनका आयु लगभग मानो देखो, तीन सौ वर्ष का आयु हो करके वह संसार से चले गएं। मेरे प्यारे! उनका जितना भी क्रियाकलाप था जितना यज्ञोमयी कर्म था, अग्नि होत्र था, स्वाहा के साथ में जो गति कर रहा था उसका सर्वत्र चित्र बेटा! यन्त्रों में दृष्टिपात आ रहा था। मेरे प्यारे! क्रियात्मक, अपने जीवन को बनाना है, हमारे ऋषि मुनियों ने आचार्यों ने बहुत अनुसन्धान किया बेटा! क्रियात्मक एक एक वेदमन्त्र को उच्चारण करना, कोई आश्चर्य नही हैं, परन्तु एक वेदमन्त्र के ऊपर अनुसन्धान करना उसको क्रिया में लाना मेरे प्यारे! देखो , जीवन के जीवन समाप्त हो जाते हैं। मेरे प्यारे! अनुष्ठान में लगे रहते हैं, यह विचारते रहते हैं, क्या वेद के मन्त्रों के शब्दों को जब विभक्त करते हैं, तो उसमें बेटा! अनन्त ब्रह्माण्ड का निकास हो जाता है। उसमें अनन्तमयी धारा का जन्म हो जाता है, और वह जो अनन्तमयी धारा का जन्म है, वही तो बेटा! देखो , विज्ञान की उपलब्धि में मानव को मानव की विज्ञान की वही उपलब्धि कहलाती है। हमारे यहां भारद्वाज

क्या और मुनिवरों! देखो, यहां उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि इस प्रकार के हुए हैं, जिन्होंने बेटा! आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान के ऊपर अपना क्रियात्मक मानो क्रियाकलाप किया है। उस क्रियाकलापों में, मानव को अपने में रत्त रहना चाहिए। आज मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, आज का विचार क्या है, आज बेटा! हम यह उच्चारण कर रहे थे, कि मानव को याज्ञिक बनना चाहिए, परमपिता परमात्मा ने मेरे प्यारे! यह जो हृदय अगम्य अन्तरिक्ष से इसमें बेटा! सर्वत्र शब्द प्रतिष्ठित हो जाते हैं, और वह शब्द अपने में क्रियात्मक बने रहते हैं, तो उन क्रियात्मक जीवन को पाना अथवा उसको अपने अनुष्ठान में लाना, यह उनका बहुत प्रियतम कहलाता है। एक मानव तो वाणी से उदगार दे रहा है, एक मानव अपने में उदगार दे कर क्रियात्मक बना रहा है बेटा! क्रियात्मक जो जीवन है वह उसका सार्थक है, वह उसका महान है, वह उसका पवित्रतम कहलाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का विशेष चर्चाएं मैं देने नही आया हूँ, विचार क्या हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है, वेद कहता है चित्रं गतप्रव्हा वायु द्यौ लोकाः मेरे प्यारे! वही तो शब्द है हमारा वह ध्वनित हो करके, द्यौ लोक में प्रवेश करता है, वही ध्वनित हो करके मानो सूर्य की तरंगों में तरंगित हो जाता है। वही मुनिवरों! देखो, शब्द मानो देखो, समुद्रों से मिलान हो करके, वे मेघों में परणित हो करके, वही मेरे प्यारे! देखो , ध्वनि के साथ में, आपो की ज्योति मुनिवरों! ज्योतिवान हो करके, वृष्टि के रूप में, नाना प्रकार के व्यंजनों को बेटा! ये पृथ्वी माता जन्म देने वाली है। आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा देने नही आया हूँ, आज मैं, मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्दों की उच्चारणा में लगे हुए हैं इनकी उत्कट इच्छा रहती है कि मैं कुछ वाक् उच्चारण करूं परन्तु देखो , आज का हमारा यह वाक् अब समाप्त होने जा रहा है, अब मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् यशाः सर्वं भद्राः वाचन्नमा दिव्यां मनुः। मेरे

पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, अभी अभी ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ रहे थे, क्योंकि इनके यहां ज्ञान और विज्ञान की उड़ान, प्रायः उड़ी जाती है और हमारा हृदय उन ज्ञान और विज्ञान की वार्त्ताओं को अपने में धारण करके, मानो हर्ष ध्वनियां करते रहते हैं। और यह प्रार्थना करते रहते हैं क्या इनका ज्ञान और विज्ञान कितना अनुपम मानो वेद में क्या क्या वस्तु है, आज का जो यह मानव है हमारी आकाशवाणी मानो देखो , पृथ्वी मण्डल अभ्योदय हो रही है। आज इस स्थली पर हमारी यह आकाशवाणी जा रही है, वहां एक यजूंषि का पठन पाठन हुआ, परन्तु याग हुआ, उस याग को दृष्टिपात करके मेरा अन्तर्हृदय मानो गद गद हो जाता है, और मैं यह कहा करता हूँ क्या हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्योंकि जिस गृह में, द्रव्य का सदुपयोग होता है, जिन गृहों में बुद्धिमानों प्रायः पूजन होता है, उनका सत्कार होता है वह यज्ञमान मानो सौभाग्शाली है आज उनके जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मेरी यह कामना रहती है मेरा अन्तर्हृदय मानो यज्ञमान के साथ रहता है। आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ परिचय कराने के लिए आया हूँ, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मानो नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की चर्चा करते रहते हैं और भिन्न भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ते रहते हैं, वह याग के सम्बन्ध में भी अपने बहुत गम्भीर मुद्रा में हमे मुद्रित कर देते हैं परन्तु जब हम यह विचारते हैं कि पूज्यपाद गुरुदेव जो उच्चारण कर रहे हैं। उसके आधुनिक जगत में, मानो उस कथनी में बहुत अन्तर्द्वन्द्व हो गया है उसमें बहुत अन्तर्द्वन्द्व मानो उसमें अन्तब्रीहि वाचो हो गया है जिससे हम यह विचारते रहते हैं, क्या मानो देखो, यागों का चलन, हमारे यहां परम्परागतों से ही , माना गया है, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, मानो नाना ऋषि मुनियों की, यह विचारधारा अथवा उनके विचारों की यह उपलब्धि कहलाती है, उनका विचार, इस वांगमय में पंहुचा है, क्या याग मानो देखो, एक ऐसा प्रिय कर्म है, जिस कर्म को करने के पश्चात, मानव अपने में आनन्दित हो जाता है अन्तरात्मा प्रसन्न हो जाता है वह जो

अन्तरात्मा जब प्रसन्न होता है तो वही मानो देखो, ज्ञान और विज्ञान की उपलब्धि में ले जाता है मानव को, तो जैसा मेरा मानो अनुभव हुआ है देखो , महाभारत काल के पश्चात, महाभारत काल से पूर्व यह पद्धतियां बड़ी विचित्र आभा में रही हैं, परन्तु कर्मकाण्ड में, कर्मकाण्डित रही हैं आज कोई मानव नाना प्रकार की रूढ़ियों में, मानव वेद की धारा को ले गया है, मैंने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा था, क्या आधुनिक काल का जो बुद्धिमान समाज है, वह यह कहता है कि ओ३म् का उच्चारण क्यों किया जाता है?

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने इससे पूर्व काल में अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने मानो वेदमन्त्र के प्रारम्भ में एक ओ३म् की ध्वनि का एक विशेष वर्णन किया। परन्तु देखो, वह गम्भीर मुद्रा में ले जाते हैं परन्तु हम भी उन वाक्यों को स्वीकार करते हैं। परन्तु आधुनिक काल में, बहुत से कर्मकाण्ड को, एक पाखण्ड कह करके मानो अपने में शान्त हो जाता है। परन्तु विचारा नही जाता है, कि पाखण्ड की मीमांसा क्या है? जब मैं यह प्रश्न करता हूँ कि पाखण्ड की मीमांसा क्या है? तो पाखण्ड की मीमांसा कोई प्राणी नही कर पाता केवल मैं तो यह स्वीकार करता हूँ, कि क्या पाखण्ड शब्द तो सबसे प्रथम तो यह है जो मानो वेद को अपना रहा है परन्तु वेद के अनुकूल अपने आचरणों को नही बना रहा है वह सबसे प्रथम मानो एक पाखण्ड कहलाता है। हमारे यहां प्रारम्भ में बहुत परम्परा कालों में ऐसा कहा जाता है कि जब ब्रह्मचारी विद्यालय में अध्ययन करते थे, तो ब्रह्मचारियों का निर्माण अथवा उनके क्रियात्मक जीवन को बनाने वाला पूज्यपाद गुरु होता और वह गुरु उनके आचरणों को पवित्र बना देता था, राष्ट्रीयता उपलब्धि क्या वह सर्वांग अंग वह विद्या को प्रदान करके उस ब्रह्मचारी को शिक्षा प्रदान करता था, परन्तु आधुनिक काल में वह बहुत दूरी काल चला गया है, मानो देखो, उनमें नाना प्रकार के अंग बना दिए हैं जहां विद्यालयों में, आचार्यों के संरक्षण में, ब्रह्मचारी प्रारम्भ से ले करके मानो देखो , वह मानो अन्तिम चरण तक, वह सर्वांग बना दिया जाता है वह क्रीड़ा में क्या मानो देखो , वह व्याख्यानों

में क्या उप व्याख्यानों में नाना प्रकार की विद्याओं में उन्हें परणित कराना, यह आचार्यों का कर्तव्य है। आयुर्वेद में क्या, आयु का निदान करना, केवल देखो , तपस्या में परणित कराना, यह सर्वत्र उनका एक क्रियाकलाप माना जाता है। उसको क्रियात्मकता में लाने के लिए सदैव तत्पर रहते। परन्तु वह काल कहां चला गया? उस काल से आधुनिक काल का जो विद्यालय है, वह एक पाखण्ड कह दूं तो मेरे लिए मानो देखो , कोई अतिश्योक्ति नही होगी। आज मैं जब विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, तो विद्यालय में ब्रह्मचारियों को निठल्लापन देखो , मानो देखो, वह उग्रपन का निर्माण किया जाता है, परन्तु उनको वास्तविक विद्या से वंचित्त कर देता है। आज का मानव देखो , क्या मैं इसको क्या उच्चारण करूं क्या यह राष्ट्र की कोई महान उपलब्धि नही हैं यह राष्ट्र का मानो देखो, एक हीन पना है आज मैं इन विचारो में भी नही जाना चाहता हूँ परन्तु देखो , विचार यह देने के लिए आज जैसे हमारे यहां इन यागों का चलन उन यागों के चलन में बुद्धिमान समाज जिन्हें कहता है उन बुद्धिमान समाजों का मानो देखो, एक उनके लिए क्रीड़ा स्थली अशुद्ध बन गई है। केवल उदर तक उदर की पूर्तित्व के लिए आधुनिक काल में महाभारत काल के पश्चात यागों की उपलब्धि केवल इतनी स्वीकार कर ली कि हमारे उदर की पूर्ति हो जाएँ। कर्तव्य का पालन नहीं रहा। यागों में मानो देखो, जब रसना के स्वादान आएँ तो नाना प्रकार के पशुओं को मानो देखो, बलि पर परणित करने लगे। मानो देखो, विचारा नहीं गया, बलि को विचारा नहीं गया कि बलि क्या है। मेरे प्यारे! जहाँ पुरुषार्थ करने का नाम बलि माना गया है वहाँ उसके मांसों की आहुति प्रदान करने लगे। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ऋषि मुनियों ने देखो , एक वाजपेयी याग का वर्णन कराया। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वाजपेयी यागों का वर्णन कराया। तो वाजपेयी यागों में बलि की देखो , बैल की बलि का वर्णन है गऊ वृख का ये जो गऊ का बछड़ा है इसको वृख कहते हैं , इसको बैल भी कहते हैं। परन्तु देखो , इसकी बलि का वर्णन है जब मैं ये विचारने लगता हूँ आधुनिक काल में ये कैसी

उपलब्धि मानव के समीप आयी है। अरे, यहाँ बैल की बलि का अभिप्राय केवल देखो, और जो पुरुषार्थ है वही बलि है परन्तु बलि का अर्थ यह स्वीकार कर लिया क्या इसके अंगों को देखो, वह रक्त बहाने लगे और देखो, उस यज्ञशाला में परिणत करने लगे जिससे यज्ञों का कर्मकाण्ड, कर्मकाण्ड से मानव विहिन हो गया है जब विहिन हो गया देखो गऊ का बछड़ा क्या मानो देखो अजामेध में मानो देखो, बकरी का बलिदान करने लगे, गो मेध याग में गो का बलिदान करने लगे इसको बलि में परिणित करने लगे यह वाक् मानो इसको वाममार्ग सम्प्रदाय कहते हैं वाम मार्ग उसे कहते हैं जो वास्त्विक मार्ग को त्याग करके अपने स्वार्थ के मार्ग को अपना लेता है मानो देखो, स्वार्थ के मार्ग को अपना करके मानो अपने में मानवीयता से विहिन हो जाता है आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन कराना चाहता हूं जब यह मोक्ष की पगडण्डी है प्रारम्भ का कर्म मोक्ष के लिए याग है, शब्दों की उपलब्धि का प्रथम चरण है तो इसमें हिंसा का कौन सा क्रियाकलाप कौन सा है आज जब मैं यह विचारता हूं राष्ट्रवाद में सबसे प्रथम हिंसा आई महाभारत के पश्चात राष्ट्रवाद नही रहा राष्ट्रवाद ने अपने कर्तव्य का पालन नही किया है जो राष्ट्रवाद अपने में कर्तव्य का पालन करता तो यह मानो अशुद्धियां धर्म परायण में नही आ सकती थी नाना प्रकार की रुढ़ियां बन गई उसी के कारण नाना प्रकार की रुढ़ियां बनी देखो, यज्ञों का खण्डन यज्ञों में अशुद्धियां आने से ही मानो देखो, नाना प्रकार के सम्प्रदायों का मानो देखो, उत्थान हुआ नाना सम्प्रदायों का जन्म हुआ उन नाना प्रकार के सम्प्रदायों ने सबसे प्रथम याग को न जान करके उसी के ऊपर उन्होंने आक्रमण करना प्रारम्भ किया। मानो देखो, मोहम्मद के मानने वालो ने भी इसी के ऊपर आक्रमण किया है, ईसा के मानने वालो ने भी इसी के ऊपर आक्रमण किया, देखो, यह बौद्ध के मानने वालो ने भी इसी के ऊपर आक्रमण किया , नानक के मानने वालों ने भी इसी के ऊपर आक्रमण किया और महावीर के मानने वालो ने भी इसी याग के ऊपर नाना आक्रमण किए हैं। उस आक्रमण का परिणाम यह हुआ क्या मानव के

हृदय से मानो देखो, वह अश्रद्धा में परणित हो गया। अब याग की कहाँ उपलब्धि आ गयी, उदर की पूर्ति करने वाले स्वार्थी ब्रह्म समाज ने मानो देखो , वे ब्रह्म समाज तो मैं उन्हें नहीं कहता हूँ, मैं केवल स्वार्थी कहा करता हूँ। ब्राह्मणों का तो कर्तव्य है कि यजमान को ऊर्ध्वा में ले जाएँ, परन्तु देखो, जो स्वार्थी ब्राह्मण बने, केवल जातीयता के आधार पर, मानो देखो, उन्होंने याग को इतना स्वीकार कर लिया किसी के बाल्य उत्पन्न हुआ, वहाँ याग कर लिया, दक्षिणा प्राप्त हो गयी, उदर की पूर्ति हो गयी। परन्तु देखो, कहीं संस्कार में, देखो, बाल्य ब्रह्मचारी का संस्कार हो रहा है, उस संस्कार में मानो देखो , उस संस्कार में याग किया , परिक्रमा देखो, अशुद्धियाँ कीं और अपने उदर की पूर्ति हो रही है। तो विचार-विनिमय क्या, मानो देखो, पाण्डित्व समाज इतना हीनता को प्राप्त हो गया क्या ब्राह्मण की पूजा नहीं रही , ब्राह्मण की पूजा में अशुद्धियाँ आ गईं। ब्राह्मण का , मानो देखो, ब्राह्मण का तो लक्ष्य केवल द्रव्य तक रह गया और यजमान का लक्ष्य इतना रह गया क्या वह अपना द्रव्य उसे प्रदान कर देता है , कर्मकाण्ड मानो देखो, हो या न हो उसे इससे कोई तात्पर्य, अथवा प्रयोजन नहीं है।

याग तिरस्कार का परिणाम रस्कार का परिणाम

विचार-विनिमय क्या मैं विशेष चर्चाएँ देना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये दे रहा हूँ, जो समाज में हो रहा है , जो समाज में मुझे दृष्टिपात आता है। जब मैं विचारता हूँ राष्ट्र के द्वारा जाता हूँ तो राजा भी इस प्रकार के स्वार्थी मानो देखो, ब्राह्मणों को लेकर के अपने मानो रेखा तक सीमित रहता है। उसकी राष्ट्रीय पद्धति बनी रहे, ये समाज या राष्ट्र किसी भी आङ्गन को चला जाए उसे इससे कोई सरोकार नहीं है। कोई भी मानो देखो, उसका कोई प्रयोजन नहीं है कि आज मैं देखो, अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाऊँ। अपने राष्ट्र में अग्नि प्रदीप्त हो रही है, विचारों की अग्नियाँ मानो एक विचारों का द्वितीय विचारों पर आक्रमण हो रहा है। उसके मूल में यही है कि यज्ञ का, देखो, याग का तिरस्कार किया, याग का तिरस्कार करने से मानो देखो, कहीं मुहम्मद के मानने वालो की पूजा हो रही है,

कहीं देखो, ईसा के मानने वालों की पूजा हो रही है , कहीं देखो, नानक के मानने वालो की पूजा है। इसी प्रकार कहीं बौद्ध और देखो , कहीं महावीर के मानने वालो की उपलब्धियाँ प्रारम्भ हो रही है।

पवित्र समाज

जब मैं इन विचारों में जाता हूँ कैसे इनका निराकरण हो, कैसे ये ऊँचे बने तो देखो, जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने विष्णु की व्याख्या करते हुए कहा है, क्या विष्णु बन करके राष्ट्र को विचारना होगा। मानो देखो, राजा के राष्ट्र में चार नियम नहीं होंगे जब तक राष्ट्र ऊँचा नहीं बनेगा। मानो देखो, राजा अपने राष्ट्र को यदि ऊँचा बनाना चाहता है भगवान् मनु ने इस संसार में सबसे प्रथम जैसा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया, सबसे प्रथम भगवान् मनु ने इस राष्ट्र का निर्माण किया। मानो देखो, राष्ट्र की उपलब्धियाँ थीं क्योंकि समाज में उत्तम पुरुष की पूजा करनी है। आतातार्इयों को अनुशासन में लाना है , उनको अनुशासन में ला करके ही मानो देखो, अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। राष्ट्र का अभिप्राय ये है क्या प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने लगे और यदि राजा स्वतः कर्तव्य का पालन करेगा तो राज्य की प्रजा भी कर्तव्य का पालन करेगी। जब राजा देखो, दूसरों के शृ ङ्गार को अथवा दूसरों के द्रव्यों को अपने ऐश्वर्य का साधन बना रहा है तो ये प्रजा कैसे ऊँची बनेगी। प्रजा उस काल में ऊँची बन सकती है जबकि वह स्वतः सदाचारी हो , याज्ञिक हो और याज्ञिक होकर के बुद्धिमानों के द्वारा राष्ट्र की पद्धति की वृत्तिका होनी चाहिए। मानो देखो , जितने सम्प्रदाय हैं उनके आचार्यों को एकत्रित करके उनका शास्त्रार्थ होना चाहिए। मानो ज्ञान और विज्ञान में मानो देखो , कोई भी धर्म हो , कोई धर्म नहीं होता धर्म तो एक ही होता है, कोई सम्पदाय हो जो मानो ज्ञान विज्ञान के ऊपर स्थिर न हो सके, अन्तिम वाक्य का राजा निर्णय करने वाला हो उसी प्रकार के विचारों का समाज रहना चाहिए, उसी प्रकार के विचारों का राष्ट्र में सम्प्रदाय रहना चाहिए। वह मानो देखो , अपने में नाना प्रकार की रूढ़ियाँ समाप्त होनी चाहिए। उन

रूढ़ियों का परिणाम, मानो देखो, यदि राजा उन रूढ़ियों पे शासन नहीं करेगा तो एक समय वह आएगा क्या वह रूढ़ियाँ ही एक दूसरे प्राणी को नष्ट करने के लिए तत्पर हो जाएगीं। देखो, धर्म को जो मानव जानता है राजा को चाहिए वह कहे, हे प्रजाओं! तुम्हारा धर्म ये है। तुम धर्म के मर्म को जानने वाले बनो। जो धर्म के मर्म को जानने वाला समाज होता है, धर्म के मर्म को जानने वाला राष्ट्र होता है मानो देखो, वही राष्ट्र, वही समाज पवित्र बन करके रहता है। उस समय वह यागों का पूजन होता है।

अशुद्ध वायुमण्डल

आज का जो विज्ञानवाद है आधुनिक काल का विज्ञान मानो समुद्रों के तटों पर विद्यमान हो हो करके , अपनी सभाओं में अपना निर्णय करता है कि वायुमण्डल दूषित हो गया है। यही कहते हैं कि वायुमण्डल दूषित हो गया , आधुनिक काल का जो वायुमण्डल है एक समय पर वृष्टि नहीं हो रही है , अति वृष्टि कहीं कहीं हो रही है। कहीं मानव नष्ट हो रहा है , तो कहीं मानव मानो देखो, उष्णता से अग्नि के काण्ड में परणित हो रहा है। कहीं जल में प्रवेश कर रहा है मानो देखो , इसके मूल में क्या है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में कहा है क्या ये सब वायुमण्डल दूषित हो गया है। जहाँ दो प्राणी विद्यमान होते हैं वहीं अशुद्ध वाक्यों का प्रतिपादन करते हैं, या रक्तभरी क्रान्ति की चर्चाएँ करते हैं। मानो देखो , राष्ट्र में , प्रत्येक प्राणी जब समाज में चिन्तित हो जाता है , राजा चिन्तित हो जाता है इसके मूल में क्या है याग नहीं रहा , बुद्धिजीवी प्राणी नहीं रहे , जब बुद्धिजीवी प्राणी नहीं रहे तो याग नहीं रहा और याग का पूजन नहीं रहा तो मानो देखो , ब्रह्म ज्ञान नहीं रहा और जब ब्रह्म ज्ञान नहीं रहा तो राजा कैसे निर्भय हो सकता है। देखो, राजा तो समाज में उस काल में ऊँचा बनता है जब उसके द्वारा क्रियात्मक ब्रह्मज्ञान होता है, मृत्यु का भय नहीं रहता और जहाँ राजा को मृत्यु का भय बना रहता है मृत्यु के लिए वह अपने रक्षार्थियों को अपने समीप लाता है वो कोई राजा नहीं होता। वेद की भाषा में

उसको राजा नहीं कहते, मानो वो तो एक प्रकार का अशुद्ध वृत्तियों कहलाता है। मानो देखो, इसके ऊपर जब हम विचार विनिमय करते हैं तो ऐसा हृदय त्राही त्राही हो जाता है ये समाज में क्या हो रहा है।

राजा को ब्रह्म ज्ञान नहीं है मानो एकोकी धर्म का चरण नहीं है। जब राष्ट्र ये कहता है नाना धर्म होते हैं, अरे, राजन्! अरे, तू! कैसा बन गया है। अरे, नाना धर्म तो होते ही नहीं , धर्म तो केवल एक होता है। नाना धर्म जब तू उच्चारण करता है तो मेरा हृदय तो ऐसा बन जाता है ये क्या हो रहा है समाज में। अरे , वायुमण्डल को भी अशुद्ध कर रहे हो नाना धर्म कह करके। अरे , धर्म तो एक कहलाता है। जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से इन वाक्यों को लाता हूँ तो विचार आता है मेरे अन्तर्हृदय में क्या ये जो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ हैं जिनको नाना धर्म कहता है आज का राष्ट्र, मानो देखो, ये एक अशुद्ध है। एक ही धर्म है उसी धर्म को लाना चाहिए जिसमें सुगन्धि हो , जिस विचारधारा में सुगन्धि हो , व्यापकवाद हो, मानव दर्शन हो, विज्ञान हो, तरङ्गों पर तरिङ्गत होने वाला प्राणी हो, अरे, वही तो धर्म कहलाता है। जब मैं ये विचारता हूँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में नाना वार्त्ताएँ प्रकट की हैं। नाना विचार दिए हैं परन्तु उन विचारों से मैं ये स्वीकार करता हूँ कि ये समाज बहुत दूरी चला गया अपने कर्तव्य से। जब मैं अपनी प्यारी माताओं से ये प्रश्न करता हूँ हे माता! तू कहाँ चली गयी तेरे कण्ठ में तो मानो विद्या होनी चाहिए थी, तू स्वर्ण के आभूषणों को अपना करके तू अपने को सजातीय बनाना चाहती है। हे माता! तू मल्दालसा की भाँति जो अपने पु त्र को तू मानो बुद्ध, शुद्ध कह करके उपदेश देती है तो वह बालक तेरा विवेकी बन करके ब्रह्मवेत्ता बन जाता है। मानो ब्रह्मवेत्ता बन करके वही तो राष्ट्र की उपलब्धि है , वही माता के गर्भाशय को स्वर्ग की आभा का उच्चारण करना है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे संसार की बहुत सी वार्त्ताएँ स्मरण करायी हैं। आज मैं उन वाक्यों में तो जाना नहीं चाहता हूँ केवल विचार ये देना चाहता हूँ

क्या मानो देखो, जब यागों में मांसों की आहुतियाँ दी जाने लगीं मानो देखो, माह की आहुति देना था वहाँ प्राणियों को नष्ट करके आहुति देने लगा प्राणी अपनी रसना के स्वादिष्टा में। मानो देखो, माह एक फल होता है उसकी आहुति देना तो अनिवार्य है, उससे वायुमण्डल में अपने पौष्टिक परमाणुओं की उपलब्धि हो जाती है।

परन्तु देखो, जहाँ ये मांस देखो, दूसरे प्राणियों का अहा! एक-एक परमाणु मानो उसमें प्रदान किया जाता वह कितना अशुद्धवाद है। आज भी पर्वतीय क्षेत्रों में प्रायः ऐसा क्रियाकलाप होता रहता है। परन्तु जब मैं विचारता रहता हूँ प्रायः वो समाप्त होने जा रहा है।

साधु

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव उसको मैं कई काल में ये उच्चारण कर गया हूँ कि राष्ट्र जब तक ऊँचा नहीं बनेगा राष्ट्र में जब तक कर्तव्यवाद नहीं आएगा राजा में, जब तक समाज कर्तव्य का पालन नहीं कर सकता है। परन्तु देखो, ब्राह्मण जब तक विवेकी नहीं बनेगा जब तक राष्ट्र का ब्राह्मण जब तक विवेकी नहीं बनेगा जब तक राष्ट्र का ब्राह्मण जब तक विवेकी नहीं बनेगा जब तक राष्ट्र का प्रोत्साहन उसके लिए नहीं होगा। प्रोत्साहन उसके लिए नहीं होगा। मुझे बहुत-सी वार्त्ताएँ स्मरण आती रहती हैं। एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव और हमने यह विचार बनाया चलो आज हम देखो, प्रजापति राजा के यहाँ गमन करेंगे। जब भ्रमण करते हुए मानो गमन किया तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव हम जब प्रजापति के द्वार पर पहुँचे तो उन्होंने स्वागत किया। देखो, प्रजापति उनकी धर्म देवी ने चरणों की वन्दना करते हुए, उन्होंने कहा आइए भगवन् आप अन्न का पान कीजिए। पूज्यपाद गुरुदेव ने ये कहा क्या मैं अन्न का पान नहीं करूँगा। क्यों नहीं करोगे? क्या तुम्हारा जो राष्ट्रीय अन्न है वो रजोगुण तमोगुण में सना हुआ अन्न है इसीलिए हम उसे पान नहीं करेंगे क्योंकि हमारी प्रवृत्ति रजोगुण और तमोगुण की बन करके हमारे जीवन का विनाश हो जाएगा। जब देखो, पूज्यपाद गुरुदेव

ने ये कहा, तो राजलक्ष्मी और राजा दोनों ने नतमस्तक हो करके बोले कि प्रभु! मैं तो स्वयँ कला कौशल करता हूँ और वह द्रव्य को एकत्रित करके मैं उसे पान करता हूँ और मैं राष्ट्र का क्रियात्मक कर्म कराता हूँ और उस अन्न को पान करके मेरी बुद्धि शुद्ध रहती है। तो तब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने और मानो देखो, कुछ अन्न का पान किया। विचार-विनिमय क्या आज का जो वह पूर्वकाल का साधु कितना महान् था। मानो पूर्व काल का साधक देखो, ऋषि कितना महान् था जो राजा को भी यह कह देता कि मैं इस अन्न को पान नहीं करूँगा। आधुनिक काल का साधु इस प्रकार का है क्या उसके द्वारा कोई मानो देखो , राज्य का ऊँचा कर्मचारी आ जाए तो साधु बहुत प्रसन्न हो रहा है और उसकी प्रसन्नता में वह मानो देखो, उसकी सेवा कर रहा है। यदि उसके द्वारा राजा आ जाए तो कहता है वो तो मेरे सब शिष्य कहलाते हैं। परन्तु देखो , उनकी वार्त्ता को स्वीकार करे या ना करें। परन्तु देखो , एक प्रकार का ये पाखण्ड हो रहा है। मैं इसी को तो पाखण्ड कहता हूँ। अरे, साधु तू इतना महान् साधना वाला बन जिससे तू राजा को अपनी बुद्धि से उसके अकर्तव्य से तो राजा को मानो देखो , अपने में उसे अपनी ओजस्वी वाणी में तू उसे कुछ दान कर सके और यदि तू अपनी ओजस्वी वाणी में तू अपने धर्म और मानवता की रक्षा नहीं करा सकता राजा से तो उसके आने का तुम्हारे द्वारा लाभ क्या होगा।

राजा और प्रजा राजा और प्रजा राजा और प्रजा

मानो देखो, इसका अभिप्राय ये है क्या यजमान साधक तपस्वी न होने से देखो, वह राजा अपने में मनमाना अपना क्रियाकलाप हो रहा है। नाना प्रकार की रूढ़ियों का जन्म हो रहा है और उन रूढ़ियाँ का जन्म होने से ही देखो, राष्ट्र का विनाश हो रहा है। राष्ट्र के विनाश में एक-दूसरे के विचारों पर आक्रमण हैं। एक दूसरे के शरीरों पर आक्रमण हो रहा है। एक-दूसरे को देखो, रक्त की धारा बनी हुई है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये उच्चारण कर रहा हूँ क्या ये समाज किस धारा में रत्त हो गया है। अरे, एक-दूसरे को स्वार्थ में रक्त का पान कराना ही क्या

ये मानवता है। इसको मानवता नहीं कहते। देखो, मोहम्मद के मानने वाले कहते हैं हिन्दू समाज नहीं रहना चाहिए। देखो, आर्यों को हिन्दू उच्चारण किया जाता है, ये कितनी मानो देखो, हीनता का शब्द है। ये राष्ट्र के लिए भी हीनता का शब्द है। वो चाहते हैं कि ये न रहें समाज में परन्तु देखो, ईसा के मानने वाले कहते हैं हम ही हम रह जाएँ परन्तु देखो, बौद्ध कहते हैं हम ही हम रह जाएँ , जैन कहते हैं हम ही हम रह जाएँ, तो ये कैसे समाज ऊँचा बने। ये उस काल में ऊँचा बनेगा जबकि राष्ट्र ऊँचा होगा, जबकि राजा पवित्र होगा और राजा अपने पर अनुशासन करे और राज के अनुशासन करने पर भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के आचार्यों का शास्त्रार्थ होना चाहिए, जब वेद की मानो उपलब्धि हो करके वेद के मन्त्रार्थ को अग्रणीय बना करके, ज्ञान और विज्ञान को लेकर के ये राष्ट्र ऊँचा बन सकता है। अन्यथा कोई भी कारण मुझे ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा है जो ये राष्ट्र ऊँचा बन जाए, क्योंकि द्रव्य की लोलुपता राजा को है , तो प्रजा को है। चरि त्र की मानो देखो, ऐशबन्दी राजा में है तो प्रजा में है। मानो देखो , इसी प्रकार ये समाज बना हुआ है और नाना प्रकार के सम्प्रदायों में और नाना प्रकार की रूढ़ियों में ये समाज रत्त हो रहा है , राष्ट्र रत्त हो रहा है। मैं ये कहता हूँ हे प्रजाओं! राजा से पुकार करो कि हमारे राष्ट्र में नाना प्रकार रूढ़ी नहीं होनी चाहिएँ, नाना प्रकार के रक्त का मानो पान नहीं करना चाहिए एक दूसरा प्राणी, ऐसा जब उस काल में होगा जब एक ही विचारधारा हो, एक ही महानता हो तो ये समाज ऊँचा बनेगा। ये है आज का हमारा वाक् अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

आज के हमारे उच्चारण करने का अभिप्राय ये है क्या याग का तिरस्कार होने से ही महाभारत के काल से आपत्ति आना प्रारम्भ हो गया था। अकर्त्तव्यवाद प्रारम्भ हो गया था। मानो राष्ट्र में महाभारत काल में ही ऐसा हो गया था। महाभारत काल की मानो देखो , उपलब्धियाँ बड़ी अशुद्ध हैं। महाराजा शान्तनु कहता है अपने पु त्र से मेरा संस्कार हो जाए और तू जीवन भर ब्रह्मचारी रहे।

परन्तु देखो, ये सबसे प्रथम अशुद्ध शब्द था इस महान्, देखो, वह कलंकित करने वाला राष्ट्र के लिए एक ही शब्द था , उसी की उपलब्धि यहाँ तक ले आयी है प्राणी को। तो ये आज का वाक् हमारा समाप्त। अब मुझे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे आज्ञा देंगे, तो मैं शेष चर्चाएँ मानो प्रकट करूँगा।

आज का वाक् समाप्त, आज मेरा जो विचार है हे यजमान! तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, द्रव्य का तेरे गृह में सदैव सदुपयोग होता रहे ऐसी मेरी कामना है। सदुपयोग करना मानो याग करना है। सदुपयोग करना मानो याग करना है। बुद्धिमानों वेद का प्रसार करना है। वेद के बुद्धिमानों वेद का प्रसार करना है। मन्त्रों में सर्व त्र ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। ये आज का वाक्य समाप्त। अब वेदों का मेरे पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! महानन्द जी ने अपने बहुत से विचारणीय शब्दों को उच्चारण किया क्योंकि इनके हृदय में एक दाह , एक विड़म्बना रहती है और विड़म्बना है कि वैदिकता को कैसे ऊँचा बनाया जाए , वेद मन्त्र कैसे उद्घोषित हो सकें। तो ऐसा इनका विचार आज हमने श्रवण किया। इनके विचारों में एक दाह है। तो विचार ये चल रहा था कि हमारा जीवन का जो क्रियाकलाप है वो दार्शनिकता में मानो यागों का वर्णन चल रहा था। मेरे पु त्र ने भी यागों का ही वर्णन किया है परन्तु याग इतना ऊर्ध्वा में रहना चाहिए जैसे शिकामकेतु ऋषि की हम चर्चा कर रहे थे, मानो देखो, वैशम्पायन की चर्चा कर रहे थे। तो आज का हमारा वाक्य अब समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा, इसके पश्चात् वार्त्ता समाप्त हो जाएगी। ओ३म् ब्रह्म भू रेवम् आपो रथं ब्रह्म वाचन्न आपाः । ओ३म् श्वञ्जना रथम् आभावर्णुवृहिविपा आभाः। ओ३म् सर्वम् भ्रदाः माम् गताः॥ दिनाँक 30 जून, 1985 :समय : प्रातः बजे स्थान : चान्दना नंगली।

८ 15 10 1985 ऋषि मुनियों के उद्गार

जीते रहो, देखो , मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही ये पठन पाठन की प्रतिक्रियाएं हैं, और हमारे मानवीय मस्तिष्कों में सदैव रत्त रही हैं। हमारे यहां भिन्न भिन्न प्रकार कि पठन पाठन की प्रतिक्रियाएं परम्परागतों से ही विचित्र मानी गई हैं। मानो जैसे हमारे यहां माला पाठ का वर्णन आता है, तो हमारे यहां माला पाठ प्रत्येक शब्दों की प्रतिभा में निहित रहता है। क्योंकि उस परमपिता परमात्मा ने जब इस मानवीयता का निर्माण किया तो मानव के मस्तिष्क में एक ऊर्ध्वा में एक ध्वनि हुआ करती है, जिस ध्वनि में ध्वनित होता हुआ बेटा! योगेश्वर उस ध्वनि को श्रवण करता रहता है, और उसमें आनन्दवत का ग्रहण करता है, तो उसी ध्वनि को जब बाह्य जगत में लाया जाता है, तो वहां वेदमन्त्रों का वो उद्घोष करता है और वेद मन्त्रों को अपना स्वर और व्यञ्जन देता रहता है। मानो वह शब्दों की प्रतिभा में सदैव निहित रहता है। जैसे माला और नाना प्रकार के मनके और धागों का दोनों का समन्वय होता है, तो एक माला कहलाती है। इसी प्रकार प्रत्येक शब्द को मानो धारा में रत्त कराना और उसको ध्वनि में ध्वनित करने का नाम एक माला के रूप में परिणत हो जाता है, अथवा वह माला हमे दृष्टिपात आने लगती है। तो ये संसार जितना भी हमें प्रायः दृष्टिपात आ रहा है, वो एक माला के सदृश्य किसी भी प्रकार की योनि हो, किसी भी प्रकार की आभा हो वह एक दूसरे में पिरोई हुई है, और एक दूसरे में निहित होती दृष्टिपात आती है। मानो यदि उसमें एक दूसरे में प्रतिभाषित नही होगी तो ये संसार माला के रूप में दृष्टिपात नही आ सकेगा। शिल्पकार जब यज्ञशाला का जब निर्माण करता है तो वो भी मानो एक प्रकार के रूपों को रूप देता चला जाता है, तो वह माला बन जाती है। जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह याग करता है और वह याग करता है

और वह याग करता हुआ अपने हृदय और प्राण और मनस्तव मानो देखो , जब तक ये संतुलित नहीं होते तब तक वह याज्ञिक अपनी यज्ञशाला में सफलता को प्राप्त नही होता है।

महर्षि लोमश और कागभुषुण्ड जी का चिन्तन

बहुत पुरातन काल हुआ बेटा! एक समय महर्षि लोमश और कागभुषुण्ड जी का भी इस सम्बन्ध मैं कुछ विवाद हुआ। बहुत से विचार विनिमय होते रहे हैं। तो महर्षि कागभुषुण्ड जी ने कहा कि भगवन! यज्ञमान यज्ञशाला में याग करता रहा है और यदि मन की प्रतिभा स्वाहाः से गुथी हुई नही है, तो उसका कोई प्रतिफल होता है? तो उस समय महर्षि ने ये कहा क्या उसका प्रतिफल नही होता। जब मनस्तव कहीं रूप में रहता है और क्रिया कहीं हो रही है। तो वह क्रिया का मन और आत्मा से कोई समन्वय नही होता। परन्तु समन्वय जब ही होता है जब वह मानो एक दूसरे से वह पिरोई हुई होती हैं। मन प्राण में, प्राण क्रिया में, और क्रिया द्यौ में जब तक नही होती जब तक वह याज्ञिक देखो, याग सफलता को प्राप्त नही होता। मेरे पुत्रों! देखो , ये कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज का विचार विनिमय होता रहा है। आज मैं इस सम्बन्ध में तो तुम्हे कोई विवेचना तुम्हे प्रगट करने नही आया हूं। विचार केवल यह कि हमारे जो मन, सूत्र के जो मनके हैं, वह महान होने चाहिए। जब तक मनके और सूत्र दोनों का समन्वय नही होगा तो वो माला नही कहलाएगी। इसीलिए हमे माला बनानी है और माला को अपने में धारण करना है। जैसे राष्ट्र के यहां जब राजा के यहां से चरित्र का अभाव हो जाता है तो वह उसका सूत्र चला जाता है। क्योंकि राष्ट्र का भी यदि कोई सूत्र है तो वह उसका चरित्र है और उसकी प्रतिभा है। परन्तु यदि समाज और राष्ट्रीयता से चरित्र चला गया है तो उसका प्राण समाप्त हो गया है, मानो उसका सूत्र समाप्त हो गया है। इसीलिए हमे उस सूत्र को अपने में धारण करना है जिस सूत्र को सूत्रित हो करके मानव इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करता है। जैसे मानो यज्ञशाला में ब्रह्मा

विद्यमान होता है, ब्रह्मा अपनी क्रियाओं से और अपना मनस्तव मानो होताजन और वेदमन्त्रों की प्रतिभा में जब निहित रहता है तो देखो, उसके ब्रह्मत्व का मानो अस्तित्व होता है और ब्रह्मा का यज्ञशाला के होताओं और उस यज्ञमान के प्रति ध्यानम् उसका मनस्तव नही होता, प्राण क्रिया वेदमन्त्रों में नही होती तो मानो देखो, उससे उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। वह माला को धारण नही कर रहा है, वह माला से विमुख होने जा रहा है। इसीलिए हमारे आचार्यों ने कहा है कि जो भी तुम क्रिया में अपने को लाना चाहते हो तो वह मन, कर्म, वचन मानो सर्वत्रता में एकोरस हो करके अपने में क्रियाकलाप होते चले जाओ।

शिकामकेतु ऋषि महाराज और उनकी पत्नी का विज्ञान के वाङ्गमय में प्रवेश

मेरे पुत्रों! आओ मैं आज तुम्हें मानो देखो, उद्दालक गोत्र में ले जाना चाहता हूं। महर्षि उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए हैं, क्योंकि हमारे यहां उद्दालक गोत्र में लगभग दस हजार पांच सौ बयालीस मानो वंशलज हुए हैं। उन वंशलजो का नामोकरण है परन्तु गोत्र केवल यह उद्दालक गोत्र कहलाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, उद्दालक गोत्र में एक शिकामकेतु ऋषि हुए हैं। शिकामकेतु ऋषि और उनकी पत्नी सोमवृत्तिका मेरे पुत्रों! देखो , दोनों अपने गृह में याग करते थे। याग करते करते मानो देखो, उनके हृदय में क्योंकि याग का जो प्रतिफल होता वह दो प्रकार का होता है, एक श्रोत्रीय कहलाता है, एक मानो वृहीवास कहलाता है। तो मेरे प्यारे! वह जो वृहीवास किया है वह महान विज्ञान से उसका समन्वय होता है और श्रोत्रीय इस संसार के क्रियातमक जीवन से होता है। तो मेरे पुत्रों! देखो , जब दोनों अपने में अन्वेषण करते विचार विनिमय करते, तो उनका विचार आन्तरिक जो जगत था वो विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो जाता और विज्ञान में वो रत्त होने लगते। तो एक समय उनकी पत्नी ने कहा प्रभु! अब तो हम यहां से गृह को त्याग करके भयंकर वनों में जा करके यदि अपने याग को सम्पन्न करेंगें तो हमारा याग सम्पन्न हो सकेगा। तो मुनिवरों! देखो , उन्होंने कहा देवी बहुत प्रियतम्। तो शिकामकेतु ऋषि महाराज और वह देवी जी मुनिवरों! भयंकर वनों

में जा पंहुचें, दराडक वनों में। तब वनों में जा पंहुचें तो वह वहां साकल्य एकत्रित करते और साकल्य को ले करके कामधेनु गऊ उनके द्वारा थी उसके घृत के द्वारा, दुग्ध के द्वारा वो प्रायः याग करते रहते थे। जब वो याग करते तो बेटा! याग में जब विद्यमान हो करके अपने में चिन्तन और मनन करते थे। जब वो याग करते। मानो जो याग में तरंगे उत्पन्न होती थीं उन तरंगों के साथ अपने मनस्तत्व को मानो ले जा करके उस अन्वेषरा करते रहते थे। अन्वेषरा करते हुए ऐसा कुछ स्मररा आ रहा है पुत्रों! आज क्या मानो देखो , जब याग में याग के पश्चात जब तरंगों के ऊपर वो अपने में ले जाते तो मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला भी भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैं। हमारे यहां चौबीस कोराों से द्वि कोराों तक की यज्ञशालाओं का निर्मारा हमारे यहां वैदिक साहित्य में आता रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, जब याग करने वाला याज्ञिक बन करके जिस प्रकार का वह याग करता है, जैसे अग्निष्टोम याग है, और वाजपेयी याग है, आनम् ब्रह्मे अजामेध याग है, अश्वमेध याग है, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चलन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है। आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नही दूंगां। केवल विचार विनिमय क्या कि हमारे यहां यागों का जो विज्ञान है ये महान परम्परागतों से बड़ा विचित्र रहा है। ऋषि मुनियों ने इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया क्योंकि याग का प्रकररा वैदिक साहित्य में मन्त्रार्थों में आता रहा है। क्योंकि देखो , उन मन्त्रों में कहीं कन्या का वर्रान है, कहीं देवी याग का वर्रान है, कहीं मानो चन्द्रकृतिका का वर्रान आता रहा है। भिन्न भिन्न प्रकार के जैसे विष्राु, रुद्र और ब्रह्म याग का वर्रान आता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु ऋषि महाराज उनकी पत्नी मानो उनके आश्रम में कुछ यागिक ब्रह्मचारी आते रहे, वे भी अन्षवेरा करने लगे मुनिवरों! देखो , जैसे तरंगे उत्पन्न होती उन तरंगों के ऊपर बेटा! वे विचार करते उन्होंने बेटा! एक सूत्म विज्ञान के यन्त्रों का भी निर्मारा किया। क्योंकि वेदमन्त्रों में आता रहता था चित्रम् भविता देवो यज्ञम् ब्रव्हा व्रते। मेरे पुत्रों! देखो, वेदों में ये आता रहा कि चित्रों को हम चित्रों में दृष्टिपात करना

चाहते हैं। तो मुनिवरों! देखो , वह ऋषि वेदमन्त्र को ले करके परमाणुओं और साकल्य को ले करके मुनिवरों! देखो, विज्ञान के वांगमय में प्रवेश कर गए और विज्ञान के जब वांगमय में पंहुचें तो मानो वहां तरंगे दृष्टिपात होने लगी वह तरंगों में तरंगित दृष्टिपात करने लगे तो मेरे प्यारे! उन्होंने एक यन्त्र का उन्होंने निर्माण किया था। इस यन्त्र को चित्रावली धामकेतु यन्त्र कहते थे।

मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञशाला में जैसे याग करते तो दोनों यन्त्रों को स्थिर कर लेते। मानो देखो , यन्त्रों में उनके चित्र आने लगे। आगे उन्होंने उसके ऊपर अन्वेषण, अनुसन्धान किया तो मुनिवरों! देखो, उनके चित्र वायुमण्डल में दृष्टिपात आने लगे। तो विचारते विचारते बेटा! जब बहुत अनुसन्धान किया तो ऐसा कुछ प्रतीत है बेटा! क्या उन्हें मुनिवरों! देखो , अपने पितरों के भी दर्शन होने लगे, मानो देखो, पित्रोहा सम्भवा मेरे प्यारे! देखो , जो पितरजन उनके जो शब्द थे अन्तरिक्ष में विद्यमान थे उनके चित्र! मानो देखो , यन्त्र में दृष्टिपात होते हुए दृष्टिगोचर होते हुए वे अपने में भान करने लगे क्या ये तो हमारे पितरजन हैं। उनके क्रियाकलाप उनका मानो देखो , शब्द और आकार मुनिवरों! देखो , उनके यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगा। तो मुनिवरों! देखो, शिकामकेतु एक समय मध्यरात्रि में अपनी पत्नी से बोले देवी ये जो यन्त्रवाद है ये क्या है? तुम्हारे विचार में कुछ आता है? देवी ने कहा प्रभु? जैसा हमारा विचार बना है उस अनुभव को हम उच्चारण कर सकते हैं। उन्होंने कहा देवी अपना अनुभव उच्चारण करो। तो मेरे पुत्रों! देवी ने कहा प्रभु! हमारे यहां जो वेद मन्त्रों में जो विज्ञान आता है उस विज्ञान का साकार रूप ही बनाना है, उसको साकारता में लाना है। क्योंकि इसीलिए हमारे यहां एक शब्द की प्रतिभा में ये आता है क्या मानव को शब्द यथार्थ उच्चारण करना चाहिए, शब्द में माधुर्यता होनी चाहिए। शब्द को ये विचार लेना चाहिए कि कहीं कहीं शब्द यथार्थ है, परन्तु उसके उच्चारण करने में मिथ्यावाद भास होता है। उनको भी हमे उद्गीतता में नही गाना चाहिए। ऐसा मानो उनकी पत्नी ने कहा। तो उन्होंने कहा देवी यथार्थ वाक् है। परन्तु उन्होंने कहा कि

इसीलिए वेदमन्त्र ये कहता है चित्रम् भवति चित्रम द्यौ लोकाम् चित्रम् अग्नाम् ब्रह्म चित्रम् रथम् वायु। मानो देखो, ये जो वायु है ये अग्नि की तरंगों में अग्नि के ऊपर जब सवार हो करके जब शब्द ये गति करता है, तो इसको वायु गति देता है और वायु गति दे करके अन्तरिक्ष में मानो देखो , ये ओत प्रोत हो जाता है अन्तरिक्ष में स्थिर हो जाता है। वह जो अन्तरिक्ष में हमारे पिता महा पिताओं के चित्र गतियां कर रहे हैं। उनको हम यन्त्रों के द्वारा हम दृष्टिपात कर सकते हैं उसमें कोई ऐसा आश्चर्य नही है। तो मेरे प्यारे! देखो , जब ऋषि पत्नी ने ये वाक् कहा तो ऋषि बोले कि देवी! वाक् तो तुम्हारा बड़ा यथार्थ है, प्रियतम् है परन्तु इसके ऊपर और अनुसन्धान किया जाए। तो बेटा! देखो , विचारने लगे। तो विचारते विचारे उन्होंने बेटा! देखो, अपने यन्त्रालयों में उसी यन्त्र में बेटा! पचासवें महापिता के दर्शन करने लगे। एक पिता नही, दो पिता नही बेटा! जो अन्तरिक्ष में उनका क्रियाकलाप हो रहा था शब्दों के सात उनके चित्र बन बन करके बेटा! उन यन्त्रों में प्रवेश होते हुए दृष्टिपात होने लगे। मानो देखो , उसमें उनका क्रियाकलाप, उनकी मग्नता, उनकी ओजस्ता, उनके जो भी कुछ क्रियाकलाप थे वे सब उन चित्रों में दृष्टिपात आने लगे।

माता सोमवृत्तिका और ऋषि द्वारा तप की विवेचना

मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु ऋषि बोले क्या हे देवी! हमे तप करना चाहिए, हमे तपों में प्रवेश हो जाना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, तपो ब्रह्म व्रव्हा ऋषि ने कहा कि देवी! तुम जानती हो तप किसे कहते हैं? तो देवी ने कहा प्रभु मेरे विचार में ये आता है क्या तप कहते हैं इन्द्रियों को तपाने का नाम तप है, और इन्द्रियों को जब तक हम सुसज्जित नही बनाते जब तक मानो देखो , हम तपस्वी नही बन सकते। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा देवी! आज हम अपनी इन्द्रियों का साकल्य बनाना चाहते हैं जैसे नाना प्रकार का साकल्य हम एकत्रित करके मानो सामग्री के रूप मैं अग्नि को अर्पित कर देते हैं। वह अग्नि उसका भेदन करके सूक्ष्म बना करके अन्तरिक्ष में प्रवेश कर देती है। इसी प्रकार हम भी अपनी इन्द्रियों का

साकल्य बनाना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने देखो, रूप, रस, गन्ध इत्यादि को एकत्रित करना प्रारम्भ किया। मेरे प्यारे! देखो , नेत्रों से रूप लिया, घ्राण से मन्द सुगन्ध ली और देखो, श्रोत्रों से शब्द लिया, त्वचा से प्रीति ली मानो देखो , इसी प्रकार रसना से रस ले लिया। रस ले करके इनका सबका साकल्य बनाया। साकल्य बना करके मुनिवरों! देखो , उसे प्राण सूत्र में साकल्य को पिरोना प्रारम्भ किया। वह जो ज्ञान रुपी अग्नि हमारे अन्तर्हृदय में जो प्रदीप्त हो रही है उस अग्नि में मुनिवरों! देखो , योगीजन समाधिष्ठ हो करके बेटा! उसमें आहुति देना प्रारम्भ कर देते हैं। जब उसमें आहुति दी तो मुनिवरों! देखो , वो सोमता को प्राप्त हो गए। वह मानो देखो, हृदयरूपी यज्ञशाला में याग हो रहा है। कैसा प्रिय याग कर रहा है योगीजन मेरे प्यारे! देखो , अपनी यौगिकता को प्राप्त कर रहा है। वह जब उसमें साकल्य अर्पित करके याग करता है उसमें समाधिष्ठ होता है, तो मेरे प्यारे! वह ज्ञानरूपी अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। वही ज्ञानरूपी अग्नि बेटा! मानो प्रदीप्त हो करके ही मुनिवरों! देखो, सर्वत्र अन्तरिक्ष सर्वत्र जो जगत है ये मुनिवरों! देखो, योगीजन अपने में दृष्टिपात करने लगता है अपने में ही और अपने को उस मानो बाह्य जगत में और बाह्य जगत अन्तरिक्ष में, आन्तरिक जगत में जब प्रवेश कर देता है तो बेटा! उस मानव की मानवीयता विचित्र बना जाती है, यौगिकता उसके समीप आनी प्रारम्भ हो जाती। तो मानो इसी प्रकार शिकामकेतु ऋषि महाराज उनकी पत्नी अपने में अनुसन्धान करते हुए अपने में इन्द्रियों का साकल्य बना करके जैसे वह अपने पितरों का दर्शन कर रहे थे ऐसे बेटा! देखो, अन्तर्हृदय में साकल्य को परणित करने से हृदय रूपी यज्ञशाला में अग्नि प्रदीप्त करने से, ज्ञान रूपी अग्नि का भान होने से बेटा! प्रभु का दर्शन होता है। प्रभु की प्रतिभा हमे दृष्टिपात होने लगती है।

शिकामकेतु ऋषि महाराज को विज्ञान की प्रेरणा

मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या हमारे यहां उद्दालक गोत्रीय ऋषियों में नाना प्रकार के ब्रह्मवेत्ता और विज्ञानवेत्ता हुए हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो , एक समय वो

दोनों पति पत्नी मानो देखो , अपनी विज्ञानशाला में विद्यमान थे एक समय बेटा! देखो, महर्षि वैश्वव्रेतकेतु ऋषि महाराज के यहां कुछ ऋषि मुनियों का आगमन हुआ और कुछ ऋषि मुनि मानो भ्रमण करते हुए वह मुनिवरों! देखो , शिकामकेतु ऋषि के द्वार पर पंहुचें। क्योंकि वह भी श्रोत्रिय बुद्धिमान थे वे वेद के वेदज्ञ थे। तो मुनिवरों! देखो , उन्होंने जा करके उनके चरणों की वन्दना की। चरणों को स्पर्श करके विद्यमान हो गए। उन्होंने उनका अतिथि किया, कहा तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा हे भगवन! हमारा आगमन इसीलिए हुआ कि हम वेदों का अध्ययन कर रहे थे और वेदों का अध्ययन करते हुए कुछ साहित्यिक संसार के ऋषि मुनियों की वंशावलियों को भी अध्ययन में ला रहे थे, परन्तु हमने श्रवण किया है क्या तुम्हारा विज्ञान बड़ा पारायण, बड़ा महानता में गति कर रहा है। तो प्रभु! हम उस आपके विज्ञान को दृष्टिपात करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! उन्होंने नाना प्रकार के यन्त्रों को दृष्टिपात कराते हुए कहा क्या ये मानो देखो , हमारे पितरों का दर्शन हो रहा है। ये शब्द ये शब्दों को यन्त्र अपने में ग्रहण करता है और शब्दों के साथ में चित्र आ जाता है। हम उन चित्रों को अपने में दृष्टिपात कर रहे हैं। मेरे प्यारे! जब ऋषियों ने वैश्वब्रही ने जब ये दृष्टिपात किया तो वह बड़े आश्चर्य में हो गए। मेरे प्यारे! उन्होंने पिता, महापिता पड़ पिताओं के बेटा! मानो पचासवें महापिता का दर्शन किया। उन्होंने कहा कि हम अपनी विज्ञानशाला में अपनी स्थलियों में मानो सौवें महापिता का भी दर्शन कर लेते हैं। हम मानो यन्त्रों में उनके शब्द उनकी प्रतिक्रियाएं उनका दर्शनों का अभ्यास मानो देखो , हमारे यन्त्रों में दृष्टिपात आता है मेरे प्यारे! जब उन्होंने यह दृष्टिपात किया तो ऋषि ने कहा हे भगवन! हे शिकामकेतु ऋषि महाराज! आपका ये जो वंशलज है, मानो तुम्हारा ये जो वंशलज है यह बड़ा विचित्र माना गया है, मानो उद्दालक गोत्र में कोई भी वंशलज ऐसा नही हुआ है जो इतने ऊर्ध्वा के विज्ञानवेत्ता को जानने वाला हो। तुम्हारा विज्ञान अपने में बड़ा अनूठा हमे दृष्टिपात आ रहा है। हमारे विचारों में जो आ रहा है। ये एक बड़ा अनूठा है परन्तु तुम्हारा वंशलज

तुम्हारा जो उद्दालक गोत्र है, इस उद्दालक गोत्र में सब ब्रह्मवेत्ता हुए हैं, ब्रह्मनिष्ठ हुए है, ब्रह्म की चर्चा करने वाले हुए हैं। परन्तु ऐसा कोई मुझे दृष्टिपात नही हुआ अब तक जो इस प्रकार के विज्ञान को जानने वाला हो। ये विज्ञान की प्रेरणा तुम्हे कहां से प्राप्त हुई है, ये भौतिक विज्ञान है, भौतिकवाद भी चरम आभा में रत्त करने वाला है। परन्तु ये प्रेरणा तुम्हे कहां से प्राप्त हुई? मेरे प्यारे! देखो , जब शिकामकेतु ऋषि महाराज से ऋषि ने ये वाक् प्रगट किया, अपरों में प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि माता पिता इसके प्रेरक होते हैं इसके मूल में माता पिता होते हैं।

मानो देखो, एक समय जब मैं बाल्यकाल में था शिकामकेतु कहते हैं कि जब मैं बाल्यकाल में था तो मेरे पिता थे मेरे पिता का नाम स्वांगकेतु ऋषि महाराज था। स्वांगकेतु उद्दालक एक समय मानो देखो , माता पिता दोनों प्रातःकालीन याग कर रहे थे। जब याग कर रहे थे तो याग में अपनी ध्वनि को ध्वनित करते हुए एक समय माता जब वेदों का गान गाने लगी मानो प्रारम्भ में ही जब प्रार्थना प्रभु की होने लगी तो वाक् मिथ्या उच्चारण कर दिया। एक वेदमन्त्र उसमें कुछ आख्यिकाएं अशुद्ध हो गई। जब अशुद्ध हो गई तो मेरे पितर ने कहा देवी! शान्त। तो मेरे प्यारे! देखो , माता शान्त हो गई। माता से कहा देवी! जो तुमने अभी अभी वेद मन्त्र का उद्घोष किया ये अशुद्ध है। क्योंकि हम जब देवताओं का प्रत्येक वेदमन्त्र में आह्वान करते हैं और यदि उसमें शब्द अशुद्ध हो जाता है तो उसकी आह्वान की प्रतिक्रिया समाप्त हो जाती है, उसकी प्रतिक्रिया मानो तारतम्य समाप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो , माता ने वो वाक् स्वीकार किया और यह कहा कि हां देव! ऐसा ही है। क्योंकि मुनिवरों! देखो , जो शब्द को हम उच्चारण कर रहे हैं। वो शब्द हमारा अन्तरिक्ष में जाता है, अन्तरिक्ष में वो अशुद्ध परमाणुओं को निगलता है, अशुद्ध शब्दों को निगल जाता है। अपना शुद्धि करण कर लेता है इसीलिए मुनिवरों! देखो , हमारे ऋषि मुनियों ने ये कहा है क्या वायुमण्डल पवित्र बनाना है तो वाणी पवित्र होनी चाहिए। वेदों का उद्घोष

पवित्र होना चाहिए, मानो मन, कर्म, वचन भी उसी में संलग्न होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो , माता ने ये प्रश्न किया जब क्या हे भगवन! अशुद्ध वाक् उच्चारण करना मैं तो अपने में नही, मानो जैसे माता का प्रिय बालक होता है और वह बाल्य अशुद्ध भाषा में अपनी उद्घोषता करता है, परमात्मा उसे भी माता पिता समाज भी उसे स्वीकार कर लेता है क्या मेरी श्रद्धामयी शब्द को मानो ये परमपिता परमात्मा स्वीकार या देवताजन नही कर पायेंगें। उन्होंने कहा देवी! ये तो तुम्हारा वाक् यथार्थ है परन्तु यदि हम शुद्धिकरण करके वाक्यों का उद्घोष करेंगें तो हमारा जीवन पवित्र बनेगा, हमारे गृह का वायुमण्डल पवित्र बनेगा, मानो उन्होंने कहा कि हमारे गोत्र में तुम्हे प्रतीत है कि हमारे मानो सातवें महापिता थे मैं उनके जीवन चरित्र को आभा में लाया। मेरे सातवें महापिता का नाम ब्रितिकेतु था। तो ब्रितिकेतु एक समय भ्रमण करते हुए मानो देखो, कहीं एक स्वानु ऋषि महाराज से कुछ विवाद हो गया था और विवाद होते हुए मानो देखो, उसी व्यञ्जना में, उसी अग्नि में आगे जब उन्होंने गति की तो कहीं मानो देखो , व्रेतकेतु मुनि महाराज भयंकर वनों में अपने आश्रम में एक याग कर रहे थे। और वह यह चाहते थे कि यदि मैं इस याग में परिणित हो जाऊंगा तो मेरा शुद्धिकरण होगा। मानो वह योग के अभ्यास को जानते थे मानव की तरंगों को भी जानते थे जैसे मैंने याग प्रारम्भ किया तो मेरे सातवें महापिता भी वहां याग करने लगे। जब याग करने लगे तो उस याग में मेरे पितर जो मेरे पिता थे वहां मानो देखो, उनके मन की गति चंचल हो रही थी। क्रोधाग्नि में परिणात हो रही थी वाद विवाद में से पंहुचें। तो उस समय ऋषि ने कहा हे ऋषिवर! तुम मेरे याग में आहुति देने लगे हो ये बड़ा अशुद्धवाद कर रहे हो। मानो तुम्हारे मन की तरंगें पवित्र नही हैं, इसीलिए मेरा यज्ञ सफल नही होगा। मैं अपने वायुमण्डल को पवित्र बनाना चाहता हूं। क्योंकि यहां मुझे योगाभ्यास करना है। परमाणुवाद को पवित्र किए बिना मेरा योग, योग का अभ्यास मेरा शब्द पवित्र नही हो सकेगा। तो मानो देखो, जब मेरे पिता ने ये कहा कि वाक् यथार्थ उच्चार कर रहे

हो ऋषिवर! मानो देखो, उन्होंने आहुति देना शान्त कर दिया।

विचार विनिमय क्या है मानो देखो , ये प्रेरणा मेरे माता पिता से मुझे प्राप्त हुई, क्योंकि ये विज्ञान के धारावाही वाक् थे। उनका जो धारावाही मानो विचार विनिमय होता रहता था उसमें विज्ञान था सार्थकता थी मानवता थी मानो देखो , उसी प्रेरणा को ले करके माता पिता ने ये कहा कि ऋषिवर! आप यथार्थ उच्चारण कर रहे हैं। जब ये उन्होंने कहा तो मानो देखो, मेरी सूक्ष्म सी आयु थी। मैं माता की लोरियों का पान करने से मानो मैं उपराम हो गया था। मानो देखो , द्विताम् अब्रहा मेरी आयु मानो तृतीय वर्षों की थी तब मैं माता पिता के इन वाद विवाद को श्रवण करता रहता था उनकी विचारधारा को जब मैं श्रवण करता रहता तो मानो देखो, एक समय मेरे पितर ने ये कहा क्या हे देवी! हमे केवल क्रियाओं में रत्त रह करके नही रहना हमे वैज्ञानिक भी बनना है, हमे विज्ञान आध्यात्मिकवादी भी बनना है। प्रभु के राष्ट्र में भी पंहुचना है, आध्यात्मिकवाद में भी प्रवेश करना है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब माता पिता ये उद्घोष करने लगे तो बाल्य अपने में उन वाक्यों को श्रवण करता रहा। अन्त में देखो , ये प्रेरणा विज्ञान की मुझे मेरे माता पिता के वाद और विवाद से उत्पन्न हुई है।

इसीलिए विचार आता है कि जो माता पिता अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहते हैं अथवा अपने बाल्य बालिका को वो महान् बनाना चाहते हैं तो बेटा! देखो, वह जो गार्हपथ्य नाम की अग्नि है उस अग्नि को प्रदीप्त करना चाहिए। वह गार्हपथ्य नाम की अग्नि क्या है? बेटा! गृह में माता पिता अपनी शुद्ध वायु में शुद्ध अपने विचारों को उद्घोष करत रहें, दर्शनों का अध्ययन करते रहे, ब्रह्म याग में परिणित रहें, लोक लोकान्तरों की वार्त्ता करते रहें, जिससे बेटा! बाल्य बालिका जो गृह में माता पिता के आचरणों को अपने में ग्रहण करते बेटा! वो गृह का स्वर्ग बनाते चले जाएं। तो मेरे पुत्रों! देखो, गृह का स्वर्ग कहां बनता है जब तक माता पिता के विचारों में भव्यता नही आती, पवित्रता नही आती, उनकी क्रियाकलापों में महानता नही आती तब तक मुनिवरों! देखो, गृह को हम कदापि

पवित्र नही बना सकते। तो हमारा देखो , गृह पवित्र होना चाहिए। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि कहता है क्या उसी माता पिता की प्रेरणा मेरे हृदय में सदैव अंकित रही।

कात्यान के गृह में शिक्षा

देखो, मैं बाल्यकाल में जब विद्यालय में प्रवेश हुआ तो विद्यालय में प्रवेश करके एक समय मानो देखो, मेरे आचार्यजन सोमव्रेतकेतु एक समय भ्रमण कराने के लिए मगध राष्ट्र में पंहुचें। मगध राष्ट्र में देखो , ब्रह्मचारियों के सहित विद्यालय के ब्रह्मचारी और आचार्यजन मानो देखो , जब मगध राष्ट्र में पंहुचें तो वहां एक कात्यायन के गृह में मानो रात्रि में वास हुआ। तो कात्यायन ने ये कहा क्या भगवन! मैं ये जानना चाहता हूं कि तुम कौन हो? मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारियों ने कहा कि हम ब्रह्मचारी हैं उन्होंने कहा मैं यह जानना चाहता हूं कि तुम कौन? उन्होंने कहा हम ब्रह्मचारी ब्रह्मवर्चोसी हैं। उन्होंने जब द्वितीय ये प्रश्न किया क्या तुम कौन हो? तो उन्होंने कहा कि हम ब्रह्मचरिष्यामि हैं। मेरे प्यारे! जब उन्होंने कहा चतुर्थ में ये प्रश्न किया क्या तुम कौन हो? उन्होंने कहा हम ब्राह्मण हैं जब उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि तुम कौन हो? उन्होंने कहा कि हम ब्रह्मचारी, ब्रह्म की चरी को चरने वाले हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, तो कात्यायन ने ये कहा क्या महाराज ब्राह्मण कौन होता है? उन्होंने कहा ब्राह्मण वह होते है जो कण कण में प्रभु का दर्शन करता है, मानो देखो, वह ब्राह्मण कहलाता है। उन्होंने कहा ब्रह्मचारी कौन होता है? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी वह होता है जो प्रत्येक श्वास की प्रतिक्रिया को मानो देखो, अपने में व्यञ्जनों के रूप में श्वास के साथ में मानो प्रभु का दर्शन करता है प्रभु कि उसमें एक तारतम्य में लगा लेता है, बह ब्रह्मचरिष्यामि वह ब्रह्मचारी कहलाता है। उन्होंने कहा ब्रह्म की चरि को कौन चरता है? उन्होंने कहा ब्रह्म की चरि को ब्रह्मचारी चरता है। क्योंकि जितना प्रकृतिवाद है, शून्यवाद है उसको क्रिया में दृष्टिपात करना प्रभु से उसका समन्वय करने का नाम ही मानो देखो, ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो , जब ऋषि ने तो बह ब्रह्म ब्रहे

वे बोले कि महाराज जब कात्यायन ने यह कहा तो ब्रह्मचारी कौन है? जब तुम देखो, ब्राह्मण कण कण में दृष्टिपात करने वाला है, ब्रह्मचारी मानो प्रत्येक क्रिया में अपने श्वास को देखो , एक सूत्र में पिरो रहा है, और ब्रह्मचरिष्यामि यह कि प्रकृत को अपने अपने में ही दृष्टिपात करके उसका बाह्य जगत में उद्घोष कर रहा है, वह ब्रह्मचरिष्यामि बन गया है। तो हे ब्रह्मचारियों! मैं जानना चाहता हूं क्या तुम वास्तव में ब्रह्मचारी की प्रतिक्रिया को जानते हो? परन्तु ब्रह्मवाचा ब्रहे वाचन्न ब्रह्मा इसका वेद से क्या समन्वय है? ब्रह्मचर्य का वेद से क्या समन्वय है? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी ही वेद है क्योंकि वेद नाम प्रकाश का है और ब्रह्मचारी के हृदय में प्रकाश होता है और वेद का ब्रह्मचर्य से ही समन्वय होता है परन्तु देखो , जब ब्रह्मचर्य से समन्वय होता है तो वेदाः अमृता वो अमृत बन करके ब्रह्मचारी उसका अपने में सिञ्चन करता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो , जब ये वाक् मानो देखो , कात्यायन के गृह में हमे प्राप्त हुआ तो कात्यायन ने हमे बहुत सी सन्तुष्टियां दी और हमे आशीर्वाद दे करके कात्यायन ने प्रातःकालीन जब देखो , उनके गृह में पूज्यपाद गुरुदेव के समीप हम याग करने लगे।

याग करते तो पूज्यपाद से मानो देखो , कात्यायन ने ये कहा हे ऋषिवर! देखो, आचार्य किसे कहते हैं? मेरे प्यारे! देखो , आचार्य ने कहा उन्होंने कहा जो अपने आचार संहिता को नृत्य करने वाला है वही आचार्य है। और पुनः कहा कि आचार्य किसे कहते हैं? उन्होंने कहा जो अपनी प्रत्येक इन्द्रियों को मानो ज्ञान में तपा लेता है उसको आचार्य कहते हैं। मुनिवरों! देखो , कात्यायन ने फिर से ये प्रश्न किया क्या आचार्य किसे कहते हैं? उन्होंने कहा आचार्य उसे कहते है जो तपोमयी इन्द्रियों को संयम में करता हुआ, वेद की प्रतिभा में रत्त होता हुआ प्रभु को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो , जब जब पूज्यपाद गुरुदेव से ये प्रश्न किया गया तो पूज्यपाद गुरुदेव मानो मौन हो गए और मौन हो करके सम्भवा और कात्यायन भी मौन हो गया। मुनिवरों! देखो , याग करके याग का उपसंहार करके मेरे प्यारे! देखो , ब्रह्मचारीजन और अब्रहे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव सबने वहां

से गमन किया अपने विद्यालय में प्रवेश हो गए।

ऋषि मुनि प्रेरणा के स्रोत

मुनिवरों! देखो, विचार विनिमय क्या है कि हम अपने समाज को कैसे ऊँचा बना सकते हैं। मानो देखो , वह समय बहुत दूरी चला गया है मैं अपने ब्रह्मा वाचक ब्रही लोकाम् मैं अपने आचार्यों से ये कहा करता हूं हे मानव! तू अपने को इतना विचित्र बना इतने को तू अपने को क्रियात्मक बना, इतनी सुन्दर तेरी आचार संहिता होनी चाहिक जिसको आचार संहिता को आपनाता हुआ मानव के मस्तिस्क में एक गम्भीरता की प्रतिभा उसके हृदय में प्रवेश कर जाए।

मेरे पुत्रों! देखो , उस समय महर्षि शिकामकेतु ऋषि महाराज उद्दालक ने कहा था ऋषि से कहा क्या हे भगवन! मैं मानो देखो , इसी आभा में लगा हुआ हूं, इसका ही चिन्तन करता रहता हूं। ये प्रेरणा मुझे ऋषि मुनियों से प्रातःकाल से प्राप्त होती रही है, उसी प्रेरणा के स्तोत्र में प्रवेश हो करके मैंने एक याग का प्रारम्भ किया था मैंने अपनी पत्नी से कहा हे देवी! हमे याग करना है मानो देखो, यहां संसार में जितना सुकर्म है सबका नाम याग है माता अपने पुत्र को जन्म देती है तो वह यदि माता है तो मानो याग कर रही है पुत्रेष्टि याग करती है, मेरे प्यारे! बालक को अपने गर्भाश्य में शिक्षा देना प्रारम्भ कर देती है जब वो बाह्य जगत में पृथ्वी के गर्भ में आता है तो उसे मानो उसके उपराम भी वह शिक्षा देती रहती है। मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवेत्ता बना देती है, ब्रह्मनिष्ठ बना देती है विज्ञान के युग में प्रवेश करा देती है। मेरे प्यारे! देखो , आचार संहिता में उसे निर्मित कर देती है।

विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो , ब्रह्मब्रहे वो याग हो रहा है। राजा अपने राष्ट्र में अश्वमेध याग करता है, अश्व नाम राजा का है मेध नाम प्रजा का है। मुनिवरों! देखो, प्रजा को अच्छी प्रकार जब सुसज्जित शिक्षा बुद्धिजीवी प्राणियों में बेटा! अपना उद्घोष करता है, राजा अपनी आचार संहिता को विचित्र बनाता है तो मुनिवरों! देखो, राजा केवल इसीलिए होता है कि वह प्रजा को अनुशासन में

ला सके। यदि राजा प्रजा को अनुशासन में नही ला सकता तो मानो वह याग नही कर रहा है, वह याज्ञिक नही बना हुआ है, अपने उदर की पूर्ति में लगा हुआ है। तो विचार विनिमय क्या मैं आज इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही विचार ये जितना भी समाज का सुकर्म है, उस सर्वत्र का नाम एक याग माना गया है परन्तु मुख्यतव याग वह जो अग्नि के समीप विद्यमान हो करके यज्ञमान अपने द्रव्य का सदुपयोग करता हुआ मानवीयता में परणित होता रहता है।

आओ, आज मैं विशेष चर्चाएं प्रगट करने नही आया हूं आज मैं मानो तुम्हें कुछ ऋषि मुनियों की चर्चाएं करने क्या ऋषि मुनियों का इस सम्बन्ध में क्या विचार है क्या इनकी मानो तत्परता रही है ये विचार तुम्हें देने के पश्चात सब्रहा लोकाम्। बेटा! शिकामकेतु ऋषि महाराज और वैश्नकृति के द्वारा दोनों का ये विचार विनिमय हो रहा था परन्तु वे नमस्कार करके उनकी चित्रावलियों में यन्त्रों में यन्त्रों में अपने पिता महापिताओं का दर्शन करके बेटा! उन्होंने वहां से गमन किया। वह अपने हृदयसुता वह अपने आश्रम में जा पंहुचें। पति पत्नी मानो देखो, याग में परिणात रहते, चित्रावलियों में मग्न रहते और विज्ञान की तरंगों में बेटा! रत्त रहना ये मानवीयता का कर्तव्य है क्योंकि मानव अपने मन और प्राण की प्रतिभा में जो विज्ञान परमाणुवाद में गुथा हुआ बेटा! उसके ऊपर वह अन्वेषण करता रहे, विचार विनिमय करता रहे तो उसकी मानवीयता पवित्र है।

ये है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये क्या मुनिवरों! देखो, मानव जब माला को अपने में धारण करता है ये माला कहलाती है, शब्दों की भी माला है। मानो देखो, एक यन्त्र दूसरा यन्त्र मानो इसी प्रकार हम एक दूसरे में जानकारी करते हैं ये भी एक माला कहलाती है उस माला को हम मानो देखो, सोमरूपी सूत्र में पिरो करके अपने में धारण करके शब्दों की उद्घोषता को बेटा! अपने मस्तिष्क में जो लघु मस्तिष्क में एक ध्वनि होती है उस ध्वनि में मुनिवरों! देखो, वह ध्वनि को ध्वनित करता हुआ अपनी पांच इन्द्रियों

पांच ज्ञानेन्द्रियों के साकल्य बना करके अपने हृदय रूपी यज्ञशाला में याग करना बेटा! अपने मानवीयतव को यौगिकतता में ले जाना है। ये है आज का हमारा वाक् अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् मा रथम् ब्रह्मभूः वायाऽम् गतऊ रथा वाचन्नमाः। ओ३म् ग्राह वरूणां ब्रह्म वाचन्न गाताऽम् देवाऽम्। ओ३म् सर्वम् भ्रद्राः अहब्रथाः॥ 15 अक्तूबर 1985, प्रातः १० बजे, ग्राम तिलपत, फरीदाबाद।

९ 24 10 1985 यज्ञुषि बनने की प्रेरणा

जीते रहो, देखो , मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव महामना जो इस संसार का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है, उस परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी जो स्रोत्रमयी में रत्त रहने वाला है, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी प्रत्येक मानव के हृदय में आकांक्षा बनी रहती है क्या वह महामना मेरा प्रभु है मैं उसके समीप जाने का प्रयास करूं अथवा उसके समीप मानो मेरी समीपता होनी चाहिए ऐसा प्रत्येक मानव अपने में बेटा! अनुसन्धान और विचार विनिमय करता रहा है जिस भी काल में मानव सान्तवना में अपनी स्थली पर विद्यमान होता है, और मानव के जीवन को अपने जीवन में मानवीयता से उसका मनन करता है। तो प्रायः उसके समीप एक नाना प्रकार की धाराओं का जन्म होता है। जिन धाराओं में एक विडम्बना है, जिन धाराओं में एक उत्सुकता लगी हुई है, क्या मेरा अन्तरात्मा, सुखद और आनन्दवत् हो जाए। प्रायः यह विडम्बना उसके मानवतव में निहित रहती है। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र हमे कुछ प्रेरित कर रहा है। मानो आज मेरे प्यारे! महानन्द जी मुझे प्रेरणा दे रहे हैं, और वह याग के सम्बन्ध में कुछ विवेचना अथवा उसके सन्दर्भ में जाना।

यज्ञुषि का स्वरूप

आज का हमारा वेदमन्त्रः यज्ञुषि आभमं व्रहे व्रतम् सम्भवा ब्रहे ऋताम लोकाः। आज का हमारा वेदमन्त्र ये कह रहा है था क्या हम यज्ञुषि बनें। प्रत्येक मानव यज्ञुषि बनने की कल्पना प्रायः करता रहा है। अब यज्ञुषि कौन होता है? जो अपने प्रत्येक अंग और प्रत्यंग को जो यागों में परणित कर देता है, प्रत्येक इन्द्रिय को उसमें पिरो देता है। मानो उसमें कैसे पिरोया जाए-मानव के चक्षु हैं,

वह भी संसार को अपने को याज्ञिक दृष्टिपात करने वाले हों। मानो देखो , वाणी से उद्गीत गाया जाए तो वह भी अपने प्रभु का ही वर्णन होना चाहिए परन्तु त्वचा में यह जो स्पर्श करने की अनुपमता है, उसमें भी यही भावना और विचित्रता ज्ञान और विज्ञान में पिरोई हुई होनी चाहिए। परन्तु घ्राण में सुगन्ध हो और मुनिवरों! देखो, वाणी में उद्गीत गाने की प्रबल सत्ता हो, माधुर्यपन हो, यथार्थ हो और उस वाणी में निष्कपटता होनी चाहिए जिससे मानव का जीवन एक महान और पवित्र बन सके। मेरे प्यारे! ये मानव का जीवन है क्या? एक पञ्चीकरण है और पञ्च यागो का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में यज्ञुषि बनने की मानव प्रायः कल्पना करता रहता है, पञ्चीकरण में एकोकी करण में वह पिरोया वह रहता है और उसको पिरोना चाहिए। परन्तु विचार क्या आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है हे यज्ञंभवा! मानव तू याज्ञिक बन अपने जीवन को याज्ञिक बना और आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय करता रहे। क्योंकि आज मैं इतना समय नही लूंगा अपने विचारों को बहुत सूक्ष्म वाक् कह करके मौन होने वाला हूं, परन्तु विचार क्या हमारे यहां प्रत्येक मानव एक दूसरे से समन्वय रखने वाला है, एक दूसरे से मिलान होता रहता है मानो देखो , उसके सन्निधान मात्र से यह क्रियाक्लाप हो रहा है, तो मानव के जीवन में भी जब मानव का आत्मा से जहां सन्निधान हुआ बेटा! अपना क्रियाक्लाप प्रारम्भ हो जाता है। बाह्य जगत क्या आन्तरिक जगत क्या दोनों जगत में एक मानवीयता की धारा ओत प्रोत होने लगती है।

मेरे प्यारे! आज का विचार अब मैं अपने विचारों को विराम देने अवश्य जाऊंगा क्योंकि आज मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने दो शब्द उद्गीत रूप में गान के रूप में क्या अपनी विडम्बनामयी चर्चा कर सकें। वे चर्चाएं उनकी बड़ी विचित्र होती है परन्तु देखो, उनको एक हृदय में एक विडम्बना होती है, जैसे माता का पुत्र माता की लोरियों से पृथक हो जाता है और उसे क्षुधा लग रही है परन्तु क्षुधा में वह लवनीत हो रहा है, व्याकुल हो रहा है मानो इस प्रकार मेरे प्यारे!

महानन्द जी भी अपने विचार व्यक्त करते रहते हैं। जैसे माता से विच्छेद हो गया हो, जैसे अच्छाईयों से इस समाज का विच्छेद हो गया हो ऐसा वे उद्गीत गाते रहते हैं।

हमारा वाक्य ये कहता है कि हम अपने मेंम यज्ञुषि बनें और पवित्र बन करके अपने को जीवन मुक्त बनाएं। परन्तु जीवन मुक्त की विवेचना तो मैंने कई काल में तुम्हे वर्णन की है। जीवन मुक्त उसे कहते हैं जो तीनों शरीरों के मूल रहस्यों को जान लेता है। मानो स्थूल, सूक्ष्म और कारण इनके मूल रहस्यों को क्रियात्मकता में जो जान लेता है, तो वह संकल्पोमयी जगत में चला जाता है। एक परमात्मा का जगत एक ऐसा जगत है, जो संकल्पोमयी जगत है मानव संकल्प करता है और उसका संकल्पमयी जीवन की धारा पूर्ण हो जाती है परन्तु एक वह जगत है जहां इनके जानने की अक्षमता करके वह स्थिर रह सकता है मानो देखो, अस्थिर और स्थिर दोनों प्रकार की प्रतिक्रियाओं में जो रत्त रहने वाला एक यह भी मानवीय जीवन होता है। परन्तु आज मैं मुनिवरों! देखो, विशेष चर्चाएं नहीं। मेरे प्यारे! महानन्द जी अपने दो शब्द उद्गीत रूपों में गान गाएंगें, मानो अपने विचार व्यक्त करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् समा रुद्रो ब्रह्मा यज्ञम् प्रथक प्रजाऽम् देवम् रेवाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव आत्म चर्चा कर रहे थे और इन्द्रियों के सन्निधान की चर्चा कर रहे थे परन्तु इनका जो नित्यप्रति एक आध्यात्मिकवाद और विज्ञान को अध्यात्मिकवाद से समन्वय करना इनका प्रायः मुख्य उद्देश्य रहा है, उनमें मुख्यता रही है। जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये कहता हूं, क्या इन दोनों का एक दूसरे से क्या समन्वय है? क्योंकि विज्ञान अपनी स्थलियों में निहित है और ये जो धर्म और मानवीयता या ईश्वरवाद है ये भिन्न है। तो मेरे पूज्यपाद उसका दोनों का एकोकीकरण करते रहते हैं। और ये उनका एक विचार है कि संसार में जो भौतिक विज्ञान है वही आध्यात्मिकवाद है और जो भौतिक विज्ञान है, परन्तु ये

बड़ी अनूठी वार्ता प्रगट करते रहते हैं और ये हमे निर्णय कराते रहते हैं कि आध्यात्मिकवाद के मार्ग से हो करके परमात्मा को प्राप्त हो जाता है और देखो , भौतिक विज्ञान के वांगमय में से रमण करता हुआ आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाता है। यदि भौतिक विज्ञान को नही जाना जाएगा, यदि भौतिक विज्ञान को क्रियात्मक नही लाया जाएगा तो आध्यात्मिक विज्ञान को नही जान सकते। तो इस प्रकार देखो, ये दोनों समन्वय करते रहते हैं मानो देखो , उनकी जो चरम सीमा है विज्ञान की, उसका परमपिता परमात्मा को सूत्र कह करके देखो , वह शान्त हो जाते हैं। हमारा हृदय गद गद हो जाता है। मानो देखो , जब यागों का प्रकरण आता है अथवा यागों का जहां कर्मकाण्ड आता है उस कर्मकाण्ड में भी ये बड़ी अनूठी अनूठी वार्त्ता प्रगट कराते रहते हैं। परन्तु जहां विज्ञान और देखो , यज्ञवाद दोनों एक ही सन्तुलना में संलग्न रहते हैं। परम्परा के ऋषि मुनियों से मानो उसका समन्वय करते हैं। परम्परा के ऋषिवर याग करते थे तो याग का समन्वय आध्यात्मिकवाद से उसकी प्रतिक्रियाएं से उसकी प्रतिक्रियाएं होती थीं ऐसा प्रायः हमें दृष्टिपात भी होता रहता है जब इसके ऊपर अन्वेषण करते हैं।

अतीत काल आधुनिक काल का तुलनात्मक अध्ययन

आज जब मैं विचारों में मानो ये ले जाना चाहता हूं कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव हमें ऐसी अनूठी स्थली पर ले जाते हैं जहां राम के जीवन की गाथा आती है, राम के जीवन चरित्र की आभा आती है। मानो देखो, उसका जो चित्रण ये हमें प्रदान करते हैं उसका चित्र लेते हैं, तो हम आश्चर्य चकित हो जाते हैं। एक काल में राम के जीवन चरित्र की आभा आती है। मानो देखो , उसका जो चित्रण ये हमे प्रदान करे हैं उसका चित्र लेते हैं तो हम आश्चर्य चकित हो जाते हैं एक काल में राम का चरित्र आधुनिक जगत है। एक राम का चरित्र मानो देखो , वो है जो त्रेताकाल था। वास्तव में मेरे पूज्यपाद वर्णन कराते रहते हैं। राजाओं का जीवन चरित्र एक काल में आधुनिक काल, एक काल में अतीत का काल है। अतीत के काल में जब पूज्यपाद गुरुदेव हमे ले जाते हैं अथवा रावण के काल

में ले जाते हैं तो रावण एक अनूठा राष्ट्रवेत्ता था मानो देखो , जहां उसकी विचित्रता को लेते हैं तो वे बड़ी विचित्र आभा में परणित मानी गई है। नाना प्रकार के यागों में चयन करने वाले राजा रावण का मानो देखो , वाजपेयी याग, अग्निष्टोम याग, और देखो, रुद्र याग ये उनका प्रायः उनका एक मुख्य याग एक मानो क्रियाकलाप रहा अथवा ये कहो कि राष्ट्र का वो आभूषण बन करके रहा है, उस आभा में भी मैं विचित्रता और प्राथेवित्रेह मानो देखो , उस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही करूंगा। विचार क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मुझे वर्णन कराते रहते हैं। आधुनिक काल में ये कहता है मानव समाज क्या महाराजा कुम्भकरण मानो देखो, छः माह शयनवत् में छः माह जागरूक में रहते थे। परन्तु ये भोले प्राणी जानना नही चाहते उनका जीवन चरित्र कितना विचित्र था। आधुनिक काल का प्राणी ये कहता है क्या ये देखो, महाराजा कुम्भकरण देखो, नाना प्रकार के मांसों का भक्षण करते थे, नाना सुरा पान करते थे। और देखो , यह योनियों अपने में शम्भू प्रतिपादित होती रहीं और देखो, जब मैं ये विचारता हूं कि ये भोला प्राणी अपने महापुरुषों का कैसा एक अपमान कर रहा है। अपने भोले प्राणियों से जब मैं ये कहता हूं कि यहां ऋषियों को काग की उपाधि प्रदान की जाती है महर्षि काग भुषुण्ड जी को, काग भुषुण्ड जी का जीवन मानो बड़ा विचित्र रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! जब मानो उनकी गाथा वर्णन करते हैं उनका साहित्य वर्णन करते हैं तो मेरा हृदय गद गद हो जाता है जब मैं उन विचारों में जाता हूं- आधुनिक काल का विचारवेत्ता उनके यहां देखो , इस मानव ने विचारा नही कितना अपने पूर्वजों के अपमान में लगा हुआ है, अपमानित नही करना चाहिए। क्योंकि महर्षि कागभुषुण्ड जी जिन्होंने बारह बारह वर्ष के मानो बारह अनुष्ठान किए और अनुष्ठान कैसे थे क्या वेद का अध्ययन कर रहे हैं, प्राणायाम कर रहे हें। पत्र और पुष्पों को पान करके अपने जीवन को व्यतीत करते। लोमश मुनि और उनका दोनों का बड़ा समन्वय रहता था। मेरे विधाता ने अप्रोतम् ब्रह्मे कृताम् देवहाः दोनों का विचार केवल आध्यात्मिकवाद में ही रत्त रहता था और जब कोई

शंका होती तो महर्षि वशिष्ठ ऋौर माता ऋरूणधति के समीप चले जाते ऋौर मगध राष्ट्र में राजा विष्णु के समीप जाते। परन्तु विचार क्या मैं ये उद्गीत गाने के लिए ऋाया हूं कि मानव को जानकारी होनी चाहिए। यहां कागभुषुगड की सम्बन्ध में उन्हे तो कागा कहा जाता है ऋाधुनिक जगत में ऋौर देखो , कुम्भकरण जी का जीवन सात्विक, जिन्होंने गऊ का दुग्ध ऋाहार किया हो, जिन्होंने लवणयुक्त मानो भोज्य पान किया हो ऋौर विज्ञान का सर्वोपरि देखो , ऋपने काल में रहे हो। इनके विज्ञान की धारा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहते हैं, क्या महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां ऋन्वेषण करते थे तो उन्होंने एक यन्त्र की विचार धारा मानो सुकेता को ऋौर ब्रह्मचारी कवन्धि को मानो वर्णन की थी ऋौर यह कहा था कि शम्भू ब्रह्माः देवोमही ऋस्ताम् ये वेद की ऋाख्यिका ये कहती है कि इससे यान का निर्माण हो सकता है तो उन्होंने बहत्तर लोकों में जाने वाले यान का निर्माण भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में उन्होंने निर्माण किया था। ऋाज मैं इस क्षेत्र में जाना नही चाहता हूं।

मैं इसीलिए कि ऋाज का जो हमारा वाक्य है, वो हमारा वाक्य ऋाकाशवाणी हमारी ये मृतमगडल में मानो देखो , देखो, एक याग का ऋायोजन हुऋा। जिस स्थली पर याग को पूर्ण किया गया ऋाज मेरा ऋन्तर्हृदय उस यज्ञमान के साथ रहता है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य ऋखगड बना रहे क्योंकि तू ऋपने यहां द्रव्य का सदुपयोग करने वाला है, ऋपने द्रव्य को देवताऋों को हूत करने वाला है, तू देवताऋों को प्रदान कर रहा है। ऋाधुनिक काल का विज्ञान इसमें लगा हुऋा है, क्या यह दूषित वायुमगडल हो गया है, ये कैसे पवित्र हो? तो मानो देखो, वह जब इस प्रकार की ऋाभा में यह मानव समाज ऋपने में लगा हुऋा है, विज्ञान लगा हुऋा है, वैज्ञानिक यह विचारता है कि ये कैसे शान्त हो। तो मानो देखो, जब मैं इस विचार को लाता हूं तो याग की उपाधि देते हैं। वो कहते हैं कि गौ घृत में ऐसी ऋक्षमता है कि घृत में ऋग्नि में प्रदीप्त करने के लिए ऋक्षमता है याग होना चाहिए।

मैं अपने पूज्यपाद से वर्णन कर रहा था क्या पुरातन काल में यह वर्णन कर रहा था क्या आधुनिक काल के समाज ने विज्ञान ने याग का तिरस्कार किया है। जिस समाज में याग का तिरस्कार होता है, वो संसार वो काल बहुत निकृष्ट कहलाया गया है। परन्तु देखो , यागों का तिरस्कारों का बहुत समय हो गया है, बहुत काल हो गया है। महाभारत काल के पश्चात इसका तिरस्कार होना प्रारम्भ हुआ और ज्ञान समाप्त होने लगा। ज्ञान समाप्त होने लगा अज्ञान की बलवती आयी तो उस समय देखो , अज्ञान में याग का ही मानव तिरस्कार करता रहा और जब उसका तिरस्कार करता रहा तो उसमें हिंसा आ जाती है। समाज में जहां हिंसा आई वो धर्म के नामों पर, यागों के नाम पर हिंसा आती उस हिंसा का परिणाम ये होता है क्या मानो देखो , लाखो, करोड़ो की गणना में देखो , पशुबद्ध हो करके मानव अपने शरीरों में प्रवेश कर लेता है, मानो देखो , उसका परिणाम यह होता है।

आज मैं विचार मैं इसीलिए उद्धृत कर रहा हूं कि हमे याग जैसी परम्परा को अपनाना चाहिए। हमारे यहां मुझे तो स्मरण है पूज्यपाद गुरुदेव से भी मैं निर्णय कराता रहता हूं प्रत्येक नगर में मानो प्रत्येक वास में, वासालयों में देखो , पुरोहित अहिंसा परमोधर्म का पालन करने वाला, वेदों का उद्घोष करने वाला, यथार्थ में विद्या प्रदान करने वाला, प्रत्येक बाल्य और बालिका मानो देखो , जब इसमें याग का तिरस्कार हुआ, मेरी माताओं का तिरस्कार हुआ, जब मातृ शक्ति का तिरस्कार प्रारम्भ हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि वह माता अविद्या, अपठित होने से मानो देखो , श्रृंगार ब्रह्मे पुत्र को जन्मे देने वाली है, वही देखो , वही पुत्र माता के श्रृंगार को हनन करने वाला बन गया है। मानो इतना तिरस्कार पुरातन काल में हुआ। वह पुरातन काल महाभारत के काल का काल कहा जाता है जिसमें अज्ञानता में मानो देखो , मेरी पुत्रियों को और ममतामयी मेरी प्यारी माता को नार्किकता कि उपाधियां प्रदान कि गई। ये प्रियता नही नार्किकता प्रायः हो सकती है मैं इसका विरोध नही कर रहा हूं परन्तु देखो , वह नार्किकता इस

रूप में नही है। माता तो माता है जिसमें ममतामयी आभा का जन्म हो गया है वो माता बन करके रहेगी परन्तु वह माता है देखो , यहां मानव का नार्किकपना तो मानव ने मानो एक खिलवाड़ स्वीकार कर लिया, वह तो आनन्दमय स्वीकार कर लिया, परन्तु मेरी माताओं का जो तरसों भविता बना, परन्तु वह उनका दुरिता में त्यागने का परिणाम बना। तो देखो, यह समाज की कितनी दूरिता है।

मैं यह चाहता रहता हूं कि पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूं कि प्रभु! वह काल कैसा विचित्र था जब महाराजा रघु त्रेता के काल में देवी से ये प्रश्न करते हैं, सोमदेवी से, हे सोमलता! मैं याग करने जा रहा हूं तुम क्या कहती हो? जब देवी कहती है प्रभु! हमारा तो सर्वत्र जीवन ही याग है, याग करना चाहिए। मानो देखो, ऋषिता महाराज रघु प्रसन्न हो गए और वह ऋषि मुनियों की सभा में उद्गीत गाने लगे क्या मेरी पत्नी बडी प्रसन्न है मानो देखो , जो मेरे जीवन में कृतियों में रत्त रहने वाली है वो कहती है कि याग, सर्वत्र याग होना चाहिए। मेरे महा मानो देखो, भगवानम् ब्रहे रघु ने राजा ले करके महात्मा की उपाधि को प्रदान किया। वह रघु मानो अपने राष्ट्र का सर्वत्र याग कर रहे हैं वह क्यों कर रहे हैं, वह प्रजा के लिए क्योंकि वह प्रजा का निधित्व करने वाला है। जो प्रजा के लिए क्योंकि वह प्रजा का निधित्व करने वाला है। जो प्रजा का निधित्व करने वाला है वही तो सर्वत्र द्रव्य को याग में परिणत करेगा। याग मुनिवरों! देखो , याग भिन्न भिन्न प्रकार की कोई मेरे राष्ट्र में मानो कोई महापुरुष, बुद्धिजीवी दुखित तो नही है मेरे राष्ट्र में माता का पूजन होता अथवा नही होता है। मानो देखो, देव पूजन भी होता है नही होता यह सब राजा को अपने राष्ट्र में दृष्टिपात करना चाहिए। ये भगवन मंगलम् ब्रहे व्रताम् वेद की आभा को ले करके महात्मा रघु की ये परम्परा रही है। दिलीप जी की भी यही परम्परा रही है, अज की भी यही परम्परा रही है। परन्तु दशरथ के सम्बन्ध में विचारते रहते थे।

आधुनिक काल इतना भयंकर बन गया है क्या ये राजा देखो , अज्ञानता में देखो, साहित्य से लुप्त हो करके, साहित्य देखो , अग्नि के मुख में चला गया

साहित्य मानो देखो, पात्रों में भ्रष्ट हो गया उनके भ्रष्ट होने पर देखो , यहां राजा दशरथ जिन्होंने देखो, अपने सन्तान के लिए तीन संस्कार कराए वह भी अपवाद माना गया था परन्तु देखो, उन्हें भी यह कहते हैं कि दस हजार पत्नियां कहलाती थी आज का मानव कैसा भ्रष्ट बन गया है। मैं विचार नही रहा हूं ये विचार क्या इस मानव की चित्तियों में रहती है। क्योंकि जैसा समाज, काल मध्य काल में बना उसी काल को ले करके वाम मार्ग समाज में मानो देखो , राजाओं पर महापुरूषों पर साहित्यों पर देखो , उन्होंने लांछन साहित्यों पर देखो , उन्होंने अज्ञानता की प्रतिभा का एक जन्म दिया है जो मुनिवरों! देखो, मानव उसी प्रकार स्वीकार करता है। आधुनिक काल का देखो, एक शिक्षित यह कहता है जो शिक्षा को अध्ययन करता है कि मैं राम और रावण कोई संसार में राजा महाराजा नही हुए परन्तु देखो, ये कहते हैं वो अपने में देखो , ऊँची उपाधियों को प्राप्त कर रहे हैं। परन्तु मैं ये उच्चारण कर रहा हूं अरे ,! अतीत का काल तो सौ वर्षों सौ प्रणालियों के पश्चात उसकी प्रतिभा का प्रायः मानो परिवर्तन हो जाता है। उसके मूल में क्या है जो ऐसा कहते हैं हेतु देते हैं मानो देखो , एक अपनी कृतिका को प्रगट करते हैं मानो देखो, वो सभ्य समाज में या वैदिक समाज में उसका कोई मूल नही है। हम जैसी दृष्टियों में कोई मूल नही माना गया है। परन्तु वह साहित्य है अपनी जगत सारस्वत है, उसको हम अपने समाप्त कर देते हैं तो हमारापन संसार में कुछ नही रह जाता। परन्तु इसी प्रकार मैं विचार देने के लिए क्या आया हूं क्या यागों का तिरस्कार नही होना चाहिए। यदि याग का तिरस्कार हो गया है याग अपने में तिरस्कृत हो गया है उसको प्रत्येक मानव को अपनाना चाहिए। देखो, माता का तिरस्कार हुआ तो यज्ञवेदी का तिरस्कार हुआ। यज्ञवेदी और माता का तिरस्कार हुआ तो अज्ञानता आई, ज्ञान का तिरस्कार हो गया। जब ज्ञान का तिरस्कार हो गया अज्ञानता बलवती आई तो यहां मानव देखो , मिथ्या कल्पना करने लगा उस मिथ्या कल्पना का परिणाम यह हुआ क्या अपने पूर्वजों का मानो देखो , न तो सत्कार रहा है, न अपने पूर्वजों को उस रूप में

माना जाता है जिस रूप में वो थे। परन्तु देखो, इसमें कौन दोषी है, इसका दोषी कौन है? महाभारत काल के पश्चात मानो देखो, इसका जो दोषी है, वो बुद्धिमान प्राणी है। मानो देखो, जिनको एकोकी वचन में देखो, धर्मज्ञता की वृत्तियां उसमें परिणित कर दईं। मैं आज देखो , केवल वही उसका दोषी कहलाता है। आज देखो, हम अपनेपन को अपना नही सकते अपनाना चाहिए। मैं याग के सम्बन्ध में विचार देने जा रहा था, मैं विज्ञान के युग में प्रवेश होना चाहता था।

आज का विज्ञान आधुनिक काल का जो विज्ञान है, वह इकाई में रत्त हो रहा है, वो ईकाई में भ्रमण कर रहा है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे विज्ञान के जब मैं इनके द्वारा अध्ययन करता था तो मुझे एक एक वेदमन्त्र का जब इन्होंने स्वरूप वर्णन किया तो उस स्वरूप में मुझे सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक विज्ञानशाला के रूप में दृष्टिपात आता था और एक एक परमाणु से ब्रह्माण्ड की रचना का प्रादुवृत्तियों में रत्त होता रहा है वह विज्ञान अब तक नही आया है। एक एक रक्त के बिन्दु से मानव का साक्षात्कार होना वह विज्ञान कहां है? वर्तमान में वह विज्ञान नही रहा है, परन्तु जब में अतीत काल में प्रवेश करता हूं तो हमारे महापुरुष मानो याग करते थे यागों के साथ में चित्रों का दर्शन करते रहते थे। परन्तु देखो, याग का एक याग तो विज्ञानशाला है, इसमें विज्ञानवेत्ता बड़े बड़े विचारशील मानो देखो , याग तो विज्ञानशाला है इसमें विज्ञानवेत्ता बड़े बड़े विचारशील मानो देखो, याग के कारण विज्ञानवेत्ता बने हैं। भौतिक विज्ञान वेत्ता आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता जो बाह्य क्रियाकलाप है मैं यह नही जान पाया हूं। अब तक जब मैं विद्वानों से यह प्रश्न करने के लिए तत्पर भी होता हूं क्या हे भोले प्राणियों! तुम इस याग में मांस की आहुति देते हो, हिंसा करते हो मैं यह जानना चाहता हूं तो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों याग हैं दोनों में हिंसा नही तो बाह्य जगत में हिंसा क्यों लाते हो तो इसका मुझे कोइ उत्तर प्राप्त नही होता। परन्तु देखो, जब मैं ये विचारता हूं कि हिंसा नही होनी चाहिए। जैसे मानव का हृदय शुद्ध पवित्र याग कर्म करने के लिए क्रियाक्लापों में रत्त रहा है

इसी प्रकार मानव का साकल्य भी उसी प्रकार का पवित्र होता है, उसी प्रकार की उसकी धारणा कर्मकाण्ड भी उसी प्रकार की धारा में सदैव रत्त होता रहा है। आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये वर्णन करा रहा हूं आधुनिक काल का विज्ञान इसमें लगा हुआ है कि कैसे मानो इस दोषारोपन को ये जो हमारे यहां दूषित वायुमण्डल बन गया है वायु तरंगे दूषित हो गई है तो ये कैसे पवित्र हो मानो देखो, हम यह कहते हैं कि याग करो, याग होना चाहिए। प्रत्येक गृह में याग हो, राष्ट्र में राजा को याग करना चाहिए अपने गृह में जिससे प्रजा में याग का प्रचलन आ जाए और मानो देखो , ये जो एक दूसरे की आभा में प्रकृति के गर्भ में से नाना प्रकार कर रसों को अपने में धारण करता हुआ मानो देखो, यहां नाना प्रकार का अन्नुद्रवाद परणित हो गया है, ये समाप्त होता चला जाएगा।

परन्तु देखो, मेरी प्यारी माता पिता याज्ञिक पुरुष ये जानते हैं कि सन्तानों का या कैसी सन्ताने होनी चाहिएं। माता मल्दालसा का जीवन जब पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट कराते हैं तो माता मदालसा ब्रह्मवेत्ता बना रही है पुत्र को, परन्तु देखो, जब ब्रह्मवेत्ता त्यागी और तपस्वी पुत्रों का जन्म होगा माता जब शिक्षित हो करके वेदों का उद्घोष उदगीत गाने वाली बनेगी तो मानो देखो, उसका पुत्र महान बन करके और माता की रक्षा कर सकता है, और जो माता मानो देखो , उज्ज्वल नही बन सकती तो वह माता की रक्षा कैसै करेगा? कोई कारण नही है कि वो माता की रक्षा कर सके, वह मात के एक समय श्रृङ्गार को हनन तो कर सकता है परन्तु रक्षा नही कर सकता।

परन्तु जब मैं इन वाक्यों के ऊपर जाता हूं इसीलिए हे मानव! हे राजन्! तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो याग को अपना और माता को अपना, दोनों को अपनाने में यह समाज ऊँचा बनेगा। परन्तु संकीर्णता माता के हृदय में न रहे और राजा अहिंसा परमोधर्मी बन करके एकोकी धर्म को अपनाने वाला हो। परन्तु जब अज्ञानता आती है, तो याग का तिरस्कार होता है, माता का तिरस्कार होता है तो नाना प्रकार की रूढ़ियों में राष्ट्र का परिवर्तन हो जाता है और नाना

प्रकार की जो रूढ़ियां हैं, वो राष्ट्र के लिए घातक कहलाती हैं राष्ट्र के लिए विनाशदायक होती हैं। नाना प्रकार के मानो देखो, रूढियां कोई यहां मोहम्मद के मानने वाला है तो कोई देखो , जिस समाज मेरी प्यारी माता का अस्तित्व नही रहता मैं यह विचारता हूं कि मोहम्मद के मानने वाले क्या करते हैं तो मानो देखो, मुझे दुखद होता है मानो देखो, माता का तिरस्कार करते हैं माता का कोई अस्तित्व उनके हृदयों में या उनकी मानो देखो, एक विचार धारा में नही रह पाता परन्तु देखो, मुझे दुखित मैं दुखित होता रहता हूं कैसी रूढ़ि बन गई है ये मानो परमात्मा के धर्म के नामो पर रूढ़ियां बन रही हैं जब मैं और भी नाना प्रकार की रुढियों में प्रवेश करता हूं। तो मुझे यह आता है कि हे राजन्! हे राजा! या तू अपने राष्ट्र को रुढियों को धर्म एकोकी वचन बना करके अपने राष्ट्र को ऊँचा बना नही तो तेरी मृत्यु हो जानी चाहिए। परन्तु देखो , ऐसा सदैव परम्परागतों से होता रहा है क्या अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना प्रजा राजा क्या चाहता है। राजा का निर्वाचन क्यों हुआ करता है क्योंकि कर्तव्यवाद में समाज को लाने के लिए वह तत्पर हो जाए और यदि वह कर्तव्यवाद की वेदी पर समाज को नही ला सकता अपने याग जैसे ऊर्ध्वा क्रियाक्लाप को नही अपना सकता तो परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके और उस काल तक सुगन्धि काल चलेगा जब तक ये संसार रहेगा। आज मैं विशेष चर्चा अपने पूज्यपाद गुरुदेव को प्रगट कराना नही चाहता हूं।

मैं केवल ये विचारों में हे राजन्! तू मानो देखो, प्रत्येक धर्म के आचार्यों को प्रत्येक जिसको तू नाना धर्म कहता है नाना धर्म तो होते नही हैं धर्म तो एकोकी होता है वह बहु अब्रहा यह बहुवचन एकोकी वचन है। धर्म केवल एक है तू सब धर्मों के राजाओं को यदि तू ये स्वीकार करता है क्या मैं नाना प्रकार के रूढ़ियों के आचार्यों का एकोकीकरण करना चाहता हूं तो तेरा ये प्रयास बड़ा विचित्र बनेगा और तू महान बन करके प्रजा को महानता की वेदी पर ले जा सकता है मानो देखो, प्रत्येक धर्म के आचार्यों का शास्त्रार्थ होना चाहिए जो मानो देखो, तर्क

सिद्ध हो करके धर्म और विज्ञान की धारा पर स्थिर हो जाए उसको अपनाने में राष्ट्र का मानो कोई दोषारोपण नही होगा। ये राष्ट्र का कर्तव्य है, प्रत्येक मानव का यह कर्तव्य है कि हम अपनी वैदिक परम्परा जिसमें प्रकाश है जिसमें सारस्वत सत्य है मानो उसको अपनान हमारा प्रिय कर्तव्य कहलाता है उसमें विज्ञान है देखो, पांचों प्रकार की गतियों वाला विज्ञान है यह वैदिक साहित्य में निहित है, परमाणुवाद इसमें निहित है एक एक परमाणु में वेद ही तो यह घोषणा कर सकता है कि एक एक परमाणु में ब्रह्माण्ड का ब्रह्माण्ड निहित रहता है और कोई नही कह सकता? एक वेद का वाक्य कहता है इस वाक्य को उसी वेद की धारा को नाना भाषाओं में मानव देखो , परिवर्तित करता रहा है परन्तु देखो , उसको परिवर्तित करके वो कहता है नाना परमाणु है, अनन्य परमाणु हैं ब्रह्माण्ड के चित्रों में चित्रित होता हुआ ब्रह्माण्ड निहित होता है।

परन्तु देखो, आधुनिक काल में यह उच्चारण कर रहा हूं क्या देखो , यहां अपने पूर्वजों का तिरस्कार न करें, यज्ञों का तिरस्कार माताओं का तिरस्कार नही होना चाहिए। जब इनका तिरस्कार हुआ है जिस भी काल में वही काल मानो देखो, विकृत रहा है वही काल मानो देखो , रक्त भरी क्रान्ति वाला काल रहा, मानो मानव का भक्षण करने वाला काल रहा है, यही माताओं के श्रृङ्गारों को हनन करने वाला काल रहा है।

आज का विचार मैं विशेष न देता हुआ, आज का विचार मैं ये दे रहा हूं कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो देखो , ऐसे वाममार्ग के युग में देखो, तुम यागों में देवाम् ब्रह्मा देव पूजा कर रहे हो ये मेरा बड़ा मानो मैं हर्ष ध्वनि करता रहता हूं। यहां मोहम्मद के मानने वाला वाममार्ग है जो हिंसा कर करके अपने उदर की पूर्ति करता है। मानव देखो , उन्हीं की धारा को ले करके मानव बन गया है, प्रत्येक मानव उसी धारा में परिणित हो गया है। देखो, ये विचार हमारे में नही रहना चाहिए। आज वह भी आत्मवत्त है आत्म योनि को साथ ले करके आयें हैं। हमारे शरीरों में भी आत्मा है परन्तु आत्मा

आत्मा से जहां मेरी प्यारी मां आत्मा से वार्त्ता प्रगट करती है मानो देखो , वो बालक से भी वार्त्ता प्रगट करने में मानो शान्त हो जाती है माता मल्दालसा गर्भ में शिशु है और रात्रि मध्यकाल में देखो, अपनी प्रवृत्तियों को अन्तर्हृदय में गर्भ में ले जाती है और जो गर्भ में रहने वाला शिशु पनप रहा है उससे अपना तारतम्य मिला करके वेद का उद्घोष करती रहती। आज मैं जब उस विज्ञान को या उस मानो देखो, मर्म में जाता हूं तो मेरा अन्तर्हृदय अद्भुत ही हो जाता है। हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो मेरे हृदय की ये कामना रहती है क्या समाज पवित्र बने, समाज में मानवता आ जाए और समाज में मानो देखो, अपने पूर्वजों के साहित्य के इतिहास का तिरस्कार नही होना चाहिए, उसमें मानवीयता, ओजस्ता, पवित्रता होनी चाहिए। जिससे हमारा मानवीय जीवन ऊँचा बने और भविष्य और वर्तमान इन तीनों में मानो देखो , अपने में पारायण बने रहें। ये आज का विचार अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पा रहा हूं। मैं पुनः ये उच्चारण कर रहा हूं कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन की प्रतिभा महान् और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, यही मानवता कहलाती है। क्योंकि ये द्रव्य परमपिता परमात्मा का द्रव्य है परमात्मा इसका प्रतिनिधि है। मानो तुम्हारे तो शरीरों का गृहों का क्रियाक्लाप चलना है और यदि तुम द्रव्य को ले करके प्रभु के समर्पित करते क्योंकि यह द्रव्य प्रभु का है प्रभु ही उसके मूल में विद्यमान है। तो द्रव्य मानो देखो, तुम्हारे क्रियाकलापों में परणित होकर तुम्हें स्वर्ग के मार्ग पर ले जाएगा। यह आज का वाक्य अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। मैं पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगां।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे! ऋषिवर! आज प्यारे महानन्द जी ने अपने उद्गार प्रगट किए। इनके उद्गारों में कितनी विडम्बना है न प्रतीत आधुनिक काल प्रायः ऐसा ही है जैसा ये उच्चारण करते हैं। पुरातन काल अतीत का काल तो बड़ा एक विचित्र काल रहा है। परन्तु महानन्द जी अपनी विडम्बना में, अपने शब्दों में एक विडम्बनामयी शब्दों का उद्गीत गाते रहते हैं। मानो चलो अब्रहाः

सम्भूती लोकाः इनकी इच्छा परमपिता परमात्मा पूर्ण करेंगें। वह काल जिस काल में आएगा जब मान एकोकीकरण में परिणित हो जाएगा पृथ्वी का प्राणी। आज का विचार अब ये समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, द्रव्य का सदुपयोग करते हुए, यज्ञशाला में अपने द्रव्य को मानो त्यागा प्रवृत्ति से वायुमण्डल को शोधन करना यह हमारा कर्तव्य कहलाता है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके ये क्रियाकलाप मानवीय मस्तिष्कों में निहित रहा है और ऋषि मुनियों के क्रियाकलापों में रहा है। आज का विचार ये समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः यम सर्वं भागा मां रथप्रा वाचा मां ऋषि ग्राहाणान्त्वाः। ओ३म पूनरा रथं ब्रह्म वाचा गतं मां हृदय परागतो आपाः३म्। ओ३म् ब्रह्मणा देवं मया सर्वं भद्राः। दिनांक 24 10 1985।

१० 03 09 1992 त्रिवर्धा

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पूर्व की भांति , कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे , ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से , जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया , हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है , जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महान हैं, और वह विज्ञानवेत्ता है और वे विज्ञानमयी स्वरूप भी माने जाते हैं। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा जो त्रिवर्धा कहा जाता है। आज के हमारे वेद के पठन पाठन में त्रिवर्धा का बड़ा वर्णन आता रहा है। क्योंकि त्रि वर्धा का अभिप्रायः ये कि ये संसार का प्रत्येक मानव और यह प्रत्येक आभा में यह त्रि वर्धों से मानो यह तीन तीन में विभाजन किया गया है, तो विभक्त होने से यह त्रिवर्धा कहा गया है, तो आज का हमारा वेदमन्त्र त्रि वर्धश्चनं ब्रह्मा त्रि वर्णसुतं देवाः वेद का मन्त्र कह रहा है कि त्रि वर्णों में और त्रि मात्राओं में यह संसार अपने में निहित हो रहा है, और त्रि विज्ञान में, त्रि विद्या में, तो इसीलिए हम त्रि वर्धनं त्रि वर्णसुतं देवत्वां त्रि वर्णा वृत्ते देवाः तो हम त्रि वर्णों की आभा में रत्त होते चले जाएं, जिससे हम परमपिता परमात्मा को हम अच्छी प्रकार जान सकें। क्योंकि उस परमपिता परमात्मा का जो नामोकरण है, वह त्रि मात्रा वाला है। जैसे अ, उ और म मुनिवरों! देखो, अमृतं अ, उ और म की प्रतिभा में मानव त्रि विद्या में वह परणित हो रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा को त्रि वर्धा स्वीकार करते रहे हैं। क्योंकि वेद में तीन प्रकार की विद्या का वर्णन आता रहा है। सबसे प्रथम विद्या हमारे यहां ज्ञानं ब्रहे मानो ज्ञान और कर्म और उपासना के रूप में परणित होती रही है। तो प्रत्येक मानव संसार का अपने में विज्ञानवेत्ता ज्ञानी बनना चाहता है। प्रत्येक मानव के हृदय की ये आकांक्षा लगी रहती है कि क्या मैं अपने में ज्ञान और विज्ञानवेत्ता बन जाऊं, और ज्ञान में रत्त होता हुआ, इस संसार को

जानूं, और जानने के पश्चात वह कर्म में अपने में विश्वसनीय बनता है, और कर्म के पश्चात वह उपासना के क्षेत्र में प्रवेश करता है। तो मुनिवरों! इसीलिए हमारे यहां त्रि वर्धा और त्रि विद्या का प्रायः वर्णन होता रहा है। प्रत्येक मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ही इन तीन प्रकार की विद्याओं के आंगन में रमण करता रहा है। नाना प्रकार के अनुष्ठान हों, चाहें वह चिन्तन करने का विषय हो, परन्तु चाहे वह अन्तरिक्ष में उड़ान उड़ने वाला क्यों न यन्त्र हो परन्तु वह सब ज्ञान और कर्म उपासना में निहित हो रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है, अथवा वह जो त्रि वर्धा है, उसके ऊपर हम सदैव अपने में विचार विनिमय करते रहें और यह विचारते रहें कि वे परमपिता परमात्मा हमारा आनन्दमयी स्वरूप है, और वह त्रि मात्राओं से मानव ओत प्रोत है। संसार में तीन ही प्रकार की मात्रा कही जाती हैं, और तीन ही प्रकार के गुण कहे जाते हैं। बेटा! सतोगुण, रजोगुण, और तमोगुण यह तीन प्रकार के गुणों में मानव विभक्त हो रहा है, इसी प्रकार त्रि वर्धा में ब्रह्मां ब्रहे हमारे यहां जब यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में याग करता है। तो वह तीन प्रकार की मानों मेखलाओं का व्यवधान करता है। वह तीन मेखला का अभिप्रायः ये है कि ज्ञानं, कर्मणां, उपासनं भूतं प्रव्हा लोकां मानो देखो, इन तीनों के द्वारा लोकों में जाना चाहता है। भु, र्भुवः, स्वः इन तीनों को जान करके वह मानो अनन्तमयी प्रकाश में जाना चाहता है जो द्यौ के ऊर्ध्वा, अपृ भाग में रत्त रहता है और इनको जान करके मानो देखो, तीन प्रकार के परमाणुओं को जान करके विज्ञानवेत्ता बनना चाहता है। विज्ञानवेत्ता वही बनता है, जो तीन प्रकार के परमाणुओं को जानने में लगा हुआ है। मानो देखो , तेजोमयी, तरलतव और गुरूतव ये तीन प्रकार के परमाणु हैं जिसकी आभा में विज्ञान जिसमें निहित हो रहा है। चाहे वह मानो पृथ्वी मण्डल का विज्ञानवेत्ता हो, चाहे वह मंगल मण्डल का विज्ञान हो, चाहे और भी नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों का विज्ञान क्यों न हो, परन्तु वह विज्ञान केवल त्रि वर्धा में निहित रहने वाला है। वहां भी गुरूतव तरलतव और तेजोमयी यह मानो देखो , अपने में

अभ्योदय हो रहा है। जिससे मानव विज्ञानवेत्ता कहलाता है और वह नाना प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता है। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था क्या अन्तरिक्ष में बेटा! ऐसी ऐसी स्थलियां हैं। जहां देखो, इस विज्ञानवेत्ता अपने यन्त्रों में विद्यमान हो करके वह यन्त्र स्थिर कर दिए और नाना प्रकार के लोकों की सीमाओं को वह प्रायः दृष्टिपात करते रहे हैं। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि हमारे यहां देखो , अमृतं ब्रव्हे कृतं देवाः, हमारे यहां बेटा! एक मार्कण्डेय ऋषि हुए है, जो मेरे प्यारे! भा कृति और श्वेतं गोत्रों में कहलाए गएं परन्तु उनमें ये विशेषता थी, क्या वे विज्ञानवेत्ता बहुत महान मार्मिवर्तं ब्रव्हा वह विज्ञान में, रत्त रहते थे। और वैज्ञानिक यन्त्रों में विद्यमान हो करके वह चन्द्रमा और पृथ्वी की जहां सीमा का सन्निधान होता है, वहां यन्त्रों का स्थिर किया करते और वहीं मुनिवरों! देखो, विज्ञान में, अपने में परमाणु और अणु का भी विभक्त होना, उनके लिए स्वाभाविक अभ्योदय हो गया था। तो जिससे बेटा! देखो , उनका नामोकरण मार्कण्डेय ऋषि का नामोकरण अपने में बड़ा स्थलियों से रहा है। बेटा! आज मैं तुम्हें विज्ञान के वाङ्गमय में या विज्ञान में नही ले जाना चाहता हूँ, केवल विचार विनिमय यह कि हमारा वेद क्या कहता है, वेद त्रिवर्धा को उद्गीत गा रहा है वेद में मानो देखो, तीन प्रकार की विभक्तियों में यह संसार रत्त रहा है। तीन ही प्रकार के शरीर होते हैं, आत्मा जब मानो इस संसार में आता है किसी भी काल में आया, तो परमपिता परमात्मा ने तीन प्रकार के शरीर दिए सबसे प्रथम स्थूल, सूक्ष्म और कारण मानो यह कारण या स्थूल या ब्रह्मा देखो , स्थूलां ब्रह्मा सूक्ष्मां ये तीन प्रकार के शरीर आत्मा के माने जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम कारण है, जहां ज्ञान और प्रयत्न दोनों रहते हैं, और मुनिवरों! देखो, उसके पश्चात सूक्ष्म है, जहां मुनिवरों! देखो , दस प्राण हैं, दस पञ्च तन्मात्राएं हैं, और जहां मुनिवरों! देखो, अमृतं प्रकृति की वासनाएं हैं, और मन , बुद्धि ये सत्रह आभाओं का निर्मित होने वाला सूक्ष्म शरीर कहलाता है, और मुनिवरों! देखो , चौबीस का स्थूल कहलाता है जिसमें दस प्राण है, दस

ज्ञानेन्द्रियां हैं, ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां दस ही कहलाती हैं। परन्तु देखो , मन, बुद्धि, चित, अहंकार ये चतुष अन्तःकरण कहलाता है। तो परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि का सृजन किया तो मुनिवरों! देखो, ये अभ्यं ब्रह्मे लोकां यह दो प्रकार का जगत मेरे देव ने निर्माणित किया है, और वह दो प्रकार का जगत एक जगत देखो, बाह्य जगत है, जिसे सांसारिक जगत कहते हैं, और एक आन्तरिक जगत माना गया है। जो अन्तरात्मा से नाना प्रकार की प्रेरणाओं का जन्म होता रहता है। और उससे प्रेरित हो करके ही ये अपने मे रत्त रहता है, ये प्रेरणा को पाता रहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो , जब याज्ञिक पुरूषों ने यह विचारा कि ये याग क्या है? तो इसके ऊपर उन्होंने आन्तरिक और बाह्य जगत दोनों का समन्वय किया, उन्होंने मुनिवरों! देखो, ज्ञान और विज्ञान को भी इसी में समावेश किया, उसके पश्चात याग की कर्मकाण्ड की पद्धतियों का निर्माण किया, जिससे वह पद्धति मानो देखो, एक साकार बन करके मानव के जीवन को शिक्षा प्रद बना देती है। तो मुनिवरों! देखो , इसी प्रकार हमारे यहां त्रि वर्णप्रव्हा आचार्यों का ये कथन रहा है, क्या दोनों प्रकार के जगत को मानव को जानना चाहिए। यदि मानव ये चाहता है कि मैं इस संसार सागर से पार हो जाऊं, या मैं अपने में ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाऊं तो वे दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान को वह जानने के लिए वह तत्पर हो जाएं। ये तीनों प्रकार का जो शरीर है, आत्मा का ये आन्तरिक या बाह्य जगत सर्वत्रता को जानना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो , मुझे बहुत सा काल प्रायः स्मरण आता रहता है, जब मानव देखो , तपस्या में परणित होता है। तो तप करने के पश्चात वह अपनी आभा में रत्त होता है और तपश्चर हो करके किसी शब्द को वह निर्धारित करता है, इसे यौगिक शब्द कहते हैं, वह अकाटय बन जाता है। जिस पर कोई मानव टिप्पणी नही कर सकता। तो इसीलिए वह तपस्वियों का और वह तपों में ही जीवन कहलाता है। तो विचार आता रहता है बेटा! हमारे यहां दो प्रकार के यागों के परम्पराईता मानी जाती

है। एक आध्यात्मिक याग है। तो दूसरा भौतिक विज्ञान और भौतिक याग के नामों से वर्णन किया गया है। आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही प्रगट कर रहा हूँ, क्योंकि हमारे यहां वैदिक कर्मकाण्ड की पद्धतियों में भी प्रायः देखो , याग का अपना बड़ा महत्व माना गया है और राष्ट्रीय स्थलियों पर भी याग को अपनी स्थलियों में महानता का महानता का स्थान दिया है। तो विचार आता रहता है कि हे मानव! तू अपने में याज्ञिक बन तेरे प्रत्येक इन्द्रियों का जो साकल्य है। प्रत्येक इन्द्रियों का जैसे नेत्रों का साकल्य दृष्टिपात करना है सु, और कु दृष्टि नहीं, मानो सु दृष्टि उसका साकल्य बन करके रहता है। जैसे मुनिवरों! देखो , मानव के श्रोत्रों में शब्द आते हैं और वह शब्द में जितनी भी सुता रहती है, जितना भी सु शब्द होता है, उतना ही तेरे यह जो कर्णेन्द्रिय है, यह सजातीय बन जाती है, मुनिवरों! देखो , इसी प्रकार ब्रह्मणं ब्रव्हा कृतं देवत्वां देखो , इसीलिए मुनिवरों! देखो, जो प्रत्येक इन्द्रियां हैं उनका सबका साकल्य एकतित्र किया जाता है, साकल्य कहते हैं चरू को, और चरू कहते हैं जो एकत्रित किया हुआ मानो जो तरंगवाद है। उसका नाम चरू कहलाता है, और उसको ले करके जब यज्ञमान अथवा आध्यात्मिक याग वेत्ता याग करता है। तो अपने हृदय रूपी यज्ञशाला में मानो याज्ञिक बन करके अपने को ऊँचा बनाता है। अपने को दवेतव बना देता है, तो इसी प्रकार मुनिवरों! देखो , यह वर्णसुतं ब्रह्मा ब्रहो वर्तं यह त्रि वर्धा कहा जाता है। यह त्रि आभा में रत्त रहने वाला जगत है। तो मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार के गुण मानव के समीप होते हैं। सबसे प्रथम हमारे यहां गुण का नाम सतोगुण आता है। सतोगुण में सत्यमयी रत्त रहने वाला वह सतो में रमण करने वाला है। जैसे बेटा! हमारे यहां विष्णु शब्द आता है, तो विष्णु शब्द का यह सत्य में निहित रहने वाला है। तो वह विष्णु कहते हैं, पालन करने वाले को। मेरे पुत्रों! इसमें दो एक प्रकार के शब्दों की आभा हमारे समीप आनी प्रारम्भ होती है। तो एक यौगिक शब्द है, तो दूसरा रूढ़ि कहलाता है जैसे मुनिवरों! देखो, विष्णु का अभिप्रायः है, पालन करना पालन करने का नाम मुनिवरों! देखो,

वह यौगिक शब्द है, वह प्रत्येक आभा में निहित रहने वाला है। क्योंकि वैदिक साहित्य में आया है, मनतं ब्रह्मा विष्णु वर्णा ब्रहे देवाः क्या देखो , विष्णु शब्दों में नाना प्रकार की आभाएं आती रहती हैं। क्योंकि माता का नाम विष्णु है, माता को इसीलिए विष्णु कहते हैं, क्योंकि वह पालना करने वाली है, जैसे परमपिता परमात्मा पालक है, और वह विष्णु कहलाता है। विष्णु कहते हैं जो पालन करने वाला है। पालन करने वाले को विष्णु कहा जाता है, मेरे प्यारे! देखो , मुझे स्मरण आता रहता है त्रेता के काल में जब मुनिवरों! देखो , भगवान राम प्रातःकालीन अपनी यज्ञशाला में याग करते रहे तो मुनिवरों! देखो , वह विष्णु के द्वार पर जाने का प्रयास भी करते रहे, और वही काल है मंगलं ब्रह्मा वर्णासुते जब मुनिवरों! देखो , उन्होंने समुद्र के तट पर भी याग किया था, तो वहां भी उनका यह उपदेश प्रारम्भ रहता है, और वह विष्णु की आभा में रत्त रहते और यह कहते कि राजा को विष्णु बनना है, और प्रजा को मेधां भूतं ब्रह्मा और प्रजा का पालन करना है, क्योंकि माता पिता भी दो प्रकार की सन्तान को जन्म देते वास्तव में त्रिवर्धा ही वह कहलाते हैं। एक वह होते हैं जो प्रजा के रूप में हैं, एक सन्तान के रूप में होते हैं प्रजामयी वह होते हैं जो इदन्नमम् त्याग पूर्वक माता पिता देखो , सन्तान को जन्म देते हैं, और वह माता विष्णु बन करके उसका पालन करने वाली है तो मुनिवरों! देखो , अमृतं वह प्रजा कहलाता है तो इसीलिए परमपिता परमात्मा जो विष्णु है, उसका नाम पालक है, वह पालना करने वाला है, तो मुनिवरों! इसके बहुत से पर्यायवाची शब्द आते रहे हैं, जो मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा क्या विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है। जो पालक है जो मानो हमारा देखो , अनुशासन में हमें धारण करने वाला है, जो इस संसार को अनुशासन में मानो अनुशासित करने वाल है जैसे सूर्य प्रातःकाल अपने समय पर उदय होता है, चन्द्रमा अपनी आभा में उदय होता है, रात्रि अपने समय पर आती है, परन्तु वायु वेग में भ्रमण करती है, इसी प्रकार ये नाना प्रकार के तारा मण्डल, एक दूसरे

की माला बनी हुई है। यह परमपिता परमात्मा का नियम है, अथवा उसी का ये अनुशासन है, और अनुशासन में रत्त रहने वाले हैं। तो मेरे प्यारे! देखो , जब ऋषि इस प्रकार वर्णन करने लगे, अमृतं ब्रह्मा देवत्वां भू वर्णानं ब्रहे तो उन्होंने कहा विष्णु नाम, जहां परमात्मा का है, वहां माता का नाम विष्णु है। माता भी पालन करने वाली है, लोरियों का पान करा रही है, परन्तु देखो, उसे शुद्ध, बुद्ध, निरंजन ये उपदेश दे रही है, और उपदेश दे करके कहती है कि हे बालक! तू शुद्ध है, बुद्ध है, तू निरंजन है और बुद्धोसि , शुद्धोसि निरंजनसि कह करके जब लोरियों का प्रसन्न हो करके पान कराती है, तो माता के हृदय की जो तरंगें है, वह मानो बाल्य के अन्तर्जगत में प्रवेश हो जाती है मेरे प्यारे! उन्हीं तरंगों मे देखो, मन अपने में गति करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो , हमारे वैदिक साहित्य में माता का नाम विष्णु कहा गया है, और विष्णु मं ब्रह्मे देखो , विष्णु नाम जहां माता का वहां विष्णु नाम बेटा! सूर्य का है, सूर्य को इसीलिए विष्णु क्योंकि वह पालक है, पालना करने वाला है, नाना प्रकार का प्रकाश देता रहता है, और वह मुनिवरों! देखो , ऊर्ज्वा देता रहता है, प्रकाश देता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, उसी से उत्तरायण और दक्षिणायन बनते रहते हैं, देखो, दो पक्ष बने, एक दक्षिणाय एक उत्तरायण पक्ष बन गया तो मुनिवरों! देखो, इसीलिए मानव के जीवन में भी इसी प्रकार के दो पक्ष कहलाते हैं, एक उत्तरायण है तो एक दक्षिणायन कहलाता है दक्षिणायन कहते हैं अन्धकार को मुनिवेरों! देखो , स्वम्ब्रहे और उत्तरायण कहते हैं प्रकाश को, तो ये दोनो ही मानो देखो , एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। तो विचार आता रहता है, मुनिवरों! अमृतं वह यह सूर्य अपने में विष्णु है जो प्रकाश का द्योतक है, और यह द्यौ से प्रकाश ले करके प्रकाश देता रहता है, यह ऊर्ज्वा मेरे प्यारे! देखो, नाना खनिजों पर जब प्रवेश अकृतियों में रत्त होती है तो खनिजों को सजातीय बना देती है, और वही खनिज मेरे प्यारे! मुद्रा के रूप में मुद्रित हो जाते हैं, तो विचार आता रहता है, मुनिवरों! देखो, यह सूर्य विष्णु है, जो प्रकाश के देने वाला है पालक है ये प्रातःकाल में

जब उदय होता है, तो ये प्रकाश को ले करके अपने में उषा और कान्ता की किरणों को ले करके चलता है। मेरे प्यारे! रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है, और यह नाना तारामण्डलों के प्रकाश को भी अपने में धारण कर लेता है, और यह विष्णु बन करके नाना प्रकार की ऊर्ज्वा देता है, इससे वनस्पतियां जागरूक हो जाती है और यह वनस्पति में अपने रत्त हो करके मानो बेटा! अपने जागरूक हो जाता है।

तो मेरे प्यारे! विचार आता रहता है कि विष्णु नाम, हमारे यहां सूर्य को कहा गया है, और विष्णु नाम जहां सूर्य को कहा गया है। वहां विष्णु नाम बेटा! राजा का नाम विष्णु है, राजा का नाम विष्णु इसीलिए है, क्या राजा मुनिवरों! देखो, वह भी पालक है, पालन करने वाला है और जो पालना के मूल में आता है उसी का नाम विष्णु है, वही शब्द यौगिक बन करके मानव के अन्तःकरण को स्पर्श करता है, और मानव का अन्तःकरण पवित्र बनता है। तो मेरे प्यारे! वह राजा का नाम विष्णु कहा जाता है, मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! एक समय महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ब्रह्मचारियों के मध्य में यह कहा था कि विष्णु क्या है? तो एक वेदमन्त्र का उन्होंने उद्गीत गाया और वेदमन्त्र का उद्गीत गा करके उन्होंने कहा विष्णु ब्रह्मा कृतं लोकां भूतं ब्रह्मे लोकाः वर्ताः मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों के मध्य में न्यौदा में से मन्त्रों का उद्गीत गाया और उद्गीत गा करके राम और वृत्तिका ब्रह्मचारी दोनों से कहा जाओ इस मानो देखो, मन्त्र के रूप को लाओ, तो मुनिवरों! देखो , दोनों ने विद्यालय की आंगन से वह बाह्य जगत में चले गएं और वह अपने में विचारने लगे और विचारने लगे तो कहीं तो मानो देखो , विष्णु ध्रुवा में रहता है, कहीं विष्णु ऊर्ध्वा में रहता है, कहीं मानो देखो, ऊर्ध्वा में लोक लोकान्तर बनते हैं, और कहीं ध्रुवा में जाते हैं। तो पालक बनता है, इसी प्रकार उनकी विचारधाराएं और उनका जो मन्तव्य चिन्तन करने का वह अपने में निमटारा नही हो सका, बहुत समय हो गया जब निमटारा नही हुआ तो मुनिवरों! देखो , वह अमृतं सांयकाल हो गया

प्रातः से दोनों विचार विनिमय करने लगें, कहीं लोक लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगें, कही मानो पालना के क्षेत्र में चले जाएं कहीं वह किसी क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो , जब वह प्रातःकालीन से सांयकाल को महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के पुनः आश्रम में पधारे और वह दोनों अपने में निन्द्रा में जागरूकता में नही वह शान्ति में अपने कक्ष में विद्यमान थे, मेरे प्यारे! जब दोनों ब्रह्मचारी उनके द्वार पर पंहुचें उन्होंने कहो राम तुम्हारा ऐसा मृतं ब्रहे वर्णनं मेरे प्यारे! उन्होंने कहा हम अपने में कुछ निमटारा नही कर सके, जो आपने मन्त्र हमें उद्गीत गाया, हमारे विचार में यह आया है कि विष्णु नाम आपने देखो, विष्णु हम लोकों को कहते हैं जो पालना के क्षेत्र में रहते हैं, और विष्णु नाम ध्रुवा में रहता है, ध्रुवा कहते हैं जो नम्र बनता है। परन्तु हम एकोकी वाक् उच्चारण नही कर सकते हम विष्णु किसे कहें। तो मेरे प्यारे! देखो , वह विराजमान हो गएं तो महात्मा महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने अपना मन्तव्य देते हुए कहा क्या हे ब्रह्मचारियों! विष्णु कहते हैं, जो ब्रह्म को जानने वाला हो, विष्णु कहते हैं, जिसके बिना देखो, शून्यता को प्राप्त हो जाते हैं। देखो , विष्णु नाम आत्मा को कहा जाता है। आत्मा यदि शरीर में नही रहेगा, तो यह मानव का शून्यता को प्राप्त हो जाएगा, तो इसीलिए शून्यं ब्रह्मं ब्रह्मा वर्णो जिनके बिना हम रह नही सकते, जिसके बिना हमारा जीवन संचालित नही हो सकता। उसका नाम विष्णु कहा जाता है, और विष्णु नाम मानो देखो , शासक का है, जो शासन करने वाला है। प्रत्येक इन्द्रियों जितेन्द्रिय बना करके और वह विष्णु बनता है। वह ध्रुवा में अपनी गति बना लेता है। जैसे माता की गति ध्रुवा हो जाती है, जब माता पुत्रवती बन जाती है, जब वह प्रजावान बन जाती है। तो माता की गति ध्रुवा बन जाती है, और ध्रुवा कहते हैं। जो पालन करने वाला हो इसीलिए विष्णु नाम ध्रुवा में रहता है, और मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा सम्भव ब्रहे और देखो, विष्णु नाम हमारे यहां देखो, राजा का नाम विष्णु है। जिसका बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन की है, विष्णु नाम राजा का है, जो राजा के यहां राजा जितेन्द्रिय बन

करके देखो, अपने में पालक बनता है। उसका नाम देखो , उस राजा का नाम विष्णु कहा जाता है। हमारे यहां विष्णु की विवेचना करने वालों ने अपने अपने मन्तव्य दिए हैं। उन्होंने कहा सम्भूति ब्रह्मणा लोकां वाचन्नमं विष्णु हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। राजा का नाम विष्णु है। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे राम! देखो, राजा का नाम विष्णु है। जिस राजा के चार प्रकार के नियम होते हैं, जैसे गृह स्वामी और गृह स्वामिनी अपने गृह को ऊँचा बनाते हैं, और उनके यहां चार प्रकार के नियमावली होती है। ऐसे ही राजा के राष्ट्र में भी चार प्रकार की नियमावली होनी चाहिए। सबसे प्रथम नियमावाली में चरित्र आता है, जिसको हम पदम के नाम से वर्णन करते हैं, परिणाम भूतं ब्रह्मे लोकां मानो देखो, जो चरित्र का प्रतीक और अनुशासन का प्रतीक माना गया है। इसके पश्चात देखो, एक कन्यां भूतं ब्रहे राजा के राष्ट्र में एक कन्या दूसरे राष्ट्र के छोर तक चली जाएं, परन्तु उस कन्या को पुत्री और माता की और भोजई की दृष्टिपान करने वाला समाज हो और वह समाज अपने में महानता का दर्शन करता रहे, तो मानो देखो, उस काल में राजा के राष्ट्र में देखो, पदम का प्रतीक बनता है उसके पश्चात गदा का प्रतीक बनता है, गदा कहते है। जिस राजा के राष्ट्र में क्षत्रिय सुचरित्र होते हैं, और क्षत्रिय गदा से युक्त होते हैं, वह मानो देखो, दुराग्रह का देखो, विनाश करने वाले और देखो , जो महापुरूषों की रक्षा करने वाले जो राष्ट्र का प्रहरी बन करके अपने राष्ट्र को जो उन्नत बनाता है, सबसे प्रथम अपना शरीर रूपी जो राष्ट्र है, इस राष्ट्र को ऊँचा बनाता है, मानो देखो , इस राष्ट्र में आत्मा धिराज है, और देखो , यह मन और प्राण दोनों मानो उसके प्रहरी कहलाते हैं। आत्मा के द्वारं ब्रह्मे देखो , वह प्रहरी बन करके जो इनको जानता है। वह वास्तव में देखो , अपने में देखो, युक्त देखो, गदा युक्त होता है। जो ज्ञान युक्त होता है और बाह्य जगत में वही राजा के राष्ट्र में मानो देखो , क्षत्रिय प्रहरी बन करके और वह राजा के राष्ट्र को उन्नत बनाने में लगे रहते हैं, और राजा का राष्ट्र देखो , दूरिता को नष्ट करना और महानता को जन्म देना

उसका नाम मुनिवरों! देखो , क्षत्रिय कहा जाता है, और राजा के राष्ट्र में मानो देखो, संस्कृति होनी चाहिए ऐसी नियमावली होनी चाहिए, जिसको प्रत्येक पृथ्वी का राष्ट्र उसको अपनाने वाला हो, ऐसा नियमावली वाला राष्ट्र होना चाहिए, वह ब्रहे अपनी संस्कृति का प्रसार करने वाला हो, मुझे बेटा! भगवान राम का जीवन प्रायः स्मरण आता रहता है। भगवान राम ने मानो देखो, लंका को विजय किया, पातालपुरी को विजय किया, उन्होंने और भी नाना राष्ट्रों को विजय किया और विजय क्यों किया करके उन्हीं को राष्ट्र प्रदान कर दिया क्योंकि उन्होंने अपनी संस्कृति का प्रसार किया। संस्कृति उसे कहते हैं, जिसमें मानवता हो जिसमें मानो देखो, महानता हो, और विज्ञानता हो और जिसमें मानो देखो , विज्ञान की प्रतिभा महानता में रत्त रहने वाली हो, तो ऐसा जो नियम होता है राजा के राष्ट्र में वह अमृतं ब्रह्मा वर्णनं ब्रहे वह संस्कृति का प्रतीक कहलाता है। संस्कृति देखो, भगवान राम का जीवन जिन्होने दृष्टिपात किया है, अथवा अध्ययन किया है, उन्हें ये प्रतीत है कि उनका जीवन कितना महान रहा है। बेटा! उन्होंने देखो , अहिरावण को नष्ट किया, और मकरध्वज को हनुमान के पुत्र मकरध्वज को, वहां का धिराज बनाया और धिराज बना करके मुनिवरों! देखो , वह पातालपुरी उसी को प्रदान कर दी। उन्होंने श्वेदज नाम के राजा को नष्ट किया मेरे प्यारे! देखो , अहिरावण को राजा जो संस्कृति से विपरीत हो रहा था, उनको नष्ट किया और नष्ट करके मुनिवरों! देखो , उन्होंने श्वेत्ताम राजा का देखो , वहां का धिराज बनाया। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने रावण को नष्ट किया तो और विभीषण को वहां का धिराज बनाया और संस्कृति का प्रसार किया। मेरे प्यारे! देखो , उन्होंने नाना राजाओं पर यहां संस्कृति का प्रतीक बना करके अपने नामोकरण को ऊर्ध्वा में पंहुचाने का प्रयास किया। तो मेरे प्यारे! देखो , आज मैं भगवान राम की प्रशंसा करने नही आया हूँ, विचार विनिमय केवल ये कि उनका जो क्रियाकलाप रहा है, उनके जीवन में जो उनकी महानता रही है, उसका वर्णन कराने जा रहा हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा के राष्ट्र में प्रायः मानो संस्कृति का प्रसार यह तृतीय भुज

कहलाता है, और चतुष जो भुज है, वह मुनिवरों! देखो , शंख ध्वनि कहलाती है शंख ध्वनि के सम्बन्ध में ये अमृतां वेदां भूतं ब्रह्मे लोका वृत्ति देवाः राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण होने चाहिएं जिस राजा के राष्ट्र में तपस्वी ब्राह्मण होते हैं। उस राजा का राष्ट्र पवित्र होता है, और जिस राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण बनते हैं, परन्तु वह ब्राह्मण नही है। उस समय में देखो , ब्रह्मतव नष्ट हो जाएगा, और राष्ट्र की प्रणाली भी नष्ट हो जाएगी, मेरे प्यारे! राजा के राष्ट्र में शंख ध्वनि होनी चाहिए। शंख ध्वनि का अभिप्रायः है क्या वेद का जब उद्गीत गाने वाला ब्राह्मण हो और त्याग और तपस्या में रत्त रहने वाला हो तो मेरे प्यारे! देखो , ब्राह्मण जब गान गाता है। तो वह मानो देखो , गान गाता है, जटा पाठ , घन पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ, उदात्त और अनुदात्त में जब वेदों का गान गाने वाला होता है। तो वह ब्राह्मण कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो , ब्राह्मण की विवेचना करता हुआ वेद का आचार्य कहता है, राजा के राष्ट्र में वह ब्राह्मण होता है, जो तपस्वी होता है, और प्रत्येक गृह में वेद का प्रसार करने वाला हो प्रत्येक गृह में प्रत्येक नगर में और प्रत्येक राजाओ के यहां पुरोहित होने चाहिएं। पुरोहित उसे कहते हैं, जो पराविद्या को देने वाले हों। जो पराविद्या में मानव को परणित करने वालें हो गृहों को ऊँचा बनाने वाले हों वह पराविद्या में मुनिवरों! ले जाते हैं। वह पुरोहित कहलाते हैं, और वही पुरोहित मेरे प्यारे! देखा गृह और समाज को ऊँचा बनाते हैं वही पुरोहित राष्ट्र को ऊँचा बनाते हैं। मेरे प्यारे! देखो , भगवान राम ने अपने राष्ट्र में यह घोषणा की क्या मेरे राष्ट्र में मानो पुरोहित होने चाहिएं। मेरे राष्ट्र में ब्राह्मण होने चाहिएं। ब्राह्मण जो वेद का पठन पाठन करने वाला हो जो उदात्त में गान गाने वाला हो जो जटा पाठ, और घन पाठ में गाने वाला हो और वह वेद के मर्म को जानने वाला हो प्रकाश में रत्त रहने वाला हो जिस राजा के राष्ट्र में मानो देखो, ब्राह्मण होता है वह राष्ट्र पवित्र होता है, और यदि ब्राह्मण की मृत्यु हो गई है, तो राष्ट्र की भी मृत्यु हो जाती है, आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही क्योंकि बुद्धिमान सदैव रहने चाहिएं, और बुद्धिमान जब नही रहेंगे तो

पुरोहित पन नही रहेगा, तो मानव का निचला स्थल भी नही रहेगा वह भी समाप्त हो जाएगा। तो इसीलिए पुरोहित जितने भी क्रियाकलाप हैं। वह मेरे प्यारे! देखो, राजा को यह विचारना चाहिए क्या मानो देखो , ब्राह्मण से द्वितीय स्थान से जो रूढ़िवाद तो नही पनप रहा है। तो ईश्वर के नामों पर जब रूढ़ियां पनप जाती है। तो राजा के राष्ट्र अपने में रसातल को चले जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो , मुझे स्मरण आता रहता है, एक मानो देखो , एक ब्राह्मण देखो , अअधिकारी तपस्या करने लगा उसे अधिकार नही था, विवेक नही था, और विवेक न होने से जब वह तपस्या करने लगा तो मुनिवरों! देखो , ब्रह्म समाज ने बुद्धिमानों ने एक नवीन क्रान्ति का जन्म हुआ और जन्म होने से राम के द्वारा यह पुकार गई, क्या महाराज देखो, यहां अनाधिकारी या अधिकार में जा रहा है, और यह तपस्या का इसे विवेक हैं नहीं, यह तमोगुणी तपस्या कर रहा है। तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है राम ने अपने अस्त्रों शस्त्रों को उसका निधन किया और उसे शूद्र कह करके यहां उसको निधनं ब्रह्मा शूद्र उसी को कहते हैं। जो अनधिकार चेष्टा करने वाला है, अधिकार उसे है, नही और अनधिकार में प्रवेश करता हुआ, और वह मानव को देखो , एक दूसरे को क्या अपने अन्तरात्मा को जो दुखित करने वाला है, वह शूद्र संज्ञा राम ने प्रदान कर दी नष्ट कर दिया नष्ट करने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, वह जब त्राहि अमृतं समाप्त हो गया। और पुनः से मानो देखो , उन्होंने कहा राम का यह वचन था क्या कोई भी रूढ़ियां नही रहनी चाहिए, क्योंकि रूढ़ि के कारण ही देखो, राजा रावण के राष्ट्र का विनाश हुआ, और यदि रूढ़ि नही होती तो राजा रावण के राष्ट्र का विनाश नही हो सकता था राजा रावण के राष्ट्र ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियां बन गई थी। पुत्र मानो देखो, किसी और मत को स्वीकार कर रहा है। पिता किसी मत को स्वीकार कर रहा है मानो देखो , वह यागों में ऐसे मतं ब्रह्मा दूसरों को नष्ट करने वाले यागों को करने वाले मानो देखो , राक्षस एक सम्प्रदाय थी, जो जिसमें राजा रावण निहित रहता था। राक्षस मानो देखो , कोई अमृत नही था। परन्तु वह केवल एक

सम्प्रदाय कहलाता था तो आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट करता हुआ केवल यह क्या मुनिवरों! देखो, राजा का राष्ट्र अपने में पवित्र जब बनता है, जब राजा के राष्ट्र में चार प्रकार की नियमावली उसके यहां राजा के राष्ट्र में देखो , निहित बहे वह अपने में निहित हो जाती है। उसको प्रत्येक प्राणी अपने में स्वीकार करने लगता है, और स्वीकार राजा कराता है, क्योंकि राजा स्वयं जब उनको स्वीकार करता है, तो प्रजा उनको स्वीकार कर लेती है। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है, भगवान राम का यह कथन था प्रातःकालीन क्या देखो, प्रत्येक गृह गृह में सुगन्ध होनी चाहिए। गृह गृह में याग होने चाहिएं। स्वाहा की ध्वनि होनी चाहिए। प्रत्येक गृह में चाहे वह राष्ट्रीय गृह है चाहे वह साधारण प्रजा का गृह है मानो देखो , सर्वत्र चाहे विद्यालय है, सबमें स्वाहा की ध्वनि होनी चाहिए। उन ध्वनियों से जब राष्ट्र का देखो , वायुमण्डल भरण हो जाता है। तो वहां देखो, प्रदूषण नही हुआ करता है, वहां महानता का दर्शन होता है वहां समाज एक महानता की ज्योति में ज्योतिवान हो करके अपने में धारयामि बनता है।

तो आओ मुनिवरों! देखो , मैं आज तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करना नही चाहता हूँ, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने मेरे प्यारे! देखो , यह भगवान राम और वृत्तिका ब्रह्मचारी को अपने में निर्णय कराया आज मैं बेटा! अपने विचारों को किसी कल्प में ले गया, परन्तु देखो , मैं इस सम्बन्ध में न जाता हुआ महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा क्या विष्णु नाम राजा का है, और उस राजा का है, जो चार प्रकार के नियम बनाने वाला हो अपने राष्ट्र में, और चार प्रकार के नियम जो समाज पर स्थिर करने वाला हो वही मानो देखो , वह राजा विष्णु कहलाता है। वह चतुर्थ भुज कहलाता है। चतुर्भुज कहते हैं चार प्रकार के नियमों को जिन्हें धारण करने के पश्चात मानव अपने में मानवीयता का प्रसार करता हुआ और वह विष्णु रूप बन करके अपने को धारयामि बनाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो , आज मैं तुम्हें प्रत्येक आभा में नहीं ले जाना

चाहता हूँ, केवल विचार विनिमय यह प्रारम्भ हो रहा था क्या मैं त्रि वर्धा की चर्चा कर रहा था मेरे प्यारे! देखो , यह संसार त्रि वर्धा में निहित रहने वाला है, और त्रि चरण कहलाते हैं, उन्हीं में मुनिवरों! देखो , यह अपने में निहित रहने वाला है। भू र्भुवः स्वः में भी तीन प्रकार का परमाणु है, जिसमें विज्ञान है और मुनिवरों! देखो, तीन ही प्रकार के लोकों की प्रतिभा कहलाती है। भु र्भुवः स्वः यही अपने में रत्त रहने वाले हैं। तीन वर्ण कहलाते हैं बेटा! ब्राह्मण क्षत्रिय , वैश्य मानो देखो, इन तीन वर्णों में यह तीन ही आश्रम होते हैं। मुनिवरों! देखो , चतुर्थ तो मोक्ष का स्थान है, तो इसी प्रकार त्रि वर्धा यह जगत कहलाता है तो मेरे प्यारे! देखो, यह तीन अमृतों से मानव परणित होने वाला यह जगत है। तो आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ आज का विचार विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा के इस अमूल्य जगत में परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है, जो पालक है, जो पालना करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो , यह यौगिक शब्द है, इसके ऊपर विचार विनिमय किया जाएं, और प्रत्येक मानव को अपने कर्तव्य में निहित रहना चाहिए कर्तव्य ही मानव को मानवीयता के क्षेत्र में ले जाता है और अकर्तव्य ही अनधिकार ही मुनिवरों! देखो , मानव को निचली स्थली पर ले जाता है। तो विचार विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा को अपना मंगलं ब्रहे वृत्त बना करके मुनिवरों! उसके प्रति हमें आस्था हो करके हमें तपस्वी बनना चाहिए, और विचारक बनें जिससे हमारा जीवन एक पवित्रता की वेदी पर मानो रत्त हो करके और अपने में महानता में परणित हो करके परमात्मा को प्राप्त होते रहें, और परमात्मा के जगत को सुदृष्टिपान करते रहें, ऐसा बेटा! आज का हमारा मन्तव्य है। अब हमारा यह वाक् समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहें, और देखो , अपने को जानते हुए इस सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवाः आभ्यां मना यम मानाः। ओ३म् यशश्चां गायन्त्वा आ पा रथं मां

प्रजाः३म्। अच्छा भगवन्! आज्ञा।

११ 12 12 1987 उपाधियां

जीते रहो! देखो , मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पूर्व की भांति , कुछ मनोहर वेद मन्त्रों गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा , आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। क्योंकि हमारे यहां दो प्रकार का यह जगत प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है, एक मानो देखो , जड़वत है, तो द्वितीय चैतन्यवत कहलाया जाता है। मेरे पुत्रों! देखो , जड़ का अभिप्रायः यह है कि जो शून्य है, जिसमें ज्ञान और प्रयत्न नहीं है, वह सर्वत्र जगत मानो जड़वत कहलाया गया है, और जिसमें गति है, चेतना है, और ज्ञान और प्रयत्न उसके साथ है, तो बेटा! वह सर्वत्र जगत मानो चैतन्यवत् माना गया है। तो दो प्रकार का जगत हमारे यहां प्रायः हमें दृष्टिपात आ रहा है, एक जड़वत है, तो एक चैतन्यवत कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो , जड़वत में यह ब्रह्माण्ड मानो अपने में क्रियाशील है, क्योंकि हमारे यहां क्रिया भी होते हुए ज्ञान और प्रयत्न नहीं है, तो वह भी जगत मानो एक शून्यवत में माना गया है, और यदि उसमें चेतना ज्ञान और प्रयत्न है, मानो वही जगत हमारे यहां चेतना में परणित कहा गया है।

तो इसीलिए वह जो परमपिता परमात्मा मेरा देव है, वह मानो देखो , जड़ जगत और चैतन्य जगत दोनों में ही मानो देखो , वह निहित रहता है, वह उसमें रत्त रहने वाला है, तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की प्रायः महती का गुणगान गाते रहते है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है, और प्रत्येक वेदमन्त्र मानो देखो , उसकी गाथा का वर्णन करता है, अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को बेटा! यज्ञोमयी स्वरूप माना जाता है। जितना भी यह संसार रूपी याग चल रहा है। मानो उस

याग में वह परणित रहने वाला है, यह याग उसका गृह है, उसका सदन है, और उसका आयतन है। मानो वह उसी में वास करने वाला है। तो मुनिवरों! हम उस परमपिता परमात्मा की महती के ऊपर प्रायः हमें विचार विनिमय करना है, और विचारना है कि परमपिता परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड की अनन्तमयी रचना की है। परन्तु जहां हमारा वेदमन्त्र हमें उपासना के लिए बाध्य कर रहा है, और यह कहता है कि प्रत्येक मानव को उपासना करनी है, उपासना का अभिप्रायः यह है क्या मानव को अपने जीवन में परमपिता परमात्मा की अनन्तमयी सृष्टि का उपभोग करते हुए, और उसमें सदुपयोगिता लानी है। मानो उसमें अपने में महान बनना है। इसीलिए बेटा! जैसे हमारे यहां वेद के पठन पाठन में भिन्न भिन्न प्रकार के विचार आते रहे है, आज का हमारा विचार कहीं मानो देखो , पृथ्वी विज्ञान में रत्त हो रहे थे, वेद का मन्त्र कह रहा था, प्रथम ब्रह्मा पृथो व्रतो सर्वणा ब्रीही व्रतं पृथ्वी वेद का वाक् कहता है कि यह पृथ्वी वसुन्धरा है और इसी के गर्भ में बेटा! हम सब विद्यमान रहते है। मानो हमें यह विचारना है, कि यह पृथ्वी हमारी ममतव को धारणा करने वाली, वसुधंरा कहलाती है। इसके ही गर्भ में, सर्वत्र विज्ञान पनपता रहता है, सर्वत्र मानो देखो , ज्ञान भी इसी में पनपता रहा है। खनिजों के द्वारा, मानव उसका उपयोग करता रहता है। तो विचार क्या, वेदमन्त्र कहता है, यह जो पृथ्वी है, ये वसुन्धरा है, इसी के गर्भ में, बेटा! हम सब विद्यमान रहते है, और नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को, हम प्राप्त करते रहते है। मेरे प्यारे! जहां पृथ्वी का वर्णन आ रहा था, वहां आज के हमारे वेद के पठन पाठन में, राष्ट्रीयता का भी वर्णन आ रहा था। हमारे यहां राष्ट्रीयवाद का प्रायः बड़ा वर्णन आता रहता है और राष्ट्रीयवाद में भी भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन और वर्णन आता रहा है।

राष्ट्र निर्वाचक

तो विचार मानो देखो, वह प्रत्यम ब्रह्मा सप्रहे व्रतं वेद का वाक् कहता है कि राष्ट्र को कैसा बनना चाहिए? राजा कैसा हो? मेरे प्यारे! देखो, राजा को निर्वाचन

करने वाले कौन हो? तो वेद का एक मन्त्र कहता है ब्रह्मण ब्रव्हे वशिष्ठां ब्रह्मा वर्चो सम्भवं लोकाम बेटा! वेद का मन्त्र यह कहता है कि राजा का निर्वाचन भी होना चाहिए परन्तु वह कैसे, बुद्धिमानों के द्वारा। मेरे पुत्रों! देखो , वह ब्रह्मवेत्ता हो, निष्पक्ष हो, और वेद के मर्म को जानने वाले हो, वेद कहते है ज्ञान रूपी प्रकाश को, उस प्रकाश में रत्त रहने वाले विवेकी पुरूषों के द्वारा, राजा का राष्ट्र का निर्वाचन होना चाहिए, और जब राजा बुद्धिमानों के द्वारा, मानो देखो , उसका निर्वाचन होता है, तो वह राष्ट्र को सुखद पहुंचाता है, राष्ट्र को आनन्दवत में ले जाता है। तो विचार वेद का आज का हमारा, विचार यह कहता है कि हे राजन! हे राष्ट्रदं राष्ट्रं ब्रह्मे राष्ट्र मानो देखो , एक बुद्धिमानों के द्वारा एक निर्वाचन एक वशिष्ठ निर्वाचित होता है। हमारे यहां वैदिक साहित्य में, वशिष्ठ नाम राजा को कहा गया है। वशिष्ठ नाम अपने पूर्वजों में जो महान बुद्धिमान है, उसे भी वशिष्ठ कहा गया है। और यहां वशिष्ठ नाम बेटा! राजा का प्रकरण आ रहा है, राजा को वशिष्ठ कहते है। मेरे पुत्रों! देखो, वह पञ्च जायं पुत्र जायं ब्रह्मे व्रताः वेद की एक आख्यिका कहती है, क्या एक मानो देखो, रसं एक देवी है और उस देवी के पांच पति कहलाते है, और पांच पतियों का ब्रह्मणां मानो देखो , एक वशिष्ठ उनका पुत्र कहलाता है।

तो हमारे वैदिक साहित्य में ऐसी ऐसी आख्यिका आती रहती है। बेटा! वह एक देवी है, उस देवी के पांच पति है, और पांचों पतियों का एक पुत्र, देवी से उत्पन्न होता है, जिसका नाम वशिष्ठ कहलाता है। ये वेद का मन्त्र कहता है, वशिष्ठां ब्रह्मे पञ्च जाया अप्रतं पुत्रों समं ब्रह्मे ब्रह्मणां बेटा! देखो , वह कौन होते है? वह पञ्च ब्राह्मण होते है। और मानो देखो , उनकी देवी कौन है? उन पञ्च ब्राह्मणों की देवी कौन है? बेटा! वह राजसभा कहलाती है। वह राज सभा का नाम मुनिवरों! देवी कहा जाता है। और जो वह पञ्च महा ब्राह्मण पञ्च विवेकी पुरूष मानो देखो, वेद के मर्म को जानने वाले मुनिवरों! देखो , एक राजा का निर्वाचन करते है, उसका नाम वशिष्ठ कहलाता है हमारे यहां वशिष्ठ की विवेचना

करते हुए, तो बहुत सी आख्यिका आती रहती है क्योंकि वशिष्ठ नाम के ऋषि भी हुए है और वशिष्ठ नाम यहां राजा को और वशिष्ठ नाम बेटा! यहां सूर्य को भी कहा गया है, और वशिष्ठ परमपिता परमात्मा को भी कहा जाता है, परन्तु यहां प्रकरण क्या कह रहा है? प्रकरण के आधार पर बेटा! देखो , वशिष्ठ नाम हमारे यहां वशिष्ठां ब्रह्मे व्रतम् यहां बेटा! राजा का नाम वशिष्ठ है, और राजसभा का नाम जिसको राजनीति नितप्बद्ध कहते है, वह बेटा! देखो , देवी कहलाती है। और वह जो पञ्च ब्राह्मण विवेकी पुरूष है। मुनिवरों! देखो, वह निर्वाचन करते है, उसका नाम वशिष्ठ राजा कहा जाता है। वह राजा बेटा! देखो , प्रजा को सुखद पहुंचाता है। ब्रह्मणा ब्रह्मे योगी पुरूषों के आधार पर वह अपनी राज सभा का निर्माण करता है, राष्ट्रवाद को ऊंचा बनाता है, तो मेरे पुत्रों! देखो , विचार विनिमय क्या, वेद का वाक् कहता है वेद का ऋषि कहता है, यह वाक् क्या ब्राह्मण ब्रह्मे वशिष्ठा बेटा! देखो, वह वशिष्ठ कहलाता है। राजा अपने राष्ट्र में मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता से कहता है, कि मेरे राष्ट्र में निर्वाचन होना चाहिए, मेरे प्यारे! देखो, निर्वाचन प्रणाली हमारे यहां सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक वह प्रणाली मानो किसी न किसी रूप में मानो निहित रही है। वह मुनिवरों! देखो, जैसे इन्द्र, हमारे यहां इन्द्र का निर्वाचन होता है, इन्द्र के भी बहुत से पर्यायवाची शब्द है, क्योंकि इन्द्र नाम परमात्मा का, इन्द्र नाम राजा का है, और उस राजा का नाम इन्द्र कहलाता है, जितने पृथ्वी पर धिराज अथवा राजा होते है उन सबका स्वामीतव करने वाला बेटा! उसे इन्द्र कहते है, इसलिए उसे देवता का, देव इन्द्र कहते है क्योंकि वह देव वृत्तियों में रत्त रहता है।

मेरे पुत्रों! हमारे यहां सतोयुग के काल में, एक निर्वाचित प्रणाली बनी, जिस प्रणाली का नामोकरण इन्द्र कहते थे, मेरे पुत्रों! देखो , जो एक सौ एक अवश्मेध याग कर लेता है, वह मुनिवरों! देखो , इन्द्र बनता है। हमारे यहां ऋषि मुनि, उसको इन्द्र की उपाधि प्रदान करते हैं। अश्वमेध किसे कहते है? अश्व नाम राजा का, और मेघ नाम प्रजा को कहा गया है। बेटा! जो राजा और प्रजा दोनों

सम्मिलित हो करके, राष्ट्र कल्याण के लिए, बेटा! याग करते है, याग में बेटा! देखो, अग्निहोत्र तो आता ही है, याग में शिक्षा प्रणाली भी आती है, याग में ज्ञान और विवेक भी आता है, परन्तु जब राजा के राष्ट्र में याग होने लगता है, राजा स्वतः याज्ञिक बन जाता है, तो बेटा! विवेक भी जागरूक हो ही जाता है। वह अश्वमेध याग, मेरे पुत्रों! देखो, अश्व नाम घोड़े को कहा जाता है, अश्व नाम का जो पशु है, उसको मानो पुरातन काल में, मेरे पुत्रों! देखो , स्वर्ण को, उसको शृंगारित करके, और सर्वत्र राष्ट्र में उसे भ्रमण कराया गया, और यदि उसको ग्रहण कोई कर लेता है, तो राजा का कर्तव्य है, कि उससे वह संग्राम करे या ज्ञान से उसको शिक्षा प्रदान करे या मुनिवरों! देखो , ज्ञान और विवेक के द्वारा उसे स्थित कर दे। मेरे पुत्रों! देखो, जो ऐसा नहीं कर सकता, वह अश्वमेध याग नहीं कर सकता। मानो देखो, वह राजा अश्वमेध याग करता है, और एक सौ एक अश्वमेध याग करने वाला, बेटा! इन्द्र कहलाता है। तो मेरे प्यारे! वह त्रिपुरी का स्वामी कहलाता है, और स्वामीतव को प्राप्त हो करके वह इन्द्र मानो त्रिपुरी का स्वामी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, जितने राजा है, उन सर्वत्रता को वह धिपति कहलाया गया है। तो मुनिवरों! देखो , इन्द्र की उपाधि प्राप्त हो गई, तो इन्द्र कहते है, तो देवताओं का राजा है, मेरे प्यारे! देवता ही तो याग करते है, और देवताओं के लिए ही याग किया जाता है। विचार यह आता है कि देवता ही याग करते है, और देवताओं के लिए ही याग होता है।

विष्णु राष्ट्र

मेरे प्यारे! देखो, कैसा विचित्र क्रियाकलाप है मेरे पुत्रों! देखो , मुझे वह काल पुनः से स्मरण आता रहता है जहां भिन्न भिन्न प्रकार का निर्वाचन होता रहा है बेटा! हमारे यहां एक विष्णु की उपाधि मानी गई है, विष्णु भवा ब्रह्मणां ब्रहे विष्णु रुद्रा भागाम् मेरे प्यारे! देखो , वह जो विष्णु है वही तो हमारा कल्याण करने वाला है। हे विष्णु! मानो देखो , जिस राजा के राष्ट्र में, मानो देखो , चार प्रकार की नियमावली होती है नियमावलियों को हमारे यहां भुज कहा जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, वह विष्णु कहलाता है। हमारे यहां मानो देखो , चार भुजों वाला विष्णु कौन है? बेटा! सबसे प्रथम सदाचार, शिष्टाचार मानो देखो , वह राजा के राष्ट्र में होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो , पदम देखो, पदम और देखो, चक्र अपनी संस्कृति होनी चाहिए, और संस्कृति के फलस्वरूप मानो शंखध्वनि होनी चाहिए। जो बुद्धिमान राजा के राष्ट्र में मानो देखो , ध्वनि से ध्वनित होते हो, और वेद मन्त्रों का गान गाने वाले हो, वह जटा पाठ में गा रहा है, कोई घन पाठ में गा रहा है, कोई मानो देखो, विषर्ग, उदात्त और अनुदान में गा रहा है। तो मुनिवरों! देखो, उस राजा का नाम विष्णु कहा गया है, जो चार भुजाओं वाला है, चार भुज में चार प्रकार की जो नियामावलियां होती है, बेटा! देखो, सदाचार शिष्टाचार यह प्रायः होने चाहिए राजा के राजा के राष्ट्र में मानो देखो , इसी प्रकार की वृत्तियां होनी चाहिए, जिसमें बेटा! देखो, चक्र गद्दा और मानो देखो, पदम उसके यहां वृत्तियों में रत्त रहना चाहिए, जिससे राजा का राष्ट्र पवित्र बन करके विष्णु की उपाधि को प्राप्त कर सके मेरे प्यारे! हमारे यहां एक उपाधि हमारे यहां शिव उपाधि कही गई है।

शिव राजा

शिव नाम बेटा! यहां परमपिता परमात्मा को भी कहते है, शिव नाम आत्मा का भी है, वैदिक साहित्य में बेटा! शिव नाम उस राजा को कहते है, जिस राजा के राष्ट्र में, मानो जैसे हिमालय बहुत ऊर्ध्वा में गति करता है, बहुत ऊर्ध्वा में रहता है, मानो इसी प्रकार राजा के राष्ट्र में, प्रजा इस प्रकार के ऊर्ध्वा में विचारों वाली हो, जिन विचारों को ले करके, हम अपने में देखो, वह अपनी कृत्तियों को, अपना करके, मेरे पुत्रों! देखो, वह शिवा ब्रह्मणां ब्रहे मानो देखो, जैसे हमारे यहां शिव, उपाधि मानी गई है। जो राजसभा में बेटा! देखो , न्याय ऊंचा हो और न्याय में कुशलता हो जिस राज के राष्ट्र में वह मानव और ऊंचे विचारों वाली प्रजा हो और न्याय पवित्र हो तो मानो देखो, उस रजा का नाम शिव कहा जाता है वह शिव राजा है तो बेटा! यह सब उपाधियां कहीं गई है। मानो देखो , एक

ब्रह्म उपाधि होती है। ब्रह्म उपाधि उसे कहते है, जो मेरे प्यारे! देखो , वह प्रातः कालीन ब्रह्म का चिन्तन करता है, और ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ मेरे प्यारे! वह अपने में रत्त हो जाते है।

ब्रह्मसूक्त

जैसे मुझे स्मरण आता रहता है, बेटा! देखो , एक समय, महर्षि भृगु मुनि महाराज और पुत्रों! देखो , एक समय महर्षि भृगु, महाराजा शिव के आश्रम में पहुंचे, मानो देखो, शिव के आश्रम से भ्रमण करते हुए, वह ब्रह्म के मानो ब्रह्मा के आश्रम में पहुंचे, बेटा! जब ब्रह्मा जी ने दृष्टिपात किया कि महर्षि भृगु मुनि का आगमन हो रहा है, तो मानो देखो , उनकी ब्रह्माणी ने और ब्रह्मा जी ने दोनों ने उनका स्वागत किया और वह मानो देखो , विराजमान हो गएं, देखो, ब्रह्मा बोले कि कहो भगवन! आज किस प्रकार भृगु! तुम्हारा आगमन हुआ है? महर्षि भृगु बोले कि प्रभु मैं आयुर्वेद का अध्ययन कर रहा था, और अध्ययन करता हुआ, मुझे मानो देखो, ब्रह्म के कुछ सूक्त मुझे स्मरण आए तो वह बह्म सूक्त किसे कहते है? मेरे प्यारे! ब्रह्मा जी ने कहा कि ब्रह्म सूक्त तो मानो जो सूक्त ब्रह्म का वर्णन करते हो, जो ब्रह्म की गाथा गाते हो, जैसे माता का पुत्र माता की माता का वर्णन करते रहते है। क्योंकि यदि माता का पुत्र नहीं होगा, तो माता का वर्णन नहीं किया जा सकता। ममतव को वह प्राप्त नहीं होती तो इसी प्रकार मानो देखो, ब्रह्म सूक्त कहलाते है, वह जो ब्रह्म सूक्त है मानो वह ब्रह्मा के सम्बन्धी है, ब्रह्म का चिन्तन करने के लिए तत्पर है मानो देखो , ब्रह्म का वर्णन करने वाले ब्रह्म का बखान करते रहते है मेरे प्यारे! देखो , ऋषि ने जब इस प्रकार अपनी युक्तियां प्रगट ब्रहे महात्मा भृगु बोले कि प्रभु मैं ब्रह्म को जानना चाहता हूँ। कि ब्रह्म किसे कहते है मुनिवरों! ब्रह्म जी ने कहा क्या ब्रह्म नाम तो आत्मा का है। आत्म ज्ञान में जब प्रवेश हो जाता है जब आत्मा में प्रभु का भान हो जाता है, तो उस आत्मा का नाम ब्रह्मा कहते है। ब्रह्म कहते है मानो देखो , वेदों के मर्म को जानने वालो का नाम ब्रह्मा कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, पुनः

महात्मा भृगु ने कहा प्रभु! ये ब्रह्मा कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मा वह है, जो मानो देखो, उत्पति के मूल में विद्यमान रहता है। उत्पति के मूल में ही तो ब्रह्मा रहते है। इसी प्रकार और उत्पत्ति जब होती है, जबकि ज्ञान युक्त होता है, ज्ञान से ही उत्पत्ति का मूल बना करता है। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने जब यह वर्णन किया, तो पुनः उन्होंने प्रश्न किया क्या महाराज यह ब्रह्मा कौन है? यह ब्रह्मा मैं ब्रह्म को जानना चाहता हूँ ब्रह्म सूक्तों में आया है। उन्होंने कहा ब्रह्मा वह है, जो परमात्मा से समन्वय करने वाला हो, जो परमपिता परमात्मा को, याग के द्वारा, और मानो देखो, वाणी, मन, कर्म और वचन के द्वारा जो ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ता है। मानो जिसको मन पवित्र होता है, मन, कर्म भी पवित्र होता है, मन कर्म और वचन भी मानो सत में रमण करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, मन कर्म वचन से जो स्थिर रहने वाला है, वह ब्रह्म में अपने को दृष्टिपात करता है, तो बेटा! वह ब्रह्मा कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा ब्रह्मणां ब्रह्मे व्रतम् मानो देखो, ब्रह्म को जो परमात्मा को, इस संसार के एक एक कण कण में दृष्टिपात करता है, जैसे मन जा रहा है, मन कहीं जाता है, तो मानो देखो, वह प्रणां ब्रह्मे मन के जाते ही यह भान हो जाए की मन चंचल हो गया है, तो मानो देखो, उसके स्थिर रहने से प्राण में सिमट जाने से मानो देखो , ब्रह्म को जगत के मूल में दृष्टिपात करने वाले को ब्रह्मा कहते है। मेरे प्यारे! महात्मा भृगु ने पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज! यह ब्रह्मा कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मा वह है, जो माता के गर्भस्थल में, जब एक बिन्दु प्रवेश होता है और बिन्दु के प्रवेश होते ही मानो देखो , परमाणु अपनी अपनी जगह पिण्ड के रूप में जो निर्धारित करने वाला है, मानो एक एक परमाणु देखो, नाना परमाणुओं के साथ में मिलान करता है, और वह आत्म चेतना उसमें मानो उसमें विद्यमान रहती है, तो वह जो परब्रह्म परमात्मा ब्रह्म है वह मानो देखो , परमाणुओं को अपनी अपनी स्थलियों पर स्थिर कर देता है, और वह परमाणु अपनी अपनी जगह स्थिर हो करके बेटा! देखो , शिशु का निर्माण करने वाला है। शिशु को जो निर्माणित करता है, जो पञ्च देवताओं के

द्वारा, वह नाना देवताओं के द्वारा, जो निर्माणित करता है, मेरे प्यारे! देखो , उसे ब्रह्मा कहते है। इसीलिए ब्रह्मा को ही उत्पति के मूल में दृष्टिपात किया गया है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! यह मैंने जान लिया, परन्तु इससे मैं सन्तुष्ट हो गया हूँ। मैं जानना पुनः यह चाहता हूँ, क्या यह जो ब्रह्म सूक्त है, यह सूक्त हमें क्या क्या शिक्षा देते है? उन्होंने कहा ब्रह्मा जी ने कहा क्या देखो, ये सूक्त यह कहते है क्या ब्रह्म का चिन्तन करो परन्तु देखो , अपनी स्थिति में स्थिर हो करके और जीवन की धारा को, प्रायः जानने वाले बनो, जिससे मानवीयतव तुम्हारे अन्तर्हृदय में प्रवेश होता हुआ, मानो कृतियों में रत्त रह करके, अपनी आभा में नियुक्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो , ब्रह्मा कौन मानो देखो , जो कण कण में प्रभु को दृष्टिपात करता है, मानो देखो , मृत्यु को अपने हृदय से आलिंगन वृत्तियों में रत्त करा देता है, तो मानो देखो , उसे ब्रह्मा कहते है। मेरे प्यारे! महात्मा भृगु बड़े प्रसन्न हुए, और महात्मा भृगु ने पुनः यह प्रश्न किया, महात्मा भृगु ने कहा सम्भूति ब्रह्मा सम्भूति लोकां सम्भूति रुद्रो भागा वर्णन व्रते मेरे प्यारे! देखो , उन्होंने कहा प्रभु! मेरा एक ही प्रसंग, और रह गया, क्या यह ब्रह्मा कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मा वह कहलाता है, जो ब्रह्मज्ञान का स्वामीतव करने वाला है ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करा देता है जो मानो उस ब्रह्म में समाधिष्ट हो जाता है, हमारे यहां दो प्रकार के साधक माने गएं है। एक मानो देखो , ब्रह्म में समाधिष्ट एक तो मानो देखो, उसमें ब्रह्म में समाधिष्ट हो जाना एक मानो द्वितीय मानो जनता में जनार्दन को दृष्टिपात करना है। जनता में ब्रह्म को दृष्टिपात करना है मेरे प्यारे! उन्होंने कहा एक ब्रह्म में समाधि है, ब्रह्म में समाधि उसे कहते है, जो सर्वत्र ब्रह्म को ही दृष्टिपात करता है। जो मानो देखो , ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म में स्वीकार करके उसमें समाहित हो जाता है, और वह मानो देखो, वह समाधिष्ट हो जाता है तो उसको ब्रह्म में समाधि कहते है। मेरे प्यारे! देखो , एक जनता में जनार्दन है, जनता में जनार्दन कौन है? जो मानो देखो , जनता में जनार्दन, जो जनार्दन में इस संसार को एक एक कण कण में ब्रह्म को दृष्टिपात करने वाला,

वह मानव जब ये विचारता है, मैं कहा जाऊं, यह तो सर्वत्र ब्रह्म ही ब्रह्म, मुझे दृष्टिपात आ रहा है। मानो देखो, वह किसी भी दशा में मुझे एक एक परमाणु में ब्रह्म दृष्टिपात आ रहा है। एक एक स्थूल जगत में मुझे ब्रह्म ही ब्रह्म दृष्टिपात आ रहा है। जैसे मानव देखो, यह झरना देखो, पर्वतों में एक स्रोत्र एक सूत्र मानों! देखो, जल का स्रोत बह रहा है उसमें से ध्वनि आ रही है वह ध्वनि कहां से आ रही है कौन ध्वनि कर रहा है तो कहता है प्राणं ब्रह्मा प्राणं रूद्रे वह जो प्राण है वह ब्रह्म के रूप में मानो देखो , ध्वनि कर रहा है। एक दूसरे से मिलान करता हुआ ध्वनित हो रहा है वह ध्वनि ही मानो देखो , ब्रह्म में समाधिष्ट होने की है, वह जनता में जनार्दन में ही ब्रह्म में वर्णा मानो देखो , समाधिष्ट हो जाता है निर्कल्प समाधि लग जाती है। बेटा! वह जब एक एक प्रजा में ब्रह्म का दर्शन करता है, तो मानो देखो , जनता में जनार्दन को, जनता में ब्रह्म को दृष्टिपात करके, बेटा! वह मौन हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो , जब आदि ब्रह्मा ने, महात्मा भृगु को यह चर्चा कराई तो उन्होंने पुनः कहा प्रभु! मैं ये नहीं जान पाया हूँ क्या मेरा वही प्रसंग रह गया है, क्या ब्रह्म सूक्तों में ब्रह्म का वर्णन किस प्रकार का आता है।

मेरे प्यारे! देखो , ब्रह्मा जी ने कहा क्या मेरे विचार में तो यह आता है, ऋषिवर! क्या सम्भवम ब्रह्मे प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को एकत्रित करके और मानो देखो, जैसे हमारे यहां वाणी से रस को ले लिया जाता है, और घ्राण से मानो देखो, वह घ्राण से मन्द सुगन्ध को ले लिया जाता है, और श्रोत्रों से दिशाओं को, श्रोत्रों से शब्दों को ले लिया जाता है, और नेत्रों से रूप को ले लिया जाता है, और प्रेम से देखो, सर्वत्र स्वादन कृतियों को मानो देखो, प्रेम को ले लिया जाता है, वह सर्वत्र मानो देखो , इसका सूक्ष्म रूप बना करके, एकोकीकरण करते हुए, एक ही सूत्र में सूत्रित करते हुए, साकल्य बना करके, मानो देखो, वह वह ब्राह्मण वह ब्रह्म वेत्ता ही, मेरे प्यारे! देखो , ब्रह्माग्नि में, वह जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है। हृदय स्थली में, उसमें जो साकल्य बना करके,

आहुति देता है और वह मानो देखो, उसे अपने में धारण कर लेता है। रूप, रस, गन्ध, प्रकृति के सर्वत्र रूप को अपने में धारण करके, एक चेतना में प्रकाश रह जाता है। और वह प्रकाश ही मानो देखो, ब्रह्म के रूप में दृष्टिपात आता है।

ब्रह्म याग

मेरे प्यारे! देखो, जब महात्मा भृगु जीने यह वाक् स्वीकार कर लिया और महात्मा भृगु ने कहा प्रभु! आप को तो ज्ञान बड़ा अद्वितीय कहा जाता है। परन्तु देखो, ब्रह्मणा ब्रहे ब्रह्म याग को कहते है, याग का नाम भी ब्रह्म है मेरे पुत्रों! देखो, उसकी सर्वांग पूजा का नाम, यह ब्रह्म पूजा कही जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, ये महात्मा भृगु ने, अपने वाक्यों को वर्णन किया कि ब्रह्मयाग किसे कहते है? ब्रह्मयाग कहते है जो ब्रह्म का चिन्तन करता है, मनन करता है और मनन करके मानो देखो, उसको क्रियात्मक बना करके, और वह उसी में रत्त हो जाता है, बेटा! वह ब्रह्मयाग कहलाया जाता है। वह ब्रह्मयाग हो रहा है ब्रह्मयाग में हम परणित हो रहे है मेरे पुत्रों! देखो , ब्रह्मयागां ब्रह्म लोकां वाचप्रव्हा वह ब्रह्मयाग कहलाता है मेरे पुत्रों! देखो , ब्रह्मयाग में क्या है? क्या मुनिवरों! देखो , ब्रह्म में अपने में अपने को ब्रह्म में जो स्वीकार करता है, वह ब्रह्मयाग में परणित हो गया है। मेरे पुत्रों! देखो, वही तो ब्रह्मवत कहलाया गया है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म नाम परमात्मा का है, जो सर्वत्र मानो व्याप्त रहता है, व्यापक रहता है, और व्याप्य के रहने से, मेरे पुत्रों! देखो , वह ब्रह्म है। वह आनन्दमयी है। आत्मा का स्रोत है, आत्म तत्त्व बेटा! उसी से बनते है। तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रो! ब्रह्म किसे कहते है? हमारे यहां महात्मा भृगु ने, इस वाक् को बेटा! स्वीकार कर लिया, और महर्षि भृगु ने मुनिवरों! वहां से वह ब्रह्मा जी से आज्ञा पा करके उन्होंने वहां से गमन किया बेटा! देखो, ब्रह्मा कौन है? ब्रह्मा उसे कहते है जो वेद के मर्म को जानता है, वेदज्ञ ज्ञान को अपने में धारण करता है, और मुनिवरों! देखो , वह उपाधि में ब्रह्मा कहलाता है। ब्रह्मा वर्णनं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो , वह ब्रह्मा सब उपाधियां कहीं गई है। हमारे यहां वशिष्ठ मुनि की एक उपाधि है, वशिष्ठ उसे

कहते है, जो ब्रह्मवेत्ता कहलाता है, और ब्रह्मनिष्ठ हो करके, मेरे पुत्रों! ब्रह्म की चर्चा करता है, वह ब्रह्मा कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो , महर्षि वशिष्ठ को ब्रह्मवेत्ता कहा जाता था, और महर्षि विश्वामित्र भी ब्रह्मवेत्ता बने परन्तु देखो , वह धनुर्याग करने से, बेटा! देखो, वह धनुर्यागी बन गएं।

मेरे प्यारे! देखो, यह उपाधियां मानी जाती है हमारे यहां पुत्रेष्टि, वृष्टि , और मुनिवरों! देखो, वाजपेयी याग अग्निष्टोम याग जो कर लेते है उसको शृंग की उपाधि प्रदान की जाती है। मेरे प्यारे! देखो , जो हमारे यहां अश्वमेघ याग और रोहिणीकृत केतु याग कन्या याग मुनिवरों! जो यह भिन्न भिन्न प्रकार के यागों में परणित है उसका नाम वैशम्पायन कहा जाता है। वह वैशम्पायन ही माना जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, जो इसी प्रकार विष्णु याग, रुद्र याग, और देखो , जो शिव याग और ब्रह्मयाग में परणित रहते है। मेरे पुत्रों! देखो , वह ब्रह्मयागी बन करके, मुनिवरों! देखो, वही हमारे यहां भृगु के नाम से वर्णित किए गएं है। यह महात्मा भृगु उपाधि, परम्परागतों से चली आ रही है। जो पुरोहित भी रहते हो और ब्रह्मवेत्ता भी रहते हो। मेरे प्यारे! देखो, वह वशिष्ठ उपाधि है, और अरूणधती उसे कहते है जो विज्ञान में पारायण हो, और विज्ञानवेत्ता और अरूणधती मण्डल में भ्रमण करने वाला हो, उसको अरूणधती कहा जाता है। वह वशिष्ठ की पत्नी कही गई है, मेरे प्यारे! देखो, वशिष्ठ मुनि महाराज कि पत्नी का नाम अरूणधती माना गया है। अरूणधती और वशिष्ठ दोनों मुझे विचार आता रहता है। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! अरूणधती एक समय अपने पति से बोली क्या हे प्रभु! यह अन्तरिक्ष में मानो देखो , एक अरूणधती मण्डल है, एक वशिष्ठ मण्डल है, यह मानो देखो, का परस्पर क्या समन्वय रहता है? मेरे प्यारे! देखो , महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले हे देवी! हे अरूणधती तुम यह प्रश्न कर रही हो उन्होंने कहा देवं ब्रह्मे, उन्होंने कहा तो मेरा विचार तो यह कहता है, क्या वशिष्ठ उसे कहा जाता है जो ब्रह्मवेत्ता हो और वशिष्ठ मण्डल में भ्रमण करने वाला हो। विज्ञान के माध्यम से, अरूणधती उसे कहते है जो मानो देखो , इस मण्डल में रमण करने वाले हो,

और वह अरूणधती कही गई है तो मुनिवरों! देखो, वह अरूणधती बोली कि प्रभु! क्या हमारा नामोकरण इसलिए अरूणधती कहा गया है, हम जो वैज्ञानिक है, उन्होंने कहा हां दिव्या! से तो मेरे प्यारे! देखो , जो ब्रह्मवेत्ता हो लोको में रमण करने वाला हो वशिष्ठ मण्डल में उसका नाम मुनिवरों! देखो , वशिष्ठ और अरूणधती कहा जाता है।

हमारे यह पति और पत्नियों का समन्वय परम्परागतों से बड़ा विचित्र माना गया है। मुझे आधुनिक काल का तो इतना प्रतीत नहीं है, परन्तु परम्परागतों के कालों का मुझे स्मरण है, क्या एक समय देखो , रोहित नाम के ऋषि थे, जो रोहित नाम के ऋषि मानो सतोयुग के काल में महाराजा प्रजापति के यहां मानो देखो, उनके राष्ट्र में, वह तपस्या करते थे तपस्या करते करते एक समय वह वेद के वाङ्मय में, जब पहुंचे, वेद का जब अध्ययन करने लगे, तो उनमें मुनिवरों! देखो, उसमें पुत्र विद्या का वर्णन आया। मानो पुत्र का वर्णन आया। पुत्र याग का जब वर्णन आने लगा, तो उन्होनें विचारा क्या मुझे पुत्र याग करना चाहिए, पुत्र मानो देखो, याग के रहस्यों को वह इतना नहीं जानते थे, केवल वेद में अध्ययन किया क्या पुत्र याग होना चाहिए। तो मानो देखो , वह इस वाक् को ले करके वहां से प्रस्थान किया भयंकर वनों से, और राजा प्रजापति के द्वार पर आए, राजा प्रजापति ने मानो उस तपस्वी को दृष्टिपात करके मानो आश्चर्य चकित हो गएं, क्या आज ऋषि का आगमन क्यों हुआ है? यह तो बहुत समय हो गएं, कई सौ वर्ष हो गएं, तपस्या करते हुए, यह तो वायु का सेवन करते है, और वेद का अध्ययन करते है, ज्ञान में सदैव रत्त रहते है, यह इनका आज कैसे आगमन हुआ राजा ने चरणों की वन्दना की और राजा ने कहा कहो ऋषिवर! किस प्रकार आगमन हुआ है आपका? उन्होंने कहा हे राजन्! मैं पुत्र याग करना है कि पुत्र याग होना चाहिए मेरे प्यारे! उन्होंने कहा भगवन! पुत्र याग कैसे होगा उन्होंने कहा आप अपनी कन्या का संस्कार कीजिए। मेरे प्यारे महाराजा प्रजापति कन्या के द्वार पर पंहुचें, कन्या से कहा हे देवी! रोहिणीकेतु ऋषि का आगमन हुआ है

और वह यह चाहते हैं कि कन्या का संस्कार मेरे द्वारा हो उन्होंने कहा प्रभु! मेरा तो बड़ा सौभाग्य है आज मैं ऋषि की शरण में रहूंगीं यह तो मेरा सौभाग्य होगा। मेरे प्यारे! देखो, वह कन्या ऋषि को समर्पित कर दी और समर्पित जब कर दी तो भयंकर वन में चले गए दोनों तपस्या करने लगे। न रोहिणी ऋषि को यह ज्ञान हुआ, कोई देवी है और न देवी को ज्ञान हुआ मानो कोई ऋषि अप्रतम् ब्रह्मा यागां ब्रह्मे मेरे प्यारे! पन्द्रह वर्ष हो गए तपस्या करते हुए तो पुनः ऋषि को स्मरण आया मानो देखो, पुत्र याग का उन्होंने कहा हे देवी! हम पुत्र याग की हमारी इच्छा है देवी ने कहा प्रभु! क्या इस तपस्वी रूप में मानो देखो, इस प्रकार के याग नही हुआ करते हैं, यागाम् तो मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा तो देवी! किस प्रकार क्या मानो द्रव्य हो और राजस्थली पवित्र हो, तो मेरे प्यारे! रोहिणी ऋषि पुनः प्रजापति के द्वार पर पंहुचें, प्रजापति ने कहा कहो भगवन! आज पुनः कैसे आगमन हुआ है उन्होंने कहा मुझे पुत्रेष्टि याग करना है मेरे लिए एक गृह होना चाहिए, द्रव्य होना चाहिए, राजा प्रजापति ने देखो , उन्हें पांच नगर प्रदान किए, और उनका मानो एक जलाशय के तट पर एक गृह का निर्माण किया। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने दोनों ने एक संतान को जन्म दिया, एक पुत्र याग किया देखो, एक पुत्र याग होते ही ऋषि ने कहा देवी! तपस्यम ब्रह्मा वेद कहता है, तपो ब्रह्मणां ब्रह्मे व्रतो देवम ब्रह्मा तपो हिरण्यम ब्रह्मे वनो वाचप प्रव्हा लोकाम देखो, ने कहा देवी! देखो , एक पुत्र का जन्म हो गया है, चलो देखो , अब तपस्या में परणित होंगें। मेरे प्यारे! वह गृह भी वह मानो नगरी भी सर्वत्र को त्याग करके पुनः बेटा! देखो, भयंकर वन में, वह कजली वनों में तपस्या करने लगे, और वह बाल्य को शिक्षा देते रहे, मेरे पुत्रों! देखो , वही बालक, मुनिवरों! देखो , महर्षि वशिष्ठ के रूप में परणित हुआ। मेरे पुत्रों! देखो , मुझे स्मरण आता रहता है, आज मैं साहित्य में जाना नहीं चाहता हूँ। मैं ऋषि मुनियों के उस गम्भीर मुद्रा में मुद्रित होना नहीं चाहता हूँ विचार क्या मुनिवरों! देखो , हमारे यहां संसार एक ऐसा विचित्रतव में जो वेद के वाङ्गमय में, हम प्रवेश करते है, तो ब्रह्मचर्य आता

है, वेद के वाक् में जब प्रवेश करते है, तो मृत्यु को आभावात्मक दृष्टिपात करता है। मेरे पुत्रों! देखो , ऐसा मुझे स्मरण आता रहा है, क्या मानो देखो , प्रजापति बड़े प्रसन्न हुए, और प्रजापति ने जब यह विचारा, कि दोनों ऋषि और ऋषि पत्नी तपस्वी बन गएं है, और वह मानो देखो, ब्रह्मचर्य में, ब्रह्मे वह ब्रह्मवेत्ता बालक को जन्म दे करके, ब्रह्म सूत्र में पिरो करके मानो देखो , वह वशिष्ठ रूप में, वह वशिष्ठ ब्रह्मचारी बन गया है।

तो मेरे पुत्रो! राजा बड़े प्रसन्नयुक्त हो करके, अपने राष्ट्र और अपनी नगरी को धन्य धन्य उच्चारण करके बेटा! बड़े प्रसन्न हुए। तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ, बेटा! ब्रह्म सूत्र क्या है? जो बेटा! देखो , ब्रह्म को एक एक कण कण में दृष्टिपात करने वाला, अपने क्रियाकलापों में जो परणित रहता है, वह महान कहलाता है, वह विचित्र कहलाता है।

तो आओ मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें कहा ले गया हूँ? विचार यह चल रहा है कि हमारे यहां नाना प्रकार की उपाधियां मानी जाती है। और वह उपाधियां मुनिवरों! देखो, बड़ी विचित्र रही है। और वह उपाधियां मुनिवरों! देखो , ब्रह्मयागी देखो, यहां भिन्न भिन्न याग कर्म करने से वे उपाधियां प्राप्त होती रही है। मेरे पुत्रों! देखो, जो विज्ञान में पारायण रहे है, वह वशिष्ठ कहलाते है, जो महान विज्ञान में, शब्द विज्ञान में पारायण रहे है वह शिकामकेतु उद्दालक मुनि रहे है। मेरे पुत्रों! देखो , भिन्न भिन्न प्रकार की, आज मैं उड़ान उड़ता हुआ, मानो एक विचार दे रहा हूँ, आज का विचार यह क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, वेद मन्त्रों को चिन्तन में लाते हुए, कि उनमें कितनी प्रकार की विद्या है, कितने प्रकार के क्रियाकलाप है, मानो देखो , उनका अध्ययन करने से, उनके ऊपर अपने जीवन को क्रियात्मक बनाने से, हमारा कल्याण होता है, ये है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने अभिप्रायः यह, क्या ब्राह्मण, ब्रह्मवेत्ता कौन है? ब्रह्मसूत्र क्या है? इसके ऊपर

बेटा! हमने कुछ विचार दिए है, समय मिलेगा मैं तो बेटा! शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाए, यह है बेटा! आज का वाक्, मुझे स्मरण है, क्या माता अरूणधती और वशिष्ठ मानो देखो, अरूणधती मण्डल में, प्रायः भ्रमण करती रहती थी, विचारों से भी, संकल्प से भी, और मुनिवरों! देखो , वह क्रियात्मक यन्त्रों के द्वारा भी, मुनिवरों! इसी प्रकार वशिष्ठ मुनि महाराज देखो , मन, कर्म और वचन तीनों ब्रह्म विद्या में पारायण रहते और वशिष्ठ मुनि महाराज बेटा! देखो , अपने यान में विद्यमान हो करके वह मानो देखो , वशिष्ठ मण्डल में भ्रमण करते रहते थे। तो मेरे प्यारे! यह उपाधि हमारे यहां सतोयुग से ले करके यह राम और राम के वंशलज आगे, उनमें भी मानो देखो, वशिष्ठ पुरोहित के रूप में वर्णित रहे। क्योंकि ब्रह्मवेत्ता ही राष्ट्र का पुरोहित बन सकता है तो बेटा! मैं राष्ट्र की चर्चा कर रहा था क्या पञ्चजाया क्या जो विवेकी पुरुष होते हैं वही राष्ट्र का निर्वाचन करें और राजा के राष्ट्र में राजा और प्रजा दोनों आनन्दयुक्त हो करके मानो देखो धर्मज्ञ और मानवीय वृत्तियों में रत्त रहें ये है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं मैं तुम्हें कल प्रगट कर सकूंगां। ओ३म् ब्रह्म गताः आभ्यां देवं मनाह वाचन्नमा रथम् आपा रेवाः। ओ३म् यश्शचां गतं मानां त्वा यम् आपाः ऋषि वायाः३म्। दिनांक : 12 12 1987।

१२ 78-92-127 उपनयन

जीते रहो! का देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं। मानो ये जो ब्रह्माण्ड त्रिवर्धा में दृष्टिपात आ रहा है ये सर्वत्र उस परमपिता परमात्मा का सन्निधान मात्र से ही क्रियाकलाप हो रहा है। जितना भी यह क्रियाकलाप हो रहा है मानो उसके मूल में, इसके गर्भ में उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन होता रहता है अथवा उसके गुणों का गुणवादन और उसकी प्रतिभा हमारे में समाहित हो जाए। हमारे वे परमपिता परमात्मा हमारे हृदयों में भी कुछ ना कुछ महानता का हमें प्रदान करते रहें। मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्रः नाना उस परा और अपरा विद्या दोनों के सम्बन्ध में प्रायः अपनी विवेचना करता रहता है और प्रत्येक मानव उसी की आभा में निहित हो जाता है। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्रः क्या कह रहा है क्योंकि वेद मन्त्र तो अपने में अनूठा माना गया है। मानो जिसका कोई भी जिसके रूपों में प्रतिपादित नहीं हो रहा है। तो इसलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का प्रायः हम वर्णन करते रहते हैं और उसकी महती को जानते रहते हैं क्योंकि उसकी महानता हमारे हृदयों में ओत-प्रोत हो रही है। तो आओ मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया।

आज का हमारा वेद मन्त्रः मानो देखो प्रथम मन्त्रों का उद्गीत गाता रहता है। ये जो मन्त्रार्थ हैं उद्गीत कहलाते हैं। हमारे यहाँ चारों वेदों की जो प्रतिभाएँ अथवा शाखाओं ग्रन्थों की प्रतिभा इन पोथियों का अपना महत्त्व मानव के हृदयों में मानो वह घटित रहा है। आज मैं विचार ये देने आया हूँ कि मैं ऋषि-मुनियों के विशेष विचार न प्रगट करता हुआ आज तुम्हें मैं उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ

नाना ऋषिवर विद्यमान हो करके अपना-अपना सन्देश अथवा अपना-अपना उद्गीत गाने के लिए उन्होंने मानव को प्रेरित किया है अथवा प्रेरणा दी हैं। तो आज मैं तुम्हें उस विद्यालय ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनि प्रायः अपने में अनुसन्धान करते रहे हैं और नाना प्रकार का अन्वेषण करने के पश्चात् वे मानो मौन प्रवृत्ति में परिवर्तित हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो मैं तुम्हें उस सभा में ले जाना चाहता हूँ जहाँ मैं कई समय से भगवान् राम की चर्चाएँ कर रहा था। भगवान् राम का जो जीवन रहा है वह बड़ा अनूठा रहा है तो मानव को त्याग और तपस्या में परिणित हो जाना चाहिए। जब मानव त्याग और तपस्या से अपने जीवन को व्यतीत करता है तो उस मानव को प्रभु की एक महानता का उसे दर्शन होता है और उन दर्शनों में ओत-प्रोत हो करके अपने मानवीयता में परिणित हो करके इस सागर से वह पार हो जाता है। महर्षि वशिष्ठ मुनि द्वारा चारों विधाताओं का उपनयन संस्कार आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज माता अरुन्धती प्रायः ब्रह्मचारियों को ओजस्वी और तेजस्वी बनाना और अपनी मानवीयता का उन्हें दर्शन कराना ये प्रायः उनका मुख्य क्रियाकलाप रहा है। चिन्तन और मनन करने का भी एक यही स्वरूप माना गया है। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल ये क्या भगवान् रामम् ब्रहे व्रतम्। मानो देखो ये चारों विधाता पिता की आज्ञा पा करके माता के आदेशानुसार मानो उन्होंने बेटा! देखो विद्या आरम्भ के पूर्व उन्होंने गृह मानो देखो यज्ञोपवीत उसे कहा जाता है वह पवित्र है , वह परम पवित्र कहलाता है। वास्तव में तो परब्रह्म परमात्मा ही मानो सर्वत्रता में विद्यमान रहते हैं। परन्तु जहाँ उनका समन्वय रहता है वहाँ ऋषि-मुनियों का एक समूह उनकी सजातीयता भी रही है। मेरे प्यारे! देखो उपनयन कहते हैं जो ऊपर मानों उसमें परिणित होने वाला है और देखो हमें उपबन्धनम् धारण करना है। मेरे पुत्रों! देखो यज्ञम् भविताम् देवाः आचार्यजनों ने जब इस प्रकार मानो उपनयन को प्रदान किया। ब्रह्मचारियों के हृदयों में

उपनयन का बड़ा महत्त्व माना गया है क्योंकि वह जो प्रेरणा है और प्रेरणा का स्रोत मानो ये सूर्य पृथ्वी देवत्याम् । मानो देखो उनका जो प्रेरणा का स्रोत है वह सूर्य, चन्द्रमा दोनों मिल करके तो उद्गीत गाते हैं। उस गीतत्त्व को हमें प्राप्त कराइए। मेरे प्यारे! देखो उपनयन संस्कार जब प्रारम्भ हुआ तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वारा इस याग का प्रारम्भ हुआ जिसे नामोकरण क्या जिसे मेरे प्यारे! देखो अमृतम् ब्रह्मा वयीस्वम् ब्रह्मा। मेरे पुत्रों! देखो जहाँ ऋषि-मुनियों का समूह विद्यमान है उसी आसन पर विद्यमान हो करके महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के विद्यालय में और मुनिवरों! देखो वहाँ नाना प्रकार की शिक्षा जहाँ प्रारम्भ की जाती है। वहाँ एक अनुष्ठानवेत्ता जागरूक हो करके यजमान अपने में देखो सार्थिक वाक्य उच्चारण करता चला जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो आचार्य के समीप चारों ब्रह्मचारी और भी नाना ब्रह्मचारी अङ्ग-सङ्ग विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो उनका उपनयन कराने का समय आया। उन्होंने देखो महर्षि रूचिति मुनि महाराज को आज्ञा दई और रूचिति मुनि से कहा कि इनका यजो संस्कार किया जाए। मेरे प्यारे! देखो वेद मन्त्रों की ध्वनियों को एकत्रित करके लाए। उन्होंने उस याग को पूर्ण कराने के लिए तत्पर हुए-यागाम् रुद्रम् भविताम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो जब उपनयन संस्कार होने लगा , अग्निहोत्र हुआ तो उन्होंने सुन्दर अपना विचार बनाते हुए यागों में परणित बह्मे व्रतम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो एक सूत्र को धारण करना है जिसमें हमारा वेद आरम्भ हो जाए। तो महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने, मेरे प्यारे! देखो उपनयन संस्कार कराया , उपनयन ब्रहे उपनयनम् ब्रहे उपवर्णनम् ब्रह्मा उपीसाकल्यम् ब्रीहि वृतम् देवाः। मेरे प्यारे! देखो जब उपनयन संस्कार का समय आया तो नाना ब्रह्मवेत्तओं ने वहाँ याग का प्रारम्भ किया। वेदज्ञ ध्वनि प्रारम्भ होने लगी परन्तु वे वेदम् ब्रह्मा अम्रतीम बृहे, वह अमृत को पान कराने वाला एक नृत कहलाता है। ऋषि-मुनियों की शङ्का का निवारण - मेरे पुत्रों! देखो वेदारम्भः इनका मानो देखो यजोपवीत संस्कार होने के पश्चात् अब नाना ऋषि-मुनियों में एक शङ्का उत्पन्न हुई क्या ये ... जो वशिष्ठ मुनि ने

याग कराया है मानो इसका तात्पर्य क्या है। तो नाना विचारवेत्ता अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो गए और विद्यमान हो करके उन्होंने अपना-अपना दृष्टिकोण मानो अपनी-अपनी वार्ता को उद्गीत रूप में गाना प्रारम्भ किया। मेरे पुत्रों! देखो जब याग का प्रारम्भ हुआ याग के सम्पन्नता को प्राप्त हुए तो उस समय देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज उपस्थित हुए और उपस्थित हो करके उन्होंने कहा मेरा सौभाग्य है, मैं यह चाहता हूँ कि महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज इस याग में विद्यमान हैं ये अपने विचारों से कोई वाक्य प्रगट किया जाए। मेरे प्यारे! देखो वह अप्रतम् ब्रह्मा राजा और राजलक्ष्मियाँ भी वहीं विद्यमान हैं। परन्तु उद्घोष हो रहा है कोई वाक्य उच्चारण करे क्योंकि वह बुद्धिमानों की, बुद्धिजीवी प्राणियों की सभा थी। परन्तु वाक्य इसलिए नहीं उच्चारण हो रहा है क्या वह अपनी कटुता का ब्रहे वासम् बहे लोकाम्। मेरे पुत्रों! देखो इस आभा को पाने के पश्चात् मानव के हृदय में एक ज्योति-सी जागरूक हो जाती है। जब कोई याग का क्रियाकलाप करता है। तो मेरे प्यारे! देखो महर्षियों ने आज्ञा ब्रहे और ऋषियों ने आज्ञा दी कि अपना-अपना मन्तव्य प्रगट करो। परन्तु नामो उच्चारण होने लगा। महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज द्वारा उपनयन की विवेचना सबसे प्रथम मानो देखो वेदाम् अमृताम् देवम् ब्रह्मलोकाः ब्रह्ममण्डम् ब्रहे वाचक प्रव्हा लोकाम् समिधम् ब्रह्मा अरुणाम् ब्रही व्रतम् वाचन्नमम् ब्रहे कृताम् लोकाः। मेरे प्यारे! देखो इस आभा को ले करके महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज उपस्थित हुए और महर्षि वैशम्पायन ने उस विद्यालय में वशिष्ठ मुनि महाराज, माता अरुन्धती और राजा दशरथ तीनों मानो राजलक्ष्मियाँ सब उसमें विद्यमान हैं , ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं। उन्होंने कहा कि आज मैं उपनयन संस्कार में , मैं सम्मिलित हुआ हूँ। परन्तु उपनयन का अभिप्राय क्या है? वह तो मैं मानो जो देखो धारण किया जाता है उसे उपनयन कहते हैं, जो जिसके गर्भ में तीन प्रकार की प्रतिभा निहित रहती हैं। वह तीन प्रतिभा कौन-सी हैं मानो तीन ऋण-जब भी मनुष्य इस संसार में आया है तो तीन प्रकार के ऋणों को ले करके आया है और वह सबसे प्रथम जो

ऋण है, ये मानो देखो ऋण है ब्रही सम्भवा वही लोकाम्। देवताओं का ऋण है और द्वितीय जो ऋण है वह मानो देखो आचार्य ऋण है और ऋषि-ऋण आचार्यजनों में परणित हो जाता है और मातृ ऋण कहलाता है। मेरे प्यारे! ये भिन्न-भिन्न प्रकार के ऋण हैं। जब भी मानव संसार में आया है वह तीन प्रकार के ऋणों को ले करके आया है। हमारे यहाँ देवताओं का ऋण , देवता किसे कहते हैं? देवता उसे कहते हैं जो हमें देता है , जो हमें प्रदान करता है उसी का नाम देवता है। देवता की मीमांसा करते हुए महर्षि वैशम्पायन ने कहा कि मेरे विचार में तो बड़ी विस्तृत व्याख्या है इसकी। देवता हमारे शरीरों में क्रियाकलाप कर रहे हैं मानो जल, अग्नि, तेज, वायु के रूप में स्पर्श और गन्ध इत्यादि के रूप में वे देवता विद्यमान हैं। मेरे प्यारे! देखो नेत्रों का देवता सूर्य कहलाता है, रसना का देवता चन्द्रमा है, मुखारबिन्द का देवता वायु है। मेरे प्यारे! गुरुत्व देखो ब्राही व्रण मनों का देवता गुरुत्व पृथ्वी कहलाती है , अमृत को प्रदान करने वाला आपोमयी ज्योति कहलाती है और जो मानो देखो संस्कार अपने अन्तःकरण में विद्यमान हैं परन्तु उनका हमें कोई प्रतीत नहीं है, मेरे पुत्रों! देखो वह देवत्व कहलाता है। वह देवता तीन प्रकार के ऋणों को ले करके सबसे प्रथम देखो यहाँ ऋणाम् ब्रह्मे देव ऋण कहलाता है। पितर ऋण किसे कहते हैं जो माता-पिता अपने में ब्रह्मचारी को सुयोग्य बनाते हैं, जो उसका निर्माण करते हैं। तो वह माता-पिताओं के ऋणी होने वाला मानो देखो वह बाल्य कहता है हे माता! तुमने मुझे ऋणी बनाया है और मेरा भी कोई ऋण रह गया है। उन्होंने कहा तुम्हारा कोई ऋण नहीं रहा। परन्तु उद्गीत पे गाया जाए कि ऋणाम् ब्रह्मा। मेरे प्यारे! ये देवताओं का ऋण कहलाता है। देवताजन् कौन हैं जो अपने शरीरों में वास कर रहे हैं। हमें देवत्व कहाँ तक ले जाता है बेटा! जब देवता के सम्बन्ध में विवेचना मानव प्रारम्भ करता है तो देवता उसे कहते हैं जो देता है। सबसे प्रथम बेटा! परमपिता परमात्मा देवता है , परमपिता परमात्मा देता है। अपने ही सन्निधान मात्र से ये प्रकृति का क्रियाकलाप हो रहा है , मानो ये उसी से क्रियाकलाप प्राप्त हो रहा है

जिन क्रियाकलापों को ले करके हम वास्तव में अग्रगणीय बनना चाहते हैं। तो वह हमारे समीप एक ऋण के रूप में विद्यमान रहता है। मैं ऋण से अवऋण होने के लिए मानो देखो पितर जो ऋण है माता ने जिस आभा से हमें धारण किया और अपने में बसा रही है , तो हमें भी अपने में उसे बसाना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो माता अनुपम है , माता देवत्व है। मेरे प्यारे! देखो कोई भी मानव समाज अपने में यदि ऊँचा बनना चाहता है तो मानव समाज का ये क्रियाकलाप रह जाता है क्या ये अपने में अनूठे-अनूठे क्रियाकलापों को क्रियाकलापों में तत्पर हो करके अपने में महान् बन जाते हैं।

मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया , मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ परिचय देने के लिए चला आया हूँ और वह परिचय क्या ? महर्षि वैशम्पायन ने उपनयन के पश्चात् उपनयन संस्कारों में मानो देखो पितर ऋण और देव ऋण को विशेष कहा है। परन्तु वही पितर हैं , वही देवत्व हैं, वही मातृ है, वह प्रकृतिवाद है। मानो सब अपने-अपने रूपों में रत्त हो रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो द्वितीय जो ऋण है वह ब्रह्म ऋण कहलाता है। मानो देखो जिसे हम देव ऋण और अप्रतम् ब्रह्मा ब्रहे सम्भवा लोकाम्। देव ऋण और पितृ ऋणों की आभा रत्त रही है वहाँ पितृ ऋणों में, पितर ऋणों में पितरों को भविताम् देवत्म् भविता देही। मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा ये ऋण हैं और तीसरा जो ऋण है वह मानो देखो ऋषि-ऋण कहलाता है। ऋषि-ऋण वह कहलाता है जो ऋषिजन अपने चरणों में विद्यमान कराते हुए ब्रह्मचारी को महान् बनाते हैं। वे पितर मानो देवता क्या आचार्य ऋण हमारे समीप इसको ऋषि-ऋण भी कहते हैं। ऋषियों का ऋण क्या है ? ऋषि-मुनियों ने तपस्याएँ की हैं और तपस्या करने के पश्चात् जो उन्होंने अपने जीवन में कुछ दिया उसको स्वीकार करना है अथवा उसके अनुसार अपने में क्रियाकलापों को करना, क्रियाकलापों में रत्त रहना है। तो ये तीन प्रकार के ऋण हैं जिन ऋणों में देखो ऋषि-ऋण विशेष कहा जाता है। ऋषि-ऋण का अभिप्राय ये है जैसे दर्शनों में विज्ञान आता है, कर्मकाण्ड आता है और ज्ञानकाण्ड आता है

उस सबको धारण करना है, सबमें अपनी-अपनी प्रतिभा का दर्शन करना है। तो मानव देखो वह ऋणों से अवऋण हो जाता है। मानव जब अपने में तीन प्रकार के ऋणों से अवऋण हो करके मानो वह अन्वेत्तियों में परणित हो जाता है तो वह अनुसन्धान वृतः मानो देखो ऋषि-ऋण को ग्रहण करना है। मेरे प्यारे! देखो तीन ऋणों की विवेचना करते हुए उन्होंने कहा सबसे प्रथम देव ऋण है , उसके पश्चात् पितर ऋण है, उसके पश्चात् मानो देखो ऋषि-ऋण कहलाता है। इसलिए उपनयन में तीन धागों मानो तीन सूत्रों से सूत्रित किया है। वे तीन सूत्रों से सूत्रित करके जैसे रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण है इनको साम्य रूप दे करके इनके ऊपर एक सुमेरु कहलाता है, वह परमपिता परमात्मा के शब्द गुथे हुए हैं। वह जो परमपिता परमात्मा से गुथा हुआ सा जगत् दृष्टिपात आता है वही तो ऋणों से अवऋणों को जानने की प्रतिभा हमारे समीप आती है। मेरे प्यारे! देखो वैशम्पायन इस वाक्य को उच्चारण करके मौन हो गए। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के उद्गार महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज को सम्बोधित किया क्या आचार्य ब्रह्मवेत्ता अपने ब्रह्मवाचना ब्रह्म रूपों में रत्त करते हुए मानो अपनी विवेचना प्रगट करें। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज सभा में उपस्थित हो गए। राष्ट्र और ऋषि-मुनियों का एक समाज मेरे पुत्रों! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले ये ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं। मेरी इच्छा ऐसी है कि इनका परिचय कराया जाए मानो ये चारों राजकुमार पुत्र और उन्होंने कुछ ऋषि पुत्रों का भी वर्णन किया और कुछ मानो उनका वर्णन किया जो देवत कोटि के प्राणी होते हैं और उनकी सन्तानें होती हैं। वह राजा और राजकुमार ऋषि वल्द ऋषि फर्द जितने भी वृत्ति हैं। मानो देखो जितने भी वृत्ति और भी सूक्ष्म वृत्ति में हैं। मेरे प्यारे! देखो ऋषि ने कहा कि मेरी इच्छा ये है क्या विद्यालय तो ऊँचे परम्परा से विद्या अपने में बड़ी महान् रही है। परन्तु एक पंक्ति में विद्यमान हो करके मेरे आश्रम में भोजन करते हैं अथवा भोज्य करते हैं। और जिस राजा के राष्ट्र में या जिन विद्यालयों में मानो देखो राजकुमार और सेवक का पुत्र एक ही पंक्ति में भोजन पान करता है आचार्य की

संरक्षणता में तो मानो देखो उस राजा का राष्ट्र कितना पवित्र होता है। मेरे प्यारे! उसमें विद्यालय कितना पवित्र कहलाता है। जहाँ मेरे पुत्रों! देखो राजा अपने राष्ट्र में देखो नाना छात्रावास अब्रही मानो देखो छात्र प्रवृत्तियों में रत्त हो करके उन्हें कुछ ना कुछ प्रदान करना है , उन्हें मानो देखो भव्य ज्ञान देना है। तो मुनिवरों! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले मेरे से पूर्व ऋषि ने, तपस्वी ने अपना मन्तव्य प्रगट किया। उन्होंने मानो देखो ये वर्णन कराया क्या मानव का जीवन एक यज्ञोमय में रहना चाहिए, पवित्रतम् बन जाए। मानो ये वाक्य बड़ा प्रिय लगा। ऋणों का स्वरूप वशिष्ठ मुनि बोले क्या हमारे यहाँ तीन प्रकार के ऋणों की विवेचना की है। सबसे प्रथम देवताओं का ऋण है द्वितीय मानो देखो मातृ-पितृ ऋण है और तृतीय जो ऋण है वह ऋषि-ऋण है। ये तीन प्रकार के ऋणों की चर्चाएँ ऋषियों ने की हैं। आज मैं उन्हीं की चर्चा करता चला जाऊँ क्या तीन प्रकार के ऋण कौन-से होते हैं? सबसे प्रथम देव ऋण, देव किसे कहते हैं जो देता है, जो देता ही रहता है उसे देवता कहते हैं। परमपिता परमात्मा को देवता , और ये जो पञ्चीकरण दृष्टिपात आ रहा है ये भी देवताजन् हैं। और ये देवताजन् मानो देखो देवत्व प्रदान कर रहे हैं मानो देखो देवताओं को अपने में प्रदान करते हुए वे देवता कहलाते हैं। मानो देखो विचार आता है कि पितर कौन कहलाते हैं , माता कौन कहलाती है? जो माता अपने ही संसार में , गृह में प्रवेश हो करके अपने उद्देश्यों को जानती है। अपने उद्देश्यों को माता पितर दोनों जानते हैं क्या हमें मानो गृह में प्रवेश तो इसलिए होना है कि सन्तान को जन्म देना है। योग चरित्रता में जहाँ अहम् ब्रही। मानो उनका जो गहना है , उनका जो आभूषण है वह स्वस्थ चरित्र होना चाहिए और मानवता होनी चाहिए। मानो देखो इस प्रकार जब वह आचार्य ब्रह्मचारीजनों तुम्हें माता की सेवा करनी है। सेवा का अर्थ क्या है? सेवा का अभिप्राय यह है क्या ये जो मानो देखो सेवा उसे कहते हैं जो वृच्चतम् ब्रह्मे वाचा सम्भवा ब्रहे देवता। वेद का मन्त्र कहता है क्या वह माता सुयोग्य है जो माता अपने पुत्रों को महान् बना दे , पिता वह सुयोग्य है जो पुत्रों

को महान् बना दे और वही पुत्र मानो उनका नामोकरण को ऊँचा ऊर्ध्वा में पहुँचा दे। वास्तव में तो विचारा जाए तो ये जो शरीर में आत्मा है ये आत्मा किसी का पुत्र है ना पुत्री है। यह आत्मा तो एक रस रहने वाली चेतना है। परन्तु देखो वह जिस परमपिता परमात्मा चित्त के मण्डल में प्रवेश हो करके मानो अपना-अपना वक्तव्य देते रहे हैं , अपनी-अपनी विवेचनाएँ करते रहे हैं। इन विवेचनाओं के सन्दर्भ में तो जाना नहीं चाहता हूँ परन्तु देखो तीन ऋणों को ले करके आता है मानव। बेटा! वह तीन ऋण हैं--सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण कहलाता है। इन तीनों ऋणों से, इन तीनों गुणों से पार होने का नाम ही मानो देखो ऋषि-ऋणों से ऊर्ध्वा को प्राप्त करना , अवऋण होना है। मेरे प्यारे! देखो इसको जान करके , इनका साकार रूप बना करके और इन्हें समाप्त कर देना चाहिए। तो मानो देखो वह हमारे यहाँ एक ऋण कहलाता है उस ऋण से अवऋण होने के लिए प्रभु का चिन्तन उसके ज्ञान और विज्ञान में रत्त रह करके हम अपने को ऊँचा बनाएँ।

देवताओं से अवऋण होने की विधि इस प्रकार जब ऋषि ने विवेचना दी मेरी इच्छा ये है क्या मेरे विद्यालय में मानो देखो ऋषि-ऋणों का , ऋषियों का कर्तव्य है कि याग करना , याग में मानो देखो सात्विकता को लाना और देखो यागाम् ब्रह्मे लोकाम् अध्ययन करना , जितना भी देखो ऋषि-मुनियों का दिया हुआ ज्ञान और विवेक है अथवा विवेचना है। जैसे हमारे यहाँ वेद मन्त्रों में एक वशिष्ठ शाखा कहलाती है। वशिष्ठ शाखा में उन्होंने वशिष्ठ मुनि महाराज ने वेद मन्त्रों के कुछ मन्त्रों को उद्गीत रूप में लाते हुए उन्होंने एक वशिष्ठ शाखा का निर्माण किया था। और वह मानो देखो ब्रह्म से सम्बन्धित थी। वह ऋणों से अवऋण होने के लिए मानो जिसमें एक क्रियाकलाप था , एक आभा थी। तो मुनिवरों! देखो वह वशिष्ठ शाखा कहलाती है जो वेद मन्त्रों में से कुछ मन्त्र ले करके उन्हें चुनौती प्रदान करते हुए उन्हें यागों के लिए ब्रह्मचारियों को आज्ञा दी गई। मेरे प्यारे! देखो मुझे ऐसा स्मरण है वशिष्ठ मुनि महाराज ने एक यज्ञ करने की पद्धति में ब्रह्मचारियों को मानो देखो कुछ साकल्य की चुनौती दी। एक वेद मन्त्र आता है , वेद मन्त्र

कहता है सम्भवम् ब्रहे काशम ब्रहे वृतम् गौ घृतम् दीवङ्गा गौ रसम् ब्रही रसम् देवाः वाचन्नयमाः। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे ब्रह्मचारियों तुम्हें देवताओं से अवऋण होना है तो प्रातःकाल तुम्हें याग करना होगा। अपनी सङ्गठित अपनी विचारधारा बना करके और तुम्हारे मानो देखो साकल्य आहुति देने वाला। मानो देखो उसमें लगभग स्वेती एक वृत्त होता है और स्वेती वृत्त की मानो देखो उसकी समिधा होनी चाहिए और उसकी समिधा हो करके तन्दुल में और तन्दुल और तन्दुलों में केशिका और केशिका की आभा में मानो देखो कन्चकेतु एक औषध कहलाती है। कन्चकेतु औषध को ले करके इनका मानो देखो घृत में , गौ घृत में इनका विकार घृत बनाया जाता है। और घृत बना करके देखो उन्होंने तन्दुल मस्तकेतु और मुनिवरों! देखो नाग नागकृतिला मुनिवरों! देखो ये सब औषधियों को एकत्रित करके मुनिवरों! देखो उन तन्दुलों को अपने में वृत्त करते हुए और देखो माता के सम्बन्ध में जितने मन्त्र आते हैं उन सबको , वेद मन्त्रों को एकत्रित किया ऋषि ने और ये कहा कि ये उच्चारण करो जिससे तुम्हारा जो ये विद्यालय है इसमें किसी प्रकार का न तो कलह होगा , न इसमें मानो दूष्य चरित्रता आएगी और इसका वायुमण्डल मानो देखो पवित्र करके प्रदूषणता को नष्ट करके देखो एक प्रदूषणता को नष्ट करने वाले परमाणु का जन्म होगा। हमारे यहाँ राम के काल में, त्रेता के काल में भी प्रायः देखो इसी साकल्य से आहुति दी गई हैं। परमाणु विद्या को भी जाना गया है परन्तु परमाणु विद्या को जानते हुए भी इन समिधाओं के द्वारा देखो याग होता रहा जिससे दूषित वायुमण्डल न रहा। राजा के राष्ट्र में भी राजा को भी यह कहा गया कि वैज्ञानिकों के विज्ञानशाला में भी इस प्रकार की आहुति रहीं। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है राजा रावण के विधाता कुम्भकरण देखो वह अपने में हिमालय में इस प्रकार के याग करते रहे हैं। और वह याग मानो दूषित वायुमण्डल समाप्त हो जाना परमाणुवाद में देखो शुद्धिकरण हो जाना, ये मानो देखो देवताओं का ऋण है। देवताओं के ऋणों से अवऋण होना है। अन्तरात्मा को ऊर्ध्वा में ले जाने

वाला याग देखो, इस प्रकार वशिष्ठ मुनि महाराज ने माता के सम्बन्ध में जितने भी मन्त्र थे वे वेदों से चुनौती की और देखो उन्होंने उन्हीं वेद मन्त्रों को ले करके ब्रह्मचारियों को याग की पद्धति में निहित कराया। मानो देखो उनसे दूषित वायुमण्डल अपने अन्तरात्मा को ऊँचा बनाना हो तो मानो देखो उसमें और भी साकल्य प्रदान किया जाता है। उसमें मानो देखो मृचिका सम्भेतु औषध होती हैं मानो सर्पकेतु कादनी एक औषध होती है जो मानो देखो पिपाद बना करके गौ दुग्ध में, गौ रसों में गर्म करके मानो उसको प्रदान किया जाता है। तो मुनिवरों! देखो अक्षमा (क्षय) रोगों तक वह अक्षमा (क्षय) के रुग्ण वाले हैं उनका हृदय भी स्वस्थ बन जाता है। तो विचार, मैं विशेष चर्चा में नहीं जाऊँगा। ये तो मैं आज विशाल वन में चला गया हूँ। परन्तु विचार केवल ये है क्या ऋषि ने कहा कि ये औषधियों का एक निर्माण करते हुए उन्होंने जितने भी माता सम्बन्धी वेद मन्त्र हैं जैसे स्तुता मया जैसे ममकी मामत्वा देवत्वम्। मानो देखो इन सब मन्त्रों को एकत्रित करके उन्होंने ब्रह्मचारियों को आज्ञा दी क्या देखो इस प्रकार के याग होने चाहिएँ और इन यागों में ये विशेषता है क्या वायुमण्डल पवित्र हो जाता है। मुनिवरों! देखो जिस समय महर्षि विश्वामित्र जब इन विचारों से आया कि मैं आज इसके पुत्रों को नष्ट करूँगा तो वह नष्ट तो बहुत कुछ करता परन्तु एक ही क्रूर बन गया। एक ही पुत्र का विनाश हुआ, एक ब्रह्मचारी का परन्तु देखो उसके पश्चात् इस वायुमण्डल में मुनिवरों! विश्वामित्र की बुद्धि का भी रूपान्तर हो गया।

देवताओं का ऋण

विचार मैं विशेष देना नहीं चाहूँगा। विचार केवल ये कि महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ये वर्णन करते हुए कहा , ये वाक्य कहा ऋषि-मुनियों से और ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! ये उपनयन संस्कार है , उपनयन में सबसे प्रथम देवताओं का ऋण आता है क्योंकि देवता हमारे शरीर में वास कर रहे हैं। हम मानो न तो अग्नि के ही बिना संसार में रह सकते हैं, न मानो आपो जल के बिना ही रह सकते हैं, न वायु के बिना रह सकते हैं, न पार्थिवता के बिना भी

नहीं रह सकते और जब यह अन्तरिक्ष न होगा तो उसके बिना भी नहीं रह सकते। तो विचार क्या मानो देखो ये देवत्व कहलाते हैं इनका शुद्धिकरण होना , इसके लिए हमारा क्रियाकलाप होना ये बहुत अनिवार्य है। हमारे यहाँ राजा देखो बुद्धिमानों को विश्वविद्यालयों में आचार्य नियुक्त करते थे। मेरे प्यारे! देखो मुझे स्मरण है महाराजा जब ये मानो अयोध्या में ऋषि विद्यालय का निर्माण हुआ था तो उस समय सब ऋषि-मुनियों को एकत्रित किया और राजा ने नाना ब्रह्मवेत्ताओं से ये कहा कि निर्वाचन होना है परन्तु कैसे गुणों वाला आचार्य होना चाहिए ? तो उन्होंने वर्णन ब्रहे वर्णन शैली सबसे प्रथम ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। जो ब्रह्म की व्याख्या करने वाला हो , मानो द्वितीय शैली उन्होंने वर्णन किया क्या जो पृथ्वी विज्ञान को जानने वाला हो , तृतीय उन्होंने वर्णन किया जो मानो अग्नि पदार्थ विद्या को जानने वाला हो , चतुर्थ उन्होंने कहा जो विज्ञान में उड़ान उड़ता हुआ उसे समेट करके अपने हृदय में दृष्टिपात करने वाला हो. ऐसा आचार्य होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो इतने गुणों वाला. महर्षि वशिष्ठ मनि महाराज को मानो देखो आचार्य नियुक्त किया जो मानो ब्रह्मे वाचः प्रवहाः। मेरे प्यारें! देखो विचार हमारे यहाँ ये आता रहता है क्या ब्रह्मवेत्ता भी हो , ब्रह्मनिष्ठ भी हो और देखो समाज में राष्ट्रवेत्ता, राष्ट्र का निर्माण भी जानने वाला हो। मेरे प्यारे! देखो ऐसा अध्ययनशील, ऐसा तपस्वी महापुरुष ही राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है।

मेरे प्यारे! देखो विद्यालयों में जिस प्रकार भी ब्रह्मचारियों का निर्माण होता है तो वह निर्माण अपनी स्थलियों में पवित्र कहलाता है। माता का ऋण मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा क्या मेरे विचार में तो ये ही आता है कि हे ब्रह्मचारियों! तुम सबसे प्रथम देव ऋण से अवऋण होना है और द्वितीय जो ऋण है वह माता का ऋण कहलाता है। माता का ऋण तो ऋषि ने , वैशम्पायन ने व्याख्या की है परन्तु मैं भी अपनी व्याख्या करता चला जाऊँ क्या माता का ऋण क्या है, मातृ ऋण जिसे कहते हैं पितर ऋण भी उसे ही कहते हैं, जिसे पितर ऋण कहते हैं। मानो पितर कहते हैं जो देता है। पितर किसे कहते हैं

जो देता रहता है। पितर उसी को कहते हैं जो अपनी सन्तान से प्रीति करता है। देने का अभिप्राय ये नहीं है क्या हम सन्तान को मानो प्रीति करते रहें और वह कुशासनवादी बन जाए। देखो, वह प्रीति नहीं होती वह शत्रुता कहलाती है। मेरे प्यारे! वह शत्रुता कहलाती है कि जो बालक को माता अपने गर्भस्थल में निर्माणित कर रही है, पिता के चरणों में आते ही पिता उसे चरणों में वन्दना और नमः का पठन-पाठन करा रहा है और पिता अपने पितर हैं और देखो ऐसे पितरों का जो ऋणी है। वह ब्रह्मचारी है, ब्रह्मचरिष्यामि जो देवता बनने के लिए तत्पर है। ब्रह्मचारी देखो योगाभ्यास करता है, मन को स्थिर करता है, प्राण को मन में सङ्गठित करा देता है। मानो देखो अपनी प्रवृत्तियों को सबको प्रभु के आश्रित करता हुआ वही ब्रह्मचारी बेटा! देखो माता-पिता के ऋणों से अवऋण हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो वह संस्कार होने के पश्चात् भी देवी का गृह में गमन होते ही मानो देखो देवी भी उसी प्रकार ब्रह्मवर्चोसी का पालन करते हुए ही अपने में संसार का उपार्जन एक आभा में नियुक्त करके मानो देखो इस समाज को ऊँचा बनाना, समाज की रचना करना भी ये माता-पिता और ब्रह्मचारियों का उद्देश्य कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा वह पितर हैं और उन पितरों और माताओं की सेवा करना। सेवा का अभिप्राय? ऋषि ने तो बड़ी ऊर्जा उड़ाने उड़ी हैं परन्तु मैं तो ऋषि देखो यही ब्रह्मचारियों को कहता हूँ क्या मानो देखो माताओं पितरों की सेवा का अभिप्राय ये है। सेवा का अभिप्राय ये नहीं है क्या शरीरावृत्त किया जाए। देखो सेवा का अभिप्राय है उनकी आज्ञा का पालन करना है। आज्ञा के पालन करने का अभिप्राय ये क्या कुवाक्यों का पालन करना नहीं है, जो यथार्थ हैं दर्शन से गुथे हुए शब्द हैं मानो देखो जो उसके अनुकूल पितरों की सेवा करता है। सेवा का अभिप्राय उसका नामोकरण ऊँचा हो जिससे उनका आयु दीर्घ हो जाए। यदि माता-पिता की आज्ञा का पालन करने वाला पुत्र, पुत्री नहीं हैं तो माता-पिता की आयु सूक्ष्म बन जाती है। यदि मानो देखो माता-

पिता बाल्य को आज्ञा, बालक को ऊर्ध्वा में नहीं शिक्षा देते और आचार्य नहीं दे पाते तो मुनिवरों! देखो वह ब्रह्मे व्रताम्। वह माता-पिता मानो बालक की आयु को सूक्ष्म बना रहे हैं। जिला कडा विचार-विनिमय बेटा! मैं विशेष आभा में , तुम्हें मैं ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह प्रगट करने के लिए आया हूँ क्या महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने अपने उपदेशों में , अपने विचारों में यह कहा है क्या ये जो उपनयन संस्कार है , ये जो सूत्र है ये मानव को आयु में परिपक्व बनाता है, आयु में निहित कर देता है। तो इसलिए देखो विचार आता है कि जब देखो प्रणालियों में पवित्रता आती है दोनों प्रतिभा से तो मानो देखो यहाँ सेवा का अभिप्राय मैंने वर्णन किया है। सेवा का अभिप्राय ये है कि माता-पिता के नामोकरण को ऊँचा बनाना है, ऊर्ध्वा में ले जाना है तो मानो वह उनकी आज्ञा का पालन करना है। उन्हें भोज्य की चिन्तन है , भोज्य की चिन्ता तो प्रभु को होती है। कर्तव्य की चिन्ता मानव को होनी चाहिए , कर्तव्यवादी बनना चाहिए। परमपिता परमात्मा ने उसे सर्वत्र सामग्री प्रदान की है।

ऋषि-ऋण

वशिष्ठ मुनि ने कहा तृतीय राष्ट्रों में तृतीय जो ऋण है वह ऋषि का ऋण है। ऋषि के ऋणों का अभिप्राय ये है क्या प्रत्येक ब्रह्मचारी को और प्रत्येक मानव को ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। ब्रह्म का निश्चित हो जाना चाहिए, आत्मान् ब्रहे। मानो देखो ये विचार लें कि प्रभु है। सबसे प्रथम ऋषि जो हैं ये निर्णय कराते हैं कि ईश्वर है। मानो देखो जब भय का एक उपकार होता है, उपहार दिया जाता है। आचार्य सबसे प्रथम यही कहता है चक्षु में शुन्धामि, प्राणम् में शुन्धामि, श्रोत्रम् में शुन्धामि सर्वत्र इन्द्रियों को प्रदान कर मुझे जिससे यह निश्चित हो जाए कि ईश्वर है , परमात्मा है। जब परमात्मा का विधान होता है तो ब्रह्मचारी का ब्रह्मवेत्ता बनना बहुत अनिवार्य हो जाता है। वह ऋषि-ऋणों से अवऋण हो जाता है। ऋषि-ऋणों से पूर्ण हो जाता है। तो मानो देखो ऋषियों के ऋणों का अभिप्राय क्या मानव का यह विचारना कि आत्मा का लोक क्या है। आत्मा का लोक शरीर है और

मुनिवरों! देखो कि यह जो शरीर है यह देवताओं की प्रतिभा अथवा धरोहर है और इसी में ब्रह्म निहित रहता है। उस ब्रह्म को जानना ही तो मेरे प्यारे! यह ऋषि-ऋण कहलाता है। क्योंकि ऋषियों ने प्रभु को जाना है। सबसे प्रथम ऋषि-मुनियों की यह देन रही है उन्होंने ये कहा है क्या ईश्वर है , परमात्मा है। परन्तु जब परमात्मा है का पठन-पाठन उन्हें हो जाता है ऋषि-ऋणों में मानो देखो उसके पश्चात् शरीर को जानना है , आत्मा को जानना है। ऋषि-मुनियों के जो उपदेश हैं मानो देखो प्राणायाम करना , साधना करना ये उसमें रत्त होना है। तो मुनिवरों! देखो ये हमें ब्रह्मवाद में ले जाता है। ये हम ऋषि-ऋणों से अवऋण हो जाते हैं। । ये हमें मानो देखो तीन सूत्रों का , तीन सूत्रों का एक मानो उपनयन कहलाता है और ये तीन में सर्वत्र जगत है बेटा! देखो आगे ब्रह्मग्रन्थि है , उस ब्रह्मग्रन्थि को ये क्या जितना भी ये जगत है सब उस ब्रह्म से पिरोया हुआ है। ब्रह्म से कटिबद्ध हो रहा है। इसलिए मुनिवरों! देखो हम तीनों ऋणों से अवऋण होने के लिए तत्पर हो जाएँ। मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ये तीन प्रकार के मुद्दे ले करके बेटा! मौन हो गए और उन्होंने कहा कि मेरी इच्छा ये है क्या हमारे विद्यालय में भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभा में रत्त रहना और ये ब्रह्मचारीजनों का उपनयन हुआ है। मेरे यहाँ आज का जो उपनयन संस्कार हुआ है उस उपनयन में लगभग में मानो देखो उनके विद्यालय में उस समय बाईस हजार विद्यालय में विद्यार्थी अध्ययन करते रहते थे। मेरे प्यारे! देखो जिसमें बड़े महापुरुष अमब्रहे! और एक पंक्ति में भोजन करना , एक-सा ही उपदेश देना और मुनिवरों! देखो उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की देखो बुद्धियों की परख होना भी। जो विद्यालय में देखो धर्नुविद्या में पारायण हैं उनके कक्ष भिन्न हैं , जो कर्मकाण्ड में भिन्न हैं उनके मानो कक्ष भिन्न हैं। मेरे प्यारे! जो पृथ्वी विज्ञान में मानो देखो ऊर्ध्वा में हैं उनके कक्ष भिन्न हैं, जो वनस्पति विज्ञान में ऊर्ध्वा में गति कर रहे हैं उनके कक्ष भिन्न हैं। मेरे प्यारे! देखो जो ब्रह्मवेत्ता बन रहा है , ब्रह्मवेत्ता की दीक्षा लेना चाहता है वह ब्रह्मवेत्ता की मानो देखो पोथी में ब्रह्म का उपदेश दिया जा

रहा है। तो विचार-विनिमय क्या जो परमाणु विद्या , सूर्य विज्ञान, पृथ्वी विज्ञान और देखो जितना चन्द्र विज्ञान है उसके कक्ष भिन्न-भिन्न निर्माणित हैं उनमें ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते हैं। तो ये है बेटा! आज का वाक् । .

आज के वाक्य उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या है कि उस परमपिता की आराधना करते हुए , देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हम अपने विद्यालयों को सजातीय बनाए। विद्यालयों में एक ही रूप होना चाहिए परन्तु यदि हम राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिए तत्पर रहते हैं , राष्ट्र को महान् बनाना है तो मानो आचार्य पवित्र हों क्योंकि आचार्यों से ही राष्ट्रवेत्ता! का निर्माण होता है, राष्ट्रीयता की प्रतिभा का स्रोत होता है। ज्ञान और विज्ञान , चरित्र का निर्माण विद्यालय में हुआ करता है। चरित्र किसे कहते हैं मेरे प्यारे! जो मानव को अपने को जो बात मानो कटु प्रतीत होती है उसको द्वितीय के लिए ' प्रतिपादन न करें उसी का नाम चरित्र कहलाता है। मेरे प्यारे! एक ही शब्द में सर्वत्र परिचय आ जाता है। मैं ये चर्चाएँ तो किसी काल में प्रगट करूँगा। आज का वाक्य तो अब ये समाप्त होने जा रहा है। आ आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि हमारे यहाँ उपनयन संस्कार के पश्चात् मानो देखो वेदारम्भ शिक्षा का प्रारम्भ होता है। ये चर्चाएँ किसी काल में प्रगट करेंगे। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् मम्भविताः आभ्याम् रथम् मनु आपा रेवम् भद्राः वाचन्नमाः। ओ३म् समिधा अग्नम् वाचन्नमाः। दिनांक 78-92-127।

१३ 29 06 1985 शाकल्य मुनि से जड़भरत

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पूर्व की भांति , कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे , ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से , जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया , हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है , जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गएं हैं और जो भी मानव उसका वरण कर लेता है, अथवा उसे वर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। इसीलिए हमें, उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना लेना चाहिए , अथवा उसे वर लेना चाहिए, क्योंकि उसको ही प्राप्त होना है, और वह जो मानो उसका जो विचित्र मार्ग है, उसी मार्ग का प्रत्येक प्राणी को पथिक बनना है।

अन्तर्हृदय में ज्ञान विज्ञान

तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बनाना चाहते हैं और हमारे हृदय की उत्कट इच्छा रहती है क्या हम उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बनाएँ और उसे अपने एक हृदय में मानो उसके ज्ञान और विज्ञान को अपने हृदय का ग्राही बनाएँ , जिससे संसार का जितना भी ज्ञान है , अथवा विज्ञान है वह सर्वत्र मानव के अन्तर्हृदय में विद्यमान रहता है , क्योंकि उसके ऊपर जो भी मानव अनुसन्धान करता है , अथवा विचारता रहता है कि हमारा जो अन्तर्हृदय है , हम हृदय ग्राही बन करके , उस अन्तर्हृदय में जो भी क्रियाकलाप हो रहा है, उस क्रियाकलाप में हम परणित हो जाएँ।

मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र , हमें कुछ कह रहा है मानो हमें कुछ प्रेरणा दे रहा है, और वह मनन कर रहा है हे मानव! तू उससे प्रेरणा ले करके , प्रेरणादायक बन करके , अपने जीवन को तू महान बना और अपने मानवीय जीवन को पवित्र बनाता हुआ , यह जो संसार है इस संसार में प्रत्येक मानव बेटा! मान और अपमान से दुखित हो रहा है। मानो मान , अपमान की तरंगों से

हमें पार होना है जो भी मानव उस परमपिता परमात्मा के आंगन में अथवा उसकी प्रतिभा में रत्त होना चाहता है। तो तुम्हें बेटा! अपने कण्ठ में एक माला को धारण करना होगा। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र, वेद के विचार ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ते रहते हैं प्रत्येक वेदमन्त्र में बेटा! परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान है, अथवा उसमें जड़वत का भी विज्ञान है और चैतन्यवत का भी , परन्तु देखो, ऐसा हमारे आचार्यों ने कहा है , अनुसन्धानवेत्ताओं के समीप बेटा! नाना प्रकार के प्रसंग, नाना प्रकार की धाराओं की उपलब्धियाँ होती रहती हैं।

वेदमन्त्र में परमात्मा का ज्ञान विज्ञान

एक समय बेटा! महर्षि शाण्डिल्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया गया , क्या महाराज! जब तुम वेदों का गान गाते हो, जब वेदों की ध्वनि में ध्वनित होते हो, तो प्रत्येक वेदमन्त्र के साथ में तुम ओ३म् का उच्चारण करते हो, मानो ओ३म् का उच्चारण तुम क्यों कर रहे हो ? तो मुनिवरों! देखो, महर्षि शाण्डिल्य मुनि महाराज ने, उन दार्शनिकों से यह कहा कि तुम यह जानते हो कि प्रत्येक वेदमन्त्र में, परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान है, तरंगवाद है मानो नाना प्रकार का अणु और परमाणु उसमें रत्त हो रहा है। प्रत्येक शब्द वेदों के मन्त्रों का अणु मानो ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ाता रहता है। चाहे आध्यात्मिक विज्ञान हो, चाहे वह भौतिक विज्ञान हो, परन्तु देखो, उसकी उड़ाने उड़ी जाती हैं , एक परमाणु है वह वायुमण्डल में मानो गमन कर रहा है वह मानो अपनी प्रतिक्रियाओं में रत्त हो रहा है, क्रीड़ा कर रहा है परन्तु मुझे बेटा! स्मरण है वैज्ञानिकों ने उस परमाणु को जब अपने में रत्त करके बेटा! उसका विभाजन किया, तो विभाजन करने से ही मानो देखो, उस एक परमाणु में बेटा! जितना यह ब्रह्माण्ड है , मानो उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड का मानो उसमें दिग्दर्शन हो रहा था।

ज्ञान विज्ञान का सूत्र ओ३म्

तो मेरे प्यारे! एक एक परमाणु में मानो देखो , यह संसार ब्रह्माण्ड का

चित्रण होता हो, चित्रं रथप्रव्हा वाचन्नमं ब्रह्मे मानो देखो, जहाँ चित्रण हो रहा हो, मानो उस ब्रह्माण्ड का कोई सूत्र अवश्य है। तो मेरे पुत्रों! जब सूत्र की वार्त्ता आई, तो मानो शाण्डिल्य ऋषि महाराज ने कहा हे ऋषियों! मेरे विचार में यह आता है, क्या ओ३म् उच्चारण इसलिए मानव को करना चाहिए। परन्तु जितना भी ज्ञान और विज्ञान प्रत्येक वेद मन्त्रों के गर्भ में है , परन्तु उसका कोई सूत्र है और वह यदि कोई सूत्र है तो बेटा! वह ओ३म् हो सकता है। ओ३म् ही मानो प्रत्येक वेदमन्त्र का सूत्र बना हुआ है। प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! मनके की भांति है और वह मनका मानो ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है। जब ओ३म् रूपी सूत्र में प्रत्येक वेद मन्त्रों का ज्ञान और विज्ञान पिरोया जाता है , तो मेरे पुत्रों! देखो, महापुरुषों का एक माला के सदृश्य, वह माला बन जाती है और उस माला को मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनि अपने कण्ठ में धारण करते हैं , अथवा वह जो माला है , वह बड़ी विचित्र बन करके रहती है।

तो मेरे प्यारे! इसीलिए प्रत्येक मानव को ओ३म् रूपी सूत्र में अपने को पिरो देना चाहिए। ओ३म् रूपी सूत्र में जो मानव अपने को पिरो देता है , बेटा! वह धन्य हो जाता है , वह अपने में महान और पवित्र बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जिस मानव की यह धारा यह माला छिन्न भिन्न हो जाती है वह मानो मुनिवरों! देखो, मोक्ष के मार्ग को भी मानो देखो, अपने में हतोहित हो करके इस संसार में पुनरूक्तियों को प्राप्त होता रहता है। तो मुनिवरों! बहुत पुरातन काल में तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा था , जैसे मानो सन्निधान मात्र से ही मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक परमाणु का स्वभाव जागरूक हो जाता है परन्तु देखो , इसी प्रकार हमारे यहाँ परमपिता परमात्मा का सन्निधान मात्र से ही , मेरे प्यारे! देखो , यह सृष्टि का कर्म प्रारम्भ हो जाता है। नाना लोक लोकान्तर एक दूसरे में सहायक बनने लगते हैं। एक दूसरे में ओत प्रोत की चर्चाएं मैंने तुम्हें कई काल में प्रगट की है। आज मैं करना नहीं चाहता हूँ। विचार यह , मानो देखो, प्रत्येक अणु और परमाणु अपने में सहायक बना हुआ है। जैसे मानो देखो , मधुमक्खी होती है

उसमें मानो देखो, एक जो मक्खी है वह शासन करती है। उसको मानो देखो , धिराज मक्खी कहते हैं मानो देखो, उसी के अन्तर्गत सर्वत्र मानो देखो, मक्खियाँ अपना क्रियाकलाप करती रहती हैं। नाना प्रकार का अमृत ला करके इकठी हो कर एक स्थली पर मानो स्थिर कर देती हैं। परन्तु जब तक वह शासनकर्त्ता रहता है, तभी तक मुनिवरों! देखो , मधुमक्खियाँ मधु को एकत्रित करती हैं और जब उसका शासन छिन्न भिन्न हो जाता है, मेरे प्यारे! वह अमृत को एकत्र करना समाप्त कर देती है, इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, इकट्ठी हो, हमारे मानव शरीर में भी यह प्रतिक्रिया हो रही है वही मानो ओ३म् रूपी सूत्र मानो जब किसी का सूत्र ही नहीं रहेगा , तो बेटा! यह जगत की रचना कैसे दृष्टिपात आएगी , इसीलिए हमारे यहाँ सूत्र होना चाहिए। उस सूत्र की विवेचना करते हुए , हमारे आचार्यों ने अपनी बहुत ऊर्ध्वा में , अपने विचार व्यक्त किए हैं और उन्होंने कहा है, शाण्डिल्य मुनि का तो यह कथन है कि हमारा जो , मानव का यह शरीर है इसका जो अणु और परमाणु है मानो वह भी इसी सूत्र में पिरोया हुआ है और वह सूत्र यदि हो सकता है तो ओ३म् ही सूत्र है। वह मानो देखो, प्राणों का रक्षक है, प्राणों को देने वाला है , ऊर्ध्वा में देने वाला है मानो वही तो प्राण स्वरूप कहलाता है।

समाधि में पूर्वजन्मों के संस्कारों का बोध

तो आओ मेरे प्यारे! हम उस ओ३म् रूपी सूत्र को अपना मानो प्रिय बनाते हुए, अपने जीवन को महान और पवित्र बनाते चले जाएं। तो मेरे प्यारे! आओ , मुझे इसी वाक् को ले करके एक वार्त्ता मुझे स्मरण आ रही है मानो जितना भागा मुनिवरों! देखो, सूत्र यह सूत्र मानो माला से भिन्न हो गया है जो भी सूत्र माला से भिन्न हो गया , मेरे प्यारे! वह कितना महान मानो उसको कितना कठिन, अपनी पुनः तपस्या में परणित होता हुआ है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है एक समय महर्षि शाकल्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे , महर्षि शाकल्य मुनि महाराज प्राणों का निरोध करते थे, प्राण को अपान में मानो अपान

को व्यान में, व्यान को समान में, समान को उदान में परणित करते हुए , मेरे प्यारे! देखो, अन्तःकरण में, हमारे जन्म जन्मांतरों के संस्कारों का उद्बुद्ध होना मानो वह उन संस्कारों का क्षय कर रहे थे , क्षय करते करते बेटा! उन्होंने बहुत सा तप किया, उन्होंने कई समय बेटा! वायु का सेवन किया , अपने मानवीय जीवन में, यह विचारा उन्होंने क्या मुझे अनुष्ठान के द्वारा ही मानो जो चित्त में भिन्न भिन्न मानो संस्कार विद्यमान हैं , जो जन्म जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान हैं, एक समय बेटा! उन्होंने उन पांचों प्राणों का जो निरोध किया और उसमें नाग और देवदत्त की जब दोनों की पुट लगाई बेटा! देखो , मानो उसमें मन को पिरोया गया। जब मन को पिरोया गया , तो ऐसा बेटा! उनके जीवन काल की ऐसी आभा प्राप्त होती है , उन्हें बेटा! देखो, सात जन्मों के क्या , उन्हें करोड़ां जन्मों के संस्कार उनके समीप आ गए और करोड़ों जन्मों के संस्कार बेटा! वह समाधि में प्रायः दृष्टिपात करने लगे। तो मुनिवरों! देखो, वे उनका क्षय करने लगे वे उनका क्षय कैसे करने लगे?

महर्षि शाकल्य मुनि के अनुष्ठान

मेरे प्यारे! नाना प्रकार के प्राणायाम करने से जैसे शीतली प्राणायाम , उन्होंने कई काल में चर्चाएं की है, मानो देखो, खेंचरी मुद्राएं, सोमक मुद्राएं मेरे पुत्रों! नाना प्रकार की मुद्राओं में, मैं तुम्हें कई काल में ले गया हूँ। आज मुझे इतना समय मानो मैं उन मुद्राओं में नहीं ले जाऊँगा , विचार क्या मानो देखो, उन मुद्राओं के द्वारा, मुनिवरों! देखो, महर्षि शाकल्य मुनि महाराज ने बेटा! बारह बारह वर्ष का अनुष्ठान किया और उस अनुष्ठान में वायु का सेवन करते थे , एक अनुष्ठान किया तो उन्होंने पत्र और पुष्पों का सेवन किया मानो एक अनुष्ठान किया तो मुनिवरों! देखो , उन्होंने अग्नि परमाणुओं को अपने में सिंचन करना प्रारम्भ किया मेरे प्यारे! उनका अनुष्ठान इतना विचित्र होता था , मुझे स्मरण है प्रातः कालीन बेटा! वह मानो देखो, प्रातःकालीन वह अपने वनों में से वह अपने आश्रम के अंग संग मानो साकल्य एकचित्र करते थे और वह साकल्य एकत्रित

करके उनके द्वारा बेटा! अग्नि को प्रदीप्त करना और अग्नि को प्रदीप्त करके उस साकल्य का हूत देते थे , जब साकल्य की आहुति देने लगे तो मुनिवरों! देखो , वह नित्यप्रति उनका यह क्रियाकलाप चलता रहता। मेरे प्यारे! देखो , जिस राष्ट्र में, वह गमन करते थे , जिस राष्ट्र में उनका वास रहता था। मेरे प्यारे! देखो , सोमवृत्तिका नामक राजा थे, उन्होंने ऋषि के लिए बेटा! गऊ के घृत का मानो एकत्रित किया और उन्होंने मानो गऊ का घृत देना प्रारम्भ किया। परन्तु ऋषि यह जानते थे कि यह गो घृत में कैसा दे रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो , सोमवृत्तिका जो राजा थे, वह मानो देखो, अपना स्वयं कृषि उद्गम करते थे, और मानो उसमें वह गऊओं का पालन करते थे , और उसमें जो घृत बेटा! देखो , वह ऋषि को यज्ञ के लिए दिया करते थे। ऐसा बेटा! मुझे स्मरण आ रहा है क्या मानो देखो , जब वह घृत देते थे उनके द्वारा , वह याग करते थे। जब वह याग करने लगे , और स्वतः बेटा! उसको पान नहीं करते थे , वह खेचरी मुद्रा से सोमवृत्तिका मुद्रा से मानो बेटा! वह वायु का सेवन करते थे। वायु का सेवन करना , अग्निहोत्र के द्वारा, गो घृत के द्वारा , साकल्य स्वतः एकत्रित करके वनों से बेटा! उसके द्वारा वह याग कर्म करते थे। याग इसलिए करते थे कि वायुमण्डल पवित्र बन जाए , मेरे अंग संग मानो कोई भी अशुद्धियाँ न रहे, जिसे मैं संस्कारों को मानो समाधि में ये परमाणु मेरे सहायक बन सके।

तो मेरे प्यारे! ऐसा जीवन है , क्या शाकल्य मुनि महाराज एक समय बेटा! याग कर रहे थे। तो मुनिवरों! देखो , कहीं से भ्रमण करते हुए , मुनिवरों! देखो, सोमवृत्तिका सोमवाचक मुनि महाराज बेटा! कहीं से भ्रमण करते करते शाकल्य मुनि के समीप आ गए। तो शाकल्य मुनि महाराज , प्रातः कालीन याग कर रहे थे, वे भी याग में आ करके बेटा! अपना साकल्य देने लगे , जब देने लगे, तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने में , अपने प्राण का निरोध करके यह दृष्टिपात किया, मन के द्वारा, क्या यह जो मानो आहुति दे रहा है यह तो अशुद्ध दे रहा है। इसका मन मानो शान्त नहीं है , इसके मन में अशान्ति है , तो मुनिवरों!

उन्होंने कहा हे ऋषिवर! आप कृपा करें , आप मेरे इस याग में आहुति ने दे। उन्होंने कहा भगवन! क्यों ? उन्होंने कहा तुम्हारा मन अशान्त है तुम्हारे मन में अशान्ति है मेरे वायुमण्डल को मानो यह आहुति तेरी अशान्त कर गई। मानो देखो, वायुमण्डल ऐसे पवित्र नहीं बनेगा। तो मेरे प्यारे! देखो , जब ऋषि ने यह वाक् श्रवण किया तो ऋषि चरणों में ओत प्रोत हो गएं और उन्होंने कहा हे भगवन! आप तो बड़े विचित्र और महान हैं। भगवन! मानो आपने मेरे अन्तर्हृदय की शान्ति को जान लिया , उन्होंने कहा यह कारण क्या है ? क्या महाराज! मैं अपने विद्यालय में से आ रहा हूँ। एक ब्रह्मचारी को मानो मैंने शारीरिक दण्ड दिया और वह दण्ड मैंने कठोर दे दिया है। दण्ड के होने से मेरे हृदय में यह कल्पना हो रही है, क्या यह तुमने पाप कर्म किया है अनायास मानो ब्रह्मचारी को दण्डित किया है और इसका तुझे पाप अवश्य प्राप्त होगा , अब मानो देखो, पाप, शुभ कर्मों का, अशुभ कर्मों का, दोनों का संग्राम हो रहा है मेरे अन्तःकरण में। तो मुनिवरों! देखो, जब उन्होंने यह श्रवण किया तो मुनिवरों! देखो, वह शान्त हो गये, आहुति देनी उन्होंने शान्त कर दी , शाकल्य मुनि ने इस प्रकार का याग किया।

तो मुनिवरों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है , क्या महर्षि शाकल्य मुनि महाराज ने, उनके साहित्य से यह प्रतीत हुआ, क्या मुनिवरों! उन्होंने इस प्रकार के बारह बारह वर्ष के लगभग देखो, नौ अनुष्ठान किए और नौ अनुष्ठान करके बेटा! उनके मानो अन्तर्हृदय में जो मानो चित्त के मण्डल में नाना जन्मों के संस्कार थे , अशुद्ध, उनका क्षय हो गया। मेरे प्यारे! जब उनका समापन हो गया तो वह मोक्ष के निकट चले गये , जब वह मोक्ष के निकट चले गएं तो मुनिवरों! वह अपने प्रभु से वार्त्ता प्रगट करते थे। मानो उन्होंने उस साकल्य को समाप्त कर दिया याग के, परन्तु वे परमपिता परमात्मा से अपनी भावनाओं को साकल्य बना करके बेटा! चेतना में परणित करने लगे , जब वह परणित करने लगे तो मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्म वाचं ब्रहे एक समय बेटा! वह ओ३म् रूपी जो उन्होंने माला

धारणा की थी प्राणायाम की , और ओ३म् रूपी सूत्र में मानो वह प्राण और मन दोनों को पिरोया दिया था , उस माला को उन्होंने धारण कर लिया था। बेटा! उस माला का कुछ क्षय हो गया और क्षय क्या हुआ।

शाकल्य मुनि को हिरणी पुत्र से मोह

मुनिवरों! देखो, एक समय वाणी सम्भूति एक दैत्य था मानो देखो, दैत्य उसे कहते हैं जो मांस भक्षण करने वाला हो मानो देखो , वह कही भ्रमण करते हुए , एक हिरणी के मानो पीछे वह गमन कर रहे थे , हिरणी अग्रणीय है और मानो देखो, दैत्य उसके पश्चात में वह और मानो देखो , उन्होंने अपने सूत्र का जैसे ही आक्रमण किया, वह हिरणी पूर्ण रूपेण मानो गर्भ से थी , वह गर्भवती मानो गर्भाशय में उनके शिशु था। मेरे प्यारे! जैसे उन्होंने अस्त्र शस्त्र का प्रहार किया, तो मुनिवरों! देखो, हिरणी के गर्भ से उसका बाल्य मानो पृथक हो गया और हिरणी मानो देखो, आगे भ्रमण करती, तीव्र गति से भयभीत में मानो अग्रणीय बन गई , तो ऐसा बेटा! उन्होंने देखो, ब्रहे वह भी आगे चला गया, परन्तु शाकल्य मुनि के आश्रम में जहां वे परमपिता परमात्मा से वार्त्ता कर रहे थे , ओ३म् रूपी सूत्र में अपने को पिरो दिया था, बेटा! मानो देखो, उस माला का क्षय हुआ, हिरणी का बाल्य मानो जरायु में विद्यमान है , कोई कोई श्वास की गतियाँ चल रही थी तो मेरे प्यारे! देखो, वह जैसे श्वास ब्रह्म ब्रव्हा तो ऋषि ने बेटा! मानो देखो , उसके अंगं ब्रह्मा उसके मुख्याबिन्दु में कुछ जल का प्रोक्ष किया तो बेटा! उसके श्वासों की गति प्रबल बन गई। तो मानो वह मूल में यह कि वह जीवित हो गया और जीवित हो करके ऋषि ने बेटा! अपने कण्ठ में उसको कण्ठित कर लिया , अपने आंगन में देखो, आलिंगन करते हुए मानो उसके पुलकित हुए बेटा! वे परमपिता परमात्मा से जो एक माला बनी हुई थी , उस माला का क्षय होने लगा , तो मेरे प्यारे! देखो, उस बाल्य से मोह हो गया। परमात्मा से वार्त्ता जो मोक्ष के निकट ऋषि जा रहा था , मानो देखो, वह वार्त्ता ऋषि की समाप्त हो गई। मेरे प्यारे! ममता में परणित हो गया, जब ममता में परणित हो गया, तो मानो देखो, हिरणी

के बाल्य से वार्त्ता करते थे। मोह ममता में मानो परणित हो गये , ऐसा बेटा! स्मरण है, क्या मुनिवरों! देखो , वह पूर्व बाल्य को भोज्य करा करके , उसके पश्चात ऋषि भोज करता।

शाकल्य मुनि का पुनर्जन्म

तो उससे बेटा! इतना मोह बन गया। मानो पूर्ण आयु होने पर मेरे प्यारे! हिरणी के बाल्य का मृत्यु हो गया। जब मृत्यु हो गया उसके शरीर का , विच्छेद हो गया तो ऋषि को बेटा! ममता आ गई मानो उसके मोह में , उसे शान्ति नहीं प्राप्त होती थी। तो मेरे प्यारे! कुछ समय के पश्चात उसी ममता में अन्तरात्मा ने बेटा! उस शरीर को त्याग दिया , जब शरीर को त्याग दिया , त्यागने के पश्चात् बेटा! देखो, अमृहा अम्बिका नामक मानो देखो, राजा के यहाँ अम्बिका राजा उस समय बड़े महान मानो देखो , सतोगुणी थे। अम्बिका राजा के यहाँ मानो उनकी पत्नी का नाम शकुन्तकेतु था और शकुन्तकेतु के गर्भ में बेटा! इस आत्मा का प्रवेश हो गया। मानो देखो , आत्मा का जब प्रवेश हो गया , तो माता के गर्भ में बेटा! जब आत्मा मानो शिशु के रूप में प्रवेश कर गया, तो मेरे प्यारे! देखो, वह बाल्य मानो शाकल्य मुनि का आत्मा संस्कारों से विहीन था। परमात्मा के निकट से आए थे, परन्तु उसे ज्ञान था, माता के गर्भाशय का, तो मेरे प्यारे! वहां रूधिर की नदियाँ गमन कर रही है। मानो देखो, एक अपार कष्ट हुआ, माता जब तीक्ष्ण पदार्थों को पान करती, वह भी अपार कष्ट हो रहा था। तो वह आत्मा , माता के गर्भ स्थल में कह रहा था। प्रभु से हे भगवन! मैंने मानो मोह किया है। प्रभु! मैं आगे कभी मोह नहीं करूंगा, मानो इस नरक से मुझे दूरी कर। मैं नरक के गृह में आ गया हूँ यह गृह मुझे नहीं चाहिए , प्रभु! मैंने प्रयास तो किया परन्तु मेरी माला का एक मानो मनका विच्छेद हो गया , हे प्रभु! मानो देखो , मुझे यहाँ से दूरी कर।

तो मेरे प्यारे! ऐसा माम ब्रह्मे प्रार्थना करता रहा क्योंकि आत्मा तो सदैव प्रार्थना तो अपने प्रभु की करता ही रहता है। मेरे पुत्रों! ऐसा कुछ समय के

पश्चात्, नौ माह के पश्चात् माता के गर्भ से , वह आत्मा पृथक् हो गया। मानो देखो, शरीर को धारण करके जब वह आत्मा आ गया तो बेटा! देखो , राजा के यहाँ मानो अम्बिका राजा के यहाँ , एक आनन्द के स्रोत बहने लगे , मानो एक आनन्द आने लगा। मेरे प्यारे! देखो , वेद के पठन पाठन करने वाले , कहीं याग हो रहा है, कहीं साम गान गाया जा रहा है , कहीं मानो यजुर्षि वेदों का पठन पाठन हो रहा है। मेरे प्यारे! अपने में देखो , ब्राह्मण जन क्या ऋषि मुनि राष्ट्र में रहने वाले मानो देखो , पुत्र के आनन्द वत की आभा में परिणत करा रहे थे। राजा अपने में प्रसन्न हो रहा था। सर्वत्र राष्ट्र में बेटा! एक आनन्दमयी ज्योति जागरूक हो गई। राजा के यहाँ राजकुमार हुआ है मानो इस प्रकार की स्वर ध्वनियाँ होने लगी।

जड़भरत

तो मेरे प्यारे! देखो , कुछ समय के पश्चात् वह बालक प्रबल हुआ , परन्तु वह माता के गर्भ में जो उसने संकल्प किया था , क्या मैं मोह नहीं करूंगा, मेरे प्यारे! देखो, उस बालक को किसी से मोह नहीं था , उस बाल्य का नाम ही बेटा! उन्होंने जड़ भरत के रूप में परिणत किया। वही बालक जड़ भरत के रूप में मानो देखो, अपनी आभा में नियुक्त रहा। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा ने राष्ट्र के जो मानो देखो, वैद्यराज थे उन वैद्यराजो को चिकित्सा के लिए, चिकित्सालय में प्रवेश कराया कि इसका मस्तिष्क अशुद्ध है मानो भ्रमित है। तो मेरे प्यारे! देखो , उसकी चिकित्सा भी कुछ न हो सकी, कुछ समय के पश्चात उन्होंने कहा इसको वाटिका में नियुक्त कर दो। मेरे प्यारे! देखो , वह वाटिका में रहते , वाटिका में मानो उसके यहाँ जो पुष्प है मानो वृक्ष है उसको नष्ट करने लगा। जब उन्हें नष्ट करने लगा तो उन्होंने देखो, वाटिका के रक्षकों ने जा करके राजा से कहा प्रभु! यह जो राजकुमार है, उसने अमुक वाटिका का विनाश कर दिया है। अमुक वृक्ष का विनाश कर दिया है तो मेरे राजा ने कहा अच्छा। तो राजा उस वाटिका में पहुंचे, तो राजा ने कहा कि मेरे राष्ट्र से तुम दूरी हो जाओ। तुम मेरे राष्ट्र में अन्न

ग्रहण नहीं करना। मेरे प्यारे! देखो , जड़ भरत ने राजा के वाक् को पान करके मानो देखो, उस वाटिका को त्याग करके , भयंकर वन में चले गएं और वन में बेटा! पत्र पुष्पों को पान करना और मानो देखो, वह अपने में शान्त जैसे जड़वत रहता है। इस प्रकार वह आत्मा में लीन रहते थे। आत्मा में ज्ञान और विज्ञान से युक्त रहते थे।

तो मेरे प्यारे! देखो , महाराजा मनुवंश में बेटा! देखो , नहूष नाम के राजा नहूषां भवति प्रव्हा नहूष मुनि बेटा! देखो , अपने ज्येष्ठ पुत्र को राष्ट्र दे करके , क्योंकि उस समय यह नियमावली बेटा! बनी हुई थी। क्या , राजा अपने में ब्रव्हे वाचप्रव्हा लोकाम् मानो देखो, अपने राष्ट्र को जेठे पुत्र को दे करके वह सन्यास को प्राप्त हो जाते थे। प्रभु का चिन्तन करने के लिए तत्पर हो जाते थे। इसलिए बेटा! प्रजा मानो देखो , राजाओं की आज्ञानुसार, वह भी मानो देखो , ज्ञान और विज्ञान और परमात्मा के चिन्तन में सदैव तत्पर रहते थे।

तो मेरे प्यारे! ऐसा स्मरण है क्या मानो नहूष नाम के राज बेटा! भ्रमण करते चार कहारां की वृत्तियों में बेटा! देखो , वह पालिका में नियुक्त हो करके , जब वह गमन कर रहे थे बेटा! देखो , एक कहार एक सेवक उनका मानो देखो , रूग्ण हो गया। रूग्ण हो जाने से मंगलं ब्रव्हे वाचम , मेरे प्यारे! देखो, उनके जो और सेवक थे उन्होंने कहीं जड़ भरत विद्यमान थे उसे ला करके , पालिका में नियुक्त कर दिया वह जो पालिका को ले करके गमन करने लगे , तो बेटा! वह जानता नहीं था कैसे हम इसको मानो अपने में सुसज्ज्ति कर सकते हैं। तो कहीं राजा नीची स्थली पर हो जाए, कहीं ऊर्ध्वा में हो जाए। राजा को क्रोध आ गया। बेटा! जब क्रोध आया तो उन्होंने पालिका को शान्त करके , जड़ भरत को मानो अपने डण्डों से उन्हें आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। जब जड़ भरत को दण्डित किया। दण्डित करने के पश्चात् जैसे राजा शान्त हुए , ऐसे ही मानो देखो, जड़ भरत अपने में मग्न होने लगा। वह प्रभु की महिमा को दृष्टिपात करके , हर्ष ध्वनि करने लगा और प्रभु से कह रहा था प्रभु! तू कितना महान है। तुम कैसे

महान महिमावादी हो, हे प्रभु! मैंने तो पूर्व जन्म में मोह किया था प्रभु और जो ये क्रोध भी करते है मोह भी करते है , काम भी है प्रभु! जब यह आपके द्वार जाएंगे तो प्रभु! इनकी आप क्या दशा करोगे। हे प्रभु! मैंने तो केवल मोह ही मोह किया है।

पञ्च शत्रुओं का प्रभाव

मेरे प्यारे! जब वह हर्ष ध्वनि और प्रभु से यह याचना कर रहे थे तो महाराजा नहूष ने कहा भगवन! आप कौन है? उन्होंने कहा मुझे मानो जड़ भरत कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, राजा उनके चरणों में ओत प्रोत हो गया। उन्होंने कहा प्रभु! मैंने तो यह निश्चय किया था क्या मैं जड़ भरत को मानो अपना गुरू बना करके मानो उससे शिक्षा ले करके , मैं तपस्या करूंगा। हे प्रभु! मैंने आपको दण्डित किया है , मैं कितना महापापी बन गया हूँ। भगवन! मेरे प्यारे! , जब उन्होंने यह वाक् कहा तो महात्मा जड़ भरत तो हर्ष ध्वनि कर ही रहे थे और प्रभु से यह याचना कर ही रहे थे प्रभु! मैंने तो मोह ही किया है परन्तु यह जो कामी, क्रोधी, लोभी, मोही जब तेरे राष्ट्र में पहुचेंगे तो तुम उनकी क्या देशा करोगे?

मोह का प्रभाव

तो मेरे प्यारे! देखो , वह महाराजा जड़ भरत और देखो , उनके समीप पालिका भी शान्त, सेवक भी राष्ट्र को चले गएं और उनके चरणों की वह वन्दना करते रहे। मेरे प्यारे! देखो , महराजा नहूष को उन्होंने उपदेश दिया मंगलं ब्रव्हे व्रत्ताम् जब मुनिवरों! एक वर्ष हो गया सेवा करते हुए , उसके पश्चात महाराजा जड़ भरत ने कहा हे राजन! तुम्हारी राष्ट्रीय प्रवृत्ति समाप्त हुई अथवा नहीं, उन्होंने कहा प्रभु! मेरी प्रवृत्ति तो शान्त हो गई। मेरे प्यारे! देखो , महाराजा नहूष को उन्होंने कहा तो तुम मानो उस माला को धारण करो, जिस माला को मैंने किसी काल में धारण किया था और मैं मोक्ष के भीतर चला गया था। मेरी माला का एक मनका क्षय हो गया मानो देखो , मुझे मोह हो गया और मोह होने से क्या

दशा बन गई है। राजा ने मुझे अपार कष्ट दिया। माता के गर्भ में जो अपार कष्ट हुआ, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। मुझे जो अपार आघात हुआ , मैं वर्णन करने में असमर्थ हूँ।

स्वानित ऋषि

तो मेरे प्यारे! देखो , जब उन्होंने यह कहा तो मुनिवरों! देखो , महाराजा नहूष दोनों ने ओत प्रोत हो करके कहा , प्रभु! वास्तव में इतना ही पापाचारी हूँ कि अब भगवन! राष्ट्रीय विचार मेरे समाप्त हो गएं है। अब मानो उस माला को मुझे श्रवण कराई। तो मुनिवरों! देखो , उन्होंने पुनः से , मेरे पुत्रों! देखो , वह साकल्य पुनः से एकत्रित करने लगे, साकल्य को एकत्रित करके मुनिवरों! देखो, उन्होंने महाराजा नहुष और महाराजा जड़ भरत परन्तु देखो, उन्होंने राजा इन्द्र के यहाँ से उन्होंने एक कामधेनु को प्राप्त किया तो उन्होंने गऊ को प्राप्त करके मानो देखो, साकल्य लाते, महाराजा नहूष ने बारह वर्ष का इस प्रकार अनुष्ठान किया। क्या, उस कामधेनु के दुग्ध और मानो उसके घृत के द्वारा उन्होंने पुनः से मुनिवरों! देखो, वह याग प्रारम्भ किया। उसी याग का पुनः से अनुष्ठान किया। तो मेरे प्यारे! देखो , महाराजा नहूष और जड़ भरत बारह वर्ष तक दोनों प्रातः कालीन याग करते और याग कर्म करके मानो देखो , पत्र और पुष्पों का पान करना, बारह बारह वर्षों का उन्होंने बेटा! अपना अनुष्ठान किया , प्राणायाम के द्वारा मानो देखो, किसी किसी काल में वायु का सेवन करते थे। मेरे प्यारे! ऐसा कुछ मानो प्राप्त हुआ है उनके जीवन से , उन्होंने अपने जीवन को बेटा! कितना क्रियात्मक स्वानत बनाया। मेरे प्यारे! देखो , पुनः मानो जड़ भरत ने मानो देखो , ब्रव्हे वाचम् मानो देखो , नहुष राजा ने , उनको नहुष राजा नहीं कहते थे उनका नामो परिवर्तन हुआ। उनको मेरे प्यारे! देखो , ऋषि कहते थे तो उन्होंने अपना नाम स्वानित ऋषि नियुक्त किया। मेरे प्यारे! वह बारह वर्षों तक पत्रों का अनुष्ठान, बारह वर्ष तक तो मानो वायु के सेवन का अनुष्ठान , मेरे प्यारे! देखो, वह पुनः से वह पुनः जन्म ब्रह्मा कृते मेरे प्यारे! देखो , पुनः से वह परमात्मा से

वार्त्ता करने लगे और मेरे प्यारे! वह मोक्ष को प्राप्त, पुनः से हुए।

मन्त्रोंच्चारण से पूर्व ओ३म्

तो विचार विनिमय क्या है, मेरे प्यारे! हमारे यहाँ वेद का जो मन्त्र है वेद के मन्त्र के प्रारम्भ में हम, मेरे प्यारे! देखो, ओ३म् का उच्चारण करते है। ओ३म् का इसलिए क्या, प्रत्येक वेद मन्त्रों में जो ज्ञान और विज्ञान है , वह मनका बन करके, ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया जाता है और ओ३म् रूपी सूत्र मानो देखो , मनके जब उसमें पिरोएं जाते हैं , तो बेटा! वह माला बन जाती है। उस माला को योगी धारण कर लेता है अपने कण्ठ में, आलंगन करने लगता है बेटा! वही मोक्ष को प्राप्त होने लगता है।

वेद का ऋषि

तो आओ मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, आज मैं कोई विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार यह देने के लिए आया हूँ , बेटा! वेद के ऋषि ने, अपने में कितना तप किया , बेटा! वेद का ऋषि कौन होता है , जो वेद के मन्त्रों को , ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो करके बेटा! कण्ठ में धारण करके और अपने मानो देखो, पाप पुण्य कर्मों का जो चित्त मण्डल में जो संस्कार है , उन्हीं को मानो देखो, इन संस्कारों का क्षय कर देता है अथवा तपस्या के द्वारा , प्राणायाम के द्वारा जो उनका क्षय कर देता है वह उस माला को धारण करके बेटा! मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ , हमारे यहाँ यागों का बड़ा विशिष्ठ वर्णन आया है। विशिष्ठ वर्णन क्यों , ब्रह्मे क्योंकि यागाम् जितना भी संसार का सुकर्म है , चाहे वह मानो श्रोत्रीय हो , चाहे वह नेत्रीय हो , चाहे मानो देखो, घ्राण के द्वारा मन्द सुगन्ध वाला हो, चाहे वाणी के द्वारा ध्वनित होने वाला हो, चाहे प्रीति में आने वाला त्वचा में हो , बेटा! देखो, इस प्रकार का वह जो याग कर्म है, इस प्रकार का जो सुकर्म है इस सर्वत्र का नाम याग कहलाता

है। परन्तु इनमें एक विशेषता यह मानी गई , जैसे तपा अग्नि में , मेरे प्यारे! अनुष्ठान की अग्नि में, जन्म जन्मांतरों के शुद्ध और अशुद्ध संस्कारों का क्षय होता है मानो देखो , इसी प्रकार जैसे बाह्य जगत में यह अग्नि प्रदीप्त हो करके , साकल्य का सूक्ष्म रूप बना करके देखो , पवित्र बना देती है। यज्ञमान की वाणी को पवित्र बना देती है। मेरे प्यारे! देखा , ब्रह्मा अपने में ब्रह्मित होता हुआ , वेद की ध्वनियाँ करता रहता है मानो देखो, उद्गातां उद्गीत गाते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, वह जो मेरा प्रिय याग है, वह अपने में याज्ञिक रहता है। अपने में महान बन करके, पवित्रतव रहता है। तो मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा न करता हुआ, केवल क्या है, क्या, ओ३म् रूपी सूत्र में हम प्रत्येक याग की तरंगों को पिरोना चाहते हैं। प्रत्येक तरंग बेटा! उस ओ३म् रूपी सूत्र में जब पिरोई जाती है , तो मेरे प्यारे! देखो, यह माला बन करके उस माला को योगी धारण कर लेता है , वह बेटा! महान बन जाता है।

माला में ब्रह्माण्ड

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल परिचय देने के लिए आता हूँ और वह परिचय क्या है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मानो उसी ओ३म् रूपी सूत्र में मानो ज्ञान और विज्ञान को पिरो करके बेटा! अपने जीवन को महान बनाएँ और मुनिवरों! देखो, उसी में हम रत्त रहने वाले बनें , यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा क्या , कि हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते चले जाएँ , हमारे यहाँ वेदों का जो उद्घोष गाने वाले है। उद्गीत गाने वाले हैं मानो वह कई प्रकार से गाया जाता है जैसे मुनिवरों! देखो, माला पाठ है जैसे माला बन जाती है उसी प्रकार शब्दों की एक दूसरी आभा में पिरोना है जैसे मुनिवरों! देखो , परमपिता परमात्मा ने जब इस सृष्टि का सृजन किया, सृष्टि का मानो देखो, निर्माण किया। तो एक परमाणु में परमाणु निहित है , एक परमाणु परमाणु में पिरोया हुआ है। मेरे प्यारे! वह

परमाणुओं की माला बन रही है , इसी प्रकार लोक लोकान्तरों की माला बन जाती है। नाना पृथ्वियाँ मानो नाना पृथ्वियाँ की माला बना करके , सूर्य अपने कण्ठ में धारण किए हुए हैं। नाना सूर्यों की माला बना करके मानो देखो , बृहस्पति अपने कण्ठ में धारण कर रहा है , नाना बृहस्पतियों की माला बना करके, मेरे प्यारे! देखो, वह आरुणि वृत्तिका मानो देखो, अपने में धारण कर रहा है। देखो, अप्रतंम ब्रह्म वाचो देवाः नाना अवृत्तियों की माला बना करके मानो ध्रुव अपने में धारण कर रहा है। नाना ध्रुवों की माला बना करके मेरे प्यारे! देखो , मूल अपने में धारण किए हुए है , और नाना मूल की माला बना करके बेटा! स्वाति अपने में धारण किए हुए है। नाना मानो देखो , ध्रुव अब्रहा अप्रतं देखो , इनकी माला बना करके देखो , अचंग मण्डल अपने में पिरोएं हुए रहता है। मेरे प्यारे! देखो, मानो अचंग मण्डलों की माला बना करके, मेरे प्यारे! देखो, वाचिक मण्डल अपने में धारण कर रहा है नाना वाचिक मण्डलों की माला बना करके , मेरे प्यारे! देखो, गन्धर्व अपने में धारण कर रहा है। नाना गन्धर्वों की माला बना करके उसे इन्द्र अपने में धारण कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो , इतनी माला बन करके उसकी माला एक दूसरे में पिरोई जाती है तो बेटा! एक आकाश गंगा में परणित हो जाती है।

मेरे प्यारे! देखो , वे जो नाना आकाशगंगाएं बनी हुई हैं , मुनिवरों! देखो, लगभग ऐसा मुझे कुछ प्रतीत हुआ है यहाँ देखो , लघुमस्तिष्क में जब ऋषि मुनि पहुँचे तो ऐसा प्रतीत हुआ क्या मानो देखो , ऐसी ऐसी मानो पिचासी लाख मालाओं को धारण करने वाली आकाश गंगा बनी और वह आकाश गंगा, उसको मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ नाना रूपों में देखो , उनको सौर मण्डलों के रूपों में प्रतीत मानो प्रतिपादित किया गया है और ऐसी ऐसी पिचासी लाख आकाश गंगाओं को धारण करके, मुनिवरों! देखो, एक मानो एक अवन्तिका बनी है और एक मानो देखो , पिचासी लाख अवन्तिकाओं की मुनिवरों! देखो , एक निहारिका बन गई। तो विचार विनिमय क्या , बेटा! यह प्रभु का अनन्तमयी जगत है , बेटा!

इसी प्रकार मानो यह माला ओ३म् रूपी सूत्र में बेटा! यह लोक लोकान्तरों की माला बन गई। मेरे प्यारे! देखो , जितना भी लोक लोकान्तरों का ज्ञान और विज्ञान है। मुनिवरों! यह ज्ञान विज्ञान जितनी भी धाराओं में रत्त हो रहा है, तरंगों में रत्त हो रहा है। यह परमपिता परमात्मा की महती है, उसी से वर्णित किया है। मानो ऐसा कुछ प्रतीत होता है, ऐसा कुछ अनुभव होता है जब समाधि के द्वारा , इस ब्रह्माण्ड को योगी जन निहारते रहते हैं , तो मेरे प्यारे! देखो , ऐसा प्रतीत होता है क्या, यह जो नाना प्रकार की माला बन करके एक दूसरे में ओत प्रोत हो रही है यह ज्ञान, विज्ञान, लोकों का ज्ञान विज्ञान, प्रत्येक वेद मन्त्रों में निहित रहता है वह मानो देखो, वह जो ओ३म् ब्रह्मा मानो देखो, वह एक एक वेदमन्त्र में ब्रह्माण्ड की प्रतिभा है वह ओ३म् रूपी धागे में पिराई हुई है और उस धागे में ही बेटा! देखो, यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है।

तो मेरे प्यारे! आज का मैं विशेष चर्चा न देता हुआ , आज का वाक् यह क्या कह रहा है प्रत्येक मानव को बेटा! उस माला को धारण करना चाहिए और जिसकी माला बेटा! विच्छेद हो जाती है, शाकल्य मुनि की भांति बेटा! वह मोह में परिणत हो करके ... शेष अनुप्लब्ध। 29 06 1985।

१४ 01 11 1985 महर्षि याज्ञवल्क्य और शतपथ

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पूर्व की भांति , कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे , आज का हमारा वेदमन्त्र अपने में अपनेपन का गान गा रहा है, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही , उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणागन गाया जाता है, क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत, अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, क्योंकि वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है, क्योंकि हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है जिस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। इसी प्रकार, प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, अथवा उसका वर्णन कर रहा है, जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में मानो वसुन्धरा की प्रतिभा का प्रायः वर्णन आता है। आज का हमारा वेदमन्त्र, उस माता वसुन्धरा की याचना कर रहा था, जो ममतव को धारण करने वाली है, जिसे वेद वसुन्धरा के नामों से वर्णन कर रहा है, वेद का मन्त्र कहता है, वसुन्धरं ब्रह्म वाचो देवाः हे माता! तू वसुन्धरा है। वसुन्धरा का अभिप्रायः यह है, कि जिसके गर्भस्थल में प्रायः जो हमें धारण कर रही है, अथवा हमें बसा रही है, उस माता का नाम वसुन्धरा कहा जाता है। परन्तु आज का वेदमन्त्र यह कह रहा है कि हे माता! तेरे ही गर्भस्थल में हम वास करते हैं अथवा बस रहे हैं। मुनिवरों! देखो, सबसे प्रथम ममतव को धारण करने वाली जननी माता कहलाती है। वेद का मन्त्र यह कहता है, वसुन्धरं ब्रह्म वाचप्रव्हा लोकाः मानो देखो , वह वसुन्धरा कहलाती है। हमारे यहां वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचना आती रहती है। वसुन्धरा नाम उस परमपिता परमात्मा का है, जो इस संसार को अपने में बसा रहा है, अथवा अपने में धारण कर रहा है, उस प्रभु का नाम वसुन्धरा

कहलाता है। परन्तु द्वितीय रुपों में वसुन्धरा नाम उस माता को कहा जाता है जिस माता के गर्भस्थल में बेटा! हम जैसे पुत्र पनपते रहते हैं, अथवा जिनका निर्माण होता है मेरे प्यारे! देखो , मेरी भोली माता को कोई ज्ञान नही हैं परन्तु जब हम माता के गर्भस्थल में विद्यमान रहते हैं। तो माता के गर्भस्थल में बेटा! एक बिन्दु हैं, उस बिन्दु में भी एक शिशु है, और मुनिवरों! जैसे शिशु माता के गर्भस्थल में प्रवेश हुआ तो मेरे प्यारे! देखो , सर्वत्र देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, उसमें चन्द्रमा अमृत देने लगता है, सूर्य प्रकाश देने लगता है, अग्नि उष्णता देने लगती है, वायु प्राण देने लगता है, और अन्तरिक्ष उसे अवकाश देता है। परन्तु पृथ्वी उसे गुरूतव देती है। मेरे प्रभु! तू कितना निर्माणवेत्ता है, मेरी भोली माता नही जानती कि कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है? उसे शिशु का भी भान नही होता।

परन्तु जब हम वैदिक साहित्य में प्रवेश करते हैं, तो मेरे प्यारे! वह जो वसुन्धरा नाम की जो माता है उसके ही गर्भस्थल में जो बसा रही है, हमारे इस मानव शरीर का जब निर्माणवेत्ता, वह प्रभु निर्माण करता है तो हमारे शरीर में बेटा! बहतर करोड़, बहतर लाख, दस हजार दौ सौ दो नाड़ियों का निर्माण कर देता है। हे प्रभु! तू कितना विज्ञानमयी है, प्रत्येक मानव परम्परागतों से विज्ञान के वांगमय में, प्रवेश करता रहा है, नाना प्रकार की विज्ञान की धाराओं में रत्त रहा है, जब प्रभु के विज्ञान के ऊपर बेटा! हम अन्वेषण करते हैं, अथवा विचार विनिमय करते हैं, तो अनन्तमयी दृष्टिपात होने लगता है। मेरे प्यारे! वह कितना विज्ञानवेत्ता है, मानव का शरीर निर्माणित किया, तो बेटा! देखो , कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है, मेरे प्यारे! प्रभु ने बेटा! मनस्तव बुद्धितव चितं भविते लोकां मानो देखो, बुद्धि के चार प्रकार कहे जाते हैं। बुद्धि भी एक प्रकार की नही कहलाती, बेटा! बुद्धि हमारे यहां बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती है। परन्तु देखो, एक संसार को दृष्टा के रूप में दृष्टिपात करती रहती है, एक मानो उसको साक्षात्कार लाती है, और साक्षात्कार जान करके उसमे मौन हो जाती है,

और मौन हो करके वह बेटा! उसके पश्चात, वह प्रज्ञावी में प्रवेश हो करके बेटा! प्रभु का दिग्दर्शन कर लेती है।

तो मेरे प्यारे! देखो , ये चार प्रकार की, एक अनुपम मुनिवरों! देखो , बुद्धि की प्रतिभा कहलाती है। जिसके ऊपर हमारे यहां परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण होता रहा है अथवा विचार विनिमय होता रहा है। हे नमं ब्रह्म वाचा हे माता! तू वसुन्धरा है। परन्तु जब हम जैसे शिशु, माता के गर्भस्थल से पृथक हो जाते हैं, अपने स्थूलता को धारण करके, मेरे प्यारे! देखो , कहां इस पृथ्वी माता की गोद में आ जाते हैं, ये नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ, मानव को प्रदान करती रहती है। हे माता! वसुन्धरा पृथ्वी, तेरे गर्भस्थल में क्या वस्तु नही हैं, मानो वैज्ञानिक जब, तेरे गर्भ में प्रवेश करते हैं, तो नाना प्रकार का विज्ञान, इसमें दृष्टिपात आने लगता है। जब मानो देखो , कृषक, तेरे गर्भस्थल में जब बीज की स्थापना कर देते हैं, तो तू नाना प्रकार के खाद्यान्न पदार्थों को प्रदान कर देती हैं। हे माता! तू कैसी भोली है कैसी विचित्र है, मानो तेरे गर्भ में जब वैज्ञानिक प्रवेश करता है। तो नाना प्रकार की अग्नि के विचार, तेरे समीप दृष्टिपात आने लगते हैं। वही अग्नि का भण्डार मानो विचित्र बन करके, नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण, विज्ञानवेत्ता करता है। मैंने तुम्हें कई काल में मेरे पुत्रों! प्रगट करते हुए कहा था, क्या संसार में जब मानव देखो , अपने जीवन में कुछ चिन्तन करने लगता है मनन करने लगता है तो बेटा! नाना वस्तुओं की उपलब्धियां हो जाती हैं।

जैसा पुरातन काल की अतीत के काल की चर्चा करते हुए बेटा! हम तुम्हें वशिष्ठ और राम की चर्चा कर रहे थे। बहुत समय हो गया है, राम और कृष्ण की चर्चाएं मानो देखो , हमारे इस साहित्यकारों ने, बड़े उल्लेखनीय, अपनी लेखनियां बद्ध की हैं। परन्तु मैं राम और वशिष्ठ मुनि की चर्चा कर रहा हूँ, मैं उस आभा में जाना नही चाहता हूँ, परन्तु देखो , जब भगवान राम मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि आश्रम में, बेटा! तपों में, साधना में परणित होते रहते थे, मानो प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर अनुशासन करने का नाम, तपों में कहलाया

जाता है। जैसे बेटा! देखो, एक समय, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज से सोमकेतु ऋषि महाराज ने यह कहा था कि महाराज! तप क्या है? प्रत्येक मानव तपस्या में परणित होना चाहता है, मेरी प्यारी माता यह चाहती है कि मैं तपस्वी बन जाऊं, परन्तु देखो, तपों में क्या है, तप किसे कहते हैं? तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने यह कहा तपो ब्रह्मा तपं हिरण्यं ब्रह्मा तपं रुद्र विष्णु सुतं तपाः वेद का आचार्य कहता है कि विष्णु बनना ही तप है, मानो देखो , ब्रह्माग्नि ही बनना तप है, तो मेरे प्यारे! देखो, वह विष्णु ब्रह्माग्नि कैसे बनेंगें? मेरे पुत्रों! देखो, नम्र और अपने अन्तर्हृदय में और उस परमपिता परमात्मा को अपनी इन्द्रियों को समेट करके, इसका साकल्य बनाना है, अथवा उस साकल्य को बना करके, आहुति देना है, हमें देवताओं को अग्नि व्रतं ब्रह्म वाचाः मेरे प्यारे! देखो , ज्ञानाग्नि को, अपना करके इस संसार सागर से पार होना है। मेरे पुत्रों! देखो , जब ऋषि ने यह वाक् प्रगट किया, कि तपो ब्रह्म वाचाः तपो मेरे प्यारे! आज के हमारे वेद के पठन पाठन में, जहां माता वसुन्धरा का वर्णन, जहां मानो देखो , और भी नाना प्रकार की विज्ञान की आभाओं में हम तुम्हें ले जा रहे थे, वहां मेरे पुत्रों! देखो , आज मैं तुम्हें अभ्रं ब्रह्म वाहा सम्भूति लोकाम् मेरे प्यारे! मैं यह चर्चा कर रहा था तुम्हें, क्या मुनिवरों! देखो, सम्भूति ब्रह्म लोकाम् मेरे प्यारे! तपं हृदयानि गच्छतम मुनिवरों! देखो, तप की विवेचना आ रही थी, तप मानव को करना चाहिए, मैं तप के ऊपर तुम्हें कई काल में अपने विचार व्यक्त किए हैं।

आज का विचार तपों में क्या कह रहा है? महर्षि बेटा! मैं ऋषियों के आसन पर तुम्हें ले जाना चाहता हूँ, नाना प्रकार की वार्त्ताएं आती रहती हैं, परन्तु देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहां, जब बेटा! देखो , वह न्यौदा में, मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे, और वेद कह रहा था तपं ब्रह्मा तपं सूर्याणि गच्छतं तपं वायु गच्छतं अग्नं ब्रह्म लोकां तपाः मेरे प्यारे! देखो, तप की विवेचना कि यह संसार सर्वत्र एक तपों में माना गया है। प्रत्येक मानव को तप करना है। मेरे प्यारे! देखो, तप उसे कहते हैं, जो मनसा वाचा कर्मणा मानो देखो , अपने में

किसी भी प्रकार की अपने में हीनता में न हो मेरे प्यारे! देखो , वह तपों में कहलाता है। मुझे स्मरण आता रहता है नाना वार्त्ताएं, तपों की बहुत सी चर्चाएं स्मरण आती रहती हैं, परन्तु देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! तप की विवेचना कर रहे थे, क्या यह पृथ्वी तपती रहती है, तो यह वसुन्धरा बन करके नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को हमें प्रदान करती है। मेरे प्यारी माता मानो बाल्य ब्रह्मवर्चोसि से तपा करती है, तो मुनिवरों! देखो, वह ममतामयी बन जाती है, आचार्य विद्यालय में ब्रह्मचारी तप रहा है, परन्तु वह कुछ समय के पश्चात वही आचार्य बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक मानव तपायमान रहता है, ग्रीष्म ऋतु में, यह पृथ्वी तपा करती है, तो नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देती है। मेरे प्यारे! देखो , चन्द्रमा क्या, सूर्य तपायमान रहता है, द्यौ से प्रकाश लेता है, और यह सूर्य तपता रहता है बेटा! प्रातःकाल से सांयकाल तक तपता रहता है।

तो यह तपायमान कहलाता है तो मेरे प्यारे! तपं तपप्रमाणं ब्रह्म लोकां तपं हृदयानि गच्छतं देवाः मेरे प्यारे! इसलिए प्रत्येक मानव को तपना चाहिए। तो मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज इसी चिन्तन में लग रहे थे कि मुझे तप करना है, यह तो संसार का प्रत्येक परमाणु तप रहा है प्रत्येक प्राणी तप रहा है, मेरे पुत्रों! तपने के पश्चात ये पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देती है, सृष्टि का वृतं रूप बन करके एक माधुर्यतम में परणित हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज इस प्रकार की विवेचना करने लगे, तो मानो प्रातःकालीन हो गया, प्रातःकाल होते ही, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने विद्यालय में मानो देखो, अग्निहोत्र किया, और वेदों में मन्त्रों का उद्गीत गाया जब उद्गीत गाने लगे तो ब्रह्मचारी जन, अंग संग विद्यमान थे, ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! आज तो बड़े ही आश्चर्य से वेदों का अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने कहा हाँ ब्रह्मचारी! ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु ने कहा प्रभु! ऐसा क्यों? उन्होंने कहा तपं ब्रह्मे वाचाः मेरे द्वारा तप की विवेचना आती रहती है, परन्तु मेरी इच्छा यह है ब्रह्मचारियों! क्या

मैं तप करने चला जाऊं। तो ब्रह्मचारी बोले क्या, हे प्रभु! यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। जिस विद्यालय में तपे हुए आचार्य हों, मानो वह विद्यालय तो सौभाग्यशाली होता है, जिस गृह में माता पिता तपस्वी होते हैं, वह राजा गृह सौभाग्यशाली होता है, जिस राजा के राष्ट्र में राजा तपा हुआ होता है वह राष्ट्र सौभाग्यशाली होता है। हे प्रभु! आप तप करने जाईएं, क्योंकि यह संसार तपों में हैं, ब्रह्मचारियों ने हर्ष ध्वनि की, और यह कहा कि प्रभु! यह हमारा बड़ा सौभाग्य है, हम मानो देखो , अपने में सौभाग्यशाली हैं। मेरे पुत्रों! जब उन्होंने यह वाक् कहा सम्भवा लोकां हिरण्यं रथा वाचन्नमां ब्रह्मे लोकां वृत्ति देवाः तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! ब्रह्मचारियों की आज्ञा पाते ही, विद्यालय को त्याग दिया, और वह भयंकर वन में पंहुचे तो वन में जाने के पश्चात, एक वेदमन्त्र उन्हें स्मरण आ गया, और वह वेदमन्त्र कह रहा था तपं महा ब्रह्मे वाचाः तपं प्राणं ब्रह्मे तपो वृत्ति देवाः वेद का मन्त्र यह कह रहा था क्या यह मन और प्राण का दोनों का समन्वय हो करके ही मन और प्राण को दोनों को प्रभावित करता है। इसीलिए कोई भी तुम्हारा सम्बन्धी हो, ओर तुम तप करने के लिए जा रहे हो तो उन्हें ज्ञान के द्वारा सन्तुष्ट करो।

परन्तु यह वाक् याज्ञवल्क्य मुनि के विचार में आया, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की दो पत्नियां थी, एक का नाम मैत्रयी था और एक का नाम कात्यानी था। मेरे पुत्रों! देखो , वह, यह विचारने लगे कि दोनों को सन्तुष्ट करना है। तप मेरा जब ही मानो देखो , फलीभूत होगा, जब मैं तप करूंगा। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वहां से भ्रमण किया, और अपने मानो गृह में पंहुचे, सबसे प्रथम वह कात्यानी के स्थान में पहुचे, कात्यानी आश्चर्य से बोली, प्रभु! आज बिना सूचना के तुम्हारे आने का कारण क्या है? याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि देवी! मैं आज तप करने जा रहा हूँ। मैं आज न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन कर रहा था, परन्तु उसमें तपोंमयी हृदय की चर्चा आ रही थी। तो मेरा अन्तरात्मा यह स्वीकार किया है कि मुझे तप करना चाहिए कि देवी तुम्हारी क्या इच्छा है?

मैत्रयी ने कहा प्रभु! वाक् तो यथार्थ है यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है, आप यदि तप करने जाएंगें, तो हम हमारा बड़ा सौभाग्य है, क्योंकि जिस पत्नी का पति तपस्वी हो, सदाचारी हो, योगेश्वर हो वह उस पत्नी का तो प्रभु! बड़ा सौभाग्य है। हमारा बड़ा सौभाग्य है, आप तप करने जाईएं, याज्ञवल्क्य मुनि बड़े आश्चर्य में बोले, तो देवी! मैं तप करने जा रहा हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम भगवन! हम यहां तप करेंगें, आप जाईएं तप करने।

मेरे प्यारे! देखो, अब वह कात्यायनी को त्याग करके कात्यायनी के समीप पंहुचे मैत्रये ने उनका स्वागत किया मैत्रये के ऋषि बोले सम्भो ब्रह्म वाचाः कात्यानी ने कहा प्रभु! मानो मैत्रये ने कहा हे प्रभु! सम्भवा लोकां तपे ब्रहे व्रतां आप कहां से आए हैं, और बिना सूचना के गृह में आने का कारण क्या है? उन्होंने कहा मैं देवी! मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरे पुत्रों! मैत्रयी ने कहा प्रभु! आप तप करने जाईएं। मेरा क्या बनेगा? मैं आपकी पत्नी हूँ, मानो देखो , मेरा क्या बनेगा संसार में, यदि आप तप करने जाएंगें, याज्ञवल्क्य बोले देवी! तुम बड़ेआशचर्य में उच्चारण कर रही हो, जिस समय मानो देखो, मेरा तुम्हारा शास्त्रार्थ हुआ था ओर देखो, ब्रह्मज्ञान में तुम्हारी इतनी ऊर्ध्वा गति और आज तुम देखो , अज्ञानता की वार्त्ता प्रगट कर रही हो। ये बड़ा आश्चर्य है उन्होंने कहा नही भगवन! उन्होंने कहा तो देवी सुनो श्रवण करो। मानो तुम्हें यह प्रतीत है कि जो भी संसार में कर्म करता है, वह अपने लिए किया करता है। मानो देखो, आज मैं तप करूंगा तो अपने तुम तपस्वी बनोगी अपने लिए तुम्हारा तप तुम्हारे आँगन में तुम्हारे क्रियाकलापों में रत्त होता रहेगा। देवी! संसार में तुम्हें प्रतीत है, कि पत्नी जो होती है, वह पति तक सीमित रहती है, यदि वह अपने लिए पत्नी बन जाएं, तो उसका कल्याण हो जाएं। पति पत्नी तक सीमित रहता है। परन्तु यदि वह अपने लिए पति बन जाएं, तो उसका जीवन मानो सफल बन जाता है। जैसे माता का पुत्र है, वह माता तक सीमित है, माता के लिए पुत्र है, यदि वह अपने लिए पुत्र बन जाएं, तो उसका कल्याण हो जाएं पुत्री पिता तक सीमित रहती है,

पिता तक मानो वह पुत्री है, यदि वह अपने लिए पुत्री बन जाएं, कि मैं पुत्री हूँ, मैं प्रभु की पुत्री हूँ, यह संसार प्रभु का रचाया हुआ है, तो मानो उसका कल्याण हो जाएं। हे देवी! तुम्हें प्रतीत है, क्या यह जो यह वित्त है, यह आत्म तृप्ति के लिए ही तो है। यदि वित्त आत्म तृप्ति के लिए यह आत्मा की तृप्ति क्या की जाएं। तो वित्त संज्ञा समाप्त हो जाएगी। मेरे प्यारे! देखो , जब मैत्रयी, क्योंकि मैत्रयी बुद्धिमान थी मैत्रयी ने विचारा सम्भवा लोकां हिरण्यं रथाः मानो देखो, यह तो मेरे पूज्य पति देव तो महान बुद्धिमान हैं। उन्होंने कहा भगवन! मेरा अज्ञान तो नष्ट हो गया है। मैं इस मधु विद्या को विशेष नही चाहती हूँ। मैंने यह जान लिया, कि जो भी मनुष्य कर्म करता है, वह अपनी आत्म तृप्ति के लिए करता है, परन्तु यदि वह साधना में परणित हो गया है, साधना में रत्त हो गया है तो वह भी मानो उसके आत्मा की तृप्ति के लिए है।

मेरे प्यारे! मैत्रयी ने कहा प्रभु! आप तप करने जाईएं, मेरे प्यारे! देखो , याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे देवी! मैं तुम्हारा दोनों का बंटवारा किए देता हूँ, तुम्हारी क्या इच्छा है इस द्रव्य के लिए? उन्होने कहा प्रभु! आप तप करने जाईएं, हम स्वतः अपनी तपस्या और अपने माधुर्यतम में रहेंगें, और हम स्वतः अपने द्रव्य का बंटवारा करेंगें ने करें आप तप करने जाईएं।

याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने दोनों पत्नियों को सन्तुष्ट करके ब्रह्म ज्ञान में परणित करके बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज भयंकर वनों में जा पहुचे, विचारने लगे ब्रह्मो रूपां मनस्तं यह जो मन है, इसको कैसे पवित्र बनाया जाएं? तपां ब्रह्मे लोकां तपनोति सम्भवा विचारने लगे कि यह तप क्या है? मेरे प्यारे! तप के सम्बन्ध में विचारने लगा ऋषि, एकान्त स्थली पर विद्यमान हैं, छह माह हो गएं, पत्र पुष्पों का सेवन कर रहा है, और यह विचार रहा है, कि यह तप है क्या? मेरे प्यारे! बहुत समय के पश्चात यह विचार में आया अन्नादां भूतं ब्रह्म वाचो देवाः ये वेद की आख्यिका स्मरण आई, और यह विचारा कि अन्न को पवित्र बनाना है, मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने मानो देखो, मन को पवित्र बनाने का नाम,

तप कहा गया है। और मन की उत्पति मूल कारण को उन्होंने विचारा कि यह मनो ब्रह्मा यह मन कैसे पवित्र होगा? इन्द्रियों को कैसे पवित्र बनाया जाएं, तो मन पवित्र होगा मन की उत्पति क्या है, तो इसमें अध्ययन करते करते यह विचारा कि अन्नादां भूतप्रव्हा यह जो अन्न है, इसी से मन की प्रतिभा का जन्म होता है। तो मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, मुनिवरों! देखो, उस अन्न को एकत्रित करना प्रारम्भ किया, जिस अन्न पर किसी का अधिकार नही था, जिसको हमारे यहां शिलस्थ अन्न कहा जाता है मेरे पुत्रों! देखो , उस अन्न को उन्होंने एकत्रित किया, उस अन्न को पान करते थे और तपस्या इन्द्रों भवाः इन्द्रियों का निग्रह करने लगे, मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, बारह वर्ष तक उन्होंने इस प्रकार का तप किया। बारह वर्ष हो गएं। उसी शिलस्थ अन्न को पान करना मन को पवित्र बनाना, इन्द्रियों को सुयोग्य बनाना, और उसका साकल्य बना करके, याग करना। मानो बेटा! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, बेटा! इस प्रकार के बारह वर्ष के तप के मध्यकालीन, एक पोथी निर्माण किया था, जिस पोथी का नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। उस पोथी का निर्माण किया, तो निर्माणवेत्ता ने प्रारम्भ के ही सूत्रों में मानो देखो , उस पोथी को सूत्रित किया तीन ही शब्द है बेटा! मानो शतपथ ब्राह्मण में मानो तीन ही शब्द हैं ब्राह्मण, ब्रह्मचारी और ब्रह्मवर्चोसि मेरे प्यारे! देखो, यह तीन शब्द और तीनों शब्दों की व्याख्या करने वाली बेटा! सर्वत्र सृष्टि ही व्याख्या से ओत प्रोत है, जैसे बेटा! मानो ये तीन मनके हैं और एक ही सूत्र के मनके हैं जैसे माला में भिन्न भिन्न प्रकार के मनके होते हैं ऐसे ही माला के तीन मनके कहलाते हैं पुत्रों!, और वह मनके कैसे ब्राह्मण, ब्रह्मचारी और ब्रह्मवर्चोसि। मानो यह तीन शब्द है जो तीन मनके कहलाते हैं, और एक दूसरे के पूरक है, एक दूसरे में आभायित हो रहे हैं, मानो देखो, वेद का ऋषि कहता है, ब्राह्मण कौन है? प्रश्न किया गया वेद की आख्यिका कहती है, ब्रह्मो वाचा प्रव्हा कौनो अस्ति यह ब्राह्मण कौन है? वह कहता है ऋषि ने व्याख्या की क्या ब्रह्म जानाति ब्राह्मणा जो ब्रह्म को जानता है,

वही ब्राह्मण है, जो प्रकृति के इस संसार के कण कण में उस ब्रह्म को दृष्टिपात करता है, वही ब्राह्मण कहलाता है। वेद के ऋषि ने आगे कहा कि ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा कि ब्रह्मचारी वह है जो प्रत्येक श्वास की गति को ब्रह्म में पिरोने वाला होता है। ब्रह्मचरिष्यामि ब्रह्म कृतो अस्सुतां देवाः मेरे प्यारे! ब्रह्म मे कौन ब्रह्मचारी ब्रह्मे मानो प्रत्येक श्वास को पिरो देता है। एक माला बना देता है। माला को धारण कर लेता है जैसे बेटा! सूर्य मानो तीस लाख पृथ्वियों की माला बना करके, अपने में धारण कर रहा है। इसी प्रकार, मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी प्रत्येक श्वास की एक माला बना करके मेरे पुत्रों! वह अपने में पिरो देता है, अपने को ब्रह्म में पिरो लेता है, और ब्रह्मवर्चोसि मानो ब्रह्म और चरी के दो ही शब्द कहलाते हैं, जो मानो परमपिता परमात्मा का है, और चरी नाम प्रकृति का है जो ब्रह्म की चरी को चरने वाला है, वही मानो ब्रह्मवर्चोसि कहलाता है। क्या विचित्र वेद का मन्त्र कहता है बेटा!, ब्रह्मो चरिष्यं ब्रह्म वहा देवाः हे ब्रह्मचरिष्यामि! तुम मानो अपने में तू अपने में, ही मानो सूत्रित हो करके, अपनी आभा में रत्त होता चल, जिससे मानो तेरी मानवीयता, पवित्रता में धारण हो जाएं, और हम पवित्र सूत्रों को अपने में धारण करके ही इस संसार की प्रतिभा में मानो देखो , रत्त हो जाएं। तो आओ मेरे पुत्रों! वेद का ऋषि कहता है ब्राह्मण को, एक एक कण कण में जो ब्रह्म को जानने वाला है, वही ब्राह्मण कहलाता है। और ब्रह्मचारी वह है जो अपने प्रत्येक श्वास को बेटा! देखो, ब्रह्म में पिरो देता है मेरे प्यारे! ब्रह्मवर्चोसि कौन? जो ब्रह्म को अपने में चरने वाला है, वही तो आभा में युक्त रहने वाला है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष आभा में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, तुम्हें केवल कुछ परिचय कराने के लिए चला आता हूँ, और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! ये तीन शब्दों की व्याख्या वाली पोथी का निर्माण किया है। उन्होंने बेटा! भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन भी इसी में किया है। भिन्न भिन्न प्रकार की धाराओं में रत्त रहने वाला बेटा! यह अपने में अपने को पिरोने वाला है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र हमारा, वेद का मन्त्र क्या

कह रहा है क्या मुनिवरों! देखो , तीनों जो मनके हैं, वह सूत्र में पिरोएं हुए हैं और वह सूत्र कौन है? वह सूत्र मानो वे परमपिता परमात्मा की प्रतिभा कहलाती है वही तो परमपिता परमात्मा में तीनों सूत्र बेटा! अपने में सूत्रित हो रहे हैं।

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मानो देखो, उस ब्रह्म को जो मानो देखो, माता वसुन्धरा के रूप में हमें दृष्टिपात आता है हे ममत्वां ब्रह्म लोकां हे माता! तू वसुन्धरा है और वसुन्धरा बन करके तू हमारा कल्याण कर रही है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में तीनों सूत्र पिरोएं हुए हैं मानो उसी को पिरोना और उसी को अपना हमें सूत्र बनाना है, जिस सूत्र को धारण करके, हमारे जीवन की प्रतिभा महान बन करके, इस संसार सागर से पार हो जाएं।

यह है बेटा! आज का वाक् आज का वाक्, हमारा क्या कह रहा है, बेटा! मैं वसुन्धरा की याचना कर रहा था तपो हिरण्यं रथा मुनिवरों! देखो, तप ही उस परमपिता परमात्मा की गोद में जाना है, तपों में ही रहना, यह बेटा! ज्ञान और विज्ञान की उपलब्धियों का होना है, और वही मुनिवरों! देखो , माता वसुन्धरा की गोद में, हम अपने को स्वीकार करें, हे माता वसुन्धरा! प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! उस ब्रह्म की गाथा गा रहा है, जैसे माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है, जैसे यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, बेटा! यह पृथ्वी जब भी किसी वैज्ञानिकों ने, बेटा! इस पृथ्वी के परमाणुओं को जाना है, तो वह विज्ञानवेत्ता बन गया, वह मानो देखो, इस पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हो करके, इसे ममतव रूप अपने में धारण कराती हुई मानो यह वसुन्धरा बन करके हमारा कल्याण करने वाली है, हमें महानता की वेदी पर ले जाने वाली है, जिससे मानो देखो , हमारे मानवीयतव का कल्याण होता है। आभा में निहित होते रहते हैं।

तो यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या, क्या हम मुनिवरों! देखो, उस माता वसुन्धरा की याचना करते चले जाएं, जो माता,

जिसके द्वारा उस हमारा कल्याण होता है, हम विज्ञान और ज्ञान में रत्त हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं माता वसुन्धरा, जो हमारे वैदिक साहित्य में, वसुन्धरा नाम प्रभु का है, वसुन्धरा नाम माता का है, वसुन्धरा नाम पृथ्वी का है, मानो देखो, ये वसुन्धरा जो हमें बसाती है, उसी का नाम वसुन्धरा कहलाता है। हे मां वसुन्धरा! तू हमारा कल्याण कर, हम मानो देखो , तुझे बारम्बार नतमस्तिष्क हो करके, तेरे ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में, हम सदैव रत्त हो जाएं यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः यम शन्ना गायन्त्वा माणं ऋषि वरुणाः आभ्यां लोकं सर्वाः। ओ३म् जनिता वाचन्न गाता रथं ब्रह्म वाचाः। ओ३म् मधु मन्था मां ऋषि वाचन्न गा ताः३म्। ओ३म् ब्रह्मणा देवं मया सर्वं भद्रा। निवास स्थानः भक्त साढु राम ग्राम चोरहा समय रात्रि 9 बजे। 01 11 1985।

१५ 02 11 1985 शतपथ ब्रह्माण

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पूर्व की भांति , कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे , ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से , जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहाँ , परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, मानो वह वरणीय कहलाते हैं, जो मानव उस परमपिता परमात्मा को अपना वरण बना लेता है अथवा उसे वर लेता है, वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र यह कहता है कि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने गएं हैं और हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरण बना लेना चाहिए अथवा उसे वर लेना चाहिए क्योंकि हमारे यहां परम्परागतों से ही, वेदों के ऊपर महान अनुसन्धान होता रहा है, एक एक वाक् को ले करके, ऋषि मुनियों ने बड़े अनुसन्धान अथवा अपने में रत्त रहने के लिए सदैव, मानो तत्पर रहे हैं, जिसके ऊपर हमारा जीवन, मानो निर्धारित रहता है। बहुत पुरातन काल हुआ, जब बेटा! वेदमन्त्रों के ऊपर हमारा प्रायः अन्वेषण होता रहता था, अथवा विचार विनिमय होता रहता, जिन विचारों को ले करके मानव, अपने जीवन को महान बनाता है, उन्हीं विचारों के ऊपर मानो हमारे वेदों के ऊपर नाना प्रकार की टिप्पणियाएं और उनके ऊपर विचार विनिमय होता रहा है मानो दोनों प्रकार की धाराओं का जन्म, मानव के चिन्तन करने से प्राप्त होता है। एक मानवीय दर्शन है, एक मानो भौतिक दर्शन है, ये दोनों प्रकार के दर्शनों की चर्चाएं, बहुत पुरातन काल में, बेटा! हमारे ऋषि मुनियों ने की, मानो दर्शन के ऊपर तो मानो अपने में अधिपथ्य रहा है, परन्तु यहां भौतिक विज्ञान की विवेचना आती रहती है, और भौतिक दर्शन के ऊपर मानव चिन्तन करता रहता है, उसका बेटा! विज्ञान मानवीयतव विज्ञान में परणित हो जाता है। क्योंकि विज्ञान भी अपने में एक मानो अद्वितीय चिन्तन है, जब मेरे

प्यारे! देखो, आध्यात्मिकवादी, मानव दर्शन में प्रवेश करता है, तो उसके ऊपर बहुत ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ता रहता है। मुझे बहुत पुरातन काल हुआ, बेटा! नाना ऋषियों के सौभाग्य प्राप्त हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन के ऊपर, बड़ा चिन्तन किया और मनन किया, परन्तु इसीलिए मानव को मननशील रहना चाहिए और वेदों की ध्वनि के आधार पर, अपने को ध्वनित करना चाहिए।

तो आओ मेरे प्यारे! विशेष इस पर चर्चा नहीं, केवल आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है, कि हम परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार करें, क्योंकि संसार में जिसको जो वर लेता है वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। तो इसीलिए हमें परमपिता परमात्मा को, प्रायः अपना वरणीय बना लेना चाहिए। तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं उस वाक्यों में ले जाना चाहता हूँ, जहां मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की वे चर्चाएं वह साहित्य हमारे समीप आ रहा था। वेद का मन्त्र कहता है, तपं तपश्चां तपं हृदयां ब्रह्मे वाचो तपाः मेरे प्यारे! यह संसार तपोमयी हैं, यह संसार तपों की आभा में निहित रहता है। तो वेद का मन्त्र कहता है कि हे मानव! तू तपस्वी बन, तू साधक बन करके, अपने प्रभु के समीप पंहुच। परन्तु ऋषि से तेरा जो मानव दर्शन है, मानवीयता है, मानो उसकी धारा का जन्म होता रहेगा। तो मुनिवरों! देखो , वेद का मन्त्र, यही तो कह रहा है हे मानव तू तपस्वी बन करके अग्रणीय बन। तो बेटा! मैं शतपथ ब्राह्मण जिस पोथी का निर्माण, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बारह वर्ष, तपने के पश्चात, उन्होंने बेटा! मन को पवित्र किया, मानो तप किसे कहते हैं? तप कहते हैं जो मानव अपने मन को पवित्र बना लेता है। मानो देखो , मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु है, और मुनिवरों! देखो, वह जो आहार है, अन्नाद है वह सृष्टि के पिता ने सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया तो वह अन्न पवित्र होना चाहिए, अन्न मानो जो हमारा पवित्रतम हो जाता है, तो हमारी साधना बलवती हो जाती है। हम साधना में पूर्ण रूपेण बन जाते हैं। तो मेरे प्यारे! वेद का ऋषि यही कहता है अन्नं ब्रह्मा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! उस अन्न को एकत्रित करना प्रारम्भ किया,

जिस अन्न के ऊपर अधिकार नही था उस अन्न को पान करना, इन्द्रियों के ऊपर संयम करना, और शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी के ऊपर लेखनीबद्ध करते रहते थे। मेरे प्यारे! देखो , वह सबसे प्रथम शब्दों में याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जो इससे पूर्व काल में मैंने तुम्हें प्रगट कराया, उन्होंने कहा है, प्रश्न किया है तीन शब्दों को ले करके, तीन शब्दों की रचना की, रचना के पश्चात वह पोथी का निर्माण किया। बेटा! ब्राह्मण कौन है? ब्रह्मचारी कौन है? और ब्रह्मवर्चोसि कौन है? जो ब्रह्म की चरी को चरता है यह तीन शब्द है ये माला के तीन मनके हैं, मैंने बेटा! मनकों की चर्चाएं तुम्हें इससे पूर्व काल में, माला की चर्चाएं की थी जब ब्राह्मण वेदों का गान गाने लगता है, उद्गीत गाने लगता है तो शब्दों की माला को धारण कर लेता है। मेरे पुत्रों! देखो , वैज्ञानिक जब अपने विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करता है तो वह परमाणुओं की माला बनाता है, परमाणुओं की माला बना करके, अपने कण्ठ को वह सजातीय बनाता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, वही वैज्ञानिक, जब गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो जाता है, तो एक दूसरे लोक के ऊपर विचारने लगता है यह कैसी पवित्र माला है? जो मुनिवरों! देखो , योगीजन जिसका बखान करते हैं, तो मैं तीन मनकों की चर्चाएं कर रहा था, तीन मनकों की चर्चा क्या है? ब्राह्मण कौन है? यह प्रश्न किया उत्तर देता है ऋषि, जो ब्रह्म को कण कण में स्वीकार करता है, अपने को ब्रह्म में, ब्रह्म को अपने में जो दृष्टिपात करता है वह ब्राह्मण कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो , वह घृणा नही करता प्राणी से, वह जो अपने को जगत में दृष्टिपात करता है, जगत को अपने में, अपने में जगत को, तो वह मेरे प्यारे! देखो , वह तो ब्राह्मण है, वह ब्रह्मचारी कौन है? जो बेटा! एक एक श्वास का मनका बना करके बेटा! जो मानो देखो , अपने में माला बना करके अपने में पिरो देता है। मेरे प्यारे! वह ब्रह्मचरिष्यामि कौन है? जो मैंने इससे पूर्वकाल में तुम्हें वर्णन किया, क्या वह ब्रह्मवर्चोसि है जो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म की चरी को चरने लगता है, ब्रह्म की चरी क्या है?

बेटा! मुझे एक काल स्मरण आ गया है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के द्वारा

जब यह पोथी का निर्माण किया तो बेटा! देखो , एक समय कुछ ऋषि मुनियों का, एक समूह मानो देखो , याज्ञवल्क्य मुनि के जब द्वार पर पंहुचा वह तपस्या कर रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, जिसमें ऋषि मुनियों में बेटा! महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य , महर्षि रेणकेतु , महर्षि सोमवृत्तिका , और महर्षि वैशम्पायन, महर्षि विभाण्डक, महर्षि सोमकेतु , देवर्षि नारद , चाक्राणी गार्गी, मुनिवरों! और भी नाना ऋषि मुनियों का एक समाज मेरे प्यारे! वह भ्रमण करता हुआ वह बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि के द्वार पर पंहुचा। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, उनका स्वागत किया। उन्होंने कहा कहो ऋषिवर! कैसे आगमन हुआ है? मेरे आश्रम में, मेरे प्यारे! देखो, महर्षि प्रवाहण और शिलभ दोनों बोले कि प्रभु! आज हम न्यौदा में मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे, परन्तु उन मन्त्रों में एक वाक् आ रहा था, और वेदमन्त्र यह कहता था कि चलो सम्भवा लोकां ब्रह्मचरिष्यामि, ब्रह्मचरि लोकां, ब्रह्म वाचो देवाः बेटा! उन्होंने यह वेद के शब्दों की रचना उच्चारण की, उन्होंने कहा भगवन! यह वेद के शब्द हैं, और यह कहते हैं ब्रह्मचरिष्यामि, ब्रह्म की चरी क्या है? जिससे वह मानव चर रहा है वह चरीवान कौन है। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म की चरी कौन है? इसके ऊपर विचार विनिमय करने लगे तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले, कि ब्रह्म की चरी यह ब्रह्माण्ड है, यह जो ब्रह्माण्ड है, जो अंगों और उपांगों से ब्रह्माण्ड को जानता है। वह ब्रह्म की चरी कहलाती है। उन्होंने कहा प्रभु! कैसे चरा जाएं इसके ऊपर विचार किया जाएं। तो मेरे प्यारे! न्यौदा में से मन्त्रों का अध्ययन किया और उच्चारण करते हुए कहा, कि हे ऋषियों! यह वेद का मन्त्र कहता है, चरी चरिणां ब्रहा कृतं लोकां प्राथं ब्रहे कृतं लोकं वाचन्नमाः वेद का वाक् यह कहता है, क्या चरी को चरना है, तो ब्रह्म की चरी मानो पृथ्वी से ले करके और वह निहारिकाओं और आकाश गंगाओं तक चली जाती है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से ऋषियों ने कहा प्रभु! हमें पंहुचाईए हम जाने के लिए आए हैं।

तो बेटा! देखो, एक पंक्ति लगा करके विद्यमान हो गएं ऋषि मुनि और वह

आचार्य याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, ब्रह्मवेत्ता जो अपनी गाथा प्रगट करने लगे, उन्होंने बेटा! वेदमन्त्र को ले करके कहा प्रथम ब्रह्मा सहत्राणि प्रथम ब्रह्मा सहत्राणि, प्रथम ब्रह्मे वाचो सहस्त्राणि मेरे प्यारे! देखो , इस प्रकार सहस्त्राणि का वर्णन किया। उन्होंने कहा क्या यह जो पृथ्वियां हैं, ये मानो देखो , तीस समय सहस्त्र सहस्त्र हो जाएं, तो मानो देखो, उसकी प्रतिभा और व्रकृतियां बन जाएं तो मानो देखो, यह तीस लाख के बिन्दु पर पंहुच जाती हैं। तो तीस लाख पृथ्वियां हैं, जिनकी मानो देखो, एक माला बनी हुई है, तीस लाख पृथ्वियों की माला बन गई, और जब वह तीस लाख पृथ्वियों की माला बनी तो बेटा! कौन उस माला को धारण कर रहा है? बेटा! सूर्य उस माला को धारण कर रहा है। मानो तीस लाख पृथ्वियां हैं जो मेरे प्यारे! देखो , यह सूर्य अपने कण्ठ में धारण कर लेता है, और मुनिवरों! देखो , जब विचारा गया, तो आधुनिक माला का वर्णन और आया, सूर्याणि गच्छतं ब्रह्मा सूर्याणि रूद्रां भविते लोकां उन्होंने कहा कि यह जो सूर्य है, यह भी किसी की माला है, एक सहस्त्र सूर्य की गणना करने के पश्चात, वह बृहस्पति की माला बन गई है, बृहस्पति ने उस माला को धारण कर लिया, और बृहस्पति इतना विशाल मण्डल है जिसमें बेटा! एक सहस्त्र सूर्य समाहित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, आगे उस माला का वर्णन और आ गया, वह तो न्यौदा में के मन्त्र थे, तो उस वेदमन्त्र में पुनः यह आया सहस्त्राणि गच्छतं ब्रह्मे सहस्त्राणि व्रतं ब्रह्मा कृतं व्रीति देवाः वारू अप्रतम् मेरे प्यारे! वेद की आख्यिका कहती है क्या एक सहस्त्र बृहस्पतियों की माला और उपलब्ध हो गई। बेटा! उस माला को आरुणि मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, उस माला को धारण करके बेटा! देखो, आगे माला, मेरे प्यारे! एक सहस्त्र आरुणि मण्डलों की बेटा! देखो , माला बन करके, उसको ध्रुव ने अपने में धारण कर लिया। बेटा! ध्रुवाणि गच्छतं ब्रह्मे व्रत्या, मेरे पुत्रों! आगे वेद की आख्यिका कहती है कि माला बनती चली गई, बेटा! एक सहस्त्र ध्रुवों की माला बन करके, मूल नक्षत्र अपने में धारण कर रहा है मेरे पुत्रों! देखो , एक सहस्त्र मूल नक्षत्र है, जिनकी माला बना करके बेटा!

देखो, वह स्वाति नक्षत्र अपने में धारण कर रहा है। कैसी माला बन गई है मेरे प्रभु की मेरा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है, कैसे माला को सुगठित किया है। वेद का मन्त्र कहता है, कि इसी मानो देखो , एक सहस्र स्वाति मण्डलों की माला बनी, तो उसको अचंग मण्डल अपने में धारण कर गया। बेटा! एक सहस्र अचंग मण्डलों की माला बनी, तो बेटा! उसको रेणाकेतु मण्डल, अपने में पिरोने वाला बन गया। एक सहस्र रेणाकेतुओं की माला बनी, तो बेटा! देखो , वह मृतिका उस माला को अपने में धारण कर गया, बेटा! यह कितना विशाल मण्डल है, क्या इसके ऊपर विचार करने वाला, जब योगाभ्यासी साधक विचार करता है, तो उड़ान कितनी विचित्र बन जाती है। मेरे प्यारे! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बोले कि हे ऋषियों! इसी प्रकार मानो देखो, एक सहस्र मृचिका मण्डल ही मानो देखो, उस गन्धर्व लोक में ओत प्रोत है, गन्धर्व लोंकों में उस माला को बना लिया। मेरे प्यारे! देखो, यह इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बन गया बेटा! इतने मण्डलों का सौर मण्डल बना और मुनिवरों! देखो , पिचासी लाख उन्नचस हजार पांच सौ बावन मुनिवरों! देखो , इस प्रकार के सौर मण्डलों की एक आकाश गंगा बन गई, एक आकाश गंगा दृष्टिपात आने लगी। मेरे पुत्रों! देखो , इसी प्रकार जब विचारने से प्रतीत हुआ तो ऋषि समाधिष्ट हो गएं अब समाधि में जा करके यह प्रतीत हुआ उन्हें, लघु मस्तिष्क में जब संसार को निहारने लगे, तो बेटा! उन्हें एक वाक् और दृष्टिपात आने लगा। मेरे प्यारे! देखो , एक सहस्र क्या मानो देखो, एक करोड़ और नब्बे लाख पचानवें हजार और मुनिवरों! देखो , पांच सौ तिरेप्पन मुनिवरों! इस प्रकार की आकाश गंगाएं, बेटा! निहारिका में समाहित हो गई। मानो एक निहारिका का निर्माण हुआ, मेरे पुत्रों! देखो , निहारिका नही अवन्तिका और मुनिवरों! देखो , एक करोड़ अवन्तिकाओं की एक निहारिका बन गई, बेटा! कैसा अनन्त, यह एक दूसरे में माला बनी हुई है ब्रह्माण्ड की, तो मुनिवरों! देखो, यह विज्ञान हमारे समीप आता रहता है। हमारा परम्परागतों का यह जन्मसिद्ध अधिकार रहा है, परन्तु आज मैं कहां ले जाना

चाहता था, कहां चला गया हूँ।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि मुनि चयन करने लगे, उन्होंने कहा क्या ब्रह्म की चरी क्या है, और कौन चरता है, बेटा! जो समाधिष्ट होता है, जो अपने लघु मस्तिष्क को जानता है, वह ब्रह्म की चरी को चरता है, और चर करके मुनिवरों! देखो , वह मौन हो जाता है। आगे वेद का ऋषि कहता है, हे ऋषियों! उन्होंने कहा आपने हमे वृख के सम्बन्ध में भी कहा था, तो मुनिवरों! देखो , महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि वृष को जानना चाहते हो, मैंने तो यह व्याख्या कई काल में की हैं। आज भी बेटा! मुझे स्मरण आ रही है। वेद का ऋषि कहता है वृखो सम्भवे ब्रहे वाचन्न देवाः ऐसा बेटा! लोकोक्तियो में आता है, मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे कई काल में यह आख्यिका प्रगट की है, क्या देवासुर संग्राम होता रहता है, और वह सहस्रों वर्षों तक चलता है।

तो बेटा! शतपथ ब्राह्मण की पोथी का यह द्वितीय अनुवाक का प्रारम्भ हुआ वह द्वितीय अनुवाक क्या है मानो देखो, यह वृख और देवासुर संग्राम क्या है? तो बेटा! देखो, देवासुर संग्राम के ऊपर विचार होने लगा, तो बेटा! देवासुर संग्राम यह जो मानव जब, साधना में प्रभु के आँगन में जाना चाहता है, तो बेटा! देवासुर संग्राम हो रहा है, और वह देवासुर संग्राम होते होते एक समय आता है कि देवता दैत्यों को विजय कर लेते हैं। बेटा! देखो , देवताओं ने जब दैत्यों को विजय कर लिया तो बेटा! देवता आनन्दित हो गएं। तो कहते हैं कि देवताओं की सभा में, एक वृख का जन्म हुआ, और उस वृष के जन्म होते ही जो उसकी शरण में आता, वह उसके अनु वाक्यों को ग्रहण कर लेता, वही देवता बनने लगा। जब बेटा! यह संसार देवताओं का बनने लगा, देवतव को प्राप्त होने लगा, यह संसार, तो मुनिवरों! देखो, दैत्यों की एक सभा हुई, जिसमें मेरे पुत्रों! जिसमें मुनिवरों! देखो, महर्षि व्रो पराहन भविते ने उच्चारण किया क्या जब दैत्यों की सभा हुई, तो इसमें कौन? देखो, मेरे प्यारे! देखो, महाराज विरोचन को निमन्त्रित किया गया, मुनिवरों! देखो, कौन रक्तबीज और कैत्तत मुनिवरों! देखो, नाना उन्हें

दैत्यों से उन्होंने अपने सभापति विरोचन को नियुक्त किया क्या महाराज! निर्णय करो क्या एक वृख का जन्म हुआ है उस वृख के मुखारबिन्दु से जो ध्वनि उत्पन्न होती है वही देवता बनता रहता है प्रभु! हमारे क्या बनेगा? उन्होंने कहा प्रियतम! तो निर्णय किया जाएं। जाओ वृख को छला जाएं, अब वृख को तो ज्ञान हो गया था, आज तू दैत्यों के द्वारा छला जाएगा, मेरे प्यारे! देखो, उसने अपनी देवताओं की धरोहर को, रेणुका में प्रवेश कर दी, और मध्य रात्रि में वह मुनिवरों! देखो , दोनों रक्तबीज, शुम्भ निशुम्भ इत्यादियों मानो देखो , आक्रमण किया, तो वृख छला गया। वृख को जब छल करके लाया गया, महाराज विरोचन ने उसका मन्थन किया, तो उन्होंने कहा इसमें उसमें वह ध्वनि नही है दैत्यों ने कहा वह रेणुका में प्रवेश कर गई है। मेरे प्यारे! देखो , वह वृख को वहीं वृखित कर दी। परन्तु देखो, जब प्रव्हा अब मध्य मध्य रात्रि में, रेणुका को छलने का उन्होंनें कर्म बनाया, तो रेणुका ने बेटा! उस देवताओं की धरोहर को मुनिवरों! देखो , यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया। वह ध्वनि तो यज्ञ के दस पात्रों में चली गई, होताओं के समीप चली गई मुनिवरों! देखो , जब रेणुका को लाया गया, तो विरोचन ने उसका मन्थन किया। उन्होंने कहा हे दैत्यराजों! इसमें वह ध्वनि नही है जिससे यह संसार देवताओं का बन रहा है। उन्होंने कहा, महाराज वह कहां गई? क्या वह तो यज्ञ के दस पात्रों में चली गई है, उसको तुम निकास नही सकोगे। महाराजा विरोचन यह उद्गीत गाया।

मेरे प्यारे! विचार आता है यह क्या है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने एक लोलुक्ति प्रगट की हैं, लोलुक्ति का रूपान्तर क्या है? बेटा! देखो , यह देवासुर संग्राम क्या है? जब साधक साधना में प्रवेश करता है तो बेटा! देखो, असुर और देव प्रवृत्तियों का दोनों का संघर्ष होने लगता है मेरे पुत्रों! देखो , एक समय वह आता है कि देवता विजय हो जाते हैं और उनके मुखारबिन्दु से देवताओं की सभा में एक वृख का जन्म हुआ बेटा! हमारे वैदिक साहित्य में वृख के नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द हैं मानो देखो , वृख नाम गऊ के बछड़े को भी कहा

गया है। वृख नाम सूर्य को भी कहा गया है वृख नाम बेटा! परमपिता परमात्मा का भी है, वृख नाम मुनिवरों! देखो , वृथं ब्रह्मे व्रतां देवाः वृख नाम राजा का भी है, परन्तु यहां प्रकरण से वृख नाम बेटा! मन को कहा गया है, साधक मन के ऊपर उद्गीत गा रहा है, वह कहता है कि यह वृख मन है, मानो देखो , यह मन जब देवता जब दैत्यों को विजय कर लेते हैं, काम, क्रोध, मद लोभ मोह आदियों के ऊपर जब अधिपथ्य कर लिया जाता है, इनको दमन कर लिया जाता है, तो देव प्रवृत्ति बन जाती है। तो यह मन वृख बन करके यह मानो देखो , मन के ही द्वारा पवित्र होते है मुनिवरों! देखो, दैत्यों ने इस मन को छल लिया, क्योंकि मन में दो प्रकार की वृत्तियां होती हैं एक मानो असुर है, एक देवासुर है, जब यह प्रकृति, जब यह प्रकृति के आवेश में आता है तो असुर प्रकृति वाला, परमात्मा के सन्निधान में रहता है तो वहां मन प्राण के सहयोग से ही गति करता रहता है, तो यह मन वृख कहलाता है। जो पवित्र आभा को ले करके परन्तु यह दैत्यों के द्वारा अशुद्ध आभा में परणित हो गया तो यह छला गया, और छल करके मुनिवरों! देखो, इसका वृत कर दिया गया, तिरस्कार कर दिया।

मेरे प्यारे! रेणुका क्या है? मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन किया कि माता का नाम भी रेणुका है, रेणुका नाम पृथ्वी का है, रेणुका नाम चन्द्रमा की कान्ति का है, रेणुका नाम रात्रि का है बेटा! देखो , रेणुका के बहुत से पर्यायवची शब्द है, मेरे प्यारे! देखो , नदियों को भी रेणुका कहा जाता है। परन्तु विचार क्या यहां पृथ्वी को रेणुका माना है, प्रकरण क्या रेणुका में वह ध्वनि चली गई, देवताओं की धरोहर। तो मेरे प्यारे! देखो , रेणुका पृथ्वी को कहते हैं यहां रेणुका बुद्धि है यहां बुद्धि है बेटा! बुद्धि जब यह धर्म ध्वनि को जान लेती है यह देवताओं की धरोहर है तो बेटा! उसमें धरोहर को यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया अब विचार आता है यज्ञ के दस पात्र क्या हैं? बेटा! देखो , जब वही मानव दर्शन हमारे समीप आ गया है बेटा!।

मेरे प्यारे! देखो, यह हमारा मानव शरीर है यह मुनिवरों! देखो , एक प्रकार

की यज्ञशाला है मुनिवरों! देखो , यज्ञशाला के मानो देखो, इसके दस पात्र कोई कहता है परन्तु पांच पात्र बेटा! पांच जो ज्ञानेन्द्रिया हैं उनमें वह धर्म समाहित हो जाता है, और वह शरीर रूपी बेटा! याग की उपलब्धियां होने लगती हैं। मेरे प्यारे! देखो, मानव का शरीर है, यह एक यज्ञशाला है, जो सृष्टि के पिता ने, सृष्टि के प्रारम्भ में बेटा! इसको जन्म दिया था। जिसको उत्पन्न किया था, तो मुनिवरों! देखो, वह देवताओं की धरोहर है, वह धर्म ध्वनि बेटा! देखो , यज्ञ के दस पात्रों में, मानव की इन्द्रियों में, धर्म समाहित रहता है। धर्म बाह्य जगत में यह बखान का कहलाता है, परन्तु वास्तविक धर्म कहां हैं? मानव की इन्द्रियों में समाहित हो जाता है। मेरे प्यारे! रूप , रस, गन्ध मुनिवरों! देखो, वह शब्द और देखो, यह अप्रतां ब्रह्मे वाचो स्पर्श का मुनिवरों! देखो , रूप, रस, गन्ध, स्पर्श यह पांच ज्ञानेन्द्रियों में बेटा! धर्म समाहित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, नेत्र दृष्टिपात करके रूप को लाते हैं, जो बेटा! हृदय में स्थित कर देते हैं। श्रोत्र शब्दों को लाते हैं तो हृदय में, बेटा! देखो , रसना रसों को लाती है, तो हृदय में, नासिका मन्द सुगन्ध को लाती है वह भी हृदय में मेरे प्यारे! त्वचा प्रेम को लाती है, वह भी हृदय में, वाह रे मेरे प्रभु तेरी कितनी विचित्र यज्ञशाला है, ये क्या मानव देखो, एक ही प्रत्येक इन्द्रियों का, एक समूह केन्द्र मानो हृदय ही माना गया है। हृदयं रथं प्रव्हा लोकाम् मेरे प्यारे! सर्वत्र लोक लोकान्तर बेटा! इसी में पिरोएं रहते हैं। आज मैं बेटा! कहां चला गया हूँ? मुनिवरों! देखो , ये अपने धर्म ध्वनि को विचार करके, मानव को ऊर्ध्वा में उड़ान होनी चाहिए।

मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा, विचार देते हुए कहा है कि हे मानव! तू अपने धर्म को जानने का प्रयास कर, धर्म तेरी इन्द्रिय में समाहित रहता है। धर्म तेरे शब्दों में रहता है, धर्म तेरी रसना में रहता है, धर्म तेरी घ्राण में रहता है, और धर्म तेरे स्पर्श में रहता है। मेरे पुत्रों! देखो , यह कैसा विचित्र, याज्ञवल्क्य मुनि बोले यह यज्ञशाला है, इन मानो देखो , हृदय रूपी यज्ञशाला में, जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है, और पांच ज्ञानेन्द्रियों का साकल्य बना करके साधक

बेटा! उसमें आहुति दे रहा है, आहुति दे रहा है कह रहा है स्वाहाः मानो देखो , शब्दं ब्रह्मा स्वाहा बेटा! स्वाहा कह करके अपने हृदय को पवित्र बनाता है। साम्यता में परणित कर रहा है, मानव दर्शन को विचार रहा है, बेटा! यही तो मानव दर्शन है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही , अन्वेषण करता चला आया है। अथवा विचार विनिमय करता चला आया है, क्या मुनिवरों! देखो , ब्रह्म वाचो देवं ब्रह्मे मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब बेटा! यह अपना बखान किया, बेटा! देखो , शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का, मेरे पुत्रों! देखो, ऋषिवर आचार्य के चरणों में ओत प्रोत हैं, और यह कहा कि धन्य है ऋषिवर! आपके इस कौतुक को धन्य है, आपने जो संसार और मानव दर्शन को जाना। मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ऋषि मुनियों को यह वाक् दे करके, बेटा! देखो, सभा विसर्जन हो गई। बेटा! वृखों की चर्चां तो इससे पूर्व काल में ही कर पाऊंगा। आज का विचार तो केवल यह कह रहा है बेटा! हमें परमपिता परमात्मा की इस पवित्र माला को धारण करना चाहिए, तीन सूत्र हैं बेटा! तीन मनकें ब्रह्म सूत्र में पिरोएं हुए हैं बेटा! ब्राह्मण कौन है? ब्रह्मचारी कौन है? और ब्रह्मचरिष्यामि जो ब्रह्म की चरी को चरता है वह कौन है? बेटा! ये तीन ही शब्द हैं तीन शब्दों की रचना है, रचना के ऊपर व्याख्या बड़ी विचित्र है, मेरे प्यारे! आज का विचार यह क्या कह रहा है हम परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार करें, अपना वरणीय बनायें और उसको अपना वरण करके बेटा! अपने अन्तर्हृदय में धारण करके, परमपिता परमात्मा की अनुपम गोद में चले जाएं, मानव दर्शन को जानने वालें बने, मानव दर्शन क्या है? कि हम अपने अंगों और उपांगों को जान जाएं, उसको सूत्रित करते हुए एक सूत्र में पिरो दें बेटा! जिसमें मालाओं की चर्चा की यह कैसे सूत्र देवासुर संग्राम देखो , मन पवित्र, दैत्यों का छलना और मुनिवरों! देखो, रेणुका अपने में तटस्थ हो करके यज्ञ के दस पात्रों में प्रवेश करना यज्ञ के दस पात्र क्या है? बेटा! पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्दियां हैं, जो बाह्य जगत का क्रियाकलाप है वह आन्तरिक जगत को

भोगतव्य बनाता है यह है बेटा! आज का अब मुझे समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चा तो तुम्हें कल की प्रगट करूंगा। आज का विचार केवल क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं, बेटा! यह यज्ञशाला है, यज्ञशाला में मानो देखो, यज्ञमान आहुति दे रहा है, स्वाहा कह रहा है, यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बनाए, वह हमारा देवता है, उसको वरुण बना करके, उसी को प्राप्त हो जाएं, ये आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् मां रथं ब्रह्मा वाचां रथं पृवृता वायु गताः। ओ३म् मनु गायां गृहितां देवाः आप्यां लोकं सर्वाः। ओ३म् ताना मां रथाः। 02 11 1985।

१६ 30 03 1985 आध्यात्मिक चर्चा

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पूर्व की भांति , कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे , ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से , जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया , हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है , जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है , जितना भी ज्ञान और विज्ञान है, चाहे वह भौतिकवाद में है , चाहे वह आध्यात्मिकवाद में है परन्तु वह परमपिता का सर्वत्र, एक आयतन माना गया है क्योंकि यह ब्रह्माण्ड ही उसका आयतन है, जितना भी परमाणु और अणु हमारे वैज्ञानिकों के मस्तिष्कों में नृत्त करता रहा है , मानो वह परमाणु ही उसका आयतन है , वह उसका गृह है , तो इसीलिए यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में , प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। मेरा प्यारा प्रभु कितना अनुपम है मानो वह श्रोत्रीय माना गया है , जिसके ऊपर परम्परागतों से ही, मानव, अपने में अनुसन्धान करता रहा है, और विचारता रहा है, कि हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसके ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाएं , क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए हैं, परन्तु कुछ आध्यात्मिक रूप में हैं, और कुछ मानो भौतिक विज्ञान के रूपों में हैं, परन्तु आज तक कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ , जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, वह मेरा देव सीमा से रहित है। उसका ज्ञान और विज्ञान इतना नितान्त है क्या, मुनिवरों! देखो, कोई भी मानव सीमा में उसको नहीं पा सकता।

प्रेरणा का स्रोत

आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र , क्या कह रहा है। वेदं मन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है , जिस भी वेदमन्त्र के ऊपर , हम अध्ययन

करना प्रारम्भ करते हैं, तो वही वेदमन्त्र बेटा! प्रेरणादायक है, वह प्रेरणा का स्रोत है। इसीलिए प्रत्येक मानव अपने में अनुसन्धान करने वाला उस प्रत्येक आभा से बेटा! प्रेरणा लेता रहता है। यहाँ प्रत्येक वायु की तरंगे भी मानव को , प्रेरणा देती रहती हैं। मानव का एक एक विचार, मानव को प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। तो इसीलिए मानव को चाहिए , क्या वह मानो देखो , इस ब्रह्माण्ड की रचना और एक एक वेद, के शब्दों से अपने में प्रेरणा दायक बनें और उस प्रेरणा को अपना प्रेरणा वृत्तियों में बना करके , अपने जीवन को उसके अनुसार धारण कर लेना चाहिए।

आज मैं बेटा! तुम्हें विशेष विवेचनाओं में नहीं ले जा रहा हूँ। आज मैं तुम्हें यह उच्चारण करने के लिए आया हूँ, कि हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है। इसके पूर्व काल में, हम कुछ मानो मृत्यु की चर्चा कर रहे थे। प्रत्येक मानव याग के द्वारा , मृत्यु से पार होना चाहता है। मानो जो भी क्रियाकलाप कर रहा है , उस क्रियाकलाप के पिछले भाग में, अथवा उसके अन्तिम चरण में बेटा! एक मानव जीवन का एक स्रोत है और प्रत्येक मानव की यह आकांक्षा रहती है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए, परन्तु जब इस वाक् पर हम जाते हैं तो बेटा! इससे पूर्व काल में हमने तुमने यह वर्णन कराया , क्या मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं , वह अन्धकार है, वह मानो देखो , रात्रि है, वह अपने में निष्क्रिया है , तो उसका अभाव नहीं, उसका भावां भविते ब्रह्मा मानो देखो, उसका अस्तित्व नहीं है।

ब्रह्माण्ड तुल्य मस्तिष्क

तो आओ मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, आज मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाऊँगा, केवल यह वाक् प्रगट करना है कि मृत्यु के सम्बन्ध में, आज मुझे बेटा! वह काल पुनः से स्मरण आ रहा है, मैं कालां को सदैव बेटा! हमारे नवीनता को प्राप्त होते रहते हैं। पाठयों में सञ्चार में, नवीन कोई वस्तु नहीं है संसार में, परन्तु उसकी पुनरूक्तियाँ करने से , उसकी प्रतिभा मानो स्मरण शक्ति मानो पुनः से जागरूक हो जाती है तो संसार में कोई वस्तु नवीन नहीं है , क्योंकि वह सदैव

एक रस रहने वाली है क्योंकि प्रभु का जितना भी ज्ञान और विज्ञान है अथवा प्रभु का जितना भी अमूल्य जगत है , चाहे बेटा! वह पृथ्वी मण्डल हो , चाहे मंगल हो, चाहे और भी नाना प्रकार के लोक लोकान्तर क्यों न हो परन्तु उनमें सबमे एक रसता होती है वह कोई नवीन नहीं है। एक वैज्ञानिक कहता है कि मैंने सूर्य मण्डल की अमुख किरणों को जाना है , तो मानो वह कोई नवीन वाक् नहीं है, किसी काल में वैज्ञानिक ने सूर्य की किरणों को जाना होगा। आज भी मानव जानता रहता है क्योंकि मस्तिष्क तो मानो एक ब्रह्माण्ड का, सूक्ष्म सा एक स्वरूप माना गया है। जिसके ऊपर मानव के , इस ब्रह्मरन्ध्र में, इस मानवीय मस्तिष्क में बेटा! देखो , परमाणुओं का आदान प्रदान होता रहता है और उन परमाणुओं के आदान प्रदान से ही मुनिवरों! देखो , उसके अनुपम विचार बनते रहते हैं। अनुपम धाराएँ बनती रहती हैं , उन धाराओं के अनुसार ही मेरे पुत्रों! देखो, अपने जीवन को वह निर्धारित कर लेता है , अथवा विज्ञान में वह रत्त भी हो जाता है।

तो आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ परन्तु विचार केवल यह है कि संसार में कोई वस्तु नई नहीं है और न उसमें वृद्धपन आता है, न कोई वस्तु वृद्धपन में है , न कोई नवीनतव में है। वह सदैव एक रस रहने वाली है। इसीलिए प्रत्येक प्राणी को , मानव को, एक रस रह करके बेटा! अपने प्रभु का चिन्तन करना चाहिए। एक रस क्योंकि वह देव है वह अपने में स्वरूप है उस स्वरूप को अपने में बेटा! अपनी धाराओं में रत्त कर लेना चाहिए। आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, परन्तु वेदमन्त्र क्या कहता है आज मैं वेदों की प्रतिभा में तुम्हें ले जा रहा हूँ।

मृत्युञ्जय

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। वह मानो ऋषि मुनियों का काल, जहाँ कागभुषुण्ड जी की चर्चाएँ और महर्षि लोमश मुनि की चर्चाएँ आती

रहती हैं। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है एक समय मानो देखो, एक न्यौदा में से मन्त्र मेरे पुत्रों! देखो, उच्चारण कर रहे थे। कौन, महर्षि कागभुषुण्ड जी और लोमश मुनि दोनों की विवेचना होती रहती है। तो वेदमन्त्र में आया विष्णु विष्णुश्चं ब्रह्म वाचा यागां भविते मृत्युञ्जं ब्रह्म वाचा कृति लोकाः बेटा! वेद का वाक् कहता है, क्या, प्रत्येक मानव अपने में भिश्चिति बनता रहता है? परन्तु वेद की धारा यह कहती है, क्या यज्ञमान क्या, मानव देखो, याग से मृत्यु को मानो पार कर जाता है। मृत्यु से पार हो जाता है मृत्यु से पार होना ही मुनिवरों! देखो , यागों का चलन होता है जब मानव ब्रह्मयाग में परणित होता है , ब्रह्म की चर्चाएं होती हैं और उन चर्चाओं को धारण कर लेता, इन्द्रियाँ उन विचारों से सजातीय बन जाती हैं तो इन्द्रिय बेटा! देखो, वह व्यापकवाद में क्या, वे व्यष्टि से समष्टि को प्राप्त हो जाते हैं और प्राप्त हो करके बेटा! उनका विशाल स्वरूप , मानव के समीप आता रहता है।

तो बेटा! कागभुषुण्ड जी को यह वेदमन्त्र स्मरण आया और वेदमन्त्र न्यौदा में से उच्चारण किया और महर्षि लोमश ने कहा कि महाराज! यह वेदमन्त्र कहता है कि याग से मानव मृत्यु को उलांघ जाता है तो आओ , भगवन! आज हम मृत्यु को उल्लांघने के लिए कोई विचार बनाएं तपस्वी बनें , परन्तु यह वेदमन्त्र जैसा कहता है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि लोमश मुनि ने कहा कि हे भगवन! मेरे विचार में तो यह आता है, आज महर्षि वशिष्ठ मुनि आश्रम में गमन करते हैं और वशिष्ठ मुनि महाराज के यहाँ , विद्यालय में नाना ब्रह्मचारी , प्रातः कालीन मानो देखो , यागों का चलन होता है , नाना प्रकार की विचार धाराएँ , बुद्धिमानों की उनके समीप आती रहती है और उनके द्वार पर, हम अपने को पहुँचाते हैं।

विष्णु स्वरूप आत्मा

तो मेरे प्यारे! देखो , महर्षि कागभुषुण्ड, महर्षि लोमश बेटा! दोनों ने अपने आसन से प्रस्थान किया और भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! वे महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के विद्यालय में जा पहुँचे जहाँ बेटा! ब्रह्म की चर्चाएँ होती रहती थी ,

क्योंकि महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज , प्रायः बेटा! ब्रह्मवेत्ता थे और ब्रह्मवेत्ता का जीवन क्योंकि परब्रह्म परमात्मा उस ब्रह्म से सजातीय होता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, वहाँ से भ्रमण करते हुए , गमन करते हुए, वह प्रातः काल का समय था , प्रातः कालीन ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं , और ब्रह्मचारियों की पंक्ति में , मेरे पुत्रों! देखो , ऋषि मुनि अपने में आभा को प्रगट करने के लिए तत्पर है , मानो वहाँ याग हो रहा था , तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारियों के प्रश्न उत्तर हो रहे थे। तो मुनिवरों! देखो, जैसे वेद का मन्त्र उच्चारण हुआ और वेदारम्भ मानो याग का प्रारम्भ हुआ, तो कुछ वेद में बेटा! देखो, उसमें ऐसा शब्द का उच्चारण किया जा रहा था, तो मेरे पुत्रों! देखो, भगवान राम बाल्यकालीन ब्रह्मचारी मानो देखो, अध्ययन करते रहते थे। तो राम ने यह प्रश्न किया , क्योंकि माता अरूणधती याग में विद्यमान थी। क्योंकि माता अरूणधती का जीवन तपोमय में था। मानो वह अपने में, दर्शनों में, अपने जीवन को प्रायः ले जाती रहती थी। सदैव मानो देखो, अपने में योगाभ्यास, प्राण का निरोध करना वह मातेश्वरी जानती थी। देखो, नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की भी प्रायः चर्चा होती रहती , महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज तो केवल ब्रह्म की चर्चाओं में रत्त रहते थे। ब्रह्मचारियों को ब्रह्म की विवेचना प्रगट करते रहते थे, तो मानो देखो, जैसा ही ब्रह्म वाचं ब्रह्म वाहा कृति मानो देखो, भगवान राम ने माता अरूणधती से एक यह प्रश्न किया क्या हे मातेश्वरी! आज जब हम याग कर रहे है , और वेदमन्त्र का अध्ययन मानो देखो , उसका पठन पाठन किया , तो उसमें यह आ रहा था विष्णु वाचं ब्रह्मा आत्मा दिव्यं भविते देवाम् हे मातेश्वरी! वेदमन्त्र यह कहता है कि आत्मा विष्णु है। आत्मा, में विष्णु को कैसे स्वीकार करूँ ? क्योंकि वास्तव में मुझे महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने नाना प्रकार के वाक्यों को उद्बुद्ध किया, आज भी मानो मुझे वह वाक् पुनः से स्मरण है, क्या मैं आत्मा को कैसे विष्णु स्वीकार करूँ?

तो मेरे प्यारे! माता अरूणधती ने कहा क्या आत्मा तो विष्णु ही है , आत्मा तो मानो जहाँ विष्णु है , वहाँ याग है, जहाँ याग है वहाँ परमपिता परमात्मा है ,

जहाँ मानो परमपिता परमात्मा है वहाँ मुनिवरों! देखो , सतोगुण को भी विष्णु कहा जाता है, जहाँ सतोगुण की प्रतिभा आती है, वहाँ माता का नाम भी विष्णु ही प्रतिपादन किया गया है। मानो प्रतिपादित करने वालों ने , अपने में कहा है कि आत्मा विष्णु, आत्मा क्या, माता का नामोकरण भी विष्णु है। राजनं ब्रह्मा विष्णु, वेद की आख्यिका कहती है कि राजा का नाम भी विष्णु है तो मेरे प्यारे! जहाँ राजा का नामोकरण विष्णु, वहाँ सूर्य का नाम भी विष्णु आता है, यहाँ तो बेटा! जब विष्णु की विवेचना आएगी, तो एक ब्रह्माण्ड हमारे समीप आता रहेगा। बेटा! विष्णु के कितने पर्यायवाची शब्द हैं, परन्तु एक ही वाक् है इनके गर्भ में, इनके पिछरले विभाग में एक ही शब्द है बेटा! पालन करना। जो पालन करता वही विष्णु है।

पालनकर्त्ता विष्णु

तो मेरे प्यारे! देखो, भगवान राम ने जब यह माता अरूणधती से कहा तो माता अरूणधती ने कहा हे पुत्रोभा मानो देखो, पालन करने वाले का नाम विष्णु है। इसीलिए आज तुम विष्णु की विवेचना को जानना क्यों चाहते हो ? उन्होंने कहा हे मातेश्वरी! प्रातः कालीन जब ब्रह्ममारी जन याग का क्रियाकलाप करते हैं, तो यागों में आता है कि आत्मा का नामोकरण विष्णु है, तो, हम, तो आत्मा को जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि आत्मा जब तक शरीर में रहती है चेतना बनी रहती है और वह चेतना मानो देखो, अपने क्रियाकलापों में परणित रहती है और वह जब क्रियाकलापों में रहती है तो मानो वही देखो, नम्र और प्रकाश होने से, वह विष्णु कहलाता है , वह विष्णु है। परन्तु देखो , यह आत्मा ही अपने में योगाभ्यास, प्राण का निरोध करने वाला जो योगेश्वर होता है , वह आत्मा को बेटा! विष्णु के रूप में मानो स्वीकार करता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब माता अरूणधती से यह उत्तर उन्हें प्राप्त हुआ। तो राम ने कहा कि माता! यह मैंने स्वीकार कर लिया है। परन्तु , मैं यह जानना चाहता हूँ क्या सम्भूतं ब्रह्मा विष्णुं ब्रव्हे व्राता क्या वेद का वाक् यह कहता है क्या

मानव मृत्यु को प्राप्त होने के लिए विष्णु की उपासना करता है। तो यह हम कैसे स्वीकार करें? उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी! मानो देखो , विष्णु अप्रतं ब्रह्म वाचप्रव्हे उपासना, उपासन का अभिप्रायः यह है कि जो वस्तु जिस रूप में है , उसको उसी प्रकार हमें स्वीकार करना है, और उसको उसी प्रकार स्वीकार करके, वही उसका पूजन कहलाया गया है। पूजन का अभिप्राय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते रहे , और देखो, जहाँ हम परमात्मा की उपासना करके उसको अपना उपास्य देव, स्वीकार करते हुए, अपने में महान बन करके बेटा! देखो, अपनी प्रतिभा को ऊँचा बनाएं, और वही मृत्युञ्जय बन जाता है। तो मृत्यु से उल्लांघना है।

ब्रह्म की प्रतिभा

हमें मानो देखो, हम प्रातः कालीन याग कर रहे हैं, और इस याग में आता है कि मानव के मृत्यु से पार होना है , मानो देखो, यागां भविते ब्रह्मचरिष्यामि हे ब्रह्मचारी! मानो देखो, एक, यह जो याग है यह मानव को मृत्यु से पार ले जाता है, यह कैसे ले जाता है ? तुमने श्रवण किया होगा , तुमने जाना होगा , जब विद्यालय में तुम प्रवेश हुए तो तुम्हें यही शिक्षा दी गई, क्या मृत्युञ्जय बनना है, हे ब्रह्मचरिष्यामि! ब्रह्मचरिष्यामि को अपनाना है , ब्रह्मचरिष्यामि को अपनाने वाला बेटा! मृत्यु को प्राप्त नहीं होता , ब्रह्म और चरी दो ही शब्द है , जो मैंने बहुत पुरातन में तुम्हें विवेचना दी है, ब्रह्म और चरी दो ही तो शब्द है बेटा! देखो, ब्रह्म कहते है परमपिता परमात्मा को , और चरी कहते हैं प्रकृति को , मानो देखो, ब्रह्मचरिष्यामि, जब ब्रह्मचारी विद्यालय में प्रवेश करता है, विद्यालय में याग करता है, तो मानो वह बह्मचरिष्यामि बनता है और ब्रह्मचरिष्यामि कैसे बनता है , मानो देखो, ब्रह्म को अपना करके चरी को उसमें सम्बोधित करता रहता है। बेटा! देखो, ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को जो संसार का नियन्ता है जो चेतना है जो मानो देखो, उसमें सब अपृहि रूपों में रत्त रहने वाला है और मुनिवरों! देखो, वह जो चरी है, वह चरी प्रकृति है। जो मानो दृष्टिपात आने वाला जितना जगत है ,

यह सब चरी कहलाता है और मानो इस संसार को , जो यह क्रिया में दृष्टिपात आ रहा है। यह सब मानो देखो, ब्रह्म की प्रतिमा कहलाती है, यही तो प्रतिभाषित देखो, मानव के हृदय में प्रतिष्ठित हो जाता है।

तो हे ब्रह्मचारी! हे अमृतम! मानो देखो , तुम अपने में ब्रह्मचरिष्यामि बन करके और स्वाहा भविते ब्रह्मयाग को अपने क्रियाकलाप में लाना प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! जैसे बाह्य जगत में याग होता है, ऐसा ही आन्तरिक जगत में याग हो रहा है। उन दोनों यागों को हम जानने के लिए , सदैव तत्पर रहे और दोनों प्रकार के यागों को जानने वाला प्राणी ही मुनिवरों! देखो , इस संसार सागर से पार होता है। बेटा! चरिष्यामि प्रत्येक मानव , ब्रह्मचारी बनना चाहता है। प्रत्येक मानव के हृदय में ब्रह्मचरिष्यामि की उत्कृष्ट इच्छा बनी रहती है। परन्तु ब्रह्मचारी वह बनता है जो बेटा! प्रत्येक श्वास को देखो , उस चेतना में, उस ब्रह्म सूत्र में बेटा! अपने को पिरो देता है। बेटा! इसीलिए वह मानव ब्रह्मचारी बनता है , वह पुत्री ब्रह्मचारिणी बनती है जो मानो देखो , प्रत्येक श्वास को बेटा! मानो देखो , ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है, और ब्रह्मसूत्र में पिरो करके एक एक श्वास मानो देखो , एक माला के सदृश बन जाता है। जैसे माला में धागा सूत्र होता है और नाना प्रकार के मनके होते हैं, तो मनके जब सूत्र में पिरोएं जाते हैं तो बेटा! वह मानो देखो, न तो सूत्र रहता है , न मनके रहते हैं। मेरे पुत्रों! वह माला बन जाती है और उस माला को कौन धारण करता है , वह ब्रह्मचारी उस माला को धारण करता है। मेरे प्यारे! देखो , जब उसको ब्रह्मचारी धारण करता है तो वह ब्रह्मचरिष्यामि बनता है उस काल में।

मेरे पुत्रों! देखो, जब माता अरूणधती ने ब्रह्मचारियों को यह उत्तर दिया, तो इतने में बेटा! कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि भी भ्रमण करते हुए मानो देखो, उस विद्यालय में आ पहुँचे और विद्यालय में जब बेटा! देखो , माता अरूणधती और ब्रह्मचारियों ने महापुरुषों को आते हुए दृष्टिपात किया तो बेटा! देखो, सब नत मस्तिष्क हुए और नतमस्तिष्क हो करके अपने स्थान पर विद्यमान

हो गये। विद्यमान हो करके मेरे पुत्रों! देखो , ब्रहे माता अरूणधती ने कहा कहो भगवन! ऋषिवर आपका आगमन कैसे हुआ? तो मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी ने कहा कि हे देवी! हम आज प्रातः कालीन अपने में मानो देखो, मध्यकालीन में भी, प्रातः कालीन में भी हम मानो देखो, कुछ न्यौदा में मन्त्रों के उच्चारण कर रहे थे। उन न्यौदा में मन्त्रों के उच्चारण में, यह आया, हमने श्रवण किया कि याग से यज्ञमान देखो, मृत्यु को प्राप्त न हो, करके वह विजेता का मूल बनता। वह मृत्यु को विजय कर लेता है। तो हे मातेश्वरी! हम जानना चाहते हैं मृत्यु क्या है और जिस मृत्यु को उल्लांघ गया है यज्ञमान, वह जीवन क्या है?

मृत्यु का स्वरूप

तो मेरे प्यारे! देखो, माता अरूणधती ने जब यह श्रवण किया तो कागभुषुण्ड जी से कहा कि हे भगवन! यह जो मानो देखो, अप्रतम मृत्यु को उल्लांघना चाहता है। मृत्यु क्या है? मृत्यु एक अज्ञान है एक अन्धकार है मानो देखो, उल्लांघना क्या चाहता है? वह अन्धकार को उल्लांघना चाहता है, प्रकाश में जाना चाहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, न्यौदा में से एक मन्त्र का उच्चारण मानो महर्षि लोमश मुनि ने किया और उन्होंने कहा मृत्यु अभावा अभावां ब्रीहि व्रतां कृतिलोकां ब्रीहि व्रताः वेद का वाक् कहता है क्या, मृत्यु जब अन्धकार है, अपने में कोई उसका अस्तित्व नहीं है तो मृत्यु को उल्लांघना वह उल्लांघ लेगा कौन सी वस्तु ? तो मेरे प्यारे! देखो, माता अरूणधती ने कहा क्या वह जो उल्लांघना चाहता है , वह मानो देखो, अपने संकीर्णवाद को उल्लांघना चाहता है। जब मानव में संकीर्णता आ जाती है , तो वह संकीर्णता सूक्ष्मवत बन जाती है। परन्तु जब वह संकीर्णता , विनाशता को प्राप्त हो गई। मानो देखो, उसका अस्तित्व नहीं रहता, तो व्यापक हृदय बन जाता है, वह हृदय ही विशाल है हृदय में ही मेरे प्यारे! देखो , मानव संसार को अपने में वशीभूत कर लेता है, और वह संसार जब अपने हृदय में प्रवेश कर जाता है तो बेटा! हृदय विशाल बन करके , सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो देखो , हृदय की हृदय अकृता में मानो उसी में प्राप्त हो जाता है।

जीवन का स्वरूप

तो मेरे प्यारे! देखो, माता अरूणधती के इस उत्तर को पान करते हुए ऋषि ने अपने में हर्ष ध्वनि की , उन्होंने कहा वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है परन्तु अब जीवन क्या है, जिसको मानव यह जानना चाहता है, जिस जीवन में प्रवेश होना चाहता है, वह जीवन क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो, माता अरूणधती ने कहा कि वह जीवन क्या है, मानो वह जो जीवन, जिसकी तुम कल्पना कर रहे हो , या जिसकी हम कल्पना करते हैं वह जीवन क्या है ? मानो देखो, जीवन वह कहलाता है जिसके कारण से पञ्चमहाभौतिक पिंड अपने में गति कर रहे हैं , अपने में पञ्च महा देखो , जो वृत्तियों में गतिकर रहे हैं , वह पिण्ड के रूप में परिणित हो गएं हैं, और उस पिण्ड में, जो जीवन शक्ति है मानो वह जो क्रिया है, वह जो पञ्च महाभौतिक जो विज्ञान है , जिसे हम भौतिकवाद भी कहते हैं। मानो देखो, भौतिकवाद में जो एक एक अणु, परमाणु एक दूसरे से समन्वय हो करके और मानो देखो, वैज्ञानिक बना रहा है। हमें जीवन सत्ता को दे रहा है। मानो देखो, हमें इस संसार का संकीर्णवाद और अन्धकार हमारे समीप अज्ञान जब नहीं रहता तो मानो देखो, उस काल में, एक जीवन प्रतिभा हमारे समीप आ जाती है और वह जो जीवन प्रतिभा है , वही तो मानो देखो, आत्म चेतना का एक अनुपम स्रोत कहलाता है, वही तो आत्मा का स्रोत है।

परमात्मा का संगतिकरण

मेरे प्यारे! देखो, आत्मा का वह जीवन अश्व है, उस पर विद्यमान हो करके अश्वस्थ हो करके, मेरे पुत्रों! देखो, जैसे राजा अश्वमेध याग करने वाला , राजा मानो देखो, अश्वमेध याग में एक घोड़ा मानो अश्व को त्यागा जाता है और अश्व मानो सर्वत्र राष्ट्रो में वह भ्रमण करता है, तो राजा को जब यह प्रतीत हो जाता है कि तुम्हारा अश्व तुम्हारे समीप आ गया, राष्ट्र में आ गया। तो उस काल में राजा हर्ष ध्वनि करता है और वह याग करता है , क्रियाकलाप करता है। यागां ब्रह्म

वाचा मानो देखो, अश्वमेध याग करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। वह मानो प्रजा के जीवन को चाहता है राजा, अपने राष्ट्र में मानो देखो, दूषित वायुमण्डल को समाप्त करना चाहता है। इसी प्रकार हे ऋषिवर! मेरे विचार में तो यही आ रहा है क्या मानो वह जो जीवन शक्ति है , वह एक अश्व है। आत्मा उसके ऊपर विश्राम करती हुई, मानो देखो, उस लोक लोकान्तरों में क्या, वह ज्ञान के पुञ्ज में प्रवेश कर जाती है , और ज्ञान और विज्ञान के पुञ्ज में जब प्रवेश करती है तो संसार मानो देखो, खिलवाड़ हो करके, यह अपने में ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब माता अरूणधती ने यह वाक् कहा तो जीवन शक्ति का उन्हें निराकरण हुआ मानो यह वाक् उन्होंने स्वीकार कर लिया। क्या मानव को जीवन सत्ता को प्राप्त करना चाहिए , वह ऊर्ज्वा है वह मानो एक सत्ता है , जो मुनिवरों! देखो, लोक लोकान्तर जिससे पिरोएं हुए हैं। आज जब यह विचारा जाता है हम संगतिकरण के सम्बन्ध में विचारने लगते हैं। एक दूसरे से कैसा , इस एक मानव का क्या , एक प्राणी का क्या , एक मानो देखो , अणु और परमाणुओं का, एक दूसरे में समावेश हो रहा है। एक दूसरे में संगतिकरण हो रहा है। उसी संगतिकरण के आधार पर , मेरे पुत्रों! देखो, अप्रत्तियाँ बनती रहती है। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! महर्षि कागभुषुण्ड जी ने मानो देखो , एक रेणा वृहि वाचक एक परमाणु को उन्होंने कहीं से प्राप्त किया और उस परमाणु का जब विभाजन किया गया तो बेटा! जब विभाजन किया गया उस परमाणु का, तो जितना यह ब्रह्माण्ड है , मानो जितना यह ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता है या यह परोक्ष रूप से भी है बेटा! उस परमाणु के विभाजन करने से जब सूक्ष्म यन्त्रों से जब मुनिवरों! देखो , उस परमाणु के मानो उसके गर्भ में क्या था , तो बेटा! देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसमें दृष्टिपात आता रहता था।

सूक्ष्मतम चिन्तन से योगेश्वर

तो विचार क्या, मानो यह परमपिता परमात्मा का एक संगतिकरण है। क्या, एक एक परमाणुवाद में ब्रह्माण्ड है , मानो एक ओजस्ता है , एक ऊर्ज्वा है और

वह ऊर्ज्वा मानो देखो , प्रत्येक श्वास के साथ में मानो देखो , उसको अपने में धारण करता रहता है, उसी श्वास को जब ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है, तो बेटा! वह योगेश्वर बन जाता है , वह पवित्र बन जाता है , वह महान बन जाता है। मानो वही परमाणु जब मुनिवरों! देखो , वह आवागमन लगा हुआ है , उन परमाणुओं का बेटा! देखो, बाह्य जगत से नाना परमाणु आ रहे हैं, आन्तरिक जगत से नाना परमाणु बाह्य जगत में गति कर रहे हैं। मानो प्रत्येक श्वास पर श्वास अपनी गति कर रहा है। एक एक शब्द अपने में शब्दायमान हो रहा है, वह ध्वनित हो रहा है तो मुनिवरों! देखो, वही ध्वनितता मेरे पुत्रों! देखो , अपनी आभा में दृष्टिपात आ रही है। तो विचार विनिमय क्या, मेरा विचार बेटा! कोई बहुत गम्भीर क्षेत्र में नहीं ले गया हूँ। विचार केवल यह है क्या , मानव का जब इतना सूक्ष्मतम चिन्तन करने का एक माध्यम बन जाता है , तो बेटा! वह योगेश्वर बन जाता है। वह महान और पवित्र बन करके, वह अपने प्रत्येक श्वास को बेटा! ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है वह प्रकृति के ज्ञान और विज्ञान को अपने में रत्त करके बेटा! उसको नीचे दबा करके जैसे अश्व मानो देखो, अश्वस्थ पर सवार हो करके गति करता है जैसे यह शब्द अग्नि की तरंगों पर विद्यमान हो करके, अश्वत हो करके और मुनिवरों! देखो, वह वायु की गति के साथ में बेटा! गतिशील बन जाता है , वह मानो देखो, अन्तरिक्ष में उसकी स्थिति हो जाती है।

शरीर रूपी यज्ञशाला

तो विचार विनिमय क्या , मैं विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ। विचार यह प्रगट कर रहा हूँ कि मानव बिना ज्ञान के बेटा! देखो, बिना ज्ञान के और साधना के मेरे पुत्रों! देखो, प्राणतत्त्व को जाने बिना, मृत्यु को उल्लांघ नहीं सकता, क्योंकि उल्लांघना क्या है? बेटा! देखो, उस अज्ञान को, इस संसार को, जो ममतव में अपने में धारण किए हुए है। इसमें हम पार नहीं हो सकते , क्योंकि हमें व्यापक बनना है, व्यापकवाद में अपने को ले जाना है। तो मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, दूरी न चला जाऊँ, विचार क्या चल रहा था मुनिवरों! देखो, महर्षि

कागभुषुण्ड जी ने, माता अरूणधती से यह प्रश्न किया था क्या, हम अपने में मानो देखो, यज्ञमान जीवन को चाहता है , तो जीवन क्या है , व्यापकवाद का नाम जीवन है, संकीर्णता का नाम बेटा! देखो , अन्धकार है और अस्वः है , स्वति है, अन्धकार है। बेटा! देखो, उसी में मानव रत्त रहता है। मेरे प्यारे! देखो, इन दोनों वाक्यों का उन्होंने निराकरण किया। निराकरण करके जब माता अरूणधती मौन हो गई।

मौन हो जाने के पश्चात् कागभुषुण्ड जी ने पुनः एक प्रश्न किया , क्या हे देवी! हम यह जानना और चाहते हैं क्या तुम्हारे विद्यालय में जो ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे हैं , उनकी अध्ययन की प्रतिक्रिया क्या है माता अरूणधती ने कहा कि इनके अध्ययन की प्रतिक्रियाएं हैं , क्या, मानव मानव का सबसे प्रथम अध्ययन करता है, क्योंकि अध्ययन करने की मौलिकता उसके गर्भ में यह है कि एक ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहा है। अध्ययन करता हुआ , सबसे प्रथम अपना अध्ययन करता है अपना अध्ययन क्या है ? मेरे प्यारे! देखो, यह जो शरीर रूपी याग हो रहा है, बेटा! यह शरीरं भविते ब्रह्मा वेद कहता है क्या कि जो मानव का शरीर है, यह परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के पिता ने , सृष्टि के प्रारम्भ में बेटा! एक शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया था और यह शरीर रूपी यज्ञशाला है। बेटा! देखो, जिसमें नाना प्रकार की कृतिकाएं रत्त होती रहती हैं जैसा महर्षि याज्ञवल्क्य ने, ब्रह्मचारियों को यह निर्णय कराया था कि यह शरीर एक यज्ञशाला है, मानो देखो, यज्ञशाला में कितने होता है, कितनी प्रतिक्रियाएँ हैं।

स्वयं का अध्ययन

तो मेरे प्यारे! देखो, यह प्रश्न मात अरूणधती के समीप भी आया , तो माता अरूणधती ने एक ब्रह्मचारी को उपस्थित किया। भगवान राम मानो देखो, अयोध्या के सम्भवा ब्रह्मे देखो , उससे कहा उत्तर दो , ऋषि क्या कहता है , मानो देखो, कागभुषुण्ड जी ने कहा कि भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ , कि तुम क्या अध्ययन करते हो? उन्होंने कहा, हमें यह उत्तर लीजिए कि हम किस वस्तु का

अध्ययन नहीं करते ? मेरे प्यारे! देखो , उस समय कागभुषुण्ड जी ने कहा कि भगवन! मैं यही तो जानना चाहता हूँ , तो राम ने कहा कि हम सबसे प्रथम अपना अध्ययन करते हैं। हम अपने जीवन में रूपक बनाते रहते हैं और रूपक बना करके हम अपने में निराकरण करते रहते हैं। शरीर रूपी यज्ञशाला को हम , यज्ञशाला के रूप में ही दृष्टिपात करते हैं। मानो देखो , इसमें एक यज्ञशाला के रूप में एक द्वार है और नाना इन्द्रियाँ उसमें मानो देखो , आहुति देती चली जा रही हैं। वह होता वनं ब्रह्मे वह होता कौन है? मानो उनमें कहाँ कहाँ का समन्वय रहता है, जो हमने अध्ययन किया है। हम अध्ययन करते हैं क्या हमारा जो मानव शरीर है प्रथम जब हमारा उपनयन संस्कार हुआ तो उस समय उपनयन संस्कार करके हमें ब्रह्मचरिष्यामि की उपाधि प्राप्त की गई और जब वह ब्रह्मचारी हम मानो देखो, ब्रह्मचरिष्यामि बनें, तो हमनें यह विचारा कि यह ब्रह्मचरिष्यामि क्या है।

तो मानो देखो, उसी काल मे, यह विचार लिया गया कि अग्नि की भवं ब्रहे मानो देखो, शरीर रूपी, जो हृदय रूपी यज्ञशाला है हृदय रूपी जो गुफा है , इसमें मानो देखो, पाँच ज्ञार्नेन्द्रयाँ हैं और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ नाना प्रकार के पदार्थों को ला करके, सांकल्य को ला करके, चरू को ला करके मानो देखो, वह हृदय रूपी यज्ञशाला में आहुति दे रहे हैं। वे आहुतियाँ क्या हैं ? मानो देखो, रूपं ब्रह्मा अक्रतां भवि अस्तो रूप, रस, गंध मानो देखो, जैसे गन्ध है, रूप है, रस है और शब्द है और मुनिवरों! देखो, वह असुतं ब्रह्मा स्पर्श है यह मानो देखो , हम सर्वत्र प्रत्येक देवता को लाते रहते हैं ये इन्द्रियाँ प्रत्येक देवता से लाती है। श्रोत्रों का जो समन्वय है वह दिशाओं से रहता है और मानो देखो, वाणी का विषय रसों से रहता है और यह जो रसना मानो घ्राण है, इसका सम्बन्ध पृथ्वी से रहता है, और यह जो नेत्र है , इनका सम्बन्ध सूर्य और अग्नि से रहता है। मानो देखो , यह जो स्पर्श है, इसका समन्वय वायु और चन्द्रमा से रहता है। एक एक मानो देखो , दो दो देवता इसमें विद्यमान हैं। जब यह मानो देखो , इसका साकंल्य इनके रूप ,

रस, गन्ध का हम साकल्य बना करके , हृदय रूपी यज्ञशाला में, जब हम याग करते हैं और वह याग जब हो रहा है तो मानो देखो , हमारा जीवन पवित्र बन रहा है। हृदय रूपी यज्ञशाला में, ज्ञान रूपी अग्नि मानो प्रदीप्त हो रही है और यह जो पञ्च महाभौतिक जो अन्तिम चरण की प्रतिभा अपृतो भवा सम्भवते। मानो देखो, इसमें जो स्वाहा दिया जा रहा है, वह प्रिय याग हो रहा है, वह जो याग हो रहा है, उससे बेटा! यज्ञमान पवित्र बन रहा है , वह जो याग हो रहा है , उससे आध्यात्मिकवाद की बेटा! नाना प्रकार की आभाओं का जन्म हो रहा है। वही तो जन्नधम ब्रह्मे कृतां लोकाम् वही तो बेटा! एक पवित्र यागों में एक परणित होने वाला एक मनोनीत हृदय को ग्राही बनाने वाला है।

ग्यारह होता

मानो देखो, इसका और सूक्ष्म रूप ले लीजिए, इस शरीर के, शरीर रूपी यज्ञशाला के मानो दस पात्र कहलाते हैं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ , पाँच कर्मेन्द्रियाँ कहलाती हैं। वह जो ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ हैं मानो देखो , कहीं से कर्म को ला ला करके इस मानो देखो , उदर में प्रवेश कर रही है। वाणी के रूप की प्रतिभा का जन्म हो रहा है और वही तो मेरे प्यारे! दस होता बन करके याग हो रहा है। यागां भविते लोकां हिरणयम् मानो देखो, आगे जब हम और गम्भीरता में प्रवेश करते हैं, तो ग्यारह होता बन जाते हैं। ग्यारह होता देखो , दसों इन्द्रियाँ और ग्यारहवां इनसे जो मनस्तव है, प्रकृति का सूक्ष्मतम तन्तु है। मानो देखो, वह ग्यारह, दस इन्द्रियों से समावेश हो करके , ग्यारहवें मन की कल्पना की जाती है। मानो देखो, इसी प्रकार हम अपने को मानो देखो, शरीर रूपी सृष्टि के पिता की मानो आभा में रत्त हो जाते हैं , और सृष्टि के पिता की हम वैज्ञानिकता में प्रवेश कर जाते हैं। तो मानो बेटा! यह एक हमारा प्रिय याग हो रहा है। यागां भविते लोकाम् बेटा! देखो, लोक की प्रतिभा हमारे से आभा में रत्त हो रही है।

तो मुनिवरों! देखो, जब भगवान राम ने यह उत्तर दिया और उत्तर यह दिया सम्भवा लोकां हिरण्यं रथा हे भगवन! हे कागा! हे भुषण्ड जी! हे ऋषिवर! हम

सदैव यह अध्ययन करते रहते हैं। हम अपना अध्ययन करते हैं। प्रारम्भ में अपना अध्ययन किया जाए, क्योंकि आचार्य जब यह कहता है ब्रह्म वाचं ब्रह्मे चरिष्यामि हे ब्रह्मचारी! अपनी इन्द्रियों को मुझे प्रदान करो, हम आचार्य को, अपनी इन्द्रियाँ प्रदान कर देते हैं और जब वो उसमें पिरोई जाती है मानो आचार्य के ज्ञान और विज्ञान से, हमारी इन्द्रियाँ पिरोई जाती हैं, तो मानो देखो, हमारा विद्यार्थी जीवन पवित्र बनता है, हम स्वतः अपना अध्ययन करते हैं। हम स्वतः अपने में रत्त हो करके, परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोत को अपने में ग्रहण करते रहते हैं।

त्याग तपस्या में जीवन

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह मानो देखो, भगवान राम ने ऋषि को यह विवेचना प्रगट की , उन्होंने कहा कि हमारा विश्वं ब्रह्म कृतो लोकाम् हम ब्रह्मचारी हैं, ब्रह्मचरिष्यामि है, हम ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्म का ही अध्ययन करते रहते हैं, प्रकृति का अध्ययन करते रहते है, बाह्य जगत में न कोई याग करते हैं, उसकी सुगन्धि को अपने में धारण करते रहते हैं , तो बाह्य और आन्तरिक दोनों का समावेश हो जाता है , तो मानो समावेश होने से हमारे जीवन में सुगन्धि हो जाती है और वह सुगन्धि ही मानो देखो , हमारे जीवन का एक महा मनोनीतता में रत्त करा करके, इस संसार सागर से पार हो जाते है। इससे दूरी हो जाते हैं तो मानो देखो, भगवान राम ने यह कहा कि हमें अपने जीवन में, वेद यह कहता है कि हमें अपने जीवन में त्यागी बनना चाहिए, तपस्वी बनना चाहिए। आचार्यों ने हमें उपदेश दिया है कि हम वास्तव में त्याग और तपस्या में परणित हो। जैसे देखो, यज्ञशाला में जब हम देखो , बाह्य जगत में याग करते हैं , समिधा अपने अस्तित्व को समाप्त करके, अग्नि में लय करके मानो देखो, अग्नि उस परमाणुवाद को बना करके साकल्य के सहित मानो शब्दों के सहित, वेद मन्त्रों के सहित, वह द्यौ लोक को प्राप्त होता रहता है। वह द्यौ लोक में जाता रहता है। इसी प्रकार वह जो बाह्य जगत है, वह जो याग हम प्रातःकालीन, आज कर रहे थे मानो वह हमें क्या शिक्षा देता है ? क्या प्रेरणा दे रहा है ? क्योंकि देखो, समिधा कहती है

कि तुम अपने को समाप्त करो और मानो अपने को समाप्त करके अपनेपन को समाप्त किए बिना तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। मानो त्याग और तपस्या में परणित हो जाओ, क्योंकि तुम अपने को , ममता को त्यागों, अपने अहं भाव को त्याग करके मानो तुम प्रेरित हो करके , एक एक वस्तु से नाना प्रकार का एक समूह एकत्रित हुआ।

राम ने कहा कि एक समय नाना प्रकार के देखो , कृतियों का, परमाणुओं का एक समूह एकत्रित हुआ था और वह समूह एकत्रित हो करके मानो उसका नामोकरण नियुक्त किया गया , उनका नामोकरण एक साकल्य बना , परन्तु साकल्य के रूप में जब मानो होता जन , आहुति दे करके स्वाहा कह देता है और स्वाहा कह करके मानो वह शब्द उसका देखो , अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, उसका विचार, उसकी कृतिका मानो देखो, द्यौ लोक में प्रवेश कर जाती है और वह द्यौ लोक में जा करके मानो देखो , उसी प्राणी को, उसी आत्मा के शरीर को मानो देखो, वही शब्द उसी को प्राप्त होता रहता है।

याग से हृदय की पवित्रता

विचार विनिमय क्या है, राम ने एक समय कहा कि हे कागभुषुण्ड जी! एक समय महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज कुछ ब्रह्मचारियों के सहित , जिस में मानो देखो, हम भी गति की मानो देखो , राम इत्यादियों को ले करके बेटा! देखो , कहीं कजली वनों में भ्रमण करते हुए वह मानो देखो , वहाँ से उपराम होते हुए , वह दण्डक वनों में पहुँचे और दण्डक वनों में जा करके वहाँ मानो देखो , एक कुशवान वाचक एक राजा थे मानो देखो , उसके राष्ट्र में एक सौमभानुक ऋषि रहते थे। और सौभभानुक ऋषि महाराज याग करते थे। यह नाना प्रकार के वनों में से साकल्य एकत्रित करते और उसके द्वारा याग करते थे जब वह याग करते नाना प्रकार के साकल्य के द्वारा, तो वहां पूज्यपाद गुरुदेव ने यह कहा, यह क्या कर रहे हो ऋषिवर? उन्होंने कहा कि प्रभु! मैं याग कर रहा हूँ। मेरा हृदय , मैं अपने हृदय को पवित्र बनाना चाहता हूँ। मैं अपने मानो देखो, इस शब्दावली को,

अन्तरिक्ष में प्रवेश कराना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो , जब महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने, जब ऋषि से ऐसा कहा तो उन्होंने कहा कि भगवन! हम भी याग करा सकते हैं? तो उस समय ऋषि ने कहा कि नहीं, तुम याग नहीं करा सकते, क्योंकि तुम्हारा जो हृदय है, वह इतना याज्ञिक नहीं बना है जो तुम मेरे याग में आहुति दे सको। बड़ा आश्चर्य हुआ , वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा कि ऐसा क्यों कहा आपने? उन्होंने कहा कि प्रभु! मैं इस समय ब्रह्म की खोज , ब्रह्म की आभा में रत्त होना चाहता हूँ और वह अपने वायुमण्डल को , मैं उसी प्रकार का बनाना चाहता हूँ मानो देखो, वह याग के द्वारा बनेगा। मेरे विचार मानो प्रत्येक स्वाहा के साथ में साकल्य के साथ में मानो देखो, अग्नि की तरंगे उन परमाणुओं का भेदन करके वायु मण्डल को पवित्र करेंगी, उसके पश्चात् मैं ब्रह्म की आभा में रत्त होना चाहता हूँ, मैं भिन्न भिन्न प्रकार के विचारों को, साकल्य के द्वारा नहीं चाहता हूँ।

संकल्पोमयी याग

तो मेरे प्यारे! देखो, वह अनुष्ठान कर रहे थे, तो विचार क्या वह वशिष्ठ मुनि महाराज ने स्वीकार किया। वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह स्वीकार किया कि वास्तव में तुम्हारा विचार विशुद्ध रूप में रत्त रह रहा है। तो मानो देखो , इस प्रकार देखो, भगवान राम ने कहा तो भगवन! उस याग को हमने दृष्टिपात किया, उस याग में वह संकल्पोमयी याग था, ऋषि जो संकल्प करते थे, वह वस्तु उसे परमाणु के रूप में प्राप्त हो जाती थी। तो इसी प्रकार , हम प्रातः कालीन यहाँ याग करते है और जब वायुमण्डल पवित्र हो जाता है, उसमें मानो अन्धकार नहीं रहता, तो उसको हम धारण करना चाहते है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि बाह्य जगत, आन्तरिक जगत दोनों का समन्वय करना है और दोनों में समन्वय करके हमें अन्धकार को त्याग करके प्रकाश में जाना है। तो मेरे प्यारे! देखो , ऋषि के आश्रम में कागभुषुण्ड इत्यादि देखो , राम के उन शब्दों को पान करके मौन हो गये। उन्होंने कहा राम ने यह कहा था कि हे प्रभु! हे ऋषिवर! हमें प्रत्येक वस्तु त्याग में ले जा रही है, प्रत्येक वस्तु निष्काम कर्म में ले जा रही है, प्रत्येक वस्तु

मानो देखो, हमें परमपिता परमात्मा की, रचना का भान करा रही है। मेरे प्यारे! देखो, राम ने यह कहा कि हम भौतिक याग में , एक एक साकल्य, एक एक परमाणु को हम मानो दूसरों को हम मानो दूसरे के लिए यही नियम अपने को समाप्त करके मानो अपने को प्राप्त होना चाहते हैं। इसी प्रकार हमारा अध्ययन का यह विषय है, क्या हम आगे चल करके राष्ट्र में प्रवेश करेंगे, तो राष्ट्र उसी काल में ऊँचा बना सकेंगे , जबकि हमारे हृदय में त्याग प्रवृत्ति होगी और प्रत्येक प्राणियों के हृदयों को हम अपने हृदय से , दोनों ही मिलान करेंगे, तो हम राष्ट्र को ऊँचा बना सकते हैं। राष्ट्र वैसे ही ऊँचा नहीं बनता है।

आत्मवत की पवित्रता

तो मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्रीय ब्रह्मा वाचप्पव्हे सबसे प्रथम अपने शरीर रूपी राष्ट्र को हमें ऊँचा बनाना है , उसके पश्चात हमें ब्राह्य राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। देखो, यहाँ राजा का नाम विष्णु है, आज विष्णु की विवेचना, तुमने मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहते हैं, माता अरूणधती मुझे वर्णन कराती रहती है, मैं इसी आभा में लगा हुआ हूँ, क्या मानो देखो, हम राष्ट्र को विष्णु बनाए, पालन करने वाला प्रभु है, उससे सहायता ले करके हम अपने जीवन की पालना करते हुए, अपने विष्णु शरीर रूपी राष्ट्र को हम ऊँचा बनाए , जब तक हमारा शरीर नियन्त्रण में नहीं होगा , हमारा आत्मवत पवित्र नहीं होगा , तब तक हम बाह्य जगत को ऊँचा नहीं बना सकते।

तो मेरे पुत्रों! देखो, वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा क्या है , राम कहते हैं भगवान राम ने कहा कि एक एक वस्तु हमें प्रेरणा दे रही है। वेदमन्त्र भी बेटा! यही कह रहा है, क्या, एक एक वेदमन्त्र हमें भिन्न भिन्न प्रकार की प्रेरणा दे रहा है, हम प्रेरणादायक बन करके, अपने जीवन को ऊँचा बनाएँ। शरीर रूपी याग को ऊँचा बनाएँ, बाह्य याग को ऊँचा बनाएँ, जिससे बेटा! हम संसार सागर से पार हो जाएं। प्रत्येक मानव इससे पार होना चाहता है। आओ मेरे प्यारे! विचार क्या, मानो देखो, कागभुषुण्ड जी ने वेदमन्त्र की आभा को ले करके, वहाँ

से उपरामता को प्राप्त हुए , और विद्यालय में याग का क्रियाकलाप समाप्त हो गया।

तो मेरे प्यारे! मन की महती को जान करके , उसके रचाए हुए ज्ञान और विज्ञान को अपनी क्रिया में लाते हुए , इस संसार सागर से बेटा! पार हो जाए। यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह, क्या व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश करना है , समष्टि को लाना है और मुनिवरों! देखो , अपनी आत्मा को जान करके , प्रकाश में रत्त रहना है। अन्धकार अपने में कुछ अस्तित्व अन्धकार का नहीं है। सत् का मानो देखो, सत्य में ही रत्त रहना है, यह बेटा! आज का वाक्, मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या , मानव को मानो देखो, एक एक वस्तु से प्रेरणा लेनी चाहिए , प्रेरणादायक बन करके और मुनिवरों! देखो , त्याग मूर्ति बन करके अपने जीवन को ऊँचा बनाएँ, यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् गतं मां आ पा रथ पृविशा मां गतप्राव्हा वाचन्नः आभ्यां देवं रथाः वाचा मनु ब्रह्मा गायन्त्वा मा ना। ओ३म् जनिता रथप्रा मधु गाया रथं आ पाःम्। ओ३म् यौ सर्वं ब्रव्हा वाचन्नमा। अच्छा भगवन्! आज्ञा। 30 /3/85 जलविहार कॉलोनी लाजपत नगर, दिल्ली।

१७ 28 06 1985 नाभि केन्द्र

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष , पूर्व की भांति , कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चलेल जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से , जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन क्योंकि किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है, क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत, अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है चाहे वह जड़वत के रूप में हो, चाहे चैतन्यवत के रूप में हो, क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार, माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा का वर्णन कर रहा है, अथवा उसके गुणों का गुणवादन कर रहा है, उसकी महिमा का गान गा रहा है, क्योंकि महिमा का गान गाना ही, उसके ज्ञान और विज्ञान को उदधृत करना है, अथवा उसके विज्ञान की धाराओं में रत्त रहना है जिस प्रकार हमारे यहाँ प्रत्येक वेद मन्त्रों में, नाना प्रकार के रूपों का वर्णन होता रहता है, कहीं उस परमपिता परमात्मा को विष्णु के रूप में क्योंकि पालन करने वाला ही वह विष्णु है, इसीलिए वह विष्णु के रूप में रत्त रहने वाला है, परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र कुछ कह रहा है। नाना प्रकार की अग्नियों का चयन भी होता रहता है नाना प्रकार के लोक लोंकान्तर, एक दूसरे में पिरोए हुए रहते हैं, जैसे मानो शब्द है, एक शब्द, शब्द में पिरोया हुआ है परन्तु जैसे माला है, माला में भिन्न भिन्न प्रकार के मनके हैं, और वह सूत्र में पिरोने से ही माला बन जाती हैं।

इसी प्रकार, यह जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है, चाहे वह जड़वत के रूप में हो चाहे वह चेतना के रूप में हो परन्तु यह ब्रह्माण्ड माला के सदृश्य है, जैसे माला के मनकों का कोई सूत्र बना हुआ है, इसी प्रकार, यह जो

ब्रह्माण्ड हमें नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों वाला दृष्टिपात आ रहा है, मानो इसका कोई स्रोत है एक एक शब्द में बेटा! इस संसार का विज्ञान पिरोया हुआ है, एक शब्द उच्चारण हो रहा है, दूसरे शब्दों की धारा का जन्म हो रहा है, परन्तु यह ब्रह्माण्ड अपने में ध्वनित हो रहा है। एक ध्वनि का जन्म हुआ और द्वितीय ध्वनि बेटा! उसके पश्चात विद्यमान है। तो यह कैसा मानो हमें अनुपम एक रूप हमें दृष्टिपात आता है, जब बेटा! साधकजन योगाभ्यास में परणित होते हैं, अथवा समाधि लगा लगा करके अपने चित्त की वृत्तियों का निरोध करते हैं, तो मानो जब चित्त की वृत्तियों का निरोध करते हैं उसे प्राण सूत्र में पिरो देते हैं कोई भी ऐसा साधक अब तक सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक नहीं हुआ है, जो प्राण के निरोध किए बिना मानो देखो, चित्त की मनों की प्रवृत्तियों को जब तक प्राण सूत्र में नही पिरो देता है तब तक मुनिवरों! देखो , उसकी साधना पूर्ण रूपेण नहीं हो पाती क्योंकि वह अपने में महान और विचित्रता को अपने में ले जाता है तो विचार विनिमय क्या मानो देखो , साधक उस प्राण सूत्र में अपनी प्रवृत्तियों को पिरो देता है, तो वह एक मानो देखो , जैसे सूत्र में मनके पिरोएं जाते हैं, इसी प्रकार यह जो नाना प्रकार की जो प्रवृत्तियां है, ये उस प्राण सूत्र में पिरोई जाती हैं और पिरोने से ही मानो उसकी साधना का मानो रूपेणता को प्राप्त होना प्रारम्भ हो जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं आज इस सम्बन्ध में, कोई विवेचना देने नहीं आया हूँ केवल साधना के सम्बन्ध में अपने को ले जाना नहीं चाहता हूँ, केवल हमारा वाक् कुछ कह रहा है, आज हमारा कुछ मन्त्र हमें किसी मार्ग के लिए प्रेरित कर रहा है हमारे यहाँ बेटा! ऋषि मुनि अपनी एक एक स्थलियों पर विद्यमान हो करके, एक एक वाक् के ऊपर अनुसन्धान होता रहा है, कहीं वेद का एक शब्द उन्हें प्राप्त हो गया है, उसी वेदमन्त्र में बेटा! वर्षो व्यतीत हो जाते हैं, उसी मानो उसी आख्यिका को साकार रूप देने में, तो मानव को अपने जीवन को साकार रूप देने में तत्पर रहना चाहिए। परन्तु जैसा हमारे यहाँ, प्रायः आचार्यों ने, अपनी

विवेचना हमें अप्रत रूपां ब्रव्हे, मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण भी आता रहता है, जिस काल में बेटा! एक शब्द को ले करके वह अपने में अनुसन्धान करते रहते थे, आओ, बेटा! मैं आज तुम्हे ऐसी स्थली पर ले जाना चाहता हूँ, जिन वाक्यों की पुनरूक्तियां मैंने पूर्व काल में भी प्रगट की हैं, आज भी उन वाक्यों की पुनरूक्तियां अवश्य करने वाला हूँ। मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें निर्णय दिया भी, परन्तु आज भी मैं उन वाक्यों का निर्णयात्मक देना चाहता हूँ जिससे हमारे जीवन में एक महानता की ज्योति अनुपमता के रूप में परणित होती चली जाए।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे उस क्षेत्र में उस हिमालय की कन्दराओं में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ हिमालय की कन्दराओं में ऋषि मुनि बेटा! अपने में अनुसन्धान करते रहते थे, बेटा! एक समय महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज एक समय श्रुति ऋषि महाराज के द्वार पर पंहुचे, तो श्रुति ऋषि महाराज ने कहा, कि भगवन! आज हम वेदों का अध्ययन कर रहे थे प्रातःकालीन, परन्तु उसमें वेद में कोई शब्द ऐसे विचित्र आए हैं जिनके ऊपर हमे विचार विनिमय करना, बहुत अनिवार्य है, उन्होंने कहा कि कौन से शब्द हैं? उन्होंने कहा यह शब्द यह कहता है कि सम्भवा ब्रहे मानो देखो , असुताम जैसे एक मानव अपनी स्थलियों पर विद्यमान है, और उस पर कोई आक्रमण कर रहा है, परन्तु आक्रमण जब कर रहा है, वह कहता है अपनी, वेदनामयी मानो देखो , मेरी मृत्यु आने वाली है, मानो देखो, एक मानव जो दूरी विद्यमान है, वह कह रहा है मैं मानो तुम्हारे रक्षार्थ के लिए तत्पर हूँ, तो मानो देखो, इस प्रकार उसे एक मनो बल की प्राप्ति हो जाती है, और वह जो बल उसे प्राप्त हुआ है, उसी बल को ले करके, मानो देखो, वह अपने में महान बलिष्ठ बन जाता है, और वह उनका मानो देखो, उनके मानो ब्रहा उससे बल प्राप्त हो करके उससे संग्राम करना प्रारम्भ कर देता है। तो प्रभु! मानो देखो, ऋषि ने कहा उसको हम साकार रूप देना चाहते हैं, उसका साकार रूप, हमें कैसे प्राप्त हो? क्योंकि वैज्ञानिक जनों ने नाना प्रकार के यन्त्रों

का निर्माण किया है, हमने यह श्रवण किया है, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ, नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण हुआ और ब्रह्मचारी सुकेता और श्वेतकेतु के यहाँ भी इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण हुआ है, परन्तु हम इसके सम्बन्ध में एक यन्त्र का निर्माण करना चाहते हैं, जिससे वह मानव का संग्राम में मृत्यु न हो, संग्राम में मृत्यु नहीं होनी चाहिए। यह तो मानव का मौखिक गुण है कि संग्राम करना अपने मानव बल का आदान प्रदान करना मानव का एक मौखिक गुण माना गया है। परन्तु जब इस प्रकार की वार्त्ता उन्होंने प्रगट की, तो मेरे प्यारे! उन्होंने विचार विनिमय प्रारम्भ किया, वेद के मन्त्रों के ऊपर, अथवा शब्द के ऊपर, विचारने लगे कि यह तो बड़ा अनुपम शब्द है, परन्तु देखो, भ्रमण करते हुए, मेरे प्यारे! हिमालय की कन्दाराओं में पंहुचे, हिमालय के समीप जा करके वह महाराजा शिव के समीप पंहुचे जहाँ देखो , मेरे प्यारे! महाराज शिव अपने में मानो अनुसन्धान करते रहते थे, मानो देखो , नाना ऋषिवर, उनके समीप आते वह भी स्वतः विज्ञान के एक एक अंकुरों को जानने का प्रयास करते रहते, उसके क्रियात्मक लाना, मानो देखो, उसमें प्रायः उनका कर्तव्य बन गया था। जब इस प्रकार उन्होंने वर्णन किया ब्रहे, मानो विभाण्डक मुनि महाराज ने महाराजा शिव के चरणों में ओत प्रोत हो करके बेटा! उन्होंने यह वार्त्ता प्रगट की क्या प्रभु हम जानना चाहते हैं एक मानव स्थली पर उन्होंने ज्यों की त्यों गाथा प्रगट की, वर्णन करके उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। तो मेरे प्यारे! वहाँ उस अनुसन्धान में लग गएं, क्रियातमक अपने जीवन को लाने के लिए अपने जीवन को साकार रूप बनाना कि उस हम शब्द को हम कैसे साकार रूप बनाएं मानो कौन कौन सी धातु को हम क्रिया रूप दें, तो इस आभा में परणित हो जाएं, तो मुनिवरों! देखो, ऐसा कुछ प्रतीत होता है, कि उन्होंने मानो एक वर्ष हो गया था, इसी के ऊपर अनुसन्धान करते करते। उन्होंने बेटा! कुछ नाना प्रकार की धातुओं का निर्माण किया और उन धातुओं का निर्माण करने के पश्चात उन्होंने बेटा! एक यन्त्र का निर्माण किया, और यन्त्र में यह विशेषता, उन्होंने परणित की, क्या मानो

देखो, एक स्थली पर वह विद्यमान है, और एक मानव संग्राम कर रहा है, परन्तु देखो, वह यन्त्र उसको सहायता दे रहा है, वह उसको सहायतार्थ बना रहा है, परन्तु द्वितीय रूप उन्होंने कुछ ऐसा प्रगट किया, जो ऋषि प्रणाली आध्यात्मिकवाद में लाना चाहती थी, मेरे प्यारे! देखो , उन्होंने कहा कि प्रभु! एक रूप तो यह मानव का साकार बन गया है, परन्तु हम एक यह जानना चाहते हैं कि मानव का जो नाभि केन्द्र है इस नाभि केन्द्र में मानो देखो , अमृत की धाराएं अमृतव उसमें गमन करता रहता है।

तो मेरे प्यारे! ऋषियों ने जब यह वाक् कहा तो महाराज शिव इत्यादियों ने बेटा! इसके ऊपर अनुसन्धान करना प्रारम्भ किया और प्रारम्भ जब किया तो बेटा! उसमें वह समाधि पिपाद में रमण करने लगे बेटा! कही लघु मस्तिष्क में परणित हो गएं तो मानो देखो, नाभि में जो अमृतमयी धाराओं का जन्म होता था उसको जानने के लिए मेरे प्यारे! उन्होंने प्रायः बहुत सा अनुसन्धान किया और अनुसन्धान करते करते बेटा! उन्होंने प्राण की सर्वत्र धाराओं को एकत्रित किया मानो यह विचारा की प्राण को हम मानो अपान में परणित करना चाहते हैं और अपान को मुनिवरों! देखो , अपान में परणित करना चाहते हैं और व्यान को समान में और समान को देखो, उदान में परणित करते हुए, एक दूसरे मेरे प्यारे! प्राण की प्रतिष्ठा को प्रतिष्ठित करते हुए नाग, देवदत, इत्यादियों में वह एक दूसरे में प्राण का संग्रह करने लगे, जब संग्रह करने लगे, तो विचारा गया क्या यह प्राण ही संसार का बेटा! मूलक माना गया है। जितना भी सृष्टि विज्ञान है, मानो यह प्राण के आधार पर निहित रहता है, मानव का जितना भी मानवीयतव है, वह चाहे तरंगो के रूप में हो, चाहे वह मानो देखो , मौन के रूप में हो, चाहे बुद्धि की भिन्न भिन्न प्रकार की धाराओं का जन्म क्यों न हो, परन्तु उसके सर्वत्र गर्भ में बेटा! एक प्राण ही माना गया है। जिस प्राण के ऊपर, हमारे ऋषि मुनि बेटा! अपना संकल्प करते रहते हैं, और उन संकल्पोंमयी सृष्टि का मानो विधान किया गया है।

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! मैं आज तुम्हे ऐसे गम्भीर रहस्यों में तो ले जाना नहीं चाहता हूँ, केवल साधारणतव अपने वाक्यों को प्रगट कर रहा हूँ, मेरे प्यारे! वह जो नाभि केन्द्र है जिस नाभि के द्वारा अमृत धाराओं का मानो एक प्रकार का एक प्राणायाम है और प्राण की धाराएं है क्योंकि प्राण के ऊपर अनुसन्धानवेत्ताओं ने बेटा! कही प्राण को एक बेटा! मस्तिष्क में लाने का प्रयास किया इसी प्राण के द्वारा मानव को दीपावली गान के द्वारा अपने प्राण को शीतली प्राणायाम देखो, खेचरी मुद्रा में परणित करके मानो देखो , इसको एक अभ्योदय करते रहे हैं, इससे बेटा! मैंने, तुम्हें कई पुरातन काल में निर्णय दिया था, क्या दीपावली परणित हो जाती है। इसी प्रकार प्राणों के रूपों में रत्त रहने वाला, मेरे प्यारे! देखो, वृष्टि का राग प्रारम्भ करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो , मेघों से वायुमण्डल में जो परमाणु मानो जल के गमन करते हैं, वह एकत्रित हो जाते हैं, प्राण सूत्र के द्वारा, इस प्राण के द्वारा तो बेटा! वृष्टि का रूप बन जाता है। तो परिणाम क्या ऋषि मुनियों ने जब दोनो प्रकार के रूपों को साकार बनाने का प्रयास किया है, वह साकार रूप जब मुनिवरों! देखो , जब धारण कर लेते हैं, साकार रूप बन जाता है, तो मानव के जीवन में, एक अनुपमता छा जाती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या मानो देखो , उसी ब्रह्म वाचो देव ब्रह्मा लोकम् हिरण्यं रथा वेद के आचार्यों ने बेटा! अपना वर्णन करते हुए कहा है, आचार्यों ने भिन्न भिन्न प्रकार की धाराओं में रत्त रह करके बेटा! उन्होंने अपना अनुसन्धान करते हुए इन धाराओं को लाने का प्रयास किया जिन धाराओं मे बेटा! मानव का जीवन, अपने में प्रायः गति करता रहा है, अपने में गतिशील होता रहा है, उसी गतियों को जान करके मानव अपने में अन्वेषण करता हुआ, विचारशील बनता रहा है, परन्तु देखो , आज मैं तुम्हें कहाँ ले जा रहा हूँ बेटा! देखो, यह विचार मानो पुरातन काल में भी मानो देखो, अपना दिया, आज भी मैं दे रहा हूँ मेरे प्यारे! देखो , उन्होंने यही यन्त्र, उन्होंने दो यन्त्र इस प्रकार के

निर्माण किए थे एक मानव संग्राम कर रहा है, और उससे सहायता दे रहा है, वह यन्त्र मानो अपनी तरंगे दे रहा है, मेरे प्यारे! देखो , वही, महाराज शिव ने, इन यन्त्रों को, एक समय बेटा! राजा रावण और देखो , उनके बहुत से सहयोगी महाराज शिव के द्वार पर आए और महाराज शिव से बहु वार्त्ता उनकी प्रगट हुई, और वार्त्ता प्रगट हो करके, उन्होंने उसके ऊपर अन्वेषण अथवा अनुसन्धान किया, अनुसन्धान करने के पश्चात मेरे प्यारे! राजा रावण ने वह यन्त्र महाराज शिव से मुनिवरों! देखो, अनुदान में स्वीकार कर लिया। मेरे प्यारे! महाराज शिव ने, वह यन्त्र उन्हें प्रदान कर दिए और प्रदान करके मुनिवरों! देखो , महारानी मंदोदरी, उनके समीप मानो उनके संग थी, वह दोनो को यन्त्र प्रदान कर दिया, मेरे प्यारे! देखो, उनका जो लंका में, उनका गृह था, वास करने का, उनके मध्यम के दोनो खम्बों में, उन यन्त्रों को बेटा! स्थापित किया गया वह यन्त्र स्थापित हो गएं तो मुनिवरों! देखो, कुछ समय के पश्चात काल व्यतीत होता रहा, परन्तु देखो , राजा राम और देखो , भगवान राम और रावण का दोनो का संग्राम आ गया, जब संग्राम होने लगा, मेरे प्यारे! देखो , अन्तिम चरण जब रावण देखो , लंका का विनाश हो गया, अन्तिम चरण देखो, केवल राजा रावण का रह गया, मृत्यु का, तो बेटा! वह मृत्यु को प्राप्त नहीं हो रहे थे मानो संग्राम हो रहा है और उसे बल वह यन्त्र दे रहे हैं। परन्तु राम से वह सामप्त नहीं हो रहा है जब समाप्त नही हो रहा है तो मेरे पुत्रों! देखो , ऐसा मुझे कुछ स्मरण है क्या ऐसा वाक् मुझे प्राप्त हुआ है क्या मानो देखो , वाकं ब्रह्मे जब मृत्यु नही हो रही कई दिवस हो गए संग्राम होते होते तो बेटा! जब मानो वृत्तियों राम ने एक मध्य रात्रि में बेटा! एक सभा की और राम ने कहा रावण की मृत्यु नही हो रही है मैं लंका में असफल हो रहा हूँ, परन्तु उसके मूल में क्या है? मेरे प्यारे! देखो , उस सभा में महाराजा जामवन्त, महाराज सम्पाति मेरे प्यारे! देखो, विभीषण और वह अंगद इत्यादि वह सब जितने भी हनुमान लक्ष्मण आदि देखो , सब विद्यमान थे, जब विद्यमान थे, तो उन्होने महाराजा जामवन्त को कहा कि महाराज! इसके मूल में क्या है? मेरे

प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! हम नहीं जानते, मेरे प्यारे! हनुमान जी से कहा कि तुम उच्चारण करो, कि इसके मूल में क्या है? रावण की मृत्यु क्यों नही हो रही है। उन्होंने कहा प्रभु! हम नहीं जानते परन्तु जब यह विचार होता रहा, तो मुनिवरों! महाराज जामवन्त ने, महाराज विभीषण से कहा क्या महाराज! इसके मूल में क्या है? क्योंकि तुम लंका को ज्यादा विशेष जानते हो तुम उच्चारण करो उन्होंने कहा कि इसको महाराज शिव से प्रार्थना की जाए, यदि वह कोई कारण नियुक्त कर दे, तो हो सकता है। मेरे प्यारे! देखो , भगवान राम ने महाराज हनुमान और महाराजा जामवन्त को दोनो को यह कहा कि जाओ, भगवान शिव के द्वार पर जाओ, उनकी पूजा करो, और उनसे यह वाक् ले करके मानो इसके मूल में क्या है मेरे प्यारे! देखो, महाराज जामवन्त और हनुमान ने अपने वाहन को ले करके, दोनो ने ब्राह्मण के स्वरूप को, भिक्षुक का स्वरूप बना करके उन्होंने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, भगवान शिव और माता पार्वती दोनो अपने में अनुसन्धान करते रहते थे, अथवा विचार विनिमय करते रहते थे, भिन्न भिन्न प्रकार का उनका विचार विनिमय होता रहता था, मानो देखो , आत्मीय चर्चाएं विज्ञान की चर्चाएं और देखो , उनका लोक लोकान्तरों के इनके ऊपर उनका विशेष बल रहता था, दोनो अपने में अनुसन्धान करते रहते थे तो मेरे प्यारे! देखो, जब दोनो भिक्षुक उनके द्वार पर पंहुचे, तो मुनिवरों! दोनो ने उनके महाराजा शिव के चरणों की वन्दना की, उन्होंने उनका अतिथि किया, अतिथि सत्कार करने के पश्चात उन्होंने कहा कहो हे ब्रह्मा ब्रह्मे तुम किस मानो तुम्हारे आने के मूल में क्या है? मेरे पुत्रों! देखो , उन्होंने कहा भगवन! हम यह जानना चाहते हैं क्या भगवन! देखो, राजा रावण का जितना भी वंशलज है मानो देखो , वह महाराज वह जो उनके पिता थे महापिता थे पुलस्त्य ऋषि महाराज और भी नाना उनका जो वंशलज है, वह आपका मानो भगवन! प्रिय और आपसे, आपकी आज्ञा का पालन करते रहे हैं, परन्तु हम यह जानना चाहते हैं, कि इसके मूल में क्या है कि जो आप उनकी सहायता के लिए नही पंहुचे, मेरे प्यारे! उन्होंने कहा

भगवान शिव बोले कि हे ब्रह्म भिक्षुकों! तुम चाहते क्या हो? उन्होंने कहा प्रभु! राम और रावण का संग्राम हो रहा है, लंका मानो नष्ट हो गई है, और आप मानो देखो, उनकी सहायता के लिए नही जा रहे हैं, भगवान शिव बोले कि हे भिक्षुकों! मैं इसीलिए नहीं जा रहा हूँ राष्ट्रीय परम्परा यह कहती है राष्ट्र का जिस भी काल में निर्माण हुआ है, वह मानो देखो , इस वाक्यों को ले करके हुआ है कि महापुरूषों की रक्षा की जाए, और वेद विद्या की रक्षा की जाए, और आतातियों का विनाश होना चाहिए, आतातायी कौन होते हैं? जो मानो देखो , प्राणियों का अनिष्ट चाहते हैं मानो देखो, वह जो अनिष्ट चाहते हैं, वह नहीं होना चाहिए। परन्तु देखो, जो किसी की मानो पुत्री को, या मानो किसी देवी का हनन करता है, वह अपनी राष्ट्रीय प्रणाली को समाप्त कर रहा है, क्योंकि राष्ट्रीय प्रणाली मानो यह नही कहती है राष्ट्रीय प्रणाली यह कहती है क्या मानो देखो , राजा के राष्ट्र में चरित्र की रक्षा होनी चाहिए। राजा स्वयं चरित्रवान होना चाहिए, और चरित्र की रक्षा होनी चाहिए। मानो देखो, राष्ट्र कन्याएं अपने में चरित्रवान रह करके, पुरूष मानो उनकी रक्षा करने के लिए तत्पर हों, राजा की इस प्रकार की नियमावली होनी चाहिए, और वेद की रक्षा होनी चाहिए क्योंकि वेदों का जो गान है, वह गाया जाना चाहिए क्योंकि उससे वायुमण्डल का शुद्धिकरण होता है राष्ट्रीयता का शुद्धिकरण होता है इसीलिए देखो, राजा रावण ने सबसे प्रथम यह देखो, अनावृत्ति किया है, क्या वह वनों में से जा करके मानो देखो , राजलक्ष्मी महारानी सीता को अपने गृह में छल करके लाया, युद्ध करके लाते मानो देखो , राष्ट्रीयता तो कुछ मानो इसमें भी नही है, जिस काल में मानो देखो , देवियों के ऊपर एक राष्ट्र दूसरें को नष्ट करने के लिए तत्पर हो जाता है, एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को मानो देखो , अप्रतियों में हीनता में पंहुचाना प्रारम्भ हो जाता है मानो देखो, वह राष्ट्र समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार, मैं इसीलिए नही पंहुचा हूँ, मैं इसीलिए नही गया, मैनें कोई सहायता नही दी, क्योंकि राजा रावण आतातियों के रूप में परणित हो गया है। मेरी दृष्टि में, वह महान नही रहा है, जब उनके

राष्ट्र में चरित्र का अभाव हो गया है, मानो देखो , महाराजा शिव ने जब इस प्रकार यह वाक् प्रगट किए तो उन्होंने वार्त्ताओं में यह जान गएं कि यह भिक्षुक नही है उन्होंने कहा कि मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है क्या तुम भिक्षुक नही हो। उन्होंने कहा प्रभु! वास्तव में हम भिक्षुक नही है, परन्तु हम केवल हनुमान बोले क यह महाराज जामवन्त है, मैं हनुमान हूँ। परन्तु देखो , हम एक वाक् जानना चाहते हैं, क्या हमें यह जानकारी प्राप्त हो गई, क्या तुम आतातियों को नष्ट करने के लिए तत्पर हो। तो प्रभु! उस आतातायी की जब मृत्यु नहीं हो रही है, उसके मूल में क्या है? महाराजा शिव मौन गो गए उन्होंने कहा अहो तुम यह जानकारी के लिए आए हो जब उन्होंने यह प्रगट किया तो उन्होंने कहा कि जाओ, इसके मूल में महारानी मन्दोदरी ही प्रगट करा सकती है। उसे यह प्रतीत है उन्होंने यह कहा प्रभु! यह कैसे हो सकता है? उन्होंने कहा वह महान सुशीलता की प्रतीक मानी गई है।

तो मेरे प्यारे! देखो , उन्होंने उस समय इस वाक् को ले करके, वहाँ से गमन किया, सब वार्त्ता उन्होंने प्रगट कर दी, दो यन्त्र है, और वह दोनो उनके गृह में परणित है, और जो विश्राम गृह है, और उनके मध्य के जो खम्ब हैं उनमें मानो यन्त्र विद्यमान है, वह सहायता देते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! उन्होंने वहाँ से गमन किया, भ्रमण करते हुए, मेरे प्यारे! अपने वाहन में गति करते हुए, वह मुनिवरों! देखो, राम की सेना में आ गएं राम की सेना मे आए तो उन्होंने आते ही एक सभा की और भगवान राम से यह कहा प्रभु! ऐसा उन्होंने वर्णन किया है और उसको मानो महारानी मन्दोदरी प्रदान कर सकती है। मेरे प्यारे! दोनो ने अपने उसी भिक्षुक स्वरूप को धारण किया और अपना भिक्षुक स्वरूप बना करके, मेरे पुत्रों! वह जा करके महारानी मन्दोदरी से उन्होंने जब भिक्षा में देहि उन्होंने कहा ब्रह्मवाचो ब्रह्मे, मेरे प्यारे! देखो , उन्होने साधु जान करके भिक्षुक जान करके नाना मोतियों के अपनी स्थली अञ्जली में ले करके उनके समीप आ पंहुची, उन्होंने कहा हे मातेश्वरी! यह नही चाहिए। उन्होंने कहा क्या चाहिए?

उन्होंने कहा तीन वचन चाहते हैं उन्होंने तीन समय, उन्होंने वाक्यों से देखो , वचनों की वृत्तियां प्राप्त की, उन्होंने कहा क्या हे मातेश्वरी! हम चाहते हैं आप अपने सुहाग हमें दान प्रदान कर दीजिए। मेरे प्यारे! देखो, उन्होने कहा अरे, तुम कौन हो? उन्होंने कहा कि हम एक जामवन्त और एक हनुमान हैं। उन्होंने अपने में प्रगट किया, महारानी मन्दोदरी मौन हो गई। परन्तु देखो , वाणी द्वितीय रूपों में नहीं आई, उन्होंने कहा मेरी वाणी वायुमण्डल में प्रसारित हो गई है, मेरी वाणी का उतना महत्व मानो बलिष्ठ हो गया है इसीलिए मैं अपनी वाणी को अपने में हरित नहीं चाहती हूँ, जब उन्होंने यह वाक् कहा, तो बेटा! वह वाक् बोले कि हे मातेश्वरी! हम चाहते हैं। तो ऐसा बेटा! मुझे स्मरण है उन्होंने कहा ब्रह्म बाहो ब्रहे व्रताम् देवाम् दधि ब्रव्हे कृतं देवो विश्वखम्बं ब्रहे वाचाःमेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने यह वाक् प्रगट किया, उन्होंने कहा यह बीच के दोनो इन स्तम्भ में से बेटा! यन्त्रों को उन्होंने प्रदान कर दिया। मेरे प्यारे! देखो , यन्त्रों को समुद्रों में परणित कर दिया, और समुद्रों में परणित करके, बेटा! अगला जो दिवस आया, संग्राम को तो बेटा! देखो, राजा रावण की मृत्यु हो गई। मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या मैं यह विचार दे रहा था कि विज्ञान अपने में अनूठा बन करके रहा है इस विज्ञान में मानो देखो , जहाँ विज्ञान अनूठा रहा है वहाँ विज्ञान का समापन भी इसी प्रकार हो जाता है। तो विचार विनिमय क्या बेटा! मैं यह उच्चारण कर रहा था, क्या यह जो प्राण है, इस प्राण सखा को जानना चाहिए। बेटा! यह प्राण मानो देखो, प्राण ही मानो इस विभाजन के मूल में, संसार में मानो देखो , प्राणो का विभाजन होता रहता है। बेटा! देखो, जब इस प्रकार का स्वरूप बना है मानो देखो, प्राण के विभाजन का परिणाम क्या है? बेटा! विचार विनिमय देने का क्या मुनिवरों! देखो, विज्ञान अपने में अनूठा रहा है, ऋषि मुनियों ने, क्रियात्मकता में लाने का भिन्न भिन्न रूपों में, बेटा! उन्होंने प्रयास किया है, और वह प्रयास इतना विशाल रहा है, क्या ऋषि मुनियों के मस्तिष्क बेटा! देखो , उसमें रत्त रह करके एक एक वाक् को उन्होंने मेरे प्यारे! उन्होंने साकार रूप दे करके परमाणु का

विभाजन किया है। परमाणु के मानो देखो , परमाणु का विभाजन करके मानो देखो, उनको सुगठित किया, और उसी में ला करके बेटा! एक एक शब्द में, जो परमाणु हैं, उसी परमाणु को बेटा! देखो , उन्होंने उच्चारण किया, और उसको साकार रूप बनाया। साकार रूप बना करके, मेरे प्यारे! वह विचित्रता को प्रदान हो गया है।

तो आओ, मुनिवरों! देखो, मैं विशेष विवेचना देने नही आया हूँ विचार यह देने का हमारा अभिप्रायः क्या है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए विचार यह दे रहे हैं कि परमपिता परमात्मा विज्ञानमयी स्वरूप माना गया है। ये विज्ञानमयी स्वरूप जो परमपिता परमात्मा है, जो एक एक वेद का मन्त्र, मेरे प्यारे! देखो, उस प्रभु की गाथा गा रहा है अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान का वर्णन कर रहा है, उसकी महती का वर्णन कर रहा है जिसकी महती का वर्णन करने के पश्चात, मेरे प्यारे! द्वितीय कुछ नहीं रह पाता, आओ , मेरे प्यारे! एक एक वाक् के भिन्न भिन्न प्रकार के रूप माने गएं हैं इनका स्वरूप भिन्न बन जाता है। मानो देखो , माला में पिरो करके भिन्न बन जाता है मुनिवरों! देखो , इसी प्रकार जब हम इस प्रकार के विचारों को व्यक्त मानो क्रियात्मक लाने में सदैव तत्पर होते हैं तो बेटा! विज्ञान हमारे समीप आ करके प्रायः नृत्त करने लगता है, तो हमें आज के हमारे वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या तो मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक वेदमन्त्र उस प्रभु के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन कर रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है, यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, इसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, यह ज्ञान और विज्ञान में जो स्वरूप मेरा प्रभु है, वह आनन्दमयी का स्रोत कहलाता है।

आओ, मेरे प्यारे! हम उसे अपने प्यारे प्रभु का गुणगान गाते हुए, अपने देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक्, उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या हम बेटा! साहित्य में चले गएं। हम मानो त्रेता के उस काल में चले गएं जहाँ बेटा! देखो ,

ऋषि मुनि अपने में अनुसन्धान अथवा एक दूसरे की आभा में रत्त रह करके अपना गान गाते रहते थे, यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक्, उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उसकी महिमा को जानते हुए, अपने को क्रिया रूप में बना करके बेटा! इस सागर से पार होना चाहिए। यह है मुनिवरों! आज का वाक् अब वेदों का पठन पाठन होगा इसके पश्चात वार्त्ता समाप्त हो जाएगी। ओ३म् मां रथाः आभ्यां गतप्रा वाचन्नमाः रथं गाताहं मनु वाचन माहा। ओ३म् दधि ब्रह्म गा ताः रेवं मनु वरुण प्रजां आपो रथाः गाताहं मनो सर्वाम्। ओ३म् यशश्चं रथाः मां दधि ब्रह्माम्। दिनांक 28 06 1986।